1 - 5 3 - 2 - 3 - 3 - 8 = - 8



# પૂ. સરદ<u>ારત્રીના લાયલોની</u> યાદી

Y- 1-Y4	मार्भी कीर्य नेक्टेकी हवेशाहून	अधिक
21- 4-84	રીક્રેઝ -ટેન્ડીવ ગોફ માઇનો રિટિઝ ; કો -સ્ટીટ્યુશન ગેલે સ્લલી મઈ:	
24- 2-YE.	ગેંગલો રમ દ	
48- 8-69	भड़ास	
44-4- Ye	સાઉથ ઇ –િડચન ચેમ્ખર ગોક કોમર્સમાં	
44-4- AF	રાજા છની પ્રતિમાની ગનાવરલ વિધિ	
30-1- 86		
48-1- AF	સૌરાષ્ટ્ર બંધારભૂસભાના ઉદ્ધાટન વખતે	ગુજરા તી
22-1- Xe	પ્રજામેંડળના કાર્યક્રલ અને મકરપુરા પેલેસની લીને ઉપર	
18-1- 86	જાહેરસભા ઉદેપુર	(હું દ)
21-1- YE .	લક્ષમા વિલાસ પેલેસમાં વપીરના લેંગ પરના મહારાજાના લખાલના જવાળમાં	ગુજરાતી
- 1 × 1 × 1 × 1 × 1 × 1 × 1 × 1 × 1 × 1	સુરત સ્ટેશને વડોદરા જતાં : સવારે દસ:	
38 -1-05	વારડોલી પાડીદાર અનમાં : જાહેરસલા વ. રા	L: "
10-1- YE	સુરત, ભાષા, પૈયમહાલના ઋાર્ચક્ત અોની સભા આત્રમના ડહેલામાં, બપોરે ૩ વાગ	
16-1-86	ગુજરાતના કાર્યકરોની સભા : અમદાવાદ, મેડા: દેશી રાજ્યોના કાર્યકર્તાઓ. બારડોલી બપોરે ઢ વાએ.	
38 -5-06	જયપુર ે	(હું દ્
1-4- YE	र्व हो र	
5-4- YE	મ્હેસ્ટ	

# પૂ. સરદારત્રીના માયલોની ચાદી

		and the state of t
22- <b>1-</b> 82	અમદાવાદમદ્યુરથોતામ પીલન કિમ્પાઉન્હમદ્ મહાજનો તરફથી માનપદ્ર	34કાવી
33- 1-85	લલ્લુબાઇ ગો. હોસ્પિટલનો પાથી ન જિલ્લાનો સમારભ	
21-1-86	લાલ દરવાજાના મદાનમાં સભા	H. C. 19
31- 1-86	પલ્લુમાઇની પ્રતિમાની <b>અનાવરણ વિધિ</b>	
	કામગાર	ા હા
14- 1-86	હિન્દુ હોસિપટલનો પાયો નાંથવાના પ્રસંધ	
16- 1-86	(શવાઝ પાર્કમાં ભાષસ	
10- 1-86	ચોપાડી પર	· Pr Again
	મુંબઇ કોરપીરેશન મેચર–શેરી ક તરકથી જોઇન્ડ મીજિંગ શહેરીઓની ઉપવાસ જીવ	ગુજરાતી .
15- 1-86	મુંબઇ કોરપોરેશન તરફથી આઝાદ મદાન પર માનપ	d ·
14- 1-86		ક્ટીંગ, ગુજરાતી
14- 1-86	ભાવનગર ગાંધી મેહિરની ઉદ્યાદન દિવા	•
14- 1-86	ધારાસભા સમક્ષ દરળાર હોલમાં	
₹ <b>- १-</b> ४८	શિલોંગ	
3- 1-86	કલકતા	લલ
4-1 -86	ઇન્ડિયન મરચેંદ આવ પાર્ટી	
0- 1-86	લખનો	
25- 1-86	પડના રેડિયો સ્ટેશન મુક્લું મૂક્તાં	11084
**	" જાહેર સમા	***
18- 2-86	જોમનગર જાહેરસલા	- ગુજરાતાં
15- 3-80	" માનપદ્રની ઉત્તર	
14- 8-86		
	11	હિંદી –ત્રોગ્રેજ
₹0- ₹-४८		* T. F
24- 2-86		
24- 3-8C		
14-10-86		1
24-11-86	Coar Charles Course Color	
12-10-80		• •
30-10-86		· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
A CASE OF THE PARTY OF THE PART	#####################################	

नागपुर विद्यापीठ 3-11-86 नामपुर कावेरसला 8-22-86 नामपुर पोबीस परेड 8-11-86 क्टेट नेउवाहकरी जोडं X-11-86 વનારસ યુનિવ સિંટીમાં કેંગ્રેસ કા. 21-11-86 જાહેર સભા સાંજ ૪ વાગે પટેલ અભિનંદન ગંયુ, ગર્વમેન્ટ હાઉસ 28-11-015 ગ્વાલિયર ધારાસભાની ઉદ્દપાડન વિધિ 38-11-8C પોલીસ પરેડ અરવિંદ સ્ટેડિયમ 23-13-86 **જયપુર અધિવેશન** 38-51-05

પીલાની ગલ્સ સ્કૂલ

28-28-86

## પૂ. સરદારશ્રીનાં બાયલીની ચાદી

24- 4-80	કોંગ્રેસમાં	
80-80-819	દિલ્હીમાં ગાંધી ગ્રાઉન્ડ ઉપર	302161
13- 2-80	દિલ્હી રામલીલા ગ્રાઉન્ક ઉપર : જન્હેસ્સમક્-ગર્દધી- જર્મલા:	તલ
8-80-80	(દલ્હી ગાંધી ગ્રાઉન્ડ, જાહેર સભા	
	#ગાંધી જયંતિ:	
25-80-80	પાતિયાલા ગુરવારામાં : વપીરે વાર વાગે:	•
22-10-80	પાલિયાલા જાહેરસમા : બપોરે નવ વાગે:	
₹&-₹0-80	હોડલ : ગુરગાંવ ડિસ્ટિક્ટ : વર્ષારે મઢી:	
7	ગો રિસ્સા	
14- 1-87	વર્ધા એ. ગાઇ. સી. સી. માં	
&- C-84	प-नासास टेरेस श्रा - ८ रोउमा	ગુજરાતી
30- 6-80	<b>ગ</b> મૃતસર	હિશ.
12-11-80	રાજકોટ જાહેરસભામાં	ગુજરાં તી
16-11-80	વનસ્થલી, ભપીરે ૧૧ વાગે	હાલ
20-22-80	જયપુર જાહેરસભા-પ્રજામંડળ તરફથી	•
28-13-80	મ્હેરોલી પુસ્તકાલયનું ઉદ્યાદન	•
31-17-80	ગોહાટી જાહેરસમાં, સાર્જે જાા	- •

## પ્રત્યરદારશ્રીનાં લાયલોની વિગત anust and south much પોલીસ વડામોની કો - કર ન્સ દિલ્લી. ai 3 00 : મસ ઇ. બ્યુરી ગર્વમ ન્ટ ગીક ઇ (-ડિયા गांधी छनी प्रतिभानी अनावरल विधि हिस्की. (45) 22- 1-40 क्षेणोरेटरीनी उद्याटन विधि वणते आपे सं भाषत् 21- 1-40 वेर्न कार्न त्र मिन्ने प्र अबक्तार्न भावत स्वालंबय हिन अंगे संहेशो અંત્રેજ−ગુજરાતી પ્રદર્શનના ઉદ્યાદન વખતે 25- 1-40 પોલીસ પરેડમાં લાવલ (451 कीरेक्ट रीसर्थ छ न्क्टीट्यूटना की न्वीकेशन प्रसंभ 90 25- X-40 Lainin smein aund 94 21- 8-40 श्रीद्रकास्ट क्लक्ता 01 22- 4-40 ળો મેંગ હો સ્પિટલની ઉદ્દેષારન વિધિ વખતે મુંબઇ 9 2 28- 4-40 વાળકો માટેનાં પુસ્તકાલયની પાચી નાંખ્યો મુંબઇ BIBLE 9 - 10-40 क्वाभी ह्यानंह सरक्वती निवाल उत्सव प्रसंक AU 6-12-40

### પૂ. સરદારશ્રીનાં લાયલ્રોની વિગત

	Y- 1-1	मोपात्री उपर आपसुं लामहै।	
1.,	12- 1-	ાં પોલીસ વડા મોની કો −કર −સ દિહ્હી. : પસ ઇ. બ્યુરો ગર્વેય −૮ મોફ ઇ (િ-ડચા	435
2 .	29- 1-	પા ગાંધી છની પ્રતિમાની અનાવરણ વિધિ દિલ	લા હિંદા
2.	२१- <b>१</b> -	પાં લેખીરેટરીની ઉદ્યાદન વિધિ વખતે ગાયેલું તેનું છાયેલું પ્લેમ્ફલેટ	ભાષભ "
3A		કશકત્તાનું ભાષણ	
γ.	25- 1-	૫૦ સ્વાતંત્રય દિન અંગે સંદેશો	ર્ગેલ્રેજ-ગુજરાતી
ч.	₹ 5 - 1 -	૫૦ પ્રદર્શનના ઉદ્યાટન વખતે	
5	16- 3-	૫૦ પોલીસ પરેડમાં લાષણ	હિંદી
3.	₹- ४-	૫૦ કોરેસ્ટ રીસૌર્ય ઇન્સ્ટીટ્યૂટના કો ન્લોકેશન	પ્રસંગ
-	₹ 5 - ४ -	40 Lainin sonein ainn.	
v	₹1- ४-	પ્રદ્યા પ્રદેશ કલકતા	
4 .	રર- ૫-	૫૦ લોમ્ય હોસ્પિટલની ઉદ્દેષારન વિધિ વર્ષો	મુંબઇ
* *	₹₹4-	૫૦ લાળકો માટેનાં પુસ્તકાલયનો પાયો નાંષ્ટ	યો મુંભઇ
92	9- 10-	40 BEIMIE	
్తు	£-22-	૫૦ સ્વામી દયાનેદ સરસ્વતી નિવાલ ઉત્સવ પ્ર	ાસીંગ -

Two sets of Bapus

ii) 18 speeches

Numbers given according to the statement placed with spectan on each seke separately.

2 chartones.

### LIST OF SPEECHES OF SARDAR VALLARHEHAI PATEL IN 1950.

#### January 1950

4th Speech on Chowpatty, Bombey,

12th Conference of Police Chiefs in Delhis Press Information Bureau, G.of I.

15th Speech before the representatives & Teachers of College

(Calcutta)

Speech before the meeting of the members if the West 15th

Bengal Legislative Assembly.

22nd Unveiling the portrait of Mahatma Gandhi.

25st. Printed pamphlet about he opening ceremons

of Laboratory.

Calcutta Speech.

26th Independence Day message.

Performing the opening coremony of the Exhibition.

#### February 1950

2nd Reply to Shri Khandubhai Desai.

25th Preventive Detention Bill

28th Fast of Shri Shibban Lal Saksens Special Criminal Courts (Jurisdiction) Bill 28th

March 1950

1st Fast of Shri Shibbanlal Saksena.

6th Condolence motion over the death of Shri Sachhinanda Sinha

7th Hyderabad (a) & (b)

19th Police Parade in Delhi.

21st Debate in Parliament on White Paper.

#### April 1950

2md Forest Research Institute, Dehradum- message,

Calcutta Broadcast, 21st 26th

Planning Commission.

May 1957 12th On INS Delhi.

Speech at Arnakulans & Wellington Island, Trivendring 15th

14th 16th

I.N.S. Delhi. Message after Travencore-Cochin Tour.

Opening Ceremony of the Bombay Hospital. 22nd

24th

Children's library, Bombay, Speech at Charmi Road Garden

### उप प्रधान मेती सरदार मटेल लग माक्स । जो उन्होंने कांग्रेस वरकर्ज़ के जलके हैं दिया ।

पुरी पेजाब के काँग्रेस वाले जमा हुये हैं। कुछ चैद बाते मैं आप लोगों को कहूँ। स्क बात आप लोगों को मैं करूँ। जो सुनने के लिये हैं। असल मैं तो मुक्त आपकी वात सुननी वा दिये विकिन आम जास्ते हैं। कि मैं सी कहूं। क्यों कि बाप लोग बासमें बात करने लगैंग्रे। को भैरा स्थाल है कि कोई बात का अन्त नहीं आयेगा । बीर ब्राप एक दूसरे की शिकायत करने लगेंगे तेकिन पैजाब की जितनी बात मैं जान सकता हूं देखती मैं कैठे हुये उसमें से चैद बात मैं कह सकता है। क्यों कि मैं तो सिर्फ आपको साली सुलाह दे सकता हूं। ओर क्या के सकता हूं। क्यों कि मैं इधर होता और आप लोगों के ीच मैं रहता तो कुठ रस्ता जा सन्ता-। देकिन बाहर के हुने में जो रास्ता बताउँ उस रास्ते पर आ चिल सर्वे हो मेरा पक्का विर्वास है कि पैजाब को बहुत फायदा होगा। लेकिन मुके अदेशा है कि जिस हैंग से बाम बेल रहा है उसमैं शायद मैं कुछ भी कर्रु तो बाप लोगों के लिये चलना मुस्किल कोगा । पंजाब है लोग जो है। मेरा बनुभव है कि बहुत ही बच्छे लोग है। मले लोग हैं और बढ़े अदा वाले लोग हैं। कारीस पर उनकी मिलत पूरी है। और यदि उन लागा हो की में रास्ते पर चलाने की रेशिश की जाये तो जितनी क़ुरबानी करनी हो वो क़ुरते हैं। और असल मैं तो पंजाब ने जितनी कुवीनी की कीन कर सकता है। काफी कुवीनी की । जितनी भी मुसीबत पंजाब पर पर्छा किमी और प्रान्त पर आई होती तो उसके लिसे उठना मुश्किल होता । सेकिन यह सब लुक् बरवाशत करते हुये भी इतने दुख आप पर आ पडे। लेकिन मैं पैजान के लोगों को देखता हूं भेरा दिल भर जाता है। कैसे बेचार भले लॉग हैं। कैसे शद्धा वाले लोग हैं। ओर कैसे मज़ूत तगढ़े लोग हैं। तो इन लोगों को मैं कहूँ गा हमें आम करना है। वाम करना होगा। तो यदि स्क ये लोग स्क तर्फ सिंचे । दूसरी तरफ दूसरे सिंचे । तीयरी तरफ तीसरे सिंचे । तो किस तर्फ चलेगा । उसके लिये वही मुसीबत हो जाती है । श्रीर अगर श्रापको पैजाव के इस कराहीसस में सेवाकरनी है। तो आप लोगों को सम्भन्ना पढ़ेगा। कि इस सकतो साथ मिलकर काम करना है। अगर इस तरह काम नहीं करेंगे तो न अपना काम होगा न लोगों का। तो पहले तो मैं कहूँ गा। कि हमारी जो सरकार है हकूमत जिसके पास है उसकी तथा हालत है। क्या एक अवाज से नोल सकरी है। क्या उनके उपर ये लोग भरोसा रूल सकते हैं क्या उनको जो उनकी जो पार्टी है। या लोग सहायता करती है। उसमैं से तो पार्टी जो स्मार्ट देती है। सहायता देती है। तो चलती है। तो मैं क्हुंगा कि जो बातें मुके सुनने मैं आई है। बेहली मैं मुके जाती हैं। जलवारों मैं जाती हैं। मैं उधर की बात नहीं कहत में मामता हूँ कि इस तरह बात नहीं बलती । तो जो पार्टी के मैम्बर है यदि उसको अगर पैजाब का काम ठीक करना हो तो बलग २ वल बन्दी से काम नहीं होंगा । बीर एक दल वनना चारिये। श्रीर उसमै वे पार्टी मै वे स्क गरुप वनाया नाये। फिर मैजाव मैं हमारी पास इतने बादमी हैं । इसे भिनिस्ट्री में से इतना हिस्सा दो । दूसरा दल बनाया । इस को इतना हिस्सा दिया । तीसरा दल बनाया फिर इमको इतना हिस्सा दो । तो यह वटवाराकाकाम नहीं होगा। वटवारातो पैजावका हो गया। अव हमारा किस्मत

ोखने की की शिश को।

तो धेरी राये गही है कि आपको एक लीडर चुनका चाहिये। और उसपर मरोसा करते मिनिस्ट्री का काम सींप देना चाहिये । लीडर का काम ये होगा कि मैं किस तरह भिनिस्टी बनाउँ । लेकिन हमारा काम ये है कि स्क दफा एक लीडर चुना । तो उसके बाद फिर उसको जितना हमारे से हो सके साथ बना चाहिये। यसा न करो । तो मान लीजीय कि की हमारे कमैचारी जो हकूमत में सरविसंख वाले लोग है जो समफ जाया ये अवकूकों का गैवारों का गठ जोड है। उसमें किसका भरोसा करें। ये आब है कल चला जायेगा इसरा आयेगा तीसरा आयेगा । जो जाम करने वाले सरविस के लोग है वो पुराने लोग है वो अपना काम जानते हैं। किस तुरू काम करना है किस को राजी रिसना है। यदि य कांग्रेस में जो असम्बली में है। समफे कि यह जो कलक्टर डिप्टी कॉमिश्नर है। या इसके नीचे या उपर जो कुछ है। उसको भेरी वातेममननी चाहिये। क्याँ कि में असम्बली का मैम्बर है और उसे मैं जैसे कई उसी वरह मानना चाहिये। यदि हर मैम्बर इस तरह समके तो यह काम नहीं चल सकता। उनको कुछ अधि । दिया है। उस अधिकार के बीच न उन्हें काम करना है। और उसने हम दलल देते रहें तो हमारा काम चल नुका। और न चलना चा िये । अब उसके बाद हमारा दूसरा एक काम हो जाता है कि हम मिनिस्ट्री मैं बैठे। उसके बाद एक कीम का इतना और एक कीम का उतना होना नाहिये। इस तरह से हर जाम कीमी दृष्टी से देखें तो एक कीम का काम हो गा न दूसरी का होगा लेकिन एक कीम के बीच में फूट पह जायेगी । तो एम के डेल लिया कि कीमों के बीच में फुट पढ़ने से क्या होता है । तो ये देलकर भी हम अगर इस तरह चढ़े । तो इसरी फुट पढ़े गी । इसरी फूट पढ़े तो क्या होगा के श्रापको सोचना चाहिये ।

तो पेरी राखे थह है कि निनिस्ट्री इस दृष्टि से काम न करें। उनेको तो पेवाव के मले से लिये ही काम करना चाहिये। बाँए को मिनिस्ट्री मैं गये। उसके बाद को जसम्बद्धी मैं गये। उनसे अगर हर बीच मैं यह सवात पूकते रहे कि एक काम का कितना है दूसरी का कितना है। एक को क्या मिला। दूसरें को कितना मिला। उसकों क्या हुआ तो ये को हमाई अवलदार हैं। इस तरह काम करते रहीं। क्यों कि ही अभी हिन्दुस्तान को उठाना है। कीम को उठाना है। बीए क्या हम इसी तरह कोटी २ वीचों मैं मह जायों तो बड़ी बीचे रह बायोंनी। बीए कड़ी बीचे हमें क्यार मिल गई। तो होटी बीच की परवाह नहीं रहे गी। इतनी बीचे इसका मिल्ले वाली हैं उसका काफी काउया है। तो पहला तो हमारा करम है कि जल्दी है अल्ली मैजन का मला किस है हो। क और पैजाव है जो लोग प्रयादा तर वहाँ से होड़ कर बाये हैं। यो लोग हुती है। और हम खि होड़े कगड़ों हैं पढ़ें रहें है तो वो हो सम्ब्रेश कि हमारा तो बाम होता नहीं। ये लोग बपते कगड़ों से पढ़े हैं। अपने अपने । और उसके पीचे जो रिक्यूडी लोग है। उनके पास और उपर लोग जायों । उन्हें कहें में बीर उसके हुती दिल की और कप्ट देंगे।

ये तो है असम्बली की बात । कहते हैं । काँग्रेस करकरका । मैं नहीं जानूतर कि कांग्रेस वरकरण कीन लोग है। एक बादमी ने पूछा कि बाप कहा जा रहे हैं। तो मैंने कह कि कांग्रेस वरकरच की मीटिंग में। तो उस ने कहा। वरकरच की मीटिंग। तो उसने कहा कांग्रेस वरकरज तो देशा नहीं पैजान से । ये केसी ात । अगर पूर्वी गजान में कांग्रेसवरकरज होते तो ये गल्त क्यों होती । ये तो फ गड़ा ही लरते हैं । वा मुफे बहुतेदुल हुआ । कि कारीस वरकरात की या रैपूटी शन क्यों वन जाये। ये तो सरावी है। इसकी वजा वया 🏂। तो फिर मैंने सोचा कि काँग्रेस वाले ही ऐसा ारते 🐉 स्क गरोह की ात दूसरे गरोह से । अगर हमने ाम करना ही है तो इस तरह हो समता है । अगर एक काँग्रेस वासा दुसरे काँग्रेस वाले को तुरा भलादखता रहेगा तो इस तर्छ काँग्रेस बदनाम होगी । कार्रिस की परैस्टिज बढ़ाने से काम हो सकता है। असल में जो कर्रिस वाले लोग है। उनको क्यों काम करना नािये। दूसरा क्या बाता है। एवं इसकी परवाह होटदेनी नािये। कांग्रेस के पास कांसट किटव प्रोगाम होना जारिय । अगर हम एक दूसरे को बताते रहेंगे कि इस तर्ष ाम करना है। इस तर्ष काम करना है तो काम क्री होगा अब आप सन्के कि पैजाव मैं तो कई बादमी है। का कई रिफ्युजी स्कूल । लोग कर सकतेर कि काम नहीं हो रहा तो वो ठीक कहते हैं। कोई दो हज़ार सक्ट ज़मीन होडकर आया है। ोई पंज सी स्कड । जजतक उतानी जमीन उसे न मिले वो लुश नहीं होगा । पंजाब में उतानी जुमीन हैं ही नहीं उधर । लैकिन इस जुमीन के वैरीफाई के फगड़े में इम पड़े रहेंगे तो . जुमीन कहा से मिलेगी। क्यों कि गवर-मैंट के पास जितनी जुमीन पैजाब में है उसका उसे वटबारा करना पंढेगा। कोई कहेगा ध्यको धतनी ज़ुभीन देो। कोई कहेगा इतनी देदो। कीई अदेशा कि उसके प्रापोचीशन में जगह देदों । कोई सी एकड माँगेगा श्रीक कोरी पनास स्कड । इस तर्ह बराबर तो ज़मीन नहीं मिलेगी । इस प्रकार एक राये भी नहीं होगी अगर हम इस तरह के फगड़े में पड जायेंगे तो जाम नहीं होगा। तो हमने जो मिनिस्टी बनाई वो मिनिस्टी बैठ के अपना काम करे। और मुनासिब फैसला करें । बाकी लोगों को समफ ना चारिय कि अगर उन्हें ज्यादा ज़मीन मिले तो वो बाहर जासकते हैं। रियास्तों में काफी जगह पढ़ी है। इस तरहउनकी काफी मदद हो सकती है। शीर जा जो सुल में पड़ा रहना नाहते हैं वो थोड़ी २ ज़मीन देलों। थोड़ा २ वेलो । क्यों कि जहाँ जगह कम होती है। मैं बम्बर्ध की मिसाल आपको बता दूँ। वहाँ एक कानून बना है। कि एक बादमी के पास पनास एकड से ज्यादा जुनीन नहीं रह सकती । इस तरह मीर प्रान्त के लोग बाहर चले जाते हैं। क्या किया जाये। जगह नहीं है। आपीर इन्सान क्या करें यदि जगह थोड़ी है। और कादमी ज्यादा । जैसे इस्ट बैगाल मैं।

ायर में लोग चिडियों की तरह मरें पढ़े हैं। इसलिये तो जगा नहीं है। बाप लीग बहुत मेहनत करने वाले हैं। हिन्दुस्तान में ही शियार बीर मेहनती किसान हिन्दुस्तान है बहुत कम हैं। बापको हिप्मत नहीं हार्नी चाहिये। ये वक्त बदल बायेगा । जिलना हमें मिला है इस उसकी ते तैं। क नहां बोह दी। बीर काम करने तम आक्री स्वाक के टुक्ट होने से चिन्दुस्तान को बहुत चोट लगी है। चिन्दुस्तान की उन्नति ब्रोर बार्षिक ढाँबा टूट गया है । पैजाब हिन्दूस्तान का बनाज घर था । बब वी हिस्सा उस तरफ बला गया । पैजान ती एक गरीन भादमी नन गया । इम पैजान से अनाज लेते थे । लेकिन अन इसकी बनाज दैना पढ़ा है। बीर उधर जी हिस्सा पढ़ा है उसकी जितना थन ज़मीन मेर बदा 🕷 करना नास्यि उतना धन पदा नहीं हो रहा है। क्यों कि हमें पता नहीं कि हमें कितनी जुमीन मिलेगी । श्रीर कितनी पर्मानैन्ट तीर पर मिलेगी । इस लिये किसान दिल लगा कर काम नहीं करते । क्यों कि अभी हमारा दिमाग नहीं लगा । भी पता नहीं कि इमें कितने साल के लिये इमीन मिली है। श्रीर उघर सिंध से लोग आये। बेगाल से आये। अनाज उम के पास नहीं । हिन्दूस्तान में अनाज का तोड़ा है । चारी तर्फ से हमारी मुसीबत बढ़ती जा रही है। मुसीबत का एक ही उपाये है कि जितना अनाज हो सके पैदा करें। काम मैं लग जायें। दी तीन साल काम करें। ती मुसीबत सत्म ही जाये। बहुत लीग कहते हैं कि सुराज मिलते ही लोगों की अधिकार मिलना लाहिये। हिन्दुस्तान के पास साधन होता तो वी जरूर देता । ये चीज आपको समक नाचा स्थि कि का, गैस के जो काम करने वाले लोग है जो मिनिस्ट्री है। अगर मिनिस्ट्री में फगड़ा ही चलता रहेगा तो काम नहीं चलेगा। इस तरह तो काम और मुश्किल हो जायेगा । काँग्रेस की आरगनाहीं आत और मिनिस्ट्री में कीपरैशन होना चा हिये। अगर हम लहते फ गहते रहे तो ठीक है। दूसरे इतेक्शन में अगर हमारी हिम्मत रही तो हम आ जावेंगे। जिस शख्य की पैजाब की पढ़ी है उसकी समकना चा हिये कि जैंग सेकाम लेने से काम विग्रहेगा । इलैक्शन का समय कब आयेगा यह ती मैं नहीं जानता । अभी इसमें देर है । लेकिन इंधर तो भी एक साल , दो साल , ये जो किसिज का समय है। इसकी फ गढ़े मैं नहीं कटना चाहिये। एक एक मिनट हमें काम मैं लगना चार् चा हिये। अगर काम करते हुये बुरा समय आये ती फिर देशा जायेगा । पैजाब की जी चीट लगी है उसकी ठीक तरह से सैवारना है। लेकिन पैजाब के जितने काग्रेस मैन है उनकी एक सलाइ दे सकता है। कि एक दूसरे की बुराई करने से कोई फायदा नहीं। श्राप श्रपना काम सैमाली । दूसरे की बुरा ह कोडी । हमारि सर्विस में बीर का नैस वाली में लोग कहते हैं कि बन की परेशन घुस गई है। ठीन है एक बुरा है दूसरा बुरा है। अगर मैं अच्छा हूँ शीर दूसरे बन बुरे हैं तो दूसरे कहेंगे कि मैं बुरा हूँ। हम सही रास्ते पर बलें शीर दूसरे को भी अपने साथ हैं। में जो काँग्रेस का और गमाई जिला है। उसे यही कह सकता हूँ कि आपका और आपकी मिझिस्ट्री का कीपरैशन होना चाहियै। अगर साथ नहीं दे सकते तो ज्यादा से ज्यादा में यही क्ष्ट्रेग कि उठाओं इसकी । और बुद सैमाली ।

श्रीर बुराई करता है। इस प्रकार की बुराई का श्रापक पास सबूत है।

लेकिन ये भी न करों तो बापको समक लेना चा हिये कि बाप कांग्रेस की सेवा नहीं कर सकते बाप सर्विस के बारे में को अनलवार लोग है। मुक्ते कहा जाता है कि इसको भी बुक् कही में कैसे कहूँ । क्यों कहूँ । उनकों तो सिर्फ वहीं कह सकता है जो उधर श्रिकार में पैजाब में बैठा है उसको इलम है। कि सरविस क्या करती है सर्विस के लोग क्या कुर्ते हैं। लेकिन उक सामान्य कहावत है कि जेसा लोग है ऐसा एज होता है उन लोगों का । जिसकी जेसी लियाकत है वैसी ही हुकुमत मिलती है। सेकिन हचर उल्टा हुआ। लोग मले हैं और जैसा राज वह बाहते हैं वैसा उन्हें मिलता नहीं । यह बहुत बुरा हुआ कहते हैं । Регри Getthe Gout They down लेकिन इचर लोग मले हैं और जो हाकिम हैं वो इतने लोग जिस प्रकार का राज उन्हें वाहिये वैद्या राज नहीं मिला। वो कहते हैं कि वी सुद अपनी एक दुसरे की अक्तायत करते हैं। क्यों कि का नेस के मी लीग मह है तो पहे ही हैं। तो मैं क्या कर । मैं बाप लोगों को दोनों को तो मन कहा से किन सर्विस को तो कहने की बात नहीं। सर्विस का जो अनवदार है उनके पास तो एक इश्वर अगर स्कुमत चलाने वाले दोनों ,यदि स्कुमत चलाने वाले हैं। अच्छे नहीं हैं तो मैं सर्विस को क्या कहूँ। और उसके पास क्या कहूँ। और उसके कहने से मेरा काम नहीं हुआ लेकिन इससे पहले तो सरविस के पास मुक्ते सहना चाहिये। मैं कुछ कई तो उसकी बात सुनना चाहिये। कि क्यों मा है कि इस फ़िलायत के बारे में आप क्या कहते हैं। लेकिन वी हुद कहें कि मैरी शिकायत क्या है। उन लोगों की शिकायत सुनी । वो ती बहुत बुरा हुआ । तो सरविस के पास कोई प्रकार की अपकी शिकायत हो तो उसका कोई मी गुनाह हो तो उसे बिगडना चाहिये और आपके पास स्कूमत है उसकी संज्ञा दे सकते हैं लेकिन ऐसा नहीं समफ ना बाहिये कि सर्विस मैं बासानी से सज़ा हो सकती है मुसीबत मुश्किल है। उनके लिये जी कायद कानून रेसा है कि जल्दी २ जिस तरह अपने घर के नीकर को निकाल सकते हैं इस तरह से नहीं निकाल सकते । और उसके पास जो स्कूमत दी हुई है और उनसे जो हो सकता है वो अपनी मयौदा के बीच मैं मला अब कर सकता है। मला आदमी मला करेगा । बुरा आदमी बुरा करें गा । सैकिन जल्द उसे इटा नहीं सकेंगे ।

तो सरविस को मैं अपील तो कर सकता हूँ क्यों कि सरविस मैं बहुत से तो पंजाबी हैं बाहर के बहुत कम हैं। और मैं इतना कह सकता हूँ कि मेरी इस कमा पर इस कराई सिख में पंजाब की कमादारी नहीं करेंगे। तो इसर तो माफ हो जायेंगे। तिकन ,पमात्मा माफ नहीं करेंगा। कभी नहीं करेंगा। तो बाज तो सरविस में पठा है इसका यही हमें हो जाता है कि अपनी सब बीख छोड़कर बाँगुंस मेन की गल्दी को लिये जाये। कुछ हमारा थोड़ा नुक्सान हुआ उसे भी बरहाइत करना के होकन लाखीं पंजाबियों का जो दिल गंबा बाये हैं उसे ठीक करने की कोशिश करनेंह। तब बुद राखी हो गा। इसरे तरिक से नहीं हो सकता। तो मैं कह सकता हूं। इससे इजादा मैं क्या कहूं। क्योंकि मैंन इसकी बात नहीं सुनी। तो मैं उसकी कैसे कहुं कि वो मुनाहमार है लेकिन हम तो मुनाहमार है क्योंकि हम तो इक दूसरें के सामने सबूत से देते हैं। आपस में। तो हम तो मुनाहमार बैठे हैं यदि हम बैठे हैं तो हमें सपनेजापको साफ कर देना चाहिय। अगर हमारा दिल साफ नहीं करेंगे तो साम नहीं चलेगा।

तो जो कुछ हम से हुआ सो हुआ अब जो इतने कांग्रेस वाले यहाँ बैठे हैं उनको

एक बात कड़ेगा

ि गाँभी जी को याद करों । इश्वर को याद करों । बीर काँग्रेस को अदनाम करते वाला बाम न करों । जिससे काँग्रेस की इस्मान होगा । आपको नुक्सान होगा । प्रान्त को तो होगा ही । बाज आपके सामने देसा मीका बाया है कि ये स्वर्तत्र मारत के इतिहास का नया बाब हम लिसते हैं । एक तरह से इतनी मुसीबत पहते हुंगे मीपंजाब की इस्मान काम ज्ञान हों है के मीपंजाब की इस्मान काम ज्ञान हों है है मीपंजाब की इस्मान काम ज्ञान हों है है मुसीबत उठाकर । बबना बोक जो ठीक उठा रहे हैं इस बीस को इस समकाना चा हिये । और इमारी इस्मान बोक जो ठीक उठा रहे हैं इस बीस को इस समकाना चा हिये । और इमारी इस्मान खेता हों है उन्हें समकाना चा हिये । और इमारी इस्मान खेता हों है उन्हें समकाना चा हिये कि इस का बा करना है । अब दो ची इस्मान इस मैं सैमालनी हैं । एक तो बीमी मावना की छोड देना चा हिये , अयो कि यह बहुत बुरी है और अब उसके लिये ज्ञान नहीं है क्योंकि इमारे पंद कालती माई वो ऐसी वहा दुर कीम है ते किन बढ़ा हुर होते हुये भी उसे डर लगा कि ये हिन्दू लोग इतनी बड़ी ताकत मैं इयादा होते हुये हमें ता जायेंगे । मुक्त बहुत हुत हुला कि क्यों उसे ऐसा ह्या होते हुये हमें ता जायेंगे । मुक्त बहुत हुत हुला कि क्यों उसे ऐसा ह्या होते हुये हमें रहते हुये ।

हमारा तो यह फर्ज हो जाता है कि जहाँ तक हो सके उन्हें आगे रसी लेकिन उनका मी एक फर्ज होना चाहिये कि काँग्रेस पर महोसा रखी । कुछ गल्ती हो तो उसे सुधार सकते हैं। लेकिन कमी तलवार नहीं बताना चाहिये जो अपनी स्कूमत हो उसे तलवार बतानातो समभो कि स्कूमत सत्म हो जायेगी और अंगर स्कूमत होगी तो यह नहीं समम्तना बार्यस्य कि स्म को मिलेगी । वो इमाना जला गया ये दूसरा जमाना है चाहीना में ,हान्ही नेष्या में , बमी में मलाया में , यह सब चल रहा है। वैसी हालत अगर हम इधर बेदा कर देंगे तो आज तो कुछ दुनिया मैं भी लोगों को उम्मीद है कि हिन्दूस्तान एक ठीक है , जो ठीक रास्ते पर जल रहा है शीर हमारे मुल्क में भी काफी लोग के उम्मीद रखते हैं कि हम कितने भी पिछ्ट हुये हैं लेकिन हमारी एक हकूमत है। एक तरह से मज़बूत है और हम गिरते पढ़ते चलते हैं और आगे उठते हैं तो दो काम हमें सैमालना है। एक क्मृयूनलिईम और एक क्म्यूनिइम । जो कम्यूनिस्ट लोग है वो जो रैढ फलेंग वाले वो लोग ने चार्रना को तो कर दिया बमी का हो रहा है अब हिन्दूस का है। तो दिह्हू हता दह हिन्दू स्तान है मैं तो मैं तो अभी आया है हैदराबाद से। दो डिस्ट्रिक्ट है हैदराबाद के , तो जिस मैं यह तीन बार महीने हमारी पूलीस रैक्शन जो वहाँ हुई। उसके बाद इतने तीन चार महीने में ,दो सी ऋडाई सी कांग्रेस मैन को मार डाला । यदि डिस्ट्रिक्ट में अढ़ा है सी का रोस मैन का जून किया । उसकी मारा है तो ये तो आजाद हिन्दूस्तान नहीं हुआ । क्यों कि जैसा गुलाम था वैसा सब मी नहीं हुआ था । यदि हमकी आपू मिली तो इमार इस तर्ह चलाने वाले हैं। तो इस तर्ह चलायेंगे तीं इमारे पी है लोग करेंगे कि गुलामी अच्छी थी । बहुत हुवा हुवा । तो मन वपील किया एक कम्यूनिस्ट को है बबी हैदराबाद में उससे कि ये भार पीट का रास्ता होड दो । इस तरह से कोई स्कूमत नहीं होडे गा। इम नहीं हो है गा यदि अपको स्कूमत में हि सा तेना हो ती ये रास्ता हो स्कार आओ हमारे सौथ । क्यों कि हम किसी कम्यूनिजम या इस से मी आगे बढने वाले से नहीं दरते ।उसके साथ इम इरिफाई करने के लिये तैयार है। लैकिन इसका इत्यार मैला है। उसे होड देना ना

उसके साथ उस स्तिकाई इस तरह नहीं करेंगे। कि को इसारे माहियों को मारकर काम करता है की जंगात में करकरता में देखिये। एक कार्ताना में मटी में नार पाँच भावसियं को जिन्दा जला दिया। यदि मजुद्दों को हती रास्तेष्ठ काम लेना है तो कल एक कार्ताना में परसीं दूधरे में जीवरे में तीवरा। वसी में एक मिनिस्ट्री को कतल किया महिल्ल इचर भी करेंगे। केरे गांधी जी को मारा है दूधरे को भी मारेंगे। मारते मारते किर क्या होगा। सत्य होंगे। आखादी तो चली गई। समक लेना किर गुलामी में परेंगे। कहें में नालायक लोग थे , कांग्रेस की जूम्में नारी है और हम लोगों की तो में कहता हूं कि अटक जाओ उसमक लो किकहा तक हम आये हैं। पीके हटो , इस गलत रास्ते से आये हैं हसे लाह दो। इससिये हम लाचारी से बहुत रोजे दिल से मास्टर तार सिंह की पकला पहा।

आर .रैस नालों को भी फकडना पड़ा । कि तुम लोग मुत को कहाँ से जाना चाहते हो । क्या चाहते हो । क्यि से लहते हो / क्यों हमारे साथ रैसा करते हो ,ये मार पीट का रास्ता छोड दो । और जो हमारे मोले माले लोग हैं उसको नौजवानों को यह रास्ता न सिसाओ कि हम तलवार से लेंगे । ये तो हर आदमी रैसा करेगा । वो गल्त तरीका है ।

जो कुछ आसनी चा हिये , आपस मैं बैठकर समकीता करके काम कर सकते हो । ते किन दूसरे रास्ते से नहीं । ते किन दूसरा जो कम्यूनिस्ट का रास्ता है मार पीट का रास्ता है । उसकी मी कहो कि तुम भी भीतर आओ क्यों कि हमारे पास कम्यूनिस्त्र में कोई वेर नहीं । कम्यूनिस्ट आसिर चाहता क्या है । कि सकको ठीक हिस्सा मिले । हम भी यही चाहते हैं क्यों कि यही रास्ता गांधी जी ने बताया कि अपने पास कुछ रहानहीं । ठीक है यही रास्ता । ते किन गांधी जी ने जो रास्ता साफ २ आपको क्याया था वही रास्ता आपको तैना चा हिये । यह मार पीट से नहीं । मुहस्यत से , प्रेम से अपने तोग हैं , अपने मुख्क के तोग हैं । तो मैं एक दूसरे के मार पीट करने का काम नहीं सीसा । ऐसे तो हमारे मुख्क में कोई राज नहीं पस सकता ।

अप पूर्ट इस्तयार से काम नहीं तेते हैं। तब मैं कहुंगा कि मुलक में दो की ज का सतरा है। एक तो की मी वाद , और इसरा साम्य वाद । यह दोनों वाद से हमें कचना है। तीसरा जो हमारा वाद है वो अजीव है , वो आर .रेस रेस समझों ने जलाया है। आर .रेस रेस वात से ये समक कैठे कि लगारी सैस कित दूसरे पर इक्स हस्ती से काम तेना है। जितने तो मक्क रहसी से काम तेना कहरते हैं वो सब बुरे हैं। कार हम ये वेस से इक्स हस्ती करते थे तो ठीक था। अवती मुल्क आक्राद हुआ परदेशी से इक्स हस्ती करने को हक करते थे तिकन अगर हसी हम रेसा करेंगे तो बहुत दुक्सान होगा। मर आयंगे। ये जो आर .रेस .रेस वात हैं कहते हैं कि हिन्द्र स्थिकृति और हिन्दू राज होना वाहिये। तो मैं तो कहता हूँ कि जितने मुसलमान हमारे मुल्क में हैं उतने पाकिस्तान में , वटवारा हो गया। हथर जो मुसलमान परे हैं कमर हम उनसे

फ गड़ा करें तो काम नह? चलैगा।

जिस प्रकार का हम हिन्दुस्तान बलानी बाहते हैं वो नहीं वल सकेंगा । जो हिन्दुस्तान का वफादार नहीं की हिन्दुस्तान होड दें। जी मुसलमान इधर रह गये हैं वी अपने आप को हिन्द्रस्तानी समकत है उनको जगह मिलनी चाहिय और जितन भी कीमें है। सिक हैं , इसाई हैं, पार्सी हैं , कोई भी हो सब यह समके कि हिन्दुस्तान के रहने में कोई सतरा नहीं । हमारा मज़हब ठीक है । हमारी कीम ठीक है बगर कोई कहे भीज सपद्ध हमारा राज था तो अब हमारा राज होना चाहिय । यह तो गल्त रास्ता है आर. रेस .रेस वाले रेसा कर रहे हैं अगर .रेस .रेस वालों को पकड लें किस किस की पकड यार . ऐस . ऐस वाले को फ्कर्ड कमयनिस्ट को पकर , इस अकाली सीहर को फ्कर्ड इस तर्ह पकड़ते पकड़ते हमारा नाक मैं दम का जायेगा । जगर राज लेना जाहते हो तो लेला मैं मिनिस्टी को यह सलाह दुंगा कोई कहै कि हम जो कहते हैं उसी रास्ते पर जहीं ती इस तरह काम नहीं चलेगा । बार बार गवरनीट को बदलना अपका काम नहीं । एक दफ पसन्द करके गवर्नींट साफ कर दो । नहीं तो श्राप लेलो । अगर नहीं लेते तो शिकायत करते रहना भी बुरा है , काँग्रेस की इस तरह हजूनत गिरती जा रही है । और कारकार बाज लीग कहते हैं कि काँग्रेस वाला रैसा ही है तो फिर मला कीन हो । और बुरा कीन है। सभी इस प्रकार की निन्दा करते रहते हैं। इतना होते हुये भी लोग हमारे पीके लोग लगे हैं। कोड़ते नहीं हैं। काँगेस की जो परैस्टिज है। जो इज्जात है इसको सैमालना होगा । तो सैमालना हमारा धर्म है । हमें एक ही रास्ते पर चलनाहोगा । मैंने जो मोटी मोटी बातें बापके सामने रखी हैं इसपर सोचो ूमें पंजाब में युनिवसिटी के काम के लिये बाया था। थोड़ा पुलीस का काम था , काँग्रेस के काम से नहीं बाया था । और फिर आप लोगों की हालत भी दैसनाथी ।

तो चैद पैटों के लिये बाया । लुकिन मैं नहीं इह सकता हूं कि पैजाब की पूरी हालत जानता हूं मीटी मोटी बातों को जानता हूं बीर इसपर जो कुछ मैंने कहा उसे बाप सोचें । कि फराडा करने की इकरत नहीं बाज सबसे पहेंसी इकरत हमारे एक होने की है । दूसरी काम करने की इकरत है , तीसरी इस बात की इकरत है कि होटी होटी बादों हों है । वीधी हमें जो कम्यूनिस्टों का सतरा है उसे दूर करना है उसका सामना करना है । यह चार पाँच चीचें जिन्हें नचर में रसकर काम करना है । इम बीर मिले में तो यह जानता हूं कि पैजाब ने बड़ी कुबीनी की है जिस में बास सब हैं । तुम होगा अपनी कुबीनी से कुछ फायदा उठाने की को शिशा करिये । विगासड न करें । सोग हम से बहुत मरोसा रसते हैं । हम यह मरोसा सोगों को हैं ।



2 years

3 T

माननीय सरदार पटेल का कलकते में दिया हुआ सार्वजनिक

मापग

प्राचम मिनिस्टर साच्य , माइयो और बहनो ।

बहुत दिनों के बाद आप लोगों का दर्शन करने का मौका मिला। बहुत **बाहता था मिलने के लिए। बार बार मैंने को शिश की लेकिन मेरी शारी रिक कमजोरी** की वर्ज़ से मैं हिम्मत नहीं करता था। लेकिन श्रासिर ईश्वर की कृपा मुक्त को भाप लोगों को मिलने का जो अवसर मिला है उस अवसर पर कुक़ दो शब्द में आपको कहना चाहता है। मैं बैगाल का जो दर्द है पूरी तरह से जानता है। और मुफ को रात दिन इसका ख्याल रहता है और उसके लिए मेरे दिल में काफी दद और हमददी रहती है लेकिन कितना भी ददै और कितनी बढ़ी आपति और विपत्ति आवे हमारे पर लेकिन बैगाल की जनता पर हमारी पूरी श्रद्धा है और हम जानते हैं कि बहुत बढ़ी कठिनाइयों का मुकाबला बार बन्धर बैगाल ने किया है। ये कोई पहला मीका नहीं है लेकिन सारे हिन्दुस्तान की आजादी की नींव डाली गई तब से आज तक जब जब मुसीबतें बाहें तब बैगाल ने बहादुरी बताहें हिम्मत बताहें। पहलें तो बैगाल के ऊपर जब परदेशी हुकुमत हिन्दुस्तान के ऊपर थी तब परदेशी हुकुमत को हटाने के लिए जो की शिश हुई उसमें बंगाल के नैता और का और बंगाल के नीजवानों का जो हिस्सा था उससे बैगाल पर काफी जुल्म किया गया है। उसका मुकाबला किया बढ़ी हिम्मत से. बढ़ी बहादुरी से उसके लिए सार् हिन्दुस्तान बंगाल का ऋगी- है। और इसको बंगाल को कभी हिन्दुस्तान कभी मूल नहीं सकते । इसके बाद जब हुकूमत हट गई या हटने को तैयारी हुई। आधी हुकूमत तो परदेशी थी लेकिन जब आधी अपनी हुई तब मुस्लिम लीग का एक प्रकार का आधा राज्य हुआ । आधी हुकूमत उनकी हुई और आधी अंगरेज की हुई। बीच मैं कोई हमारा हिस्सा था तो नाम का था लेकिन उस समय पर काफ़ी मुसीबत आपके/पढ़ी और उसका सामना आपने किया । बैगाल पर हिन्दुस्तान कमी डाइरेक्ट रेक्शन है' जिसको कहा जाता था उसको कमी मूल सकता है कमी नहीं मूल सकता है। और उसके बाद कलकता का जो हाल हुआ वो कीन मूलता है कैसे मूले २ लेकिन उसके बाद उसमें से भी अाप निकल गए। उसके बाद नोआखाली में क्या हुआ ? वों भी कैसे आप मूलें। कैसे श्वाप श्वाप श्वाप केसे हिन्दुस्तान मूल सकता है। वो इतिहास का जो पान है वो मले बुरे जैसे हैं वो वहां से हट नहीं सकते हैं। तो उसमें से मी श्राप लोग निकल गये। हैर'इधर जब समय श्राया कि बैगाल का क्या होगा बूं कहना मुश्किल है और जब ऐसा समय आया तब गाँधी जी इधर थे वो लो आसदी में गये गाँव गाँव अपने आप पैदल चल के लोगों के दुस में हिस्सा लिया कुछ सहारा दिया।

उसके बाद कलकते में आके कई रोज ठहरे । आपके साथ या गुस्से में आके या सहानुमृति का प्रदर्शन करने के लिए अपने दुल के कारण से गुस्से मरे हुए हमारे विहारी माहयों ने उसी समय पर रौष प्रकट किया और उसकी भाग हिन्दुस्तान मैं फैली । उत्तर हिन्दुस्तान मैं ज्यादा फैली । उनका <u>किस्सा</u> श्राप सबको मालूम है । लेकिन ऐसा समय श्राया कि जब हम ने सोना और सारे हिन्दुस्तान की एक राय हुईं। श्रापकी भी उसमें राय यही थी कि यह समय ऐसा है कि हमें किसी न किसी तरह सेष्ण्येसी हुकूमत को इधर से हटाओं । और उसके लिए जो कुवीनी करनी पढ़े सो करें। क्यों कि जब तक अंग्रेज़ हटें नहीं तब तक या उसमें कितनी कैसी भी इनकी नियत हो लेकिन यह मुल्क में शान्ति होनी असम्भव है। और दोनों की म के बीच मैं भी फ गढ़ा मिटना मुश्किल है। अब उस समय पर हमने यह निश्चय किया कि या हिन्दुस्तान/का टुकड़ा करना पढ़े तो एक ही स्कि से हमें मंजूर कर सकते हैं कि पैजाब का भी हिस्सा होना चाहिए और बैगाल का भी दो हिस्सा होता चा किए। यह है इवर की वृत्ति है कि जो बैगाल वो खुद तो इना नाहते थे उसका हिस्सा करना चाहते थे। श्राप लोगों ने उसको रोका । रोक कर उसके लिए काफी कुवीनी की सारै हिन्दुस्तान ने साथ दिया । उसी बैगाल का दो हिस्सा करने के लिए हमारा समय श्राया श्रीर हम सबने मान लिया कि उसके सिवाय कोई चारा नहीं । श्रीर श्रापमें से सबने कोई हिन्दुस्तान में रेसा नहीं था उस समय जो अपना आवाज विहोध, जोर से निकाले क्यों कि सब समफ गए थे कि उससे सिवाय कोई और रास्ता मालूम नहीं पढ़ता। श्रीर हमने सोच लिया कि कलकता हमारे पास न रहे तो हमें किसी हालत में उसको मैजूर नहीं कर सकते हैं। मुस्लिम लीग के नेता इसको नहीं मानते थे। वह मानते थे कि यह जो पाकिस्तान उसको तो हम मैजूर नहीं कर सकते हैं। हमें तो सारा ही लेना है • सकरा बैगाल और सारा पंजाब। उसका फगढ़ा बलता रहा । श्राखिर में उसने भी मनन लिया श्रीर हमने भी मान लिया। लेकिन यह मानने के बाद भी उसका जो नतीजा श्राया श्रीर जो सुना मरफी हुई, जो गाय हिन्दुस्तान की जो बोट लगी, वह अभी तक गरूज़ नहीं हुई है श्रीर उसको कुछ समय लगेगा । बैगाल को काष्ट्री/उसका घाव 🕶 गहरा है उसको कुनै मैं मी समय लगेगा । धीरज चाहिए , हिम्मत चाहिए आपके पास काफी ऐसे मौके बाए जिसमें आपने धीरज और हिम्मत बताई । आज भी यही मौका है सबूरी रही । हिम्मत रखो । अच्छा दिन आयेगा लेकिन अपने हाथ से बिगाइना नहीं । यह काम हिम्मत धीरजर्भी सम्भ पूर्वक करना पड़ेगा। गुस्से से नहीं होगा और ने मुनाबी करने से विगड़ेगा। हमारे माहे जो हमूसे बलग हुए उसमें हिन्दू है मुसलमान हैं। जो हैं|मै पैजांब की बात कोड देता हूं। भी बंगाल की बात लाली करता हूं। दोनों हिन्दू और मुसलमान वहाँ मी सुबी हो , इधर भी सुबी हो । और हमारा मान जल्दी के बाय, ऐसा हमें करना चा हिए। लेकिन मुश्किल यह दोनों तरफ से हिम्मत धीरज और कुछ बुद्धि से काम लेना पढ़ेगा। हममें से 🖎 कई लोगन वहाँ भी मूल सकते हैं किन इधर की मूल सकते हैं और

1

बार बार क्रमद्धा होता है। तो बैगाल का ददै तो किसको मालूम नहीं है। वहाँ वो लोग स्मारे पढ़े हैं वह परदेशी होगए। जो कल हमारे माई हमारे सम्बन्ध साथ हमारी आबादी की लढ़ाई में शामिल थे , कुवानी करते थे, वह सब परदेशी होगए, और हम और नो ऐसे अलग होगए कि एक दूसरे के दुल में सहानुमूति 🖚 नहीं दिला सकते हैं 🛴 ऐसा मिन्न नहीं सकता है। अभी अफ़रीका सैं पढ़े हुए हमारे लोग थे। दिख्य अफ़रीका में उसकी सहानुमृति हम बता रहे हैं और जो नैतिक स्मेम्न उनको देना चाहिए वह भी देने की को शिश करते हैं और वह अपेदा भी रखते हैं। वह अफ़रीकन शहरी माने हुए तब भी उनका हमारे पर हक है। पुराना जो हक है। तो उस बेगाल के ये दो जिस्सा हुआ तो हस तरह से वे को है अलग थो है ही हो सकते हैं और हमारी रिश्तेदारी हमारा सम्बन्ध हमारा आर्थिक सम्बन्ध वह कैसे टूट सकता है। तो यह तो हम मूल नहीं सकते हैं लेकिन इसमें बो मुहिक्ल और रुकावटें जो पढ़ती हैं उसको हमें एका करनी हो तो पहले हमें हमारा घर ठीक करना चाहिए और हमारा घर ठीक न हो तो हम बाहर मदद नहीं कर सकते । तो दुल तो हमारे सामने है । लाला आदमी हथर आके पढ़े हैं कलकता में पढ़े हैं बाहर बैगाल के र् दूसरे हिस्से में पढ़े हैं। मागे मागे आये हैं। अपनी माल मिल्कियत कुछ मी हो, कोड के आये हैं ,सगा सम्बन्धी को कोड के आये हैं। कई लोग उनको बहकाते भी हैं कि ये गवनैमेंट कुछ नहीं करती केन्द्रव गवनैमेंट कुछ नहीं करती जान्त की गवनैमेंट केन्द्र जान्य केन्द्र जान्य गर्म केन्द्र गर्मा केन्द्र में के लगे के उपलब्ध के प्रकार करें कुछ करेंद्र करती नहीं देती में की जापके हीमने सोचने के लिए बात खता की कि दुल हमें इन लोगों का मिटाना है। और हमारा मी दुल है तो मिटाना है तो हमें पहले हमारा घर ठीक करना चाहिए। तो बाज हमें बैगाल में बास करके कलकता मैं जो एक चीच देखते हैं/सोरा हिन्दुस्तान देखता है, फीससे उसको दुल होता है। वो ये है कि हु रोज कुक न कुक रेसी बात अखवारों दें आती है कि कलकता के इस मार्ग इस हिस्से में इस गली मैं इधर बम्ब पढ़ा है और इस जगह पर बम्ब पढ़ा है। इधर कोरे क्रेकर पढ़ा इधर ट्राम जलाई ,इधर मोटर जलाई ,उधर पुलिस को बोट लगी, इधर पुलिस मर गई , इधर नौजवानों को पकढ़ा ,इधर जेल मैं रसा ,जेल मैं फाका करते हैं ऐसी ऐसी बार्ते जब रात दिन चलती है, तब ऐसी हालत मैं काम करना तो जिन लोगों के पर दुख पढ़ा है वो बुख तो रह जाते हैं लेकिन इस मुसीबत में हम फैसे कि उसको कैसे ठीक करें, तो बाहर का लोग जो जानते नहीं है उसको तो मालूम ये हो जाता है कि सारा कलकता मैं कुछ इतनी अराजकता फैलाई है कि वहाँ कुछ काम करना ही मुश्किल है और रहना मी मुश्किल होगा ऐसा लोग मानते हैं। जब इधर बाते हैं तो मालूम पढ़ता है। तो ऐसी तो कोई बात नहीं है। चन्द लोग विगदेशीर/पुर्दिश मर लोग सार कलकता को तैन करना वाहते हैं। वो कलकता की बंगाल की सरकार को भी तंग करना वाहते हैं, बीक लोगी को भी तैन करना चास्ते हैं। और स्क्पुकार का जुल्म करके सबको डराना चास्ते हैं और अपनी क्या मैशा है मैं नहीं समकाता क्यों कि मेरी समक मैं नहीं आता है कि इनका मतलब क्या है , वो क्या करूना बाह्न्स है १ मैं कोई कम्युनिस्ट साम्यवादी , श्राह िया -लोजी समझ सकता है। लेकिन मैं ये नहीं समझता हूं कि इस तरह से नुकसान करने से

बम्ब कोट करने हे धींगामुस्ती करने हे क्या क्या पीच मिलके वाही है। हैकिन उसके *जीन नार्य मिल के कि की देश हैं में* साथ साथ मुक्ते जो दुव होता है वो कि हम्हिस बीच को क्या सकता की बीर हसकी तरफ हमारा क्या ख्वाल है ,क्या हमारी फ्रुब है उसका ख्याल नहीं करते । क्यों कि यह सब काम रहेकने का पुलिस का काम है ,यो सरकार का काम है हमारा काम नहीं है। इस तरह के समफ ना वढ़ा गलत इत्याल है। क्यों कि ये हुकूमत जो है बाज को परदेशी नहीं है। यदि परदेशी: हुकुमत होती ती पहिले पुराने, जमाने में जिल्ल और काम लिया उस ढंग वे काम लेते वो हम नहीं ले सकते । हमसे नहीं हो सकता है ,नहीं होना नक्ष हिए। हाँ ,जब आपका ख्याल होगा ऐसा कि नहीं ये हुकूमत हमें नहीं ना स्थि उस समस पर जाप हटा सकते हैं। पहिले कहें महीनों पर हमारे प्रधान मन्त्री इधर जाये हमारा नेता हध्र बाया । उसने देला और कहा, है कि बच्छा यदि बाप स्लेक्शन चाहते *करना न्यारेत है जार्चमूर बर्चना न्यारेत हैं - दुनाव कर केरी हुम* । है बुनाव <del>कर ते । नो क्या है १</del> और कोशिश करी अब आप **वाहते हैं न वाहते हैं** लेकिन उसने तो कहा है और दूसरा रास्ता मी क्या हो सकता है। क्यों कि बाज हमारी गवनीमेंट बदलती हो तो उसके लिए दूसरी करम्बर का यहाही हो नहीं सकती । हम उन्हें कह सकते हैं। अलेक्शन चुनाव करने से जो कोई दूसरे आयें तो हमारे ही आयेंग और तो कोई अपरेंगे नहीं। लेकिन हमने देखा कि अलेक्शन किस तरह से हो सकता है उसके लिए जितनी वाच करनी चा हिए उतनी तब मालूम वढ़ा कि अलेक्शन करना हो तो तुरन्त तो हो नहीं सकता है। क्यों कि हमारे पास न मतदार हैं रजिस्टर हैं नहीं, चुनाव मैं कोई हमारी तैयारी है और लालों लोग बैगाल मैं नये नये आये हैं उनको भी मत मिलना चाहिए । कोई काम की बात नहीं है और कीम कीम के बलग मत हों तो वो भी काम की नहीं चीज है। एकत्र मतदान मैडल बुनना चाहिए। उसके लिए कानून बदलना पढ़ेगा । बहुत सी रुकावटें हैं|तो यह सब तुटि समा करने मैं टायम लोगा और इतना टाइम लगता है कि फिर दूसरा चुनाव तो हमारे सामने सहा 🖛 रहताहोहै + वह सारे हिन्दुस्तान का, जिसमें हर लायक उम्र के रहने वाली को मत मिल गया है। दो चुनाव के बीच में अन्तर थोड़ा रहता है खची बहुत होता है।

्रिकारिक हैं। तब हमें किर भी बंगाल की राय देने के लिए को रिश्च की तो बंगाल की कांग्रिस कमेंटी के ती हमें किर भी बंगाल की राय देने के लिए को रिश्च की तो बंगाल की कांग्रिस कमेंटी के ती हसे ,गवनीमेंट और जो ती हमें रें किंग पूछ लिया ,मातूम पढ़ा कि कोई वाहता नहीं है कि अभी अलेक्शन हो तो हमने रोका तो ठीक है न करों ,क्यों कि करने का तो कोई सन्देह नहीं है किस तरह से हां सकता है तो हमने रोका ,जब यह रोका तब बहुत से अखबारों ने कहा बाहर भी हमर भी कि यह जो हैसला किया वह स्मित कर का हैसला है अखबारों ने कहा बाहर भी हमर भी कि यह जो हैसला किया वह समित का हैसला है अखबारों ने तहा करना है तिका हमरा जो चुनाव होने वाला है उसके लिए ज्यादा विलम्ब नहीं होना वाहिये। जितना जल्दी हो उतना करना वाहिय और मुक्ते उन्मीद है हम करेंगे। हम नहीं वाहते हैं उसका विलम्ब हो जितना जल्दी

हो उतना करना चाहिए ,लेकिन बाप समफते हैं कि यह पहला मीका है कि 🕏 हिन्दुस्तान में करोड़ी बादिमियों को मत' मिला है , हा इतने मतदार होगए हैं क्लारे **हर प्रान्त में कि उसके मतप**त्र क्याने में भी लाखें रूपया खर्च होगा , उसकी तो परवाह नहीं लेकिन इसके लिए इतने पेस चाहिए इतने बादमी चाहिए ,वड़ी मुसीबत का काम है। ब्रा टाइम लोगा , जितना जल्दी हो सके इतना तो हम करेंगे ,उसके लिए भाप अपनी तैयारी करें और प्रान्त की सुबे की ह्कूमत भी करेगी लेकिन उसके लिए ठीक हवा भी पैदा करनी चाहिए। वह हो तो काम चलेका और वह फैसला जो हुआ है उसमें किसी का विरोध मैंने देला नहीं , और यह ठीक बारा है, ये फूजूल स्क कै कट मैं करना खर्च करना टाइम, बरबाद करना उससे कोई फ्रायदा नहीं । अब हमें भागे काम चलाना है कि को जो श्रीज गवनिष्ट के पी के रात दिन पहे हैं उसको मैं भदब से बहना चाहता हूँ कि गवर्नीरेंट बदलने का तरीका एक रहता है । बेलट बाक्स। मत अधिकार मिल गया है उससे होता है या रैवूल्यूशन से । तो ये जो बम्ब फैंकने का इधर उधर पुलिस के ऊपर ये कोई रैवूल्यूशन कहता है। 🖚 ये जल्सा है एक प्रकार का मैडनैस है। ये त्यूनसद्भोका काम है। हो भै समक सकता है कोई कहे कि माई क्या करें नौजवान है उसको फुस्ट्रेशन हुआ उसके पास कोई और दायरा तो वो भी - चीज़ समफने लायक है लेकिन उसके लिए उपाय ये नहीं है और वो जो कराना चाहते हैं उससे नहीं होगा । उससे तो अपनी मतलब जो है वो पूरी नहीं पढ़ेगी दूर जास्गी मैंने कहा कि भाप लोगों ने बहुत मुसीबत तो उठाई और इतनी मुसीबत उठाई उसका वर्णन करना वो मुश्किल है। जब इधर परदेशी हुकूमत थी और लढ़ाई चलती थी , विश्व युद्ध चलता था उस समय बैगाल मैं लड़ाई का षेत्र था हिन्दुस्तान मैं और इधर ये लढ़ाई में युद्ध में जीतने के लिए जो परदेशी हुकूमत ने कारवाही की उसका नतीजा क्या है ? ३० लाल आदमी कम से कम ३० लाल आदमी बैगाल मैं मूल से मर गये। साना नहीं मिला। कोई चिल्लाने वाला नहीं था उस समय पर्∣लेकिन श्राज विचारी हमारी पुलिस/शाप देखें पुलिस में कौन है ३ बंगाल के नीजवान , नैने हमारे पुलिस श्राफीसर जो बैगाल में हैं उनको पूछ लिया कि मह ये पुलिस में हमारे बैगाल के लोग कितने हैं तो उसने कहा कि करीब करीब सेवेन्टी परसेन्ट, सत्तर की सदी बेगाल के लोग हमने भरती कर लिए। क्या उद्यो करोगे , उसके ऊपर गोला मार के क्या करोंगे ? उसके ऊपर केकर फेंकने से ,उसकी पीटने से क्या फ्रायदा बठाओंगे ? कभी खयाल किया कि ये जो गोला फैंकने वाले, ये भी हमारे नीजवान है और रोकने वाला मी हमारा ही है। किसके लिए रोकता है → वह कोई परदेशी हुकूमत का हुकुम उठा के रोकता है। या तो हमारी मलाई के लिए करता है। अब जब लोग कहते हैं कि इधर सिविल लिवटी नहीं है तब मैं हैरान हो जाता हूँ कि कहाँ माग गई सिविल लिबटी, विलायत । जो लोग रात दिन तैंग करते थे दुवाते थे और कमी कमी फटका

मारने में भी फिफ कते नहीं थे वो सिविल लिबटी थी कि आज जो चाहे सो इस कर सकते हैं वो सिविल लिबर्टी है। जिसके दिल में चाहे सो लिखता है , जिसके दिल मैं जो नाहें सो करता है। तो सिविल लिबरी आपकी जो कीन ली है किसी नै या किन जायेगी तो बन्द लोगों ने जो ये टैरी रिस्टकल्ट बलाया है उससे हिन जायेगी आपके होय मैं नहीं रहेगी ,उसको भापको रोकना है । तो साली पुलिस के उनपर डोल देना है कि वो तो उनका काम है, उससे काम नहीं बलेगा , कोई लोकशाही राज्य पुलिस के डैंड से नहीं बलता है। हाँ ,हमारी आदत पढ़ गईं है और एक हमारी बहुत दिनों के एक प्रकार कीं गति से चलने से हमारी जो बादत पढ़ गई है कि हम समफ गए है कि पुलिस के नाम ही बदनाम है यह हमें होंड देना बाहिए। हमें हमारा रास्ता बदलना बाहिए। रात दिन जो हम पुलिस के पीके लगे हुए थे वह पुलिस थी वह दसरी मुक्सिक है आज थी और आस्मिकी जो पुलिस है वह दूसरी है। वह हमारे वालिटियर हैं , स्वयं सैवक हैं। ये और उनकों जो तनस्वाह मिलता है वो हमारे पर हतना बोम नहीं पढ़ता है कि जितना पदना चाहिए , इतना दे नहीं सकते हैं हम क्यों कि हमारा मुल्क गरी है , लोग बहुत से बैकनर हैं तो उनकों पूरा ऐसा तनस्था हतो हम नहीं दे सकते हैं लेकिन यो जो आज काम कर रहे हैं उसके लिए आपके दिल मैं बुक् सहानुमृति न होगी तो आपको पक्ताना पड़ेगा र्वियो कि दो तरह से काम चलता है या तो अपको लोग काँग्रेस के स्वर्यसेवक के काम चला रहे हैं भीन्/कलकता के एक अखबार में मैंने पढ़ा कि २० हज़ार रुपये इस जनस के लिए ख़नी किया निया करना पढ़ा नियों हम आज हम पहले काँग्रेस में जो सम्बन्ध समा कर सकते थे इस प्रकार कर सकते हैं नहीं करते , नहीं कर सकते , क्यों कि हमारा ढंग सारा बदल गया अयो बदल गया अयो कि वो बादत हमने हो इ दी नहीं है कि यह पुलिस नटकानी है,इस, प्रकार हमने अध्यक्ष समफ लिया ,उससे हमारा कांग्रेस का ढांचा जैसा ताकतवान था वो नहीं रहा टूट गया / कुष्म तो हमें इसको ठीक कर्यना चाहिए ,इक्षरिक्षण्यिक्षवेधकरेंग्रेक हमें हमारा काँग्रेस का संगठन ठीक करना चाहिए ,इसलिए जितने कांग्रेस वाले काम करने वाले हैं सब माई है, उनको मी मैंने मिलने की कोशिश की भिला ,उनके साथ बात की ,पुलिस शाफीसरी के साथ बात की , और मिनिस्टरी के सम्धूष्ट बात की । सबको मिला सब की बात मैंने सम्मक ली । बो बैगाल का ददै है वो ददै मिटाने के लिए जो हमें कास करना चाहिए वो कारवाई होड के इस मिथ्या कारवाई में फैसे हैं उससे हमारा काम रुक जाता है। मैं जानता हूं कि बैगाल के नवजवान बहकाये मैं फीस हुए हैं। एक एक का लिज मैं दस दस हज़ार ,पांच पांच हज़ार ,सात सात हज़ार लड़के पढ़ते हैं , कि पढ़ते हैं कि नहीं पढ़ते हैं वह भी मैं पूरा नहीं जानता हूं क्यों कि वहां पूरी बैठने की जगह नहीं है और कोई कोई का लिज में तीन शिष्ट , हमने फैक्टरी में तो किष्ट सममें थे, लेकिन का लिजों में शिकृट को मैं नहीं समफाता था। इधर आ के देशा कि तीन शिकृट काम जलता है

वहाँ क्या विवार पढ़ें , प्रोफेसर भी क्या करें और वो जो तीस वालीस , पवास साठ हज़ार हर साल ग्रेजुस्ट निकलते हैं कालिज में पढ़ पढ़ के वो क्या सीसें , साली उपाधि या तुफ़ान करने का सीसे ,या कुक् ऐसे लिटरेचर पढ़ते हैं जिसके बालपो स्टेसे श्राप देलते हैं वो लगाते. जिसको पढ़ने से बदरुपनी होती है। मुनस्य के भी बीमारी होती है वो दिल की कीमारी हो जायगी लेकिन कोई. फायदा नहीं होगा। उन विचारों को हा बैकारी का हमें उपाय करना चाहिए। ये भी में जानता है कि कलकता हिन्दुस्तान का एक कैन्द्र है, उपीय का सबसे बढ़ा । पहिले तो इधर राजधानी थी हिन्दुस्तान की लैकिन त्राज भी उद्योग की राजधानी यही है। धन इधर से पैदा होता है । जो देहात से धन पैका होता है , किसानी से वो एक प्रकार का है। जो कारलानों से धन पैदा होता है दूसरा प्रकार का। आज कल दोनों की चुरूरत है। एक को कोड़ नहीं सकते हैं दूसरे को एक के मरासे दूसरे को बढ़ा नहीं सकते, दोनों को साथ साथ चलायें। तो ये उद्योग का देत्र है और इस उद्योग में बैगालियों का कम से कम हिस्सा है। बद्धीरथबद्धीरथकष्परिवर्गण्डें बैगाल के नौजवान उसमें कम से कम हैं। बढ़ी बढ़ी कम्पनियाँ हैं। उसमें नहीं हैं क्यों नहीं २ क्या कजह २ हधर क्यों ऐसा होगया है ? तो मैं दोनों को समफाना चाहता हूं कि जो काएसानों के मालिक हैं समकेंद्रध्यदि जो कम्पनियों के मालिक है उसकों भी बैगाली जीजवान के प्रति अपना फर्जे 🍍 अवाकरना 🎘 परेगा उसका दिल समफ ना पढ़ेगा । उसके अलग रहने से फायदा नहीं होगा । इसी प्रकार बैगाली जो नीजवान बेकार निकलते है उसको समकाना पढ़ेगा कि अब हर प्रान्त में अपनी हुकूमत, अपनी अपनी हुई । तो यदि अमलदारी करने के लिए दूसरे प्रान्त में जायें उप्मेद रहें,या तो कोई प्रोफेशन के लिए ,डाक्टर बनके ,वकील बनके धन्धा करने के लिए या त्रासाम मैं या विचार मैं या उड़ीसा मैं या और प्रान्ती में जाने की उप्पीद रहें तो कहा, के मीजवान वो मी समफते हैं कि हमको मी मीका मिलना चाहिए अब कहा तक रहें तो एक दरवाचा बन्द हो जाता है और हमारे बीच मैं थोड़ा थोड़ा अन्तर पढ़ जाता है। वो स्क प्रकार की बीमारी है हमारे किन्दुस्तान मैं कि वो प्रान्तीय मावना पेदा हुई है वो जिस मतलब से हमने रसी थी वो मतलब तो हट जाती है लेकिन हमारी दृष्टि सैकुचित हो जाती है और विशाल भावना जो हमारे हिन्दुस्तान की है कि हम भारतवासी हैं सब, वो हू मूल के हम प्रान्त प्रान्त के संकुचित पेत्र में फंस गये, फंसने 🗪 जा रहे हैं, उसको रोकना है। आज कल लोग मानते है कि हमारा प्रान्त अलग किया जाय। बंगाल के लोग भी मांगते हैं कि हमको ये हिस्सा दिया जाय ये हिस्सा दिया जाय । हमारा टुकढ़ा पढ़ गया ,हमारा जो प्रान्त होटा बन गया वह भी मैं समक्ता हूं और मेरी को शिश भी यही है कि बैगाल की जितनी मदद की बाये उतनी <del>कर सर्व को</del> क**र्क**। बहुत दिनों से बैगाल वाले कहते थे कि हमको कुछ बिहार दिया जाय तो मेंने को शिल की। यह कोई आसान बात नहीं है | क्यों कि लोगों को समकाना पढ़ता इसर आतु कहा के समकाना पढ़ता है | है | राजा को समकाना पढ़ता है | वहां की रेयत को समकाना पढ़ता है और कोई फ़िसाद 🕮 देला है कि पांच सी साढ़े पांच सी हूं सी हकूमत जो अलग

अलग ,अलब अलग राज्य थे जो जितने राजस्थान में कोटे कोटे राज्य थे बढ़े भी थे उन सकतों ठीक कर लिया लेकिन कोई फिसाद नहीं होने दिया और जिसने फिसाद किया उसेका सिर फूट गया । मैंने कोई उसमें कुक यह गलती नहीं करी ,इसी तरह से बैगाल का मसला भी इल करना हैता, तो आपको मुक्ते साथ देना चाहिए ,मेर काम में मुसीबत नहीं डालना चाहिए ,मै करना चाहता हूं लेकिन मैं स्क तो शारी रिक कमजोरी मैं पंसा हुआ है ,दूसरा हमारे मुल्क में बाज जो बढ़ी बढ़ी समस्या पैदा हो रही है उसको में हल न कर तो उसकी असर मी आपके ऊपर पढ़ेगी और आप और ज्यादा मुसीबत में फैस जारेंगे उसको भी रोकना है और साथ साथ श्रापका काम करना है। श्राप मुफलो साथ दो तो मैं श्रापका साथ इस तरह से चाहता हूं कि इतनी पुलिस मीटिंग के लिए क्यों रखनी पढ़े क्या ज़रूरत है ₹ लेकिन बाज मैं घर से बाहर निकलूं तो मेरे पीके लगेगा । कभी मैंने मेरी जिन्दगी में मेरे पीके पुलिस नहीं देला था । हां , क्रुपा क्रुपा रहता था कि यह क्या करूतर है देखने के लिए/लेकिन सावधान रखने के लिए मेरे पिक्कि कौन मुफको मारने वाला है अब मारिकों में मुक्त को कौन मारने वाला है। लेकिन आज की हॉलत ऐसी होगई है कि हमारे नीजवान कुछ न कुछ अपने दिमाग से इट गये कोई कोई जगह पर सब रेसे नहीं हुए हैं बहुत से तो अपना मनुष्यत्व ठीक रखते हैं , ठिमाने रखते हैं । लेकिन जो बिगडे हैं वो कोई गुस्से मैं भी हैं उसको ठीक करना हमारा काम है। तो मैं कितना भी को शिश कर कि यह पुलिस हमारी हट जाये मेरे पास से नहीं मानते हैं , आज मीटिंग मी इतनी करनी हो इतने लाखों लोग को जमा करना हो तो हमें आबोहवा बदलनी चाहिये । तो यह मीटिंग की बात तो कोड़ दीजिये लेकिन समारा उथांग है जिसमें से धन पदा होता है उसको ठीक चलाना हो तो हमारा मज़दूर वर्ग है उसको अच्छी तरह से समफाना चाहिए कि उनका जितना इक है उसको अध्यक्षिध्यसप्रध्ये उसको दिलाना हमारा काम है , और जो मालिक लोग हैं जो रम्प्लायसे हैं वो इस समय पर अपनी बुरी नीयत शोड दें और कोई काला बाजार न करे प्राफिटयरिंग न करे और थोड़ा सा मुल्क के लिए आज नफा लेने की श्रादत मुनाफा हो ह दैं। लेकिन मुल्क को साथ दें वो संमफाने की मैंने को शिश करता हूं नीजवान कहता है कि नहीं इस तरह से नहीं हो सकेगा जो चाहना में हुआ ,इस प्रकार करी । आप देखेंगे चाइना मैं क्या हुआ वो तो मैं नहीं जानता लेकिन मैं आपको यह कहना बाहता है कि रिशया मैं भी जब कान्ति हुई तो रिशया की रचना करने में आज कैंसा भी रिशया हो लेकिन उसकी रचना करने में ,उसको ठीक करने में काफ़ी कुवीनी हन

लोगों ने किया और काफी मेहनत करनी पढ़ी है। बाज मुल्क मैं सनसे बढ़ा धनवान् मुल्क दुनिया में बमेरिका है। लेकिन बमेरिका जब बाढ़ाद हुआ तो उसका पहला जो कास्टी द्युशन है उसका बनाने में सात साल लगी थीं। हमारा मुल्क तो बहुत बढ़ा है, लेकिन हमने तीन साल में ही कास्टीट्युशन बना दिया इतनी मुस्तिबत होते हुए भी तो बापकी समकना

चाहिए हिन्दुस्तान टुक्टे होते हुए भी आज जितना एकत्र हुआ है इतना बढ़ा हिन्दुस्तान स्क सार्व स्क रंग का नक्शा हो गया है। जाप पिक्ला हमारा इतिहास कई सालों का देख **ली जिये सदियों का कभी नहीं हुआ** था 🗫 इतना एक रेंग में हिन्दुस्तान हो गया है। बहुत बढ़ी कृति है। लेकिन बमेरिक पनवान् हुआ तो कितने सालों तक उसको मेहनत करनी पढ़ी थी ,पढ़ी हुई थी तब ये धववान् हुआ उसका इतिहास आपको देखना बाहिये। बहुत साल लगी बहुत साल मेहन्त किया तब ये हृष्ट पुष्ट हुआ । हमारी आजादी हो उन्हेंबर साल की हुई अब इसमें इम बाँटना बाहते हैं कि नहीं हमको तो जितना है बो शयर कर दों अ स्क दम∕तो सब ग्रीब हो सकते हैं कोई धनवान् नहीं रह सकते हैं ≯ अब धनवान् हैं थोडे हैं मैं हिन्दुस्तान मैं कबूल करता हूं कि थोड़ों के पास ज्यादा धन है लेकिन कुछ नहीं है आप अमेरिका में जाय देखें और जगहर पर देखें तो हमारे धनवान कुछ नहीं हैं लेकिन उसका धन का उपयोग ठीक कराना हो तो इस ढंग से करने मैं उनका भी जायगा/कोई फायदा नहीं होगा । श्राज हमारा हिन्दुस्तान को उठाना हो तो एक तरह से हो सकता है कि धनवान् को अपना लोम कोइना है अपने मक्टू मजूरों को अपना काम वकादारी से देना है। ये जो पौलिसी बाज चल रही है ,नीति चल रही है मजूरों में जा के मी इस बात का प्रचार करना कि बार बार स्ट्राइक करी , इस्ताल करी , आहिस्ते आहिस्ते काम करी, सिट इन स्ट्राइक करी ,तुकान करी ,इस नीति से हमको नुकसान मारी होगा । उसका समय बायगा बरूरत होगी तो ,लेकिन मैं नहीं मानता कि हमको बरूरत पढ़े। हिन्दुस्तान मैं हमारी संस्कृति ऐसी है कि हमें अपस मैं बैठ कर सब चीज़ का फैसला कर सकते हैं ,धनिकों को अपना धर्म समफा सकते ै 🕽

कहैं कहते हैं कि क्ल मार्केट करते हैं , करते ही हैं और क्ल मार्केट क्या क्ल मार्केट का धन तो सारा ही लिया जब लहाई चलती थी उस समय पर ज्यादा तो, जो पैसा बनाया है वो तो प्रदेशी हुकूमत थी उस समय पर ज्यादा बनाया है , बनाया हमारे समय में भी लेकिन उस समय में ज्यादा बनाया है । उस समय पर हुइइ हमने नहीं किया , कोई बोते नहीं और हमसे कहते भी ये और वो लोग भी मानते थे कि ये प्रदेशी हुकूमत को जितना मेंसा कम देना पढ़े ठीक है तो हम्कम टैक्स भी नहीं देते / अब हम पी हे लगे हैं, न उनका भी काम होता है न हमारा भी होता है । उससे क्या फायदा । तो हमें हमारा सारा उद्योग नेशनताह की करी और को भावभी अपना पर नहीं चता सकते हैं वो नेशनताह एड हम्स्ट्री बलाने की बात करें, उनसे क्या फायदा । वो कैसे कर सकते हैं । तो सरकार को पसन्द करना पढ़े कि यह उद्योग हम चला सकते हैं तो आव कोई हमारा सारा उद्योग हम चला सकते हैं तो काम कोई हमायदा की सि हम करना पास हमारा पास हमारी यह ताकृत नहीं है । क्यों कि हक बो हमारे पास हतना साधन नहीं है , इतने बादमी नहीं है अपने विजनसम्म के पास विजनस ते लेते हैं तो हमारी सरकार वाल वाल वाल हमारी के स्वाह हमारी सरकार करने हैं तो हमारी सरकार के साध विजनसम्म के पास विजनस ते लेते हैं तो हमारी सरकार वाल वाल वाल हमारी के स्वाह हमारी सरकार वाल स्वाह हमारी है , कुक काला बाजार करते हैं , कुक में स्वाह ते ते हैं तो हमारी सरकार यह समक ती थी कि हम केंट्रोल बलाई लेते हैं तो हमारी सरकार यह समक ती थी कि हम केंट्रोल बलाई लेते हैं तो हमारी सरकार यह समक ती थी कि हम केंट्रोल बलाई होते हैं तो हमारी सरकार यह समक ती थी कि हम केंट्रोल बलाई होते हैं तो हमारी सरकार यह समक ती थी कि हम केंट्रोल बलाई होते हैं तो हमारी सरकार यह समक ती थी कि हम केंट्रोल बलाई होते हैं तो हमारी सरकार यह समक ती थी कि हम केंट्रोल बलाई होते हैं तो हमारी सरकार यह समक ती थी कि हम केंट्रोल बलाई होते हैं तो हमारी सरकार यह समक ती थी कि हम केंट्रोल बलाई होते हैं तो हमारी सरकार यह समक ती थी कि हम केंट्रोल बलाई होते होते हमारी सरकार यह समक ती थी कि हम केंट्रोल वाल है हमारी सरकार वाल हम केंट्रोल हमारी सरकार हमारी हमारी सरकार यह समक ती हमारी हमारी सरकार सम्म कर सार सरकार समक सम्म हमारी हमारी सरकार सम्म सरकार सम्म स्वाह हमारी हमारी हमारी हमारी सम्म सम्म सरकार सम्म स्वाह हमारी हमारी हमारी

MARKET !

मी कहते हैंक केंद्रोल करों ,हम लेते हैं लेकिन इनकी जगह पर जो रसते हैं हम जो विजनस मैन की जगह पर रखते हैं वह उसका कोई अञ्छा काम करते हैं ऐसा कोई नहीं कहते हैं भीर वर्हा पर भी बूँद डालते हैं कि यह तो सब लोग राज धुस सोरी चलती है भीर राज घूस लोरी चलती है वो सब पैसा सकते हैं और सरकार बदनाम होती है। तो उससे क्या प्रायदा । उसमें तो सब हम बदनाम होते 🗫 जाते हैं । तो गांधी जी ने कहा : कि केंद्रोल हटा दो तो इतने पर हमने उसका भी 👣 एक हफूता कर लिया स्क स्क्सपेरीमेंट कर लिया श्रुव उसमें ऐसी मुसीवत में फैस गये कि फिर केंट्रोस बैठाओं तो फिर बैठाया । अब क्रेंक लोग कहते हैं कि माई इस तरह तो गवनींट को अपना माइन्ड की खबर नहीं , अपने दिल की खबर नहीं । कहना तो ठीक है लेकिन इतना बृद्धा मुल्क है जिसका सारा ढाँचा चलाने वाले जो लोग थे जो धाक से चलता था/अंग्रेज के रहेगाल से जो काम परदेशी की धाक से और <del>मान्यू है</del> जो चलता था वो पंचावन,साठ फी सदी अंग्रेज़ इधर पढ़े थे सर्विस में <sub>र</sub>हुकूमत में वो सबको निकाल दिया । आप देखें पुलिस में कोई श्रीज़ का नेहरा जापको मालूम पहला है । वेले हमारे सम्द्र पूर्ण हथर कीन बैठते थे रे जमाना तो बदल गया रेग्यूलेशन किसको कहते हैं २ रेग्यूलेशन तो हो गया लैकिन अब तो रचना करनी है ,रचना बनाना है मुल्क को ,या मुल्क को बनाना हों तो हिन्दुस्तान का मविष्य क्या होगा ? जैसा ये पाँच साल में हम करेंगे ऐसा हिन्दुस्तान का मविष्य होगा ,इसके लिए मैं आपको करपर चाहता हूं किश्हम आपको कहना चाहता हूँ कि हम आपको सबको भूमग्रदूरों को ,पुरुषों को ,स्त्रियों को सबको साथ मिल के काम करना है और फागढ़ा होड़ देना है। मोहव्यत से ,प्रेम से काम होगा । यदि हम जहर वहर पैदा करेंगे ,प्रान्त प्रान्त की हैच्यी करेंगे ,फिसाद मैं पढ़ेंगे तो ज्यादा में ज्यादा यह कर सकते हैं कि कलकत्ता का उधीग कलकत्ता से चला जाय , हाँ , जहाँ शान्ति हो वहाँ चला जाय । उससे कोई फायदा नहीं होगा ,नुकसान ही नुकसान होगा। क्यों कि इस प्रकार हम काम करते रहे तो हमारे में दूसरी ताकत होनी चा हिये और दूसरा बनाव हुआ तो भी तो बैगाल के नौजवानों के प्रति पूरी सहानुभूति है/लेकिन में चाहता हूं कि यह जो फामेंटिव पीरियड है जो अपना चारित्र घढ़ने का समय है उस समय पर अपना वाधा बाँध लैं उद्योग चलाने के लिए तैयार हो जाये क समि राज बलाने के लिए तैयारी हो अपनी ऐसा सिल ले यह फिसाद में पढ़ जायेगा कोई फायदा नहीं नुकसान ही नुकसान है लेकिन मेरी शिकायत जो आज सामने अाप लोगों के सामने है वो यही है कि आपको इस तरह से काम नहीं लेना है कि हमारा काम नहीं है ,यदि कोई जगह पर तूफान हो तो हम हट जायें वहां से स्क ट्राम में या बंस में पचास आदमी मुसाफिर बैठे हैं दो नव जवान आये और कह दिया कि सब उतर जात्रों ,तो सब उतर करमें जायें गैटा की माफिक ,बकरें की माफिक भेड की माफिक। यह क्या २ ये फ़ीक 🛲 हिन्दुस्तान अवाबाद हिन्दुस्तान के नागरिकों का यह धर्म नहीं है। उनकी भी तो फूर्ज है ,उनका भी तो हक है ,उन दो नीजवानों का कान पकड़ना चाहिए। यह क्या कर रहे हो ,इस तरह से काम

19-41

होगा तब काम चलेगा। तो मैंने कल महबार वालों को भी कहा कि महबार वाले दो प्रकार के बोल बजाते हैं ,दो बावाज साथ निकालते हैं ,स्क तो कहते हैं कि ठीक नहीं हैं अच्छा नहीं है ,यह करते हैं साथ साथ कहते हैं/लेकिन ये करें क्या , और लोग कुछ करते नहीं ,गवनींट के कुछ करती नहीं ,पुलिस बुरी है। अपने साथ जुल्म करते हैं ,यह करते हैं श्रीर फ़ाका करते हैं जेल में लोग उसका कुछ नहीं करते हैं। मैंने गवनीरेंट को पूछ लिया कि भा**र्ड ,ये लोग फ़ाका क्यों करते हैं** यह तो मैरी समफ नहीं शा<u>ती है</u> । क्या हिन्दुस्तान मैं अनाज की कमी है इस वजह से ,सहानुमृति से फाका करते हैं / है क्या / मुफ्ते बताओं दो सची न क्यों कि मार्ड हमारी समफ क्या आवे , हमें जैसे एक ये जो तूफान करने वाले लोग हैं वो जैसा हम पकढ़ते हैं वो पहला तो जैल मैं बाने के पहिले ढाई सी रूपया तो उनको अपना कपहा लता ,तांगा , संउसी के लिए देते हैं यानी ढाई सी रूपया तो उसको बख्शीश करते हैं और उसके बाद वो जेल में गया तो रोज़ ढाई रुपया उसको लाने के लिए •देतें हैं। रोज का ढाई रुपया। बताइये मुक्ते यह रिष्यूजीज का बात लीजिये ,यहाँ तो बैगाल मैं कितने सीय ऐसे हैं जिनको ढाई रूपया रोज स्वाना मिलता है वो कैसे माँगते हैं , ढाई रूप्या मिला उसके बाद उनके बच्चे कितने हैं , फैमिली कितनी है , उनकी स्त्री है माता है यह जया है बताओं तो जो कोटी उम्र के हैं उनके "लिए अमुक एकम दी जाती है जो बढ़ी उम्र के हैं उनके लिए अमुक रकम । सबके लिए अलग रूपया । उसके लिए मैथली हरमाया बाँटा जाता है। मला बाहर क्यों रहें वे लोग जैल में ही क्यों न बैठें। किर फाका क्यों करते हैं इतना मिलने के बाद । क्यों कि कहें लोग तो 👾 चार दका खाते हैं बाहर प्रोपेगैंडा चलता है कि फ्रांका करते हैं इस समय मैं भी जब ये लोग फ्रांका करते हैं वो भी क्या चारुते हैं ? वो भी चारुते हैं कि इनको ज़्यादा दो ,इतना रुपया कम पढ़ता है ,इसकै लिए फ़ाका करता है। मला बताइये इस प्रकार के लोग पुलिस की शिकायत करते हैं तब मुफो दुख होता है। क्या अप लोग का यह धर्म नहीं है कि हमारे पुलिस के लिए कुक् सहानुमूति बता 🗪 कर उनकी मदद करना है। स्वतन्त्र मुल्क मैं पुलिस के लिए जितने इज्जात है ऐसी इएज़त बाज हम नहीं देंगे तो हमारे मुल्क की स्वतन्त्रता है नहीं कि स्वतन्त्र मुल्क नहीं तो श्राजाद मुल्क का ती फूजे होगया कि जो हमारे रहत हैं। उसको साथ देना श्रीर कम से कम उसको काम करना पढे ऐसा काम करना है ,यह सब उनका काम नहीं सब कै सब बढ़ी नम्रताई से सबके साथ एकसा बतीव करना है तो आज मैं देल रही हूं आप भी पढ़ते होंगे कि हर रोज़ श्राज में कितने दिनों से मैं देखता हूं 🗫 बाहर के लोग भी देखते हैं कि कोई न कोई जगह पर रीज रोज अखबार में आंता है कि पुलिस ने मार लाया । लेकिन किसी की मारा नहीं पहले कहीं रोच पुलिस नै कहीं गोली चलाई तो आप लोग गुस्से होगर एक दम, कहने लगे उसकी ट्राइल करी एक बार उठाओं , अब इस समय पर तो सबने शोर मचाया , अब जब कुक्र पुलिस मार खाती है क्यों श्राप बोलते नहीं हो ,क्यों श्राप बैठे रहे हैं खामोश ,क्या राज चलाना. है या नहीं ,चलाना हो तो हमें सबको समफ लेना चाहिए किक हर एक व्यत्ति का धर्म है , हर एक आज़ाद हिन्दुस्तानी का फर्ज है कि अपना ह्यूटी का धर्म का पालन करना नाहिए

बाज़ादी हर दम <del>निवती</del> नहीं है रेसे/तो मैं बापके पास यह बाहता हूं कि यह जी तुष्ठान करने वाले थोड़े लोग जो हैं कलकता सारा अपना काम कर रहा है लेकिन थोड़े लोग तैंग करते हैं हिना बिगाइते हैं ,उनका समकाओ ,और जिन **मामलों मैं ये बीच होती है उस**में हमें स्वयं सेवक दल बनाओं और उसको पक**ो । ये कहते हैं कि अन्हर गाउँड लोग रहतै**ं हैं मीतर में मूतल में रहते हैं , मूतल में रहते हैं , कहा मूतल हमारी ही मूतल है न कहीं हम जानते नहीं हैं क्या जो हमारा भाई हो ,हमारा लड़का **हो जो हमारा रिश्तेदार हो** ती उनकी समफाना चाहिए कि उह गलत रास्ता है तुम होड़ दो ,नहीं तो में तुमको पुलिस के स्वाधीन कर देता हूं। इस तरह से जब तक हम सिक्टिय सहायता नहीं देंगे तब तक ठीक काम हमारा नहीं चलेगा और जितना ख़्बी भी बढ़ता जायगा इनके पास पी है हर कोर्ड को देना पढ़ता है , इनके लिए पुलिस रखों , इनके लिए जैलसाना रखों , इनको साना पीने को दो ,सब दो ,बाहर से नहीं आयेगा ,हमको ही देना पहेगा । तो हमारे वेचारे वेकार जो श्रादमी पढे हैं ,वाहर से श्राये हैं ,जो रिष्ट्यूजी जह जिनको वे बहकाते हैं उनको लो वैचारे को मिलता नहीं ,उनको कोई मदद नहीं मिलती ,उलटा काम होता है। तो मेरी सलाह आप लोगों को है यह रस्ता कोड़ दो । पीके जब शान्ति हो तो हमें रचना करनी है। तो किस तरह-से र इधर जो लोग पढ़े हैं उनकी भी सुल हो श्रीर बाहर जो दुली हो रहे हैं उनका भी कुक इन्तजाम करना है। क्यों कि हम बार बार सुनते हैं कि जो पूर्व पाकिस्तान में हमारे माई पद्दे हैं आज कल बहुत तंग किए जाते हैं और उसका रहना मुश्किल हो जाता है। यदि यह चीजे आगे बढ़ी तो को**ई ह**धर से **वहाँ ,वहाँ से हधर चले** श्रावें तो हमारे यहाँ इतनी तो जगह आज भी नहीं है और आवें तो क्या हो ? तो उसका रास्ता करना पढ़ेगा । वो तो चलेगा नहीं । कोई न कोई तो रास्ता सोचना पढ़ेगा । लैकिन उसके लिए पहला अपना घर ठीक कर लो , मेहरवानी करके कोई फगड़ा न करो और बाहर से ऐसा कोई को मालूम नहीं पढ़ना चाहिये कि हमारे घर मैं कोई राग है कोई सटपट है , कोई फ गड़ा है। तब इन लोगों को भी शान्ति होगी। ये लोग जो पढ़े हैं उनके दिल मैं क्या होता होगा कि हम इधर क्षेत्र हतने दुख मैं पढ़े हैं और कलकता मैं जो है क्या कर रहे हैं क्या करते हैं। हां ,इस रास्ते से उनका दुख रका हो तो मैं तो उनको साथ द्वेन । लेकिन यह नहीं होगा । उसका तो दुख बढ़ता जायेगा । तो हमारे इस प्रकार का काम करना है कि जिसमें बाज धन की वृद्धि हो। एक तो किसानों की समफाना है कि जितना बने उतना ज्यादा अन्न पैदा करो , अधरमध्येदरश्यक्र और जितना धन आज पैदा कब्रेत हो अनाज पैदा कथ्क करते हो ,तो वह अपने साने के लिए जितना वस हिए चरित हो उतना रखो बग्नकी का गवर्निंट को दो ,सरकार को देना चाहिए। तो सरकार ने जो दाम मुकरेर किया है उसी दाम से दो । तो कई हमारे लोग जाकर वहाँ लोगों को समभा ते हैं कि सरकार को दाम मुकरीर करने का क्या अधिकार है यह तो तुम्हीं करों ,तुम न करो ज्यादा देगा , क समार के देगा , कहा से लायेगा , देगा तो ठीक लेकिन कहा से देगा , किसमे हिस्से में से निकाल कर देगा । यह जो सलाई देते हैं उनके सीसे में से नहीं हमें भी आपको ही

देता पहेगा .उस से जो लोग दुसी हैं उसका दुस जायेगा के । आप को याद हैं ३० लास आवमी इधर मर गये मूल से , इस प्रकार का हमने कुछ भी विगाद किया हा , कन्द्रोल किया को या रिस्वत लाने दिया हो , कितने भी बुराई किया हो . लेकिन इन तीन साल मैं मूल से हिन्दुस्तान में किसी को हमने मरने नहीं दिया है। यह आपको समफ ना नाहिये तो कहा से यह अनाज लाये हम ,करोड़ों मन आनाज बाहर से लाते हैं ,इसका रूपया कितना लगी पहला है. आपको मालूम नहीं .करोड़ी रूपया लगे करना पहला है .लेकिन हमारे किसान को हम समफार्वे कि हमारे मुल्क मैं जो धन अनाज पढ़ा है उस का ठीक तरह से उपयोग कर्ष्टु करके जो हमारे दुवी लोग हैं /जिस के पास नहीं है ,जैसन इल्लक्तर-शहर है , कलकत्ता शहर मैं तो बाहर से ही आयेगा अनाज . इधर कीन अनुरूप पैदा करेगा स लेकिन कलकता के श्रास पास जो किसान लोग है वे अनाज पेदा करते हैं उसको समफाना चाहिये कि कलकत्ता के लाली आदिमियों के लिये हम को अनाज दो और उसके लिये जितना ज्यादा कीमत दाम मागांगे .उसका कलकत्ता को देना पढ़ेगा तो श्राज कलकत्ता की हमुल्त रेसी नहीं हो सकती ,बहुत थाड़े लोग तो दे सकते हैं जाकी बहुत ज्यादा है ,मध्यमवर्ग के लोग तो वैचारे बहुत ही दुखी हैं ,वैकारी तो है ही ,मैहगाई तो है ही इतनी तो हम क्या करें ,तो आप भी थोड़ा अपना पसीना निकालिये ,सब हिन्दुस्तानी का आज फार्ज यह है कि थोड़ा थोड़ा दुल बाट लेगा ,तो कम हाता ,यह दो साल का दुल हम बंटवारा करके उठालें , पी के हम सब सुब के हिस्से दनर होंगे .सब सुब के भागीदार होंगे . और यदि कले कता गिरा ,या तो बैगाल गिरा ता कीन जिन्दा रहेगा ,लेकिन बैगाल अपनी असल जगह पर श्रा जाये । हिन्दुस्तान की जो नेता गिरी थी , उसके पास श्राजाये , इस प्रकार का हमारा काम वलें तो सारा हिन्दुस्तान ठीक हो बाये तो आज फगढ़ा की जगह नहीं है ,इस लिये में आपको अपील करता हूं ,मैंने कांग्रेस के काम करने वाले सब को कहा कि मेरी ता शिलिरी अपील है आप लोगों को ,तो अब आपस में सम्भ आह्ये .यह फगहे का समय नहीं है यह , अभी हमको मनिस्टरी मिली तो क्या न मिली तो क्या /सारी उम् हमारा धन्दा तो दुलं उठाने का था लोगों के लिये जेलखाने जाने का श्रीर दुल उठाने का ्रेयह अपि ही लोग जब लढ़ाई चलती थी कितना दुख उठाया /कितना लोग मरते थे भूल में , उस समय पर तो जो यहाँ महा फ़लड आये वहाँ आपने फलड की बरदास्त की। श्रीर सहन की ृदुष्काल की बरदास्त की ,उसका सामना किया ,उसका मुकाबला किया । उस से भी नहीं डरे, तो यह क्या कर रहे हैं, इस चीज को हमें सिर्फ़ करना चाहिये। और सब को समाध मिल के । अगर हमारे मनिस्टर में जो लोग नहीं है वो कहेंगे यह <del>परिष्ट</del> मनिस्टरी बुरी है ,वा निकल के दूबरी जगह पर बैटेंगे ,तो उन को कहेंगे यह बुरा है। यह कोई दुनिया का देंग जो राज चलाने का द्वेग है ,इस तरह से चल नहीं सकता है। हा किसी ने बुरा र काम किया जाकी पकड़ना ना रिये ही क ढंग से उसके पर काम चलाना चाहिये। जम हा सके जो सिद्ध हो सके ऐसी बात हो तो, नहीं तो जो सारी बीज है उसकी 'बुराई हम ही करते रहेंगे ता और क्या करेंगे । यदि कलकता के नागरिक अपनी

गवर्निंट की बुराई करें तो उसमें बुराई ता अपनी ही होगी क्यों कि जैसे लोग हैं वैसा ही राजा होता है। जैसे लोग ऐसी ही उनके लायक राज निल जाता है। लों मैं यह मानता हूं कि हम बाज सब मिलके एक दूसरे को साथ लेके काम करें। तभी हमारी बेहतरी हो सकती है। नहीं ता हो सहीं सकती । अब मैंने जो कुछ श्रापको कहा उसके उपरक्षाप सोचे , स्थाल करें हमारा बार बार तो इधर श्राना मुश्किल है लेकिन मेरे दिल में जो आग परी है, क्लकता के लिये जो सहानुमुलिपरी वंगाल के लिये जो राह है । बाग जलती है । वह मुफा की बुलाती है इस लिये में श्राया । श्री र मैं श्रापको प्रार्थना करता हूं बहुत नम्रता से कि एक तो श्राप श्रापक शहर में प्रान्त प्रान्त की कोईभावना न रखें फगड़ा न रखें। साथ मिल के काम करें क्यों कि इस मुल्क की इस स्थिति मैं इस शहर मैं कितने और और प्रान्त के लाग है और उनके व्यवस्थ उन सब के पास उचाग पहा है। उनके साथ हमें मिलना है। वो मदद से हो सकता है। वो फगड़े से नहीं हो सकता। दूसरा एक जो फिसाद हा रहे हैं उनको बन्द करना है और रोज गार बढ़ाना है। और किस तरहें बढे उसके लिये हमें इधरकी आवोर हवा अवलना है। तब तो कुक कुक धन बढता है जब धन की वृद्धि होती है तब बाँटने का समय आता है। हा बाँटने के समय पर श्राप श्रपना इकरल सकते हैं। लेकिन जब प्रदा कि है हो तो कुछ नहीं मिलेगा। त्यारी करो किन्न भानके कि हमें एक दूसरे के साथ सतकार करके काम करना है -श्रीर हमारी जो पुलिस है उसकी कोई तुटि हो तो हमारी सरकार के पास हमें कहना है । लेकिन वा पुरानी बातें हमें भूल जानी हैं कि हमारी पुलिस इधर आज रिश्वत बाती है यह बराव है। जुल्म करती है। यह बात गई । आज विचारे अपने तन तोड मेहनत, करके काम करते हैं। हा उसकी साथ देना, सहानुभूति देना हमारा कतैव्य है। तब हो हमारा काम हांगा । क्यों कि हमें उसका हटाके ही दूसरा रख सकते हैं ता वोही रहेंगे या वंगाली रहेंगे श्रीर कीन रहेंगे | ता हमारे नीजवान बुरेहेंबुरेहें ऐसा ही कहता एहना या हमारे लिये लज्जास्पद हो जाता है। सब बुरे तो रहा अच्छा कीन रहा। क्यों कि बाहर के तो कोई हैं नहीं सभी हमारे हैं तो हमारी सारी चीज अदल्ली चनकिया और जो जिसके पास असवार मेंने अपुत निरंद के बीनाने की बात में बहुत लेकिन जिसके पास अलबार नहीं है ऐसे ही जो प्राफेशनके लोग है और जो समभ्य ह दार लाग है के लाली अलगार पढ़के वेठ जाना उससे हमारा काम नहीं हागा।

न्ता है

हमें मी अवबार में बालना चाहिये कि ये जात तिली सही नहीं है , इस का ठींक करना चाहिये। बीर अपना आवाज उठाना चाहिये कि ये जीउ सराव है। इस चीज को नहीं चलने देना चाहिये। इस सरह से हम अपना कर्त्व कर में में पात तो कामचल सकता है। बीर मैंने जैसा कहा हर मामले में जहां गृह बह हा स्वयंसेवक दल बनाके इस गड जह को स्तम करना है। जिससे वैगाल की उज्जात, कलकरों की इज्जात बाहर बढ़ जाये के अलकता फिर एक दका सारे हिन्दुस्तान की आवो हवा बदले औरसम्भे कि कलकरा का लोग समक दार है और स्योन है। मैं इतना ही आसका करने आपकी प्रार्थना सुमाना वाहता हूं।

5FEB 1950



प्रमुख साइब भाइयो और बहनो ।

यह प्रदर्शिनी का उदाटन की किया करने का काम मैंने कबल कर लिया । इसका कुछ रहस्य मैं समकाना चाहता हूं। और हमने जब २६ तां की पूरी सम्पूरी स्वराज्य की घोषणा सुन लिया उसी मौके पर यह प्रदर्शन बोलने का था। लेकिन उस दिन-नहीं हुआ उसमें कोई फ़्के उसकी हमत्व में नहीं पढ़ता वह भी में समकाना चाहता है क्यों कि सैकल्प तो यह था कि उसी दिन उसको खोला जाये। लेकिन उस दिन इतना काम और इनका कार्यक्रम और स्वराज्य की <del>ओर</del> सम्पूर्ण स्वराज्य की जो विधि थी उसके बारे में इतना कार्यकुम बढ़ कर भरा हुआ था कि उसमें समय निकालना भी बहुत मुश्किल था और आम जनता को दो जगह जाना/में पर कुछ हता अस्टिक्स शी वादल भी घरा हुआ था । तो उस समय पर मुलाबी रखा उससे कुछ नुकसान नहीं हुआ । देहात के लोग उस रीच ज़्यादा आये थे वह दो जगह पर उनके लिए जाना भी मुश्किल होता लेकिन यह तो कोई एक दिन का काम नहीं है। जो उस रोज़ विधि हुई वह तो एक रोज़ की थी। लेकिन प्रदर्शिनी कई रोज़ तक बुली रहेगी। शीर देहात में ज़ाहिर हो नायेगा कि प्रदर्शन बुला रखा है लोग श्राजायेंगे ,देखेंगे । तो उससे आपको कोई नाउम्मीद होने की कोई ज़रूरत नहीं है। क्यों कि असल काम यह प्रदर्शन का तो शान्ति से देखने का है। उसमें क्या बीच रती है और क्या क्या बीच हमारे मुल्क में बनती है और क्या क्या बीच देहात में बनती है ,क्या क्या बीच शहरी में बनती है , क्या क्या चीज गामी थीग से हाथ से बनती है और क्या क्या चीज यह मशीन से बनती है यह सब बीज शान्ति से देखना चाहिये। फिर हमें सोचना है कि उन िस्म चीज़ों को उसमें रिकीन सी चीज़ों को हमें आगे बढ़ाने की को शिश करना चाहिये और कीन सी चीज़ी को हमें खुद इस्तेमाल करने की कोशिश करनी चाहिए जिससे मुल्क को मुल को फायदा हो । तो मैंने तो यह प्रदक्षिनी बुली रखने का बोफ उठाया है। इसी मतलब से कि हमारी एक प्रतिज्ञा जो थी जो बीस साल पर करीब करीब हमने ली-थी। १६३० के साल में कि हमारा मुल्क में सम्पूर्ण त्राजादी होने पर त्राज ना हिए। इसी तरह से परदेशी हुकुमत का कोई साया हमारे ऊपर नहीं होना चाहिए। वह प्रतिज्ञा हमारी मगवान् की कृपा से पूरी हुई । वह तो ठीक हुआ । तैनिक एक जो स्वराज्य हमको मिला जिस तरह से कि उसमैं जितना उसकी प्राप्ति में हमने कष्ट उठाना चा हिये उतना नहीं उठाना पढ़ा । उसके अनेक कार्य ती हैं लेकिन उसमें जाने की ज़रूरत नहीं है । जो काम श्रासानी से होता है , जिसमें ज्यादा कष्ट उठाना नहीं पढ़ता है उसकी पूरी कीमत हमको मालूम नहीं पढ़ती ।तो स्वराज्य हमको बहुत आसानी से मिला कुछ ज्यादा में ज्यादा स्वराज्य के लिए कष्ट उठाया तो गाँधी जी नै उठाया और

भीर उनकी कृपा से उनकी आसीवीद से और उनका सारा इस प्रकार का मुल्क की उसके यह कामीहरूपा । उसने का जो काम था/देवह तो ठीक है। उनके भी के इम बन्द लोग जते । उससे क्ट लीग जैललाने में गये , नर्ह लोगों ने कुछ अपनी मिल कियत की बरवादी की , नर्ह लोग शादि भी हो गये , भर भी गए लेकिन हतना बढ़ा काम , हतना बढ़ा मुल्क और अनेक प्रकार के मजरूब ,अनेक प्रकार की प्रथक् पृथक् माषाओं और कभी हिन्दुस्तान स्क नहीं था । इतने बढ़े मुल्क की स्क बनाना ,इतनी इतनी रियासते इसमें पढ़ी थीं इन सबको एक बनाकै एक संगठन में डाल के बाज़ादी सारे मुल्क की दिलाना कोई आसान काम नहीं था लेकिन मुकाबिले में हमको की कप्ट उठाना पढ़ा इसलिए हमें उसकी कदर कम है। तो भी जब २६ ता० को सारे मुल्क मैं मालूम पढ़ गया कि हमारा मुल्क आज कोई तरह से कोई परदेशी हुकूमत की साया में नहीं है और हमें कोई श्रीर मुल्क का हमारे ऊपर कोई प्रकार का काबू नहीं है। तब सारे मुल्क में स्क प्रकार की खुशहाली का प्रदर्शन हुआ । अच्छा हुआ । लोगों को मालूम पढ़ गया , लोग समफ गये कि यह काम तो अच्छा हुआ है लेकिन इतने से हमारा काम पूरा नहीं होता है। यह काम तो जैसा एक किसान अपनी लेती के लिए जमीन तैयार करता है , लेत तैयार करता है इस प्रकार का काम हुआ है। यदि स्वराज्य जो हमें चाहिए जिसको जो गांधी जी चाहते थे उसी प्रकार का स्वराज्य की रचना अभी करने की है वह हमें बनाना है। हिन्दुस्तान में हमारे काम में जो रुकावट डालने वाले थे वह लोग नले गये अब कोई रुकावट नहीं रही लेकिन हमारे मुल्क मैं करोड़ी लोग त्राज जो दुखी है उसका दु:ख हटाना है। पेट मरके रीटी खाने को मिले ,पहनने के लिए कपढ़ा मिले और रहने के लिए अच्छी जगह मिले ,हन तीन चीज़ के लिए कम से कम स्वाराज्य मैं किसी प्रकार की कमी नहीं होनी चाहिए। तो लोग हमारे पास अपेना करते हैं कि हमको स्वराज्य तो मिला लेकिन उससे फायदा क्या हुआ २ वह सवाल तो ठीक है और यह स्वाल हल करने के लिए पहला काम था कि हम हुकुमत हमारी बनालें तो हुकुमत हमारी बन गई अब हमारे काम में कोई रुकावट नहीं डालेगा । लेकिन हमारे पेट भरके लाना चाहिए ती लाना कहाँ से अयेगा । हमारे मुल्क मैं तो इतना नहीं लाना जो अनाज पैदा होना चाहिए इतना नहीं होता है और आस पास मुल्क में से हमारे लोग जो ले आते थे जैसे बूस देश में से काफ़ी चावल इधर् श्राता था जिसके ऊपर मद्रास का ,वैगाल क्ला निमाव होता था और मुल्क से मी अनकाज आता था और हमारा मुल्क का स्क हिस्सा जिसमें बहुत अनाज पकता था वह अलग होगया उससे अनाज की जो तुटि है उससे हमें सब जगह पर अनाज पहुँचनने के लिए और कोई आदमी मूखे नहीं मरें हिन्दुस्तान में मूल से नहीं मरें इसके लिए बाहर से अनाज मंगाना पढ़ता है और उसके लिए बन्दोबस्त करना पहला है कि सब जगह पर कम से कम जिन्दा रहने वै

लिए जितना अनाज चाहिए खतना तो पहुंचाना चाहिए। तो उसके लिए अनेक प्रकार के केंद्रोल रहे । उसमें बहुत सी खराबियाँ होती हैं । कहीं हतना बढ़ा मुल्क के उत्पर यह राशनिंग और केंद्रोल का काम बलाना वह आसान मही और उसमें बहुत सरककर की भी बदनामी होती है। वह लोग प्रसंताति करते हैं वह लोग उसका दुरुपयोग करते हैं वह ेसव वीज़ होती है। लेकिन यह सब वीज़ हमीं करते हैं काई बाहर से करने वाला नहीं। लोग सरकार को उसका दीव देते हैं। कहीं हद तक वह सहि भी होगा लेकिन दूरादातर उसमें हमारी दुनिया में बदनामी होती है कि ये लोग रेसा ही है कि ऐसे मार्ड पर एक दूसरे की मदद करना एक दूसरे का साथ देना और अपने पास ज्यादा हो तो दूसरे की देना वह चीज होंड के अपने अपने स्वाय में लोग फैसे हैं। वह हमारे लिए अल्हा नहीं है। यह गांधी जी का रास्ता नहीं है और हमें सच्चा स्वराज्य चाहिए ती हमें उनके रास्ते से जाना पढ़ेगा । तो आपकी यह प्रदर्शन मैं जो बीच दिलाई जायेगी वह बीच मैं स्कतो यह दिलाया जायेगा कि हमारे मुल्क में ज्यादा अनाज पैदा करने के लिए क्या क्या नीच अच्छी है , क्या क्या चीज का इस्तेमाल करना चाहिए , किसे प्रकार से काम हो रहा है कर्षा करा किस किस तरह का अनाज बनता है वह सब चीज भी बताई जायेगी और बाहर से अनाज हमें कम लाना और हमारे मुल्क में सब पैदा करना उसकी एक की शिश करनी ती सच्चा स्वराज्य यह पूर्ण स्वराज्य की नींव डालना हो तो पहले से हमें समफ लेना चाहिए कि हमारा मुल्क यह सब बीज के लिए दूसरे के पर दूसरे मुल्क के ऊपर निमेर न हो अपने मुख्य में ज्यादातर जितनी बीज चाहिए , पैदा करनी चाहिए यह कठिन काम है और जो मुल्क इतने साल गुलामी में पढ़ा हुआ था और जो परदेसी लोगों के लिए एक प्रकार का अपना फायदा उठाने के लिए मैदान पढ़ा था जिसका उपयोग वह करते थे वहाँ हम इतने साल से दबे हुए एपपहर्ष और पक्छे हुए लोग थे और जो कंगाल मुल्क है उसको स्वराज्य मिल गया उसी के साथ सब चीच मिल जायेगी वह तो बन नहीं सकता । लेकिन हम लोग सब साथ मिलके काम करें तब वह चीज़ चल सकती है। तो गाँधी जी नै तो बताया था कि हमारा स्वराज्य तो सूत्र के तातहुं में पढ़ा है हमें चरला बलाना चाहिए वह कहा था। वह तो हमने कुछ किया नहीं। वह जो स्वराज्य आया है वह असल नहीं नकली है। असल स्वराज्य तो इम सब साथ मिलके जितने नीज हमारे मुल्क में वाहिए वह बीच हमारे मुल्क में बननी चाहिए तब हो सकता है। यह कब हो कि हमारी करहे आदत हमें बदलनी पढ़ेगी। हमारी हाजत तो हमें बदलनी पढ़ेगी। जो चीच हमें चाहिए वह चीज हमारे मुल्क में बनी हो, उसको ही इस्तेमाल करना तो हमें स्वराज्य तो मिला लेकिन सच्चा स्वराज्य पैदा करना हो तो हमें श्राज प्रतिज्ञा करना चाहिए २६ तारीख को या तो उसी महीने मैं कि आज से हम यह निश्चय करना है कि परदेस से जो बीज़ें त्राती है वह हमारे काम की नहीं हैं। हां , कोई ऐसी बीज़ हो जो हमारे

भीर जिसमें मुल्क को कोई नुकसान नहीं होता है कायदा ही होता है वो भी बीज इधर ही रही गई है। वा भी बीज हमें सब देसती वाहिय। मशीन हमारे मुल्क में क्या क्या है। क्या क्या काम करता है। कपना क्या क्या बनता है। ये सब बीचें इधर रही हैं। ये सब नीजें हमें देसनी हैं और देसकर नीन सी नीज नहीं बनती है। इधर उस का दिसान लगाना यहती जाम जनता का काम नहीं है। लेकिन उच्चान पति के और और समका दार लोग थे वो लोग उसके लिये को शिश करें कि हमारे मुलक में जिल्ली महीन वृद्धि को नीजें बाहर से बाती हैं हमें बनानी हैं हमारे हाथ से । और यदि हमारा स्वराज्य पक्का बनाना हो तो हमें कोई परदेश के पर आधार वहीं रसना पढेगा । निर्मर रहना की पढे : ऐसा करना चाहिये। वदिकस्मती से हमारा फंगडा चलता है हमारे पडीसी के साथ तो देखिये हमारे वहाँ जितना कार ... साना है कलकता में उसमें जूट सारा जिलना पाकिस्तान में होता है उस सब का उपयोग क्यर होता है। यह कररसाना। तो किसान लोग वो पूर्व पाकिस्तान वे रहते हैं वहाँ बूट पैद्रा करते हैं। तो सनका उपयोग सारा इधर की तो था , कारलाना इधर है औ किसान वर्षा मर रहे हैं अब क्यों कि हमारा उनका क गढ़ा चल रहा है। तो अब उसमें कसूर इनकी कितनी है कि गहरे पानी में उतरना अच्छा नहीं है इस समय पर लेकिन में इतनाकहना चाहता हूं कि हिन्दुस्तान की सरकार ने जितनी को जिल हो सकी उतनी की कि हमारी दो देश के बीच मैं दा मुलक के बीच मैं हमारा रोजगार अच्छी तरह से बले उसमें कार्ड रुकाबट न हो तो दोनों को कायदा है लेकिन जितने जितने हमने उनके साथ कोल करार किये जितने जितने एग्रीमेंट किये सबमें इनकी तरफसे 🔪 जब उसके अमल करने को समय आता है तब वो करते हैं और हमें एक तरफ से अमल करना पहता है जा लिए हम धक गये और हमें कहा कि इस तरह से तुम करो तो हम अब आपको कील वगैरा देते हैं वो बन्द कर देते हैं। तुम तुम्हारा करी हम हमारा करेंगे। यला तुम को नहीं देना है हमें जूट वगेरा जिसका पैसा भी पहले दे दिया है वों भी नहीं देते हो । तो यह तो अच्छी बात नहीं है । लेकिन तुम इस तरह से करते हो तो हमारा कपड़ा लेते थे वो भी नहीं तिया और परदेश से कपड़ा लाये लालों करोड़ों रुपये का कपड़ा परवेश से लाके हुमारा कपड़ा जाता है परदेश में और वहां से दरिता वो ही कपड़ा जनके वहाँ जाता है लिक्कोर उतटा ने जून करते हैं रक समय ऐसा था कि सुदेशका और कानजहर को कपड़ों वाईकाट करते थे आज हमारा जो कपड़ा मील में बनता है वह तंके इक्कर जाता है कितना उतटा तरीका हो नथा है। और वहाँ से फिर ठीक ठाक कर के पाकिस्तान में जाता है। तो इस तरह से दोनों मुलकों को नुक्खान होता है। तो हमने को शिश की कि इस तरह से क्या पायदा और जिस चीज से दोनों को नुकसान होगा । लेकिन हमारा नुकसान बनाने का एक ही तरीका हा सकता है कि जितने हम करारकरें एग्रीमेंट करें उसका ठीक तरह से उसका अमल हो उसके लिये रुमको गार्रेटी चारिये। न हो तो सबसे अच्छा रहता है कि हमारा मुलक उनके पर निर्मर नहीं हमारे मुलक में जितना जूट चाहिये उतना हमी पदा करें। जितना कीटन

.

नाहिये रुई नाहिये उतना हमी पैदा करें और जितना बनाज नाहिये वह हम पैदा करें। वह काम कठिन है क्यों कि भाज तो हम बनाज बहुत बाहर से मनवासेह शोर उनके वर्षों काफी बनाज पहा है बीर मीका बाये तो सह भी जाये इतना पहा है क्यों कि इससे जितनी को अच्छी अच्छी जमीन थी जिसमें मानी का इन्तजाम था हरिंगेशन के इन्तजाम था 🎢 यह सब उनके पास थी हमारे लोग तो सब निहास दिये गये वह इधर आके पढे हैं और इधर मारे मारे फिरते हैं। इसका बन्दाबस्त करना उसका गुस्सा मी सहन करना उसका दुखमी देखना और वहाँ उसकी जो ज्यदा जगह पड़ी है वह सच्चा सोना है जिसमें बनाज बहुत पकता था । रुई बहुत पकती थी वह सब दबा के बैठे हैं। हम बार बार चिल्ला जिल्लाकर कहते हैं कि उसका फैसला करी नहीं करते और जिद्द करते हैं। इस तरह से हमारा उनका फंगड़ा चलता है इससे दोनों मुल्क को नुकसान होता है तो उसका फैसला तो एक ही तरह से हो सकता है कि बुले तीर साफ दिलसे जिस तरह से दो माई बैठ के बात करें इस तरह से बोतों हो सकता है नहीं तो हमें हमारा समक लेना चाहिये कि हमारा मुल्क उनके कामर निर्मर रहेगा तो निर जायेगा । गिरने नहीं देना नाहिये तो एक साली पाकिस्तान का मैं नहीं कहता हूं कोई मुल्क के उत्पर हमें निभीर रहना नहीं चाहिये। हमारा मुत्क अपना स्क अपनी जितनी बीज चाहिये अपने मुल्क में पेदा करें वह पहिला काम हमारा है और उसमें यह प्रदर्शनी का काफी साथ होगा । उसमें देखने की चीज बहुत मिलेगी । उसमें काम सीसने का बहुत मिलेगा । कीन कीन क्यू हैं वह भी देखनेका मिलेगा । इस सब बीज का देखना जानका यह हमारा करीव्य है हमारी को शिश यह होनी चाहिये कि हम मी सुकी श्रीर हमारा पढ़ीसी भी सुली हो । हमारी नीयत यह बोनी न चाहिये कि हमारे पढ़ोसी को दुस हो लेकिन जब तक हमारा पढ़ोसी का वताव इस प्रकार का नाहा कि हमारे सुल में वो सुली हो या हमारे दुल में वो राजी हो तो हमें उनके साथ दूर से नमस्कार करके अपना इन्तजाम पूरा करनाचाहिये। वो हमार काम है । इस लिये जब मैंने प्रदर्शनी सोलने की जब बात आई तो मैंने कबूल किया इस मतलव से कि उसमें तो अब जो प्रतिज्ञा हमने की है कि हमें स्वराज को ठीक करना है, मजबूतकरना है तो पहला काम हमारा यह है कि बढ़े वह शहरी में देशातों में हर जगह पर ऐसे प्रदर्शन हों। कोन सी नीज वो हमारे मुल्क में बनती है जो उसकी हमें जब अकरत हो तो इसको पसन्द करें कुछ ज्यादा दाम पर देने पढ़े तो उसको ही पसन्द करें। कुछ सस्ते दाम पर बाहर का बाया हो तो उसको ना पसन्द करें नहीं महें हमें यह करत नहीं है। क्यों कि यदि एक सात दा सात तीन सात चार पाँच सात की तकतीक हम उठाते ता हमारा

मुल्क मजबूत बन बायेगा बीर फिर हमें काई तरह का हर नहीं रहेगा। बीर बच्छी तरह से हमारा काम बलेगा। तो बाजतो हमारे मुल्क में एक प्रकार की शान्तितो हुई. बीर इतना वहा मुलक एक होनया है जितना कमी एक नहीं था । तो वहुत वही बात होगई है । हिन्दुस्तान के इतिहास में हिन्दुस्तान इतनाबड़ा एकत एक मध्यस्य सरकार के हकूमत के नीचे कभी नहीं था जितना यह बन गया है । इसकों सैमालना यह हमारा काम है। इसके लिये इसको मजबूत वनाने के लिये जितनी को किस करनी वारिये वा सबका करनी वारिये ता उसमें रूप जीर जाप मिलेके कर सकते हैं। खाली हम सरकार के उत्पर वैठके वो चीज नहीं हो सकती । उनके पास इतनी साधन नहीं है। इतनी सामग्री नहीं है। यो जलम से पढ़ा हुआ मुलक है। उसको उठकवा हमें समक लेना चाहिये कि हर बादमी का कर्तव्य ये हैं। बाज दो चार साल तक कि हमें उसमें जितना मजबूत बनाने में जितना साथ इन सब लोग हकूमत को दे सके ना अपनी हकूमत है। हकूमत को देनाचाहिये और फगड़ों में नहीं पढ़ना चाहिये कीर बाद विवाद में नहीं फैसना चाहिये। बीर इस प्रकार में वा रचना ल्पक कार्य है ये प्रदर्शन के जैसा उसी प्रकार का काम है और उसमें से जो जो सीसना मिले जिस जिस रस्ते पर जाने का रस्ता मिले को सब बीज जो कि उसी प्रकार काम करना है यह मेरी प्रार्थना है। और मेरी उम्मीयमी है कि हम किर यही निश्वय पर वायन कि ल्यारे मुलकको किसीन किसीप्रकार से मंजबूत बनाना है। क्यों कि नांजुक समय पर् रुमारा मुलक बाज नाजुक समय पर बागया । क्यांकि रुमारा मुलक कोला ऐसा नहीं है 🎢 दुनियामें नारों तरफ कान केल रही है। बास पास हमारे मुलक के बास पास जहां से हम काज तक कनाज लाते थे व्यापार करते थे वा सब मुलक काज दुस में फेंसे हुए हैं । बहुत क गढ़ा है बहुत मार्गिट बूना मड़ी ये सब बल रहे हैं । हमें. हमारे मुलक में इस बीज को बचालेना चाहिये। जब चारा तरफ त्रागे फेल रही है बचाना बासान काम नहीं है। बढ़ा विकट काम है। लेकिन काम करने में तो मबा तब बाती है जब उसमें जब मुसीबत है में मुसीबत में काम करनावहादुरों का काम है मदौँ का काम है कायरों का काम है जो मुसीबत से डरते हैं। लेकिन डरना नहीं चाहिये। जीर जो जास पास हो रहा है जीर मुलकों में उससे बचने के लिये हमें स्क ही को जिल्ल करनी चाहिये कि हमारा हिन्दुस्तान कि ये गाँधीजी ने मार्ग बताया है इसी मार्गे पर नहीं दीर काल की जो परिस्थिति है उसमें हमें जो जो काम करना है उसमें गवनीयट का साथ देना चाहिये। श्रीए यह प्रदर्शन में जितनी जितनी जो नीजें है वा नीजों को देखकर हमें दृढ निश्नय करना नाहिये कि हमारे मुलक में ना जीने वने उसी का हमें उपयोग करना चाहिये और नहाँ तक हो सके पर्देशी चीजों को होड देनाचा हिये। जापसे प्रार्थना है कि जाप लोग सक इसपर करने की का शिश करेंगे।

53

खरनी मेंड म्हेशन पासेना कारीयाची Convirt भारता पुरुषालयुक्त जनकर्म पार्ट कार्याना हर्दि खरान - एक्टेनार स्ट्रिकेट

लार्डिंग आराउन लार्ड,

अमान की उत्तर मेरे द्वाहरते में ता ती केंद्र सामन्य नित्र के उस के असले असला असरडा में उस कर असले असला असरडा में उस

munition of the state of contraction one of contraction of the state o

पड़ना हैं। अभार मेर्डिस (श्रिस्ति कारर) हमाडी पड़ना हैं। अभार मेर्डिस (श्रिस्ति कारर) हमाडी

वरवारे करूपे क्या १५०० में ६००० में

Ehn 2 Bm - 1 Vanid Soisi &

Support of the later of 2/3 the support of the contract of the

many see con i has all it inde

टिका आहरे भुंबर में कराव को लें नहीं!

1 केर्ट की तर ती minia रव

स्था ने स्थान

216 year and,

hyor you being some

and state who noin Popular à.

despession as

2231812 d. - di Gen र त्या के कि विकास

something grandy manger than the author out. अभग की अध्यातिको हरिया महारहे अला है. ब्ली हरिया में पडे हैं.

ti enew nienn men granz to भार उसे भूति हरारे 15+ NE 12

" man of com of the wind 213 of 101 11 On H Elverior and His Link Elon By H. Inch. Owning Eine 2012 Glass you 21225 010 Estan Cray I Bry mich all and I'm

small center is using with biggi अर्थानुन्द्रा के व रहिता है वाटा हैसे के ना दिया.

अस्त रे १६,००० s Elm 2021 यंत्रोरी डा DIAL HOLE BESHYSTERS CHEERST SIN BEE

Drage Si K לו בוזי א איחו 213+24: di ma. 12 arite Blass

TTEM :

Script of the recorded speech of the Hon'ble SARDAR VALLABH SHAI PATEL delivered at Chaupatty, Bombay on the 4th January 1950.

ब्रुन समय में काद में आपने पास आया है। मेरी समारिश थी कि कोई केला समय आजाय तो सार्वा का उपनेगा होता तो कि में आवनी मुदानात कर हूं। विकती हती में हम मरीना तक इयार रहा देनीन निसी की मिट न स्वान्धियोग सुमें दुस्त भी भा तन भी भे करने आताई ता सर्वेत मोटरन नी मेरी स्वातिश रही ही आज मेरी प्रकृति केसी नहीं है। में सब लोगों का भारता अलग मुलामार के समें। इसकिर्ष में अन्य दोनों को मिलक मी हिम्मक की है स्व जनसे में। बन्दें मर रमारे हिन्द्रसान की सम् राष्ट्रीय प्रवृति क रेन्द्रस्थान र कार काम जा मालीय प्राप्ति यह अरिप्रीय उनिने हें उसका भार निकालने का रक्त स्वान है। बहु की प्रजा दुरा भी हें यत्रीय तें कार्य अपमा दिन जानती कें इसकिये करता है में मान माप मिटड जाती है। जान नम्मई विशहता है मा लिए दिरु स्थान किनाउला है। बन्बई नाराण है दिरु । आन मार्ग क्यार के के मार्थ के मार्थ के मार्थ के प्राप्त के प्राप्त मार्थ के प्राप्त मार्य के प्राप्त मार्थ के प्राप्त मार्य के प्राप्त मार्थ के प्राप्त मार्य के प ut अरोड़ि को पड़े हैं। वर उसके स्टूब इक का केंग्र some asas & I se not & I asas of stains जारोजनाली अर् बन्बर् का कार्यक उसमें जा देखन में रतने वात्में अरोड़ी त्रीम हैं उसका स्ट्राल इस का काप गरी होता मां की काफी कार्याण वस्तर से मिल कारात कि हिल्दाक की नाउ- व्याहिश इसिक्टर वाकर के दर्भ क्ष रखन पारियों क्षेत्रिक दिन्द्रम्मान की हात्म भीरत

अभिकार का कि असे अने अना की कार्य का असी अप करेड़ के ही है वान्त्रेश्म देश है। जेल चाडापुरा है. असता नाउ के एक अप हा : colona ut िखुरकात में कार्य की परि दिवाती है उसका अलग कार्या पर कार्रि । इर्र राजीन एकारा तर आएक क जो अविक्र होती है उसका बांध सरकार पर डालते हैं , उसका उन्हें अधिकार -है. जो अरब 31 ही ता है उसमें सरकार- को जिल्हांबार भागते करों तक सरिष्ट उससे कालाई टरेकिक भारत में ने देखा कि ला लाना ने अधि अस्मार अर वर अला मार्च क्रांस्टिंग अर अलाही इस में भावा देते की की काह जो कार माल की वह शक ज्यादातर साकार की अनता जीनी वरन में शरीक ही अर्थ हैं रुख मकार- का त्यांना के रुख अर्थ है। असा कि हर सीए में साकत वि रीका करें। हिंद बात हैं उसमें रूद मरहर्म भरकार जामी वह सकति देविक पाव हर रोप हम रक्ती वात सलात रहत हैं - यह सर्वार मी गलायक हैं के न्ति हैं, का की स्टालिटी हैं, विकार दर्ज वाल हैं कार्र भा अस्यावणार करते वाले नार डाक्र्रीट उसकी भी अस सका करी दे सकते हैं , मुट्य कर कही कर सकते हैं। केली बात शंक अस्ते हैं अक दर्शा जा. या सम्भावा न्याहियों भि अह सरकार अति हे 9 हिसी मरकार दम कुर्क रहने। कोर उसकी निकालने के उपाय क्या है तक मालुम टोगा हम संव असके जिस्तादार हैं केर दम सब के इसमें हिस्सा है। तो पर्न खुदा दुख दमारे पर कार्य

भा गरा है असकी देश बाड करेगी कारक तड़ेगा सि गरी असा हि की अरबार करती है वह अब सकी वल है करों कि आज भी राजतंत्र सकार नाक है उसमे राजी राजतंत्र नालाता नहीं आ - हर असका सारा जिंदानी भा आम असे बरहेकी सरकार म असकी हरान के लिये, जेल में जाता, अउना कोर्डल अकरार और अवित न्यटमा कि किएमें और उसकी किसीनारी art of lestones mille days sure year bay a our िपक्लिय हो आ। अन्दरका ३ - २॥ साट आम किया उसमें अल दस सरबार में अवह अध्या अस किया है मा गरी- समी वुश ही आम विया है या नहीं - अमी बुश दी माम वियार तो यहि २० घाट आपको हो तो आपको समझ न व्यक्ति स्रो-यना टार्निट का इसरा सेई दंदा है जो उसे की बतावे जिस्ते आजको सूख हो।तो हमारे जैसे तो जिनक दें रे यम जीर दी अरे उनके पर से बी के उठ पास तो हम तो वहता ही उन्हें होने - न्हेंदे तार बीते रहेंजेरी देशिय- वह तोगों औं प्रवासदारी त्रेंच के किसे तीगार होना हो तो कोई मिनियों हैं कि स्टा टिंग हैं तो में अहता - इसे दी मिनियों हैं कि स्टा टिंग हैं तो में अहता - इसे दी ती अस न होगा। पानावरात देनी हो तो जवानकारी भी लियाकत होनी न्याहिस उहाका संयादन अरनी पडे और। अर्दिशा ित जनमानी की अस्ता रहताई राहर की बर और काम बादि इडा सक्ता। भाज दार को कारत पड़का ट्रिक्टिन नामनी काम अमकारी है कही दें का करी जो अन्य भरत द्वर हो . को दूसरे ने जिला हमने गरी किया भता उस तरह कोई काम हो अक्स है किया समका न्यार में कि उनिया परेशान है। केरे हगारा अल्य क्लेक्सकार के स्वालिट के स्वान नरि को विकास के बार को को में से स्टी हैं इसमें असर में हर नहीं

वय सकते भी कवा काम कायको जाननिष्य वर थए विस्त्रे टिन्द्रकार का जात बनाओं इसना अशिश अर्थ इसनी क्वींनी अवले मी हमारा त्राम क्वम दर्भामा दिने वित्रकान के मजबन कन ने कार्य स्तुलि न्याना है। कार की मो इसर के लिसे हमें करम करना कारिया । व साम मी कुर ा हो गा। थह जावाबरारि मरकार वा च्छोड़ हैं तो उससे नाम न वनेगा। अब देरिवर्ग रूप उसर सपाल आपरे आअसे श्रमा है जिससे सरकार भी केरपी बरनामी 33 / सम् मवात मी थह हुआ कि देवाटम के आंग्रेक पर शतका गही रिमकी वहूत क्षेत्र मनाने को निर्देशि सममता है कि स्पा काम हुका समें दुश्व हैं - त्वेक्त- इतका असरवार कान है 9 उसके खिरो कुन तक दूरी जान्य करों नवाक जिसमें कुरूर किया कह भी कहेंग हमारा जह कारी का कर्मार है। जो व्यापारी को जा की कारश्याची वार्ल - यह कार की अस्त मणदूरी भी तसर है , विसानां का उसर- है, मना काटन-अ उर्देश हैं मेरी वार्त पर में

सरकार कहेगी हम कथा करें, हमको ती कुछ सारहम न खा हम किस शब्दे से चाउत्कर्क वीतमें वह दक्तक आहे हमते पूरी कासीश वी - इसरे का करार है। जी शकर खानेगांड से क्टेंने हम बाकर विना खाव मनर में में बाकर से केई भारतामही है। होर न आग दर पहला है यह नेसा नहीं है कि खाने गीने की पकली करें जा कोई दिस्ताम गणकर है. अर्थ कर के देनी भी बहुत मुश्रीबात है। टोकिन वे बरशहत करते हैं और इसका आप काउका जो पते हैं। तो असमें में संस्कार अपनी, जिस्सेवारी से नहीं वाच सकते हैं. ट्लेकिन शिविकामें देती चीज नहीं ) अगोर करार किसका है होता तथा माट्समं पडेशा | टेडिकन सरकार कथा कर उसमें के पन्द अपद्मियों के पवंड तो उसमें भी शार मचता है कि इसकी पकड़ा उसकी पकड़ा -यह भी गजारी है वह भी छाउटी है ते कीनी क्या उपार जो वुड़ करना है हम करेंगे विकित्त वह जोती कात भी उसने वह जीती होता किसकी आदत पर गई है मुसीवत उठाना हमारा काम नहीं है। उनसे होता है इतनी मुसीबत नहीं पड सकती - तो भेरी सताह है कि छोटी बातों के ह्यानी बड़ी बनाकर शार मचाना इससे हमारा काम नहीं होता है असर अबि सरकारको हराना हो तो बड़ीबाव नहीं आसान चीज है | उसके दिये हमारी वैद्यारी होनी चाहिवे असे कारेंग असका वान्द्रोवास्त करना साहिये कि वह सीज देशी बनती रहेगी जिसमें हमें वा अवस्थि। हाती रहेगी / वोनोंचे साथ भिटकोर काम करना चाहिये / शाज हमारे मुहकों में बीज़ की बड़ी कि हम करों का अगण बाहर से भागा परता है है उसकी को भारतम पर अगणे हैं हमा करना कारता है कि हम करना का अगण बाहर से भागा परता है कि हम उसका उक्त करना है । जान करना का स्वाह करना है । जान करना करना है । जान करना है । जान करना है । जान करना करना है । जान करना संस्कार जिम्मेबार हें और बहुत हैं अब स्त्रिश्चित काम नहीं होगा / इंग्ने अनाजबी कमी नहीं जिस सहते हैं आ बहा करा सहते हैं ता बादी होगा अहं आ उसकार जिस है। हमारा काम हो जाया। दिने हिन हमारे में प्रकारके आदमी है सरकारने विश्वय किया कि अनामंत्र भाव इतना होना द्याहिय और बीक भावने किसामेको. अरकारमें अनाम हैना भी थाहिये | तो इसरा दत निकलता है कि सरकारकी अनाज का भाव मुकरर करने का क्या अधिकार है। क्वा कि उन्हें की जिम्मितारी हैं - की कहता है शरकार को मत दों तो हथार करा देशार तो आज किसोने हैं। जारा अगाज करा को में माइ करनी नाडिये और हमारा म न्यादिये। अंत्यह कि अभ्य प्रकार निर्देश तो तुम गिर अओओ। और साल विश्व शान गिरा ते अते कोई नहीं क्य समला लो जनी हरकारी क्षेत्र के कार अगरा मुख्य अगवर दुवन तो यह नार उत्ता नारिय जो स्केश पाठी केमहे अना काम पर नहीं है तो अना करी जो रोश है उसने विके बरोज़ें उसी का अनाज कारर से छाना पर्माही असरे किये करतार ने बैदला किया कि बहु युक्त अपने का कर हो जात हरेंगे किये नोशिश करना मारेंगे क्रेनिय पह खाकी करकार से नहीं हेनगा। जानतर क्रीमा साथ व निर्दे तकत्वा । अक दूर्श कव्य - क्या भी चाहिये ती कार के विभी जिल्ली किसी है पर गिर्मी बार जोर कर कर हुआ के

क्रा किये कर पाहिसे हमारे मुख्क में अनी यह बनती नहीं और असके दिसे कहार से बुखाना पहुँ उसकाभी इन्तजाम करना चारिये क्षेरि मानदरोंको समझाना चारिये हैं तुम तुम्हारा काम जिल्हा ता है देनेन्द्रे देन्त्रे पूरी कीशीश करें। हमशी कीशीश करते हैं । आज हमारा अज है मेंगे अगड़ा करना और माहिकों को भी रामझाना न्याहिये कि भई बहुत निन पहले नामा किया अधिव्योगी करने भीका मिलेशा के किन अब तकतीम है। भुतापार की बात खीं अर मुस्के में इस है। आ के में यह नहीं बहता कि सब लोग हमारी वात मानेंगे लेकिन हम देसा वायुनंडल आगे हना केरा कर पन्द दर्जन न मान सब्दे हें बादी नोगं मान सब्दे हें इसमें मूर्ज बाद नहीं | देकिन हमात जवालदारी छाउकर दूसरे में डाकरे रहे ती दूशरको दाने रहें त्या कमानती ने सकता / हमने तो निकाय किया कि स्मारा करेंव्य वह है कि ज्वादा में ज्यादा खान पेंदा करें, हानाज से कपड़ी हो बारी हो, त्यादा हो विक्रम दिली भी भाशियात है प्रशादा में प्रशादा है इसरे दिन क्रीनि करना हमारी दाने हैं करिंव्य है और संमद्भा पाहिने भीले जा आपक्षमें सगड़ा क्या हो तो जब मुख्य भाजवृत होजावना त्रा सगड़ा करेंने | कीर कहत्र हे कि हमारा तो Equal Distribution of wealth होती पाहिये - जिल्ला हिमार पास द्वा ही सब की अरी से बॉट देना न्याहिये | अभीतका केली मुक्केन नहीं दुवा है टेकिन क्रियमें आजारीका जन्म वसाल श्लाहा हुआ। व सारा हवेन पह हो ले मेक है । के केन आज यर कही धन जिल्ला इतना बाँट दो ता मुद्द भिरवारियों के ही या | उसमें कीई धनवाम नहीं रहेग अकर टेकिन सबको आयन्द्रना है। यहनिध्य किया है तो अकर टेकिन क्या हमारा हर्यय यह है ? क्या हमारी आधारीका मक्सद अही है ? तो हमें वीचका शस्ता किछन पाहिये - कहें एकेंग कहा है कि नहीं हमारे औं उद्योग हैं उसकी सरकारको हाथमें दोना न्याहिये क्षा प्रक तराकती आप देखते हैं कि सरकार ने की में के मामछेमें कथा किया है और जिनमें उद्योग हें हत्यमें केन्द्र इसी तरह इसे करना है। सरकार का करन मतल व है। यदि सरकारके पास इतने आधान नहीं कि अपनी व्यवस्था कीक तीर में चट्डा मके - उसके उपर प्रधादा वीदार डाउना कि जो कुछ हमारा है वह भी निगढ़ जाय ती कहा भारत है थिर साम मुक्ति जिले उधान है उठने उद्यान कोईसेशी शतकार ही कि जिला चलक है बेट्री ही चलारे के बेड रोसी निकी अविभिन्न हो ते में पहाडा दस्तकत बतला है कि हा देखी देकिन और बहुभी विभाइ दे पेती स्थाती हमाती हो और उसेमें कीई नई बाद नहीं हैं सारी दु निजामें हें गए। कि कोई महक अकार प्रसान्ति हुन है जो ज्याद पांव की प्लाड रे शिकारी वनकर भी छे उसमें कथा निकरकेगा तह में नहीं जानता टेन्ट्रेंस भी के उसमें कोई मचना राजनहीं कि मुस्करका इसदान हैदान करेंद्र उसके पीर्के देखान के कार वात निकार्क असे कि हमारे साम्यवादी शाई कहते हैं। देख-एके आक काउक्ताम , रोण रोण कीई द्रामपर वास केकरे , महरवर मकामपर केमरी में 1 चान्दर ठोगीन पेशा कर खिवा है जिसमें कुछ प्रेम मिल्डे कुछ छोलटा मिल्डे ट्रेकिन मुक्समी पान इम्पात पान वाहर अस्ववाह धर क्रीर परदेशी लोग हमारे अहवात का वायान की में ती वह बरेंग कि यह रेसा भूदक है। कलकता हिन्दुस्तानका प्रक बड़ा इस्टर है जिसमें उद्योगका केन्द्र स्थान है। उसने आपभी रात्विन यहि हा-हा करें हर रोज उसका मतलब कवा उससे कथा मिलेगा और मुक्कको कथा नुकसान होता है कीई नहीं श्रीचता

Part 2= 6 40 64 है। इस मार के प्रमान के के के किए का मिल के के किए का कार उपायी तो में अच्छ अड नडी अमा। उनकी यहने भे पायमां ही क्या - करते कि उस रागे को भाग जिला कि इस महर आय a tesms where is heles me - Entes meors इस शरमे पर जो मुद्र जारेग तो वह को आजारी दमन वार्ड हे अहा हो महि मा अया नरी । इसहे कुटा टर्जा रहते हैं किइस मामार के लामने कोई विसेचा कार्ने महे नहीं हैं अभी करती में जा विभाने के 1 अट मानीय अरकार है उसका कर विशेष अपने अपने जारी हैं ती कथा अपना अदि निर्वास अवने से कि है - अर्थ मुक्स में परं सरकार- में अर इल्पन मिलेगी और अमे। तेकिन दर्शन क्य जुल्स निकारों कार्र में में देरियेट पर प्रस्त का कर्त की अकर ज्यान के हमाने के करता करता कर कार के कार कार अपन भी तेश अवने कर बात वारी तन ही मा । टो किस अगम अता कार अपन प्रमा को न्या क्रमा महिने । हमें इस प्रकार मायरिया गरी रहता नमिक्सी दर्भ दिल्ड्रीकार में जिसमें त्रांगड उन्हें नापनि अवस्य अपरि अम्मान नाहिस कि हम भी निया अनुमारिश्वयान दिवकिक का का काना है उत्तर Abult landrager is with as sur a distill, no has nit how थत कि अनेना अपनी जाताकारी का रकाक १२वना चारिन

में आपनी जंब मन सब उन्हें अवस् बार्म उराने में वय नहीं दी कारी मक मक दुर्मी बर है। अग्र अरकार कर प्याया में प्रयादा मुसीबत है andres of course of the section of the section and section रेष निकालके देव और विशा के उसमें बहुत बरमाओं दुवी बहुत क्लों भी मुशक्ति आहे क्यों कि बहुत लोग की बोबू कारदा उठामें। माज टलपेका रहाने भी सरकार राजी हो पासकी नहीं, आहित्र अंगे मेजागार परमाने नाटक वर्ष वर न न्यांवा सके । तो वर्ष रित नादी आहेर अर्थन नायंत्रा अर्थने क्यों कि सरकार का काम आपार करने का नहीं। जो काकर अर्गार मापार अर्गी वह अर्थि भागमा । यह अस सम्मार मे नारी हो गा । केम जे अभिने उस मह भी . हैं कि जिए में दमारी स्वती माता कि कार कार कार है। अठनाई यो जो काई है उसकी बारने की मेशिश आपकी डांगा। बिना मिटलत किसी आ मेंगा दे खेला बीक एकाशाही जा आचारी किरली उसके साथ है। का अस्ता अला । यह का असे हैं उसे हराका है। हराकों में का अस्ता आलाशी की आज आई हैं उसे हराका है। हराकों में का असे साम मेंगा असी - जाहि हैं असे अह नाहती की का मेंगा की का असी साम मेंगा असी - जाहि हैं असे अह नाहती की का मेंगा की का मेंगा की का मांगा दर्शकन सिद सुटक का दित असले बिगड़ ताई तो टमें उसे शेक्ता न्याहिसे। ट्रम व्यान ज्यादा प्रेंटा करे उसके बाद वट अब ही स्टार्ग हैं। स्मारे उपर उसरी सबसे प्रथाप मुसीबत थर है कि दमारा और हिन्द का जल र है असका अदि-काम के तो आल्भ पड़ेगा कि मुल्य का क्या हाक है। दर्भ राजिकी के उपर जिल्ला कर का के क अल्ला व्यक्ति उत्तर भी कारत डाला है ट्रेकिन को पर्म आता है उसमें शे दिस्सा हिन्दु (आज के बचान के लिसे अकार रखना यड़ता है। अरेड शहताहै - वहुत से क्षेत्र शहते हैं शला रतन कहता आ रवनी को शी (अरेश्ट के स्वर्त के शर्म) किना समारि ममरितं हैं - हम उससे कारी नहीं जाता अभी कि खुल्क का दो दुकड़ा हुका है। टमारा प्रश्न Enix 3 ट्रांस नहीं। हमें 30मीर वर्ष कि को देश दे 3835

अर्ड मी अलिसे होग मुख्यत से होगा अर्थ रह अस्मावार निकार महामार कि एक महाना महात मह दिसाकार वर अन्तर पक देश करहा। अर्ड ताव एक दश्म तारित के साथ दामरा संबंध अर्थ अर्थ है का ही सब तम् का यह दारा का देन हैं के किल्ला मेर्स में के के मेर्स अवस्था नाही वह म को भी हमें हर जाना नाहिंगे मंब इस बेबल all smel manel or of my some accompany with यह आही मुलीवन हमारी ही नहीं उनकी भी है, वह भी जाता है। दी हिस्सा श्री वबद में काली भी को कामनी दनने विद्या कतार । अपने ज्यादा कम नहीं । अनवर त्रान् कार अवस द कि कार कार्य करिया हम अवहि कामना भीर इया अवश्वा में एक जलता दुका मी को में क्साय किस कि जो टिन्डुस्कार आदी दुश्हा दुकार उसे ट्रांचन अर्ट्न - मानमें बाद जर दिम्मत निकार है समाय इत्ताने के विसे इससे सेने म्यूक्न नहीं हो सकता। यदि हो ता टम उहे उनके अपर अर देने की-मा शिक्ष भी भाग भी भी ताला है अरहे ने वह दिन आ हमारह मारी क्राम आहिसे। मी विज तक्ति में उभावी है यह बात, हर मु अमिला मी क्या हुआ कि मिला जी का व्या दुशा उद्यो अर्थ एमें आदार जिस्ते जिस्ते हत्या औ किर आभी उती शर्म पर पत रहे हैं उस शस्ते पर जाते में देश आ अभाव ती हैं हि, उन दर्शनी आ अरिनुश्मन हैं तो में उन दर्शनी औ के माननी देना - व्यवसाई कि सूर्व को और का कार हमारामें या जाने मा विकास परिमान मही का हो वर्ष श्वाकानार 32मन को में का देते हो करने में कि बेर्ज इनकी विश्व उसे 1 टमारी नियन विल्डिक कुरी नारी टर्म काहते हैंकि

Part 3- 3. 90 पानिकता न पाने वाले, माज द्वार हो, त्येत्रिक दवने द्वार अवहत बनने नाली नहीं। परित काप पानने हैं कि सारा पर उनकी, स्नी वहाँ परि विद्वार का में, उनका सारे पर का कारसाना रत्यमार्भ। अन्य दुव्हा में हिंगा क्षेत्रन वार्शाना दूर्वा कर प्र उसर है। वह कि लान जो जूर शिवा इता दुस पैता म करना कामा अहर भेषामा नहीं तो असा अमा असी हिल्ली सम्पत्ति कार्त है दूर गर । उसकी की उक्साव है अवस्टान and 3 miles of still too a size wit sevaluation Ent 300 अतिका यह दुका कि उक्षते भात लिया का का कपया का भीमत काडा दिइस्मान भी क्या कमारी यह मो की में हैं और मिलका यस प्रकार विका दि सब म्ला में किया नरहे। भारता रहे। कि के कि का का एक का या का का का कि के त्य किया भीकर्ष थारें पाकरत पर्वेगी में किर्मिकर क्रिंगे वर अस्ते का मुलय नारी आयोग के मा अम करें। मिल्ली में कार्त विका कर एक ने हैं भी के देने अपनि कार करता होती है हम कड़ना नहीं आहते । मुहक्वत हो काम करका आहते है। किसिन इस प्रकार कुरूर रमदारी से शिराधीरी से मार्स करना होती इसमें हमारे प्रकार ही होगा। से काम कहा कहा हमारे सुक्य के हमारे बराबर करना याहिया की जिसमी की व कारती है जह चीज हमारे मुला में पदा त्रवन - क्लारिश में त्रवन त्रां कर रेट्नी मो सर्वा से जो उनके के जायतेंग किनिस्टर हैं उन्होंने पटा कि स्किन देखा ने त्रवन हैं कामते मुला में पदा क्रेंगे - देखा उन कि नियत। में हमारी नियत र्क्षिटीनी स्मिटिक कि उन के वैरों भी बड़ने रहें यह मी बुकी बात हैं हमी अमिद शक में - अर अलम हैं - ही सहस्वन-मित्राच्यारी से अभारी क्षितार दिस किये बहुत अभिक्ष की टोकिन जिसती की भी उसती कि निवकता जाती हैं-के अस्मा अस होतारी मान हमें अहे भीज असमी पड़ती है। तन हमने-निष्या किया कि दमार कितक पूर रोक किया है अर्थ

अर्थ असका विके त्युक्ता के परले जिसला राम केलावा के दिशा मोमरि शेक किरत तो हमने निरंपम किरत कि इस तर तो भाग जारी ही सकता है। अब अमदी हम कोलमा देते हैं वह बंद करी- वह वर् किया। वर कोलामा हिनारी दम बहुत सी वारे हैं जो कर मकते हैं कर्श अटि अवना होती भी आप श्रें कर हम अरें। भी पर अरक अर्थ भी आज भी दमारा में प्राहम मिलिस्टर पुत्रार मुकार में अरेला है ए अर्थ त्मेश अधिर ही द्यार अधित में स्मार्थिय लिसे दुआर अर्थ भिष्टुरी अही। हम संभाउद्धी को अहोड़ी कारणी अर माल दिलियों के आम डांकर डांकर के मिलाद दिया वर देवाने वर्ष दें असकर स्टिस्टिंग अर्जन करही है। पान मन सेमा नियान अर्थनी मन मन मुद्री अरोजनी को दिल्ली। मी हमारी निकानिश्त इयार उनकर अलार अलाका मागाइटि तो इसका केंद्राका लगाद ले टो ना स्पिट के। अवना हो तो दल में अपरें। के में मितने दलारे अवन है कर हम मनार- के को है कि जिसका माना की में मिला may & oto & at an at Round of it als extraction अनक अपिक्सत समार अपिक्सत । विश्वत सम् अपने कोरिस मुलीबस आवे तो अवानि पड़ेगी। वर उठाने में विशे में आर रहता चाहिने। दम विद के विवाने करें के किन हम देन त्ये अरम न्यादी है की है एम विकि में साम लाहा में बर मा नारी नारमे अ- अभिया में मिसी अ मेट र दार्श में भारति भी कि कर भी दिन्द्रस्थान में । मानी भानित्य में भी न्यन के अ असने अला आपने बमागर श्वान में में शिश होता में मिलम् । जिसला अम्म को स्वीमेन्ट को असवा यतना मध्यारि डोनि न्याहिन तन में उसका केंत्र हो सकत हैं उसके समारि हरी में आहि हो जिले हे जिल अर मह भर मही मन तार शह मान उरम हो जा। तो में में केटा टमारे मुल्य हम दीनों में अटब्बन नहीं हैं। श्वाली अटब्बन हिस्सा शह दि-से मिन इसने भावना अमा इश्व हैं कि सकी पणद से श्वास्थाहर रहतारी वर्षन शहता है। वर्षन में बाद करने भागा हो तो उन्ने

Pank 3- 5- +2 से हमें हमानी रहा वरने वी वरी मैंगारी होनी नाहिसे । उसके जिसे सक लीज अर्गी परेंगी - काब ही क्ली करते हैं भई गंदी में जोगान पर सकी में किया के महाराष्ट्र कार्य के किया मार्थ रखती हैं, भी अहमर रखती हैं वह टाइकर का जितका मामान क्षेत्र के कार कार्य निर्मा कार्य के दार्थ कि अवरवान ना दिसे कार दमार अवश्वाना आवा भी अवानि असकी बहाका है। अब नार्थ नारे नारावा के दो ने न्याहरी विद्वारिक करम द. ए हमाई बच्च मा उसारा में मम हाकी दमारा प्रदेश तो क्षी प्रत्यान हैं, ते हात की द्वीरा प्रकृष्ट हैं कह अब राही हैं । हम आद्यी पारि में आब कार्य के हैं के कह अब कार्य केर्र पात्रकार्त करती हम अक्ष कार्य कि हम कार कार केर्र पात्रकार्त करती हम अक्ष कार्य कार्य कार्य कार्य सब (बतम अदें द्वार तो हैं इसने श्रेष्ट का कर्न कार्यों) देहार आर मान अरते वर्व के दरात में भी प्रेंबा ही खारें। एम and when the men we have out the sound of an or should की भी में प्रतिकार के की मीत करें। भी पारते की कि दर भी व स्वादं की ही, अमने भी व में प्रतिकार की ट्रा वानाई में राजभामां दिवल्लामं वितन करते हैं।

ता रिशानी कि नरी में तो हुए सम्म अर्थ के में मिर्टिक नरी मिताइ ने बरेकारे से नजा हो। मधा कारकारा नहीं करना तो पह जा तरकार रखाई असे विने रहता देखता में तो नहीं बनेगा। उसने दिन विद्वान मार्गित तो रेटात में मिना राज्य की (1811 म मारेम, कार्य मारेम, क्यार नाहिम, मेरर माहिम करे मर सब नीजें नारिय। क्रिकेश का इंत्रकाश हर देश ती। नमें कर लकत। इसके किन कारकात कारिमें मोरा नारेंगे। एम बाराजना जमशेषात कार असरे कार मारत गरी' बारर- ते स्वीरा कारत बाता है। बड़त राम ीना - परते हैं | तो इसने किमी मान मारिये कि हम मन के व कोई इंतजाम इति मार्स नहीं- तो में कारक बी-लादेने अतेर गांव भे स्वी हैं देशन भे स्वी हैं। हों रोने मा मिन्सा बरना पर जा। तो हैं। माररकाना नाहि क वर मह मार्का वोन नामकेगा- मह गवनिक करि ना सर्वे मा होवा। न नजारने तो जिल्ला उसाम मार् है जिसकी अनुभव है जो चडा अवते हैं अन्ती मार्पल हैं। करेंगा परेशा। असका भी राज्य नाहिने। अवशासिक असदे साव सार्त भी रहे तो अमें बोर्ड बाम ताम नहीं। असेन मनारों और कारकार के माहिकों का पिश्वव कार्यी नरी होनारे ते रेने कारकाम नेलगा मर्छ।

कोई कहते हैं कार से अम बाजी, कारर बादि कहते हैं जी क्षारे पुरुष में कारर से धन वानाही तो वह देखेंने के कायरा भीतना है और बह अपनी 2 शर्त कमामें मह भी पुत्तीबत है। इसं दुर्तीकर के जो कार करना है अर्थेंग कोटीर मुप्तीकर्ते मे जावराना मही बाहिया है मह महान करताई ले बरन में चित्र कांग्रेश में साथ के बाह भे की व 3 जना माना भी मला जमा जी मरमवर्ष के क्षेत्र में अनुमार भी हर मार्ग को कि हरक उकार का कर है वे अगावी नेपर ताम २ बडे हे। भी अभी और जो शकाल अने बार पे थोड़े से हानम भी होगीन । उनने नेचए-तामर-गुमारेत सव केलार वेटी कर मार्ड भी केर होगा वह बेवसूत्री भी बात है। अससे काम देमें नहीं प्राप्ति काम देमें करना है ते जल्दी में जली करोज स्वला है। जिस्से स्मारा काम न्येत ती करी रकता होता हो तो रमरे बाम में कारते हैं। शादा बरीन द्राया भी नक्षा करने की वह भी जन्भी २ पहुँच ग्रेप हो आज भी हा रहा है हतारे मुख्य में केमेंनी, बदनामी भिना वह में ब्रांमी बा एक नमीना है, उसर हर-मुकाम दुन्त की आमादी किरी है मुकामी का अलार - प्रया बरी , नरिया किया है तो इन्ह्रील करां में मिलता है अख्या बारत जीम बहेत हैं की contrit के कर असे भी होती है। असमा अपान नेपां मही सरित मा असमा अपाय नेपान वर्ग बोदी है । स्वारी स्वामा अपाय जी सायदा नाइन से प्यारा जाया उसकी सजाही उसरा का है? तीर्बन

असे किम भी ही आए के अस असी दाहियाँ। अस आज बड़त से बोग बहते हैं कि पर प्राफिल काम केंग्रे कही करती 9 प्रतिस केन्सी क्या करे ! पर द्रित्य नेसंकी देश वारेश से अगड है। विसी वरिकी का इस्म कारीहें आज प्रावेस हमरीहै। उसकी इन्जित हम न्ती वद्रीयंत्र ती की व बन्येका ? असकी उत्सार मिंक देवा बाम भारे हम न मरें, उसकी इंग्ला न करें तो किंग्ड मिरहेंगी कित रा मिरा करते होंगे- यह जराब है कर कराब है। इसका अततक सारी Mation स्वराक है। तो द्वीनेका में का From ones sont on son sont of the plature of निकारे उगर मुख्य का अस्ति के स्ट्रमा दे। निका क्य काम की किमारे हमें असी मारे में आ durland बास्य जाग तो दोंग बहुन काम किया इन बोमों ने दो साम में। हम पर नहीं असी सबने थे में हिनुस्नान इस त्तर के काम बर रावेजा। हर जाकारी के जिन हा सामान इतना संगठन कर किया अभेर शांति मैदाकर की जिसकी अगर न भी दम ते जानते ही की नाउन कार्डी नी नहीं है। हैरे न मी और इस तरह बनी है हिल्लान की क्रांक बार का गरी इन्जत से बर नहीं भरता भेजाबत के केलेन क्लान भी ते नोई नीज है। बादर अनेका में स्माने बार दुई होने हैं। विकित हमरी करर दमीर वर में जरी है, इसका अपन करना मार्टिय को नरना है। तो सबको साथ केना होगा तो में आजुकोगों के बन्बई में बड़े हम से अदब से, अपने करें के पान अगर के

पार कार्या है। इस इसरे की निश करने के स्मारी बासी

इ.जार जाकीन हमरा बाम नहीं हैक्या पुर व्यक्त करी टम इंगर 73 में देन करों। और मलक रास्ता खोड़ हो। वार्टि के जमाने में क्रियमा कामंत्र अन्य क अभाविका और सस्ताधन त्रेश बारी का रखना किया केया अभी अवन यह समय काया है कि दर बिसी की क्सीना बहमा है अपना महनत करी है। अर्थर मिस्ने रहे हुन के हिंदुलार के जीव करहें ते ब्रित अल्बा। अविका बर्ति अल्बाह मोर्ड मान नहीं। हैंग रोनेर साह सभा हनाहै। भीर रोनार्सकी समाह पर अमिनीय कर्ना रखेंडा प्रदेश तो कर केंद्रता चैन मा सर्व तो समा की हाका हम हमारी इज्या करते हा करी शहे। हम मर नहीं कहना चारते के दम समार्ग ने उद्ध किया है। बहु कोश न्यान हैं :- केस अप मि कर भी नहीं मिला है। और जो उसे अनी फायत हुआहरे इकार क्रीर म्पुर ब्युंभ डर्म अभि मुक्तर सी में एवंडमार या देशहा होते हैंगे भी आज जिंतना हिन्दुरतान एक दुर्शा है उत्तम ब्रमी मही दुआ भा। को हिन्द्रमान का उद्देशक रेके ते दुराने हातेश्य में हिन्दुस्तान इतना एक नहीं भा कितना आज हुआ है। इतनी भ्रीम हमने तेमार की है। कि में भारत भी है। आज हमश फास आपस में म जीम हा है म और । अब के जुळा की की करना है मि हन अगामी के अवन वर्तना वातन बरना नारिया और सामन नारिय क्या हमारा वर्तिहारी वर न सम्में तो हमारा कार मकी जनम हो में ते पहला जान कर में देश दें लिकेन में जित्ता निकारी के काम दिया है उत्ता जिसी ने नहीं किया। समने अनकी काषी से का की है। में अनने

स्मासमय वर देवने की अधील करता है कि में पूम नहीं कृतता दं, स्तों कि मरी सहत अवसी हाकी, अमर भी बीच होती ती. हिन्दुस्तान के तिकात होतीन आज तो में अपीन बरस्तता हें हर बिसान से कि हमें नहीं महन बारिय किल इतना देसा मिंद्र तभी अनान रेंने, तभी हुए अनाज पैया मरें भेर मह समय आगया, देराने न अभी तो समय बटेंट कि जोड्य मिंद, तिरिन जो हमारे करों मार्ड बरन पर है जिसकी स्वीत की अभाज नहीं जिसकी स्वीत के रिवेत रेमं बारर के मंग्रकाना पड़नाड़ी इसका बीम समारे उन के अपन पड़न नायर है। हिनुस्तान जिला ता सब मिरे, दी बेन तम मिरेन नहीं देना बाहेंगे। तो सारा अन्बना सर्म है कि जारे अनाज देश कीर बमरे विम स्वर्म करो। और मार्ड अनाज का कुम्सान हैं। के करकार जाम इसकार के कोई सीच मन करो क्यार अनाजः वैद्या क्यो जित्ना मार्रिम उत्ना रहे जुल्पेडा करो । असने पुरक को प्राप्त का रहने की पितनी शहि मदर हो। मजहर भागों मो भी हम को अदब में महते के कि यह रह का करायें की है। एक उन , इस्राइड , साम कर, साम्यकार, समाजवार, निष्धांकार = बन भर संबर्ध है। केरोन पर कर हागा जनत्वाहै तथी कर। मेंड उन्के में उद्धे केन ही भी तक तो कारेंग तिकीन केन न किया को १ अर्थ रूप कड़ी के उन्हें का उसे पति हैं और स्म ६१रे की कारे हैं। असम काई काप्या नहीं और

अस्क की क्वान की जाकार्त तो कार्त में जाते, ए (कारकायक , रिक्ट केंग्सर्क को इसे

मंगी, खर्शी से मांगी । मिनेन रागरा मांक है चिनीना रोस्त है केमा साम वे संभा संभाजी भी अभी के जारा दान वैराक्ता! मेर्ड करते द्वी गरी की की मही सही १ में असका कहता है कि आज नका मेरा बरेंच की नजरे को इन्हें। होने बुम्हार इन्जात विश क्रिक का समय है। बहुत बहुता हुत कालर काणा समेर नामर, बड़त तर में के ने जाति में मह सब यक जावा स तर है कि वाम द्वारा की सात रा मार्थ- सीव सार्व मार्थ महता कि अभाग रहते काम करी, देखरेन यहार अमें की बात देखाड़ की करे नम् बरन पर्छ प्रदे मान का मन मनाने का कमा कोरी में हैं की माने हैं कि महता का को बहुत पुरव आगा। मही वात-रे रामिन मध्यम का की व्यास्ता करें हैं में हिस में एका निस्की नहीं अलग ब्रह्मिन की जाता है। सब उसमें बुरम जाने हैं तो दुश्व अमरेन भी है । इस में ति सुरकार में सद को की दुरह है। क्रोग मनित है. ए वार्य की में अबहु अप सब डिसाई। है तर गरी मानता हो जिसी स्वीन की ज्यादा है इस्तात म है। हो कोर्ड सुरव नहीं। की कि स्वादी पेट भरेंच में ती बोर्ड अप मही होता है । वह में जान कर भी अपनी

आजनक में बारिय की कारी देन ट्रास वर्तन हो आप है। किसी की leaser करत हो तो प्रती में अल करें। नहीं तो काम नदी जनता अपने न कार्न करें पावरा न गार्की रेने कर की भी तो हमारा काम तो बह है कि एव ने एमका नारे, एवं की साथ के नारे। अब महते हैं की उनिमं में की कड़े दत हैं अरें दो बार्-। रूप कारमनार उनिमां के बहुत के गरेस के सेन दूस है। इसी के Capitalisk केल हैं । तीन है तीने का विश्वाह देंग वहां बेर रहें। तहा समावर में ही न रंजी कर के है। इंजी कर अला है दुस है। केरिन आज दुनिया में सबसे वीना अवन प्रांत कर अपन अपन अपन अपनि अपनि अपनि अपनि में हिं के नरे ने मारे हैं ती जो इंजीवार है जितना कर वड़ी दुवियां में बहु नहीं। होगा सुकी हैं वहां। जो कर वे मगड़? को मिला है कह जारी के मगड़? की मही मिल्ला । है कर त्यारे इंडी करी नह हमारे जो धन कर हो प हैं अने मानी में तो उप दिस्त को निर्मा है के से निमत्ने हमेरी बाम तो यह है वि इन स्थानी सीय मिछवर शस्ता निवा करा है और कीन राज , ना मंच सार्व जवत्व कि कवल न आजाम तबलक उसका बीम 93-116/

आर उसके किसे हर्ज करही आम अरंभे तो आप तो हम जीम तह कारते वह दिल्ला अविष्य में भूभी बतेलाई तो मेरा भार केरों में क्ला प्राचीला है कि भीड़ा दुख आयाह अत्याही उसकी दुम जाउने हैं नहीं जातने यह जहिंदि हम उसकी कर असे हैं कि आप टरो में में दुख सहन किसा है भेड़ा रखा है तो उर को , के किन रोना नहीं । गुर्थर करती आयरमा वट आयमी की केमान बमा देना है। क्रिक क्या केता तो लियुरो स्ताल अरी अरहासी व्रस्तासन किये आयार देक भा रपना ग्या हा सा उर्व है अपूर्ट मार्ज वरपास्त भूता में सब ठीव हो जाशामी लेकिन इस अर्थ में स्थाल ज्याहरी अग्न आप साम हैं ते मेर विश्वास है कि उस इस मूटन शे रेपी जाह पर श्रव सम्मे हैं कि जिए एमें उनियाँ में हरणाह ओ अप दिश्हा हो जास कार में दर्भ जी को को उम्मीद रखी भी उसी रस्ते पर हमारा शाम हो। टरे किन पत्ते प हमारा कीय जादी अर्रेंग तो न तो आद्यी हा ही राहता स्रोकार क हमारा दिश्वास्ता होगा 3 निया भा शक्ताहोग अर्थ किर काम मुल्य पड़ेश । जनमं अरेड आक्रमारा अरता तन तत्र केर हैं अदि शह आहमार अरते शहा men in the yearse some of eton when A आज की जो जना है उसके उत्र उसरी जिम्मेयारी हैं- कि अविष्य अपणा के लिये काज भी दल पर तो उसे करदासाउते रते अविष्य की प्रणा के तान का रहे जाया डाला में निव जाली हैं। उसके लिये हम तथाद हों। कान भी कुर में ने नात की उसके उपर भाव सान हैं कार कियार करें। अहर दादमें समस्ते आवार िरल में उत्तर जाय ती, में ने ती जितना हो सके साता कर लिया जिया में बहुत कि या, अवने औं बहुत बादि अहि उक्ति अहि क्लोड रियन रहे असमें जो उत्त अरना ही अर है ते किन प्रभावन मों कोक कारक उपर ही पड़ेजा तो मुंदे उम्मीय है कि में में जो वात वरि हैं उसे दिल में रखना उसके वर्षा आप सिन्ये में हेन्स

on 19 K March 1950

-चीफ कमिश्नर साहब इन्स्पेक्टर जनरल पुलिस, और पुलिस आफीसप श्री र पुलिस मैन । शासकी सुन्दर परेड के लिये में श्रापका धन्य बाद देना नाहता हूं शौर जिन शाफीसरों का मैडिल दिया गया अपनी अच्छी काम गिरी के लिये उनको भी धन्य वाद देना बाहता हूं। जो महाराजा साहबने एक नमूना दिया है वसशीश उसको और जिनका यह मिला उन सबको मैं धन्य बाद देना चाहता हूं । पिछले साल जब आप लागों की परेंड हुई उसके बाद बहुत से व्यापार हुए हैं, दुनिया मर में और मुलक में भी । आज हमारे हिन्दुस्तान में इस साल भारत की नया विधान अमल में आगया है , और हम स्वतंत्र भारत की पुलिस आज बनी है। पिछले तीन साल में आपके पर बहुत बोक पड़ा और जो हमारी पुलिस फोर्स टूट गई थी उसको फिर ठीक करने में बाफी मेचनत करनी पढी । लेकिन अब हमारी ताकत और संगठन ठीक हागया है इसके लिये में श्राप सबकी मुंबारिक बाद देना चाहता हूं। सास करके हमारे इन्स्पेक्टर जनरल पुलिस, जिस ने यह संगठन बनाने में काफी मेहनत की है उनकी बास मुवारिक बाद देना चाहता हूं। दिल्ली शहर का काम पुलिस के लिये कई कार्सों से बहुत कठिन बन गया है। लेकिन जिस तरहसे इन मुसीबता में जाप लागाने काम किया उसके जिये भी में अपन धन्य वाद देना चाहता हूं / गवनींट की या शहरियां की इज्जल बहुत करके उनकी पुलिस पर रहती है। श्रापका काम कठिन है, श्रापकी जवाब दारी बहुत भारी है ऐसा ही यह आपका काम इंज्जित से मरा हुआ है। लाखों लागों की इंज्जित की रवा करना जान माल की रवा करना वी वडा भारी इज्जत का काम है ६ जितना वा जनान दारी का । इससे पुलिस से गुनाह करने वाले लाग डरें , बाली डरें इतने से हमारा काम नहीं होता/ धाक से काम कई हद तक वल सकता है। बन्दूक से ढेंछे से कई हद तक काम ले सकते हैं, लेकिन पुलिस का असल काम तब बच्हा हीत सबक्ष है जब जनता का प्रेम हम सैपादन करें और जितना ज्यादा प्रम लोग हमारे साथ रखेंगे, उतुना ज्यादा काम हमारा सरल होगा । उसके लिये पहले तो मैं ब्रापका अपील व्यक्तिर कि कितना भी गुस्से का कारण हों प्रोकेशन हा और मिलान विगाडने का कारण भी हो तो भी मिलान ठेंडा रखना चाहिये हैं यह पुलिस का प्रथम कर्तव्य है/जो पुलिस अपना मिजाज विकास गुमा देता है वह पुलिस की जगह से हट जाता है। अपना मिजाज शान्त रलना चाहिये । अपनी जवान बहुत मीठी रलनी चाहिये और कमसे कम पहला काम हमारा यह होना चाहिये कि जो गुनाह मैं फैसा है अ गेर जिसने अपना मिजाज

नुमा विया है उनका पागल मानिह या ती दहीं मानके उसी तरह से वर्ताव करना नाहिये जिस तरह से डाक्टर अपने दहीं के साथ करता है। तब और इसी तरह

25

सम्पादन भरें जे

से काम लेने से हम जनुता का प्रेम ज्यादा कि स्वक्रवर प्राप्य करेरी । होटे में होटे बच्चे से लेकर बुढ़े तक कोई भी हा सबके साथ अदब से, लेकिन इतनी मजबूती से अपना काम करना चाहिये और उसमें जितनी आपकी सफलता मिलेगी इतनी हमारी सरकारकी और उनकी बज्जत को और हमारे लोक की बज्जत को भी वृद्धि होगी । भे इस दिलये शापको एक और बात कहूंगा कि हमने जा वारसा मिला है-पिछला वा एक तरह से हमारे लिये हमारे काम में रुकावट डालने वाला है। पुलिस की इज्जत, जिस हालत मैं पुलिस काम काती थी उस हालत में बहुत तुरी थी । उसके कुई भी कारण हाँ पुलिस का और जनता का कुर भी सम्पर्क नहीं था, ६ और परदेशी हुकुमत की हुकम उठाना पहता था। श्राज अपनी सरकार का हुकम उठाना है। उसमें बहुत बुशी से काम करने की गुंजाइश है। और उसके साथ साथ पुलिस के पर्रक प्रकार का धव्वा चलता आया है द कि पुलिस में और सर्विस में भी है है ई लीग समफ ते हैं कि स्वच्छता से काम नहीं करते हैं, कह लोग पैसा लाजाते हैं। उसमें उसी इज्जत में से जी बुरी ्रेज्या हिम्देशन हमका मिली है उसमें से हटना उसके लिये हुमें ज्यादा सावधान रहना है। उसमें बास करके पुलिस को पूरा हिस्सा देना है 1 कितनी भी मुसीबत ही लेकिन जो अधर्म का काम है नी काम कभी नहीं करना है। और जितना पंसीना का पैसा हमको मिले वी हमकी हजम हीगा । बुदा, ईश्वर उससे राजी हीगा । लोग हमारे पर प्रेम करेंगे। श्रीर फिर् उसमें से जो जुक्क श्राप चाहते हैं श्रापकों मिलेगा । ईश्वर की मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप लोग, जिसकी आप सर्विसं करते हैं, उसका और सारी जनता का प्रेम सम्पदान करके श्रापकी श्रीर उनकी इज्जत में वृद्धि करें । दिल्ली ये राजधानी है उसकी पुलिस की काम गिरी सबेरे अच्छी होती नाहिये। उनकी इज्जत सबसे बढी होती नाहिये र इसी लिये हम सबको इस समय पर्याद रखना चाहिये कि हमसे कोई भी काम ऐसा न हो जिससे हमारी इज्जत पर धवना लगे। मैं फिर से एक बार आपको सबका मुबारक देना चाहता हूं और श्रोपकी श्रापक काम में फतह ही 🎏 और फिर विकिती अगे एक साल के बाद हम मिलें उस समय पर हमारी आज से भी ज्यादा प्राति हुई हो और हमारा संगठन और ज्यादा कुद्धि और ज्यादा शकि शाली हुआ हो । और लागों का प्रेम ज्यादा सम्पद्धन किया हो । इतना में कहके बन्द इंदेलव हूं।



### PRESS INFORMATION

BUREAU

80

## SARDAR PATEL WARNS OF CRITICAL DAYS AHEAD NEED TO KEEP UP VIGILANCE ADDRESS TO POLICE CHIEFS' CONFERENCE

New Delhi, January 12, 1950.

Inaugurating the three day Conference of the Police Chiefs of the country in New Delhi today, Sardar Vallabhbhai Patel warned the Police Services of critical days ahead and of the danger of relaxing their efforts to keep the country, safe from threats to internal security.

He pointed out that the countries adjoining India had an object lesson. Although the authorities in India had localised subversive activities, they must allow for 'the cleverness, tactical manoeuvrability and secretive methods adopted by the opponents'.

Serdar Patel stressed that a democratic Government cannot function on the basis of a Police State but on the consent and cooperation of the public at large. The Police had therefore to rely on the goodwill of the people and secure their active cooperation.

"We must educate," Sardar Patel said, " public opinion in both the nature and the extent of the danger that faces it and bring home to it the fact that those who pretend to be their friends and well-wishers are merely exploiters and parasites who feed on the discontent of others in order to suit their own purpose - a purpose which has no root in the soil of this country but the roots of which spread out for sustenance into foreign countries and whose tactics and methods are of a foreign pattern."

Director, Intelligence Bureau and introduced to the Police chiefs from Provinces and States Unions attending the Conference. Mr. H.V.R. Iengar, Secretary, Home Ministry was also present.

\* Here is the full text of Sardar Patel's inaugural address.

Earlier. Sardar Patel was received by Mr. T.G. Sanjevi.

# UNSAUG MOITARMENT COMP

"Mr. Sanjevi and Friends:

Police in this Conference. This is the first Conference of this kind under the National Government and, while I have no doubt that all of you would be making valuable contribution to the discussions on the various items of the agenda, I hope you will also enjoy this brief change from the Provincial atmosphere. Conferences of this kind, while providing opportunities for valuable personal contacts between Central and Provincial officers, also afford facilities for useful exchange of information and comparision of notes on important topics of administration and promote, I hope, a healthy and refreshing feeling that one's world does not consist in merely one's own Province, but that there are wider aspects of administrative policy which must govern our views and attitude in the larger interests of the country as a whole.

"You would not, naturally, expect me to go into details on the many subjects which have been put some on the agenda. The agenda indicates a catholicity as well as a complexity of subjects on which you have been called upon to express your views and make recommendations to Government. From the sublime subject of change in the warrant of precedence, you will descend to that of improvement of procedure to allow direct correspondence with Pakistan in routine matters. In between, you will have topics of such absorbing interest as arms and explosives, appropriate armament for the Police, education of the public in civic responsibility and cooperation with the Police, training of Police officers and matters connected with civil and military intelligence. In these few brief minutes, I propose, however, to take your minds somewhat away from the agenda and to focus your attention on some of the broad problems of law and order which seem to me worthy of your notice.

#### CHANGED ATMOSPHERE

A change from being the instruments of policy of a foreign Government to being an executive arm of your own Government must, no doubt, have been a difficult problem for the efficers and members of

.. the Police.

the Police. Nobody, however, knows better than myself with what readiness, willingness and adaptability officers and members of the Police Force have adjusted themselves to this change. The change has had to be not only in regard to the nature of the duties performed but also in the manner and conditions thereof. Psychologically, it requires a completely different approach to the general public and the problems with which the Police are faced in the day-to-day discharge of their duties.

"I shall not weary you with commonplace advice about being !servants of friends of the people. I shall only ask you to impress upon your men that their own Government demands of them honest and efficient service. Apart from the fact that pleasure of service is its own reward, I have no doubt whatsoever - and I am sure you have had sufficient proof of it in your own experience - that real service rendered to your Government or the people does not go unrequitted. Public appreciation of the worth of the police must be a matter of gradual growth, particularly in the background of the atmosphere and conditions in which they had to work in the past. You should not, therefore, be impatient of criticism or dejected at any signs of what you might consider a lack of appreciation. I have no doubt myself that, given efficient, honest and impartial service by the police, they will find their way more and more into the people's heart and the general public will soon come to regard the police as a national asset.

#### DEMOCRACY NOT A POLICE STATE

We have all to realise, Ministers of Government, no less than the lowest official in administrative hierarchy, that a democractic Government cannot function on the basis of a police State. It can only function on the willing consent—and cooperation of the people

...at large

at large. In no other sphere is the cooperation of the general public more needed than in the field-work of the police; whether it is in connection with prevention and detection of crime, or while dealing with unruly mobs or recalcitrant assemblies of men. People in India do not take long to give confidence.

You should not, therefore, take long to win it and having won it.

I am sure you wilf retain it.

#### DIFFICULT-CONDITIONS

"I also realise under what difficult conditions and under what prolonged strain the police forces, with attenuated strength of officers and insufficiently trained men, have functioned during the last three years. Their ordeal started a year before the dawn of Independence because, with the functioning of popular Governments, during the nine menths before the period of transition, the police had unenviable role of serving two masters. On the one side, they had to deal with the departing authority; on the other, they had to function under a National Government. Naturally, the entrenched forces of the departing authority did not, in many cases, take their departure with a good greece.

"After the 15th August 1947, parts of India were involved in conditions of instability and insocurity which they had not known for decades. The communal situation gave rise to serious enxiety and apprehensions. It was in this situation that we were called upon, with the forces under our command, to maintain peace and security in this subcontinent, which were essential to the consolidation of our freedom and the progress of our country. The devotion and zeel of the police forces in all ranks have brought the country safely through one crisis after another and for all those, Governments, both Central and Provincial, are deeply grateful to them.

CRITICAL TIMES AHEAD

"At the same time, it would be quite wrong to take a complacent view of things and submit ourselves to en attitude that, if we have survived critical times before, we would do so again without any effort on our part. Critical days are still ahead of us. Subversive movements are making their appearance here and there. People have unfortunately relapsed again into an attitude of indifference to, and forgetfulness of, the dangers that they have survived and are less mindful about those that may yet befall them. You cannot, however, afford to relax vigilance or necessary preparatory measures to keep the country safe from threats to internal security and it is, for this reason, that I wish to emphasize that the call on the ability, integrity and resourcefulness of the police cannot be expected to slacken at least in the near future. I am sure I can rely upon you all to infuse into the men under your command that spirit of eternal vigilance which is the hall-mark of a good police officer.

"I shall now say a word about the subversive organisations with which you have to deal during the course of your duties. History records many instances in which a resolute, unprincipled small section of the people has, by coercive and terroristic methods succeeded in so overcoming the general lewablding spirit of the population as to substitute the rule of law by the rule of their unlawful tactics. History also teaches us the lesson that whatever success has attended such tactics is due entirely to a weakened and demoralised public conscience and ineffective and inefficient suborned counteraction. We have to make sure that we do not fall into such errors and that we deal with such subversive tactics with greater resoluteness, determination and pleaned measures.

#### SUBVERSIVE FORCES

"Countries adjoining or not far from India have an object lesson for us. Starting from small beginnings, those subversive agitaters have burrowed big holes into the social and administrative structures, and have now constituted themselves in some setablished anthorities, and in others a substantial threat to security. In India, fortunately, in spite of the legacy of the wer in which there was a purely strategic allience between the Government, report d to be established by law, and the subversive association known as the Communist Party,

....we have

we have, by our vigilance and the effective counter-measures taken from time to time, succeeded in strictly localising these activities. At the same time, we must allow for the cleverness, tactical manoeuvrability and secretive methods adopted by the opponents. We must adopt our methods to the changing circumstances and features of the situation. We must review the extent of the action taken, the success or failure achieved, the reasons for lack of greater success and the changes that would be necessary for ensuring final and complete annihilation of those subversive forces.

NEED TO ROUSE PUBLIC CONSCIENCE

"Success in this enterprise can obviously be secured only by rousing public conscience to the dangers which threaten its existence, by securing their cooperation and by maintaining the efficiency, morale and intelligence of the Police. Discontent in the Police and discontent among the general population both can mean serious impediments to the success of our efforts and I should like you to concentrate on removing any focus of discontent that might come to your notice in your forces and also devise measures to ensure that, in so far as the Police is concerned, it not only retains the goodwill of the general public, but also secures its active cooperation.

"In the latter sphere, the contribution of the Police must be much more active and resort should not be had to propaganda alone. We must educate public opinion in both the nature and the extent of the danger that faces it and bring home to it the fact that those who pretend to be their friends and well-wishers are merely exploiters and parasites who feed on the discontent of others in order to suit their own purpose — a purpose which has no root in the soil of this country but the roots of which spread out for sustenance into foreign countries and whose tactics and methods are of a foreign pattern.

.... A matter

#### IMPROVED EQUIPMENT

" A matter to which the Government of India attaches great importance is the modernisation of the equipment of the Police. In this respect, I am glad to say that, as a result of the action which I initiated more than two years' ago, the Police Forces today are not only in increased strength, but have generally improved outfit in arms, communications and equipment. I can assure you that the question of suitably provisioning the Police in arms and ammunitions will constantly engage my personal attention and any recommendations that you might make on this subject will claim my close scrutiny and early effective action. I fully realise that in this matter you have to outpace those forces with which you have to contend. Many of them have now secured arms which compare favourably with the normal equipment of your forces and a challenge with such men is usually a struggle on equal terms. Still I find from the recommendations for gallantry which I have been receiving that our Policemen have braved many an encounter and have generally been successful. Nevertheless, in order to hit back, we have to hit harder and, in order to hit harder, we must have superiority in arms and effectiveness.

#### POLICE SELF-SUFFICIENCY

"I have already referred above to the impossibility of democratic Covernments functioning purely as Police States. It is even more necessary for such Governments to avoid, in the day-to-day administration of law and order, resort to military forces. It is from this point of view and also in full knowledge of the commitments of our army that I cautioned Provincial Governments in 1947 about the need for self-sufficiency of their Police forces. I am glad to say that Provincial Governments have generally been very quick in achieving this self-sufficiency and the occasions for calling the military in aid of the civil power have been few and far between. I hope that when you return

to your respective Provinces you will keep up this standard and see that, as far as possible, you deal with any organised threats to security entirely with your own resources.

#### HOW INTEGRATION HELPS

"The measure of integration which our country has achieved in recent months has. I am sure, considerably light ened your task in dealing with inter-provincial or inter-State crime. Boundaries and barriers have now broken downand the police forces of the whole of India will very soon achieve a measure of integrated harmony which they have never experienced before. It will now be comparatively easy for the forces of one Province of State to pursue criminals into another and to bring them to book with, I hope, a greater measure of cooperation and cooldination between each other. The recent experience I personally have had of dealing with similar situation on the borders of Rajasthan, PEPSU Union and East Punjab has convinced me that under the new dispensation, which is only a fortnight ahead, the police forces of India will attain a mobility and ease and smoothness of operations which would stand them in good stead.

#### REORGANISATIONS AND TRAINING

"You will naturally not expect me to say much about our Intelligence system or the need for strengthening it.

This has attracted my attention almost from the very time that I assumed office as one Member of the pre-Independence Government. I realise how difficult it has been to organise our system of Intelligence and how the legacies of the past --prejudices against one community or another and against certain types of individuals or others and the monopoly of Europeans in this branch of the Police service -- have retarded our progress. I feel; however, that we are slowly but

surely making a headway and with the re-organisation, which we have under consideration, and the schemes of training we have already undertaken, we should make more rapid progress in future.

"I am sure all of you have come to know the recent orders which Government have passed in regard to the badges of different ranks of the Police. I know how rightly sensitive Police officers are in this matter and I should like to say how richly they deserve the changes which we have made. I am quite convinced that whatever morit there was in the previous ranking of these badges is now out of date and the new instructions which we have issued constitute not only a recognition of the extent to which the Police forces have increased in their numbers and importance but also symbolise the appreciation of the hard and solid work which these forces have put during the last two critical years.

- Friends, I shall now leave you to your deliberations in which I wish you all success."

The conference is proceeding with Mr. T.G. Sanjevi, Director, Intelligence Bureau, in the chair,

VK/HSB/DS



## RESS INFORI

### BUREAU

3

SARDAR PATEL WARNS OF CRITICAL DAYS AHEAD

NEED TO KEEP UP VIGILANCE

ADDRESS TO POLICE CHIEFS' CONFERENCE

New Delhi, January 12, 1950.

Inau urating the three day Conference of the Police Chiefs of the country in New Delhi today, Sardar Vallabhbhai Patel warned and of the danger of relaxing their efforts to keep the country safe from threats to internal security.

He pointed out that the countries adjoining India had an object lesson. Although the authorities in India had localised subversive activities, they must allow for 'the cleverness, tactical manoeuvrability and secretive methods adopted by the opponents'.

Sardar Patel stressed that a democratic Government cannot function on the basis of a Police State but on the consent and cooperation of the public at large. The Police had therefore to rely on the goodwill of the people and secure their active cooperation.

"We must educate," Sardar Patel said, " public opinion in both the nature and the extent of the danger that faces it and bring home to it the fact that those who pretend to be their friends and well-wishers are merely exploiters and parasites who feed on the discontent of others in order to suit their own purpose - a purpose which has no root in the soil of this country but the roots of which spread out for sustenance into foreign countries and whose tactics and methods are of a foreign pattern."

Barlier, Sardar Patel was received by Mr. T.G. Sanjevi,
Director, Intelligence Bureau and introduced to the Police
chiefs from Provinces and States Unions attending the
Conference. Mr. H.V.R. Tengar, Secretary, Home Ministry
was also present.
Here is the full text of Sardar Patel's inaugural address:

... "Mr San levi

"Mr. Sanjevi and Friends:

Police in this Conference. This is the first Conference of this kind under the National Government and, while I have no doubt that all of you would be making valuable contribution to the discussions on the various items of the agenda, I hope you will also enjoy this brief change from the Provincial atmosphere. Conferences of this kind, while providing opportunities for valuable personal contacts between Central and Provincial officers, also afford facilities for useful exchange of information and comparision of notes on important topics of administration and promote, I hope, a healthy and refreshing feeling that one's world does not consist in merely one's own Province, but that there are wider aspects of administrative policy which must govern our views and attitude in the larger interests of the country as a whole.

"You would not, naturally, expect me to go into details on the many subjects which have been put some on the agenda. The agenda indicates a catholicity as well as a complexity of subjects on which you have been called upon to express your views and make recommendations to Government. From the sublime subject of change in the warrant of precedence, you will descend to that of improvement of procedure to allow direct correspondence with Pakistan in routine matters. In between, you will have topics of such absorbing interest as arms and explosives, appropriate armament for the Police, education of the public in civic responsibility and cooperation with the Police, training of Police officers and matters connected with civil and military intelligence. In these few brief minutes, I propose, however, to take your minds somewhat away from the agenda and to focus your attention on some of the broad problems of law and order which seem to me worthy of your notice.

#### CHANGED ATMOSPHERE

A change from being the instruments of policy of a foreign Government to being an executive arm of your own Government must, no doubt, have been a difficult problem for the officers and members of the Police. Nobody, however, knows better than myself with what readiness, willingness and adaptability officers and members of the Police Force have adjusted themselves to this change. The change has had to be not only in regard to the nature of the duties performed but also in the manner and conditions thereof. Psychologically, it requires a completely different approach to the general public and the problems with which the Police are feeed in the day-to-day discharge of their duties.

"I shall not weary you with commonplace advice about being servants of friends of the people. I shall only ask you to impress upon your men that their own Government demands of them honest and efficient service. Apart from the fact that pleasure of service is its own reward, I have no doubt whatsoever - and I am sure you have had sufficient proof of it in your own experience - that real service rendered to your Government or the people does not go unrequitted. Public appreciation of the worth of the police must be a matter of gradual growth, particularly in the background of the atmosphere and conditions in which they had to work in the past. You should not. therefore, be impatient of criticism or dejected at any signs of what you might consider a lack of appreciation. I have no doubt myself that, given efficient, honest and impartial service by the police. they will find their way more and more into the people's heart and the general public will soon come to regard the police as a national asset.

#### DEMOCRACY NOT A POLICE STATE

We have all to realise, Ministers of Government, no loss than the lowest official in administrative hierarchy, that a democractic Government cannot function on the basis of a police State. It can only function on the willing consent and cooperation of the people

...at large.

at large. In no other sphere is the cooperation of the general public more needed than in the field-work of the police, whether it is in connection with prevention and detection of crime, or while dealing with unruly mobs or recalcitrant assemblies of men. People in India do not take long to give confidence. You should not, therefore, take long to win it and having won it, I am sure you will retain it.

#### DIFFICULT CONDITIONS

"I also realise under what difficult conditions and under what prolonged strain the police forces, with attenuated strength of officers and insufficiently trained men, have functioned during the last three years. Their ordeal started a year before the dawn of Independence because, with the functioning of popular Governments, during the nine months before the period of transition, the police had unenviable role of serving two masters. On the one side, they had to deal with the departing authority; on the other, they had to function under a National Government. Naturally, the entrenched forces of the departing authority did not, in many cases, take their departure with a good grace.

"After the 16th August 1947, parts of India were involved in conditions of instability and insecurity which they had not known for decades. The communal situation gave rise to serious enxiety and apprehensions. It was in this situation that we were called upon, with the forces under our command, to maintain peace and security in this subcontinent, which were essential to the consolidation of our freedom and the progress of our country. The devotion and zeel of the police forces in all ranks have brought the country safely through one crisis after another and for all these, Governments, both Central and Provincial, are deeply grateful to them.

CRITICAL TIMES AHEAD

<sup>&</sup>quot;At the same time, it would be quite wreng to take a complacent view of things and submit ourselves to an attitude that, if we have survived critical times before, we would do so again without any effort on our part. Critical days are still ahead

of us. Subversive movements are making their appearance here and there. People have unfortunately relapsed again into an attitude of indifference to, and forgetfulness of, the dangers that they have survived and are less mindful about those that may yet befall them. You cannot, however, afford to relax vigilance or necessary preparatory measures to keep the country safe from threats to internal security and it is, for this reason, that I wish to emphasize that the call on the ability, integrity and resourcefulness of the police cannot be expected to slacken at least in the near future. I am sure I can rely upon you all to infuse into the men under your command that spirit of eternal vigilance which is the hall-mark of a goody police officer.

"I shall now say a word about the subversive organisations with which you have to deal during the course of your duties. History records many instances in which a resolute, unprincipled small section of the people, has, by coercive and terroristic methods succeeded in so overcoming the general lawabiding spirit of the population as to substitute the rule of law by the rule of their unlawful tactics. History also teaches us the lesson that whatever success has attended such tactics is due entirely to a weakened and demoralised public conscience and ineffective and inefficient suborned counteraction. We have to make sure that we do not fall into such errors and that we deal with such subversive tactics with greater resoluteness, determination and blammed measures.

#### SUBVERSIVE FORCES

"Countries adjoining or not far from India have an object lesson for us. Starting from small beginnings, these subversive agitaters have burrowed big holes into the social and administrative structures, and have now constituted themselves in some setablished authorities, and in others a substantial threat to security. In India, fortunately, in spite of the legacy of the war in which there was a purely strategic allience between the Government, reported to be established by law, and the subversive association known as the Communist Party.

....we have

we have, by our vigilance and the effective counter-measures taken from time to time, succeeded in strictly localising these activities. At the same time, we must allow for the eleverness, tactical manoeuvrability and secretive methods adopted by the opponents. We must adopt our methods to the changing circumstances and features of the situation. We must review the extent of the action taken, the success or failure achieved, the reasons for lack of greater success and the changes that would be necessary for ensuring final and complete annihilation of those subversive forces.

#### NEED TO'ROUSE PUBLIC CONSCIENCE

"Success in this enterprise can obviously be secured only by rousing public conscience to the dangers which threaten its existence, by securing their cooperation and by maintaining the efficiency, morale and intelligence of the Police. Discontent in the Police and discontent among the general population both can mean serious impediments to the success of our efforts and I should like you to concentrate on removing any focus of discontent that might come to your notice in your forces and also devise measures to ensure that, in so far as the Police is concerned, it not only retains the goodwill of the general public, but also secures its active cooperation.

"In the latter sphere, the contribution of the Police must be much more active and resort should not be had to propaganda alone. We must educate public opinion in both the nature and the extent of the danger that faces it and bring home to it the fact that those who pretend to be their friends and well-wishers are merely exploiters and parasites who feed on the discontent of others in order to suit their own purpose a purpose which has no root in the soil of this country but the roots of which spread out for sustenance into foreign countries and whose tactics and methods are of a foreign pattern.

.... A matter

#### IMPROVED EQUIPMENT

matter to which the Government of India attaches great importance is the modernisation of the equipment of the Police. In this respect, I am glad to say that, as a result of the action which I initiated more than two years ago, the Police Forces today are not only in increased strength but have generally improved outfit in arms, communications and equipment. I can assure you that the question of suitably provisioning the Police in arms and armunitions will constantly engage my personal attention and any recommendations that you might make on this subject will claim my close scrutiny and early effective action. I fully realise that in this matter you have to outpace those forces with which you have to contend. Many of them have now secured arms which compare favourably with the normal equipment of your forces and a challenge with such men is usually a struggle on equal terms. Still I find from the recommendations for gallantry which I have been receiving that our Policemen have braved many an encounter and have generally been successful. Nevertheless, in order to hit back, we have to hit harder and, in order to hit harder, we must have superiority in arms and effectiveness.

#### POLICE SELF-SUFFICIENCY

"I have already referred above to the impossibility of democratic Governments functioning purely as Police States It is even more necessary for such Governments to avoid, in the day-to-day administration of law and order, resort to military forces. It is from this point of view and also in full knowledge of the commitments of our army that I cautioned Provincial Governments in 1947 about the need for self-sufficiency of their Police forces. I am glad to say that Provincial Governments have generally been very quick in achieving this self-sufficiency and the occasions for calling the military in aid of the civil power have been few and far between. I hope that when you return

46

to your respective Provinces you will keep up this standard and see that, as far as possible, you deal with any organised threats to security entirely with your own resources.

#### HOW INTEGRATION WELPS

"The measure of integration which our country has achieved in recent months has. I am sure, considerably lightened your task in dealing with inter-provincial or inter-Boundaries and barriers have now broken down State crime. and the police forces of the whole of India will very soon achieve a measure of integrated harmony which they have never experienced before. It will now be comparatively easy for the forces of one Province or State to pursue criminals into another and to bring them to book with, I hope, a greater measure of cooperation and coordination between each other. The recent experience I personally have had of dealing with similar situation on the borders of Rajasthan, FEPSU Union and East Punjab has convinced me that under the new dispensation, which is only a fortnight ahead, the police forces of India will attain a mobility and ease and smoothness of operations which would stand them in good stead.

#### -REORGANISATIONS AND TRAINING

"You will naturally not expect me to say much about our Intelligence system or the need for strengthening it.

This has attracted my attention almost from the very time that I assumed office as one Member of the pra-Independence Government. I realise how difficult it has been to organise our system of Intelligence and how the legacies of the past prejudices against one community or another and against certain types of individuals or others and the monopoly of Europeans in this branch of the Police service -- have retarded our progress. I feel, however, that we are slewly but

surely making a headway and with the re-organisation, which we have under consideration, and the schemes of training we have already undertaken, we should make more rapid progress in future:

"I am sure all of you have come to know the recent orders which Government have passed in regard to the badges of different ranks of the Police." I know how rightly sensitive Police officers are in this matter and I should like to say how rightly they deserve the changes which we have made. I am quite convinced that whatever merit there was in the previous ranking of these badges is now out of date and the new instructions which we have issued constitute not only a recognition of the extent to which the Police forces have increased in their numbers and importance but also symbolise the appreciation of the hard and solid work which these forces have put during the last two critical years.

Friends, I shall now leave you to your deliberations in which I wish you all success."

The conference is proceeding with Mr. T.G. Sanjevi, Director, Intelligence Bureau, in the chair.

VK/H6B/DS -

y . In . exeplanated 7. upliesnal storus 5 שמו שוב א מוצפו מאי מוזים small Ria aun 133 minter mites 4. ર. ત્રુ. બહુના હાંગમાં વરતા אות אות אוצ פיוני העוצ של בנוצחו בי ביבו - אבנות של בים

20 This sour of in many

nu 121

## सर्दार पटेल द्वारा दिल्ली टाउन हाल (१९) में गांधीजी के चित्र का खना रणा ४०

## म्युनिसिपल द्वेत्र में काम करनेवालों को भाजकीय

मामलां में न पड़ने की सलाह

(हमार कार्याक्षण प्रतिनिधि हार )

[दल्ली, २२ जनवरी। भारत के उपप्रधान मन्त्री सरदार बल्लम माई पटेल ने आंज सायंकाल दिल्ली स्पृतिनिध्यल टाउन हाल में महात्मा गांधी के चित्र का अनावरण करते हुए. स्पृतिनिध्यल क्षण में काम करने वालों को राजकीय. मामलों में न पढ़ने की सलाह की कि जापन करा हिंद स्पृतिनिध्यल क्षणियों का नगर की छाफ खाला, कोंगों को दन्यल अन्य करते और अल्डी रोधानी पहुंचाना स्त्यादि सब लोक-जाशीबाँद के काम है, जनकि हाजकीय लोज में कुड़ा-करा भरा रहता है। मधीबीत समाई पर विशोध जोर देते के सही, तक कि वे देवतर के यह हमारा स्थान समाई को देते थे

श्री गडिपिल ने, जीकि इस समारीह के समापति थे, अपने भाषण में कहा कि गांधीजी जैसा महापुरुष न जतीत में हुजा, न कोई विद्यमान है और न मुख्यि में होने का समाल

है। उनके स्थित प्रज्ञ के सारे लक्षण अमली रूप में मौजद ये।

सरदार पटेल ने अपना भाषण प्रारम्भ करते हए कहा कि मैंने बहुत साल तक अहमदाबाद म्यनिसिपल कमेटी का काम किया है। गांधीजी बहत निकट रह कर मेरा काम देख चके हैं और वे इस काम से मझे कभी निकलने नहीं देते थे। जिसे म्युनिसिपल क्षेत्र में काम करना है उसे किसी और झंझट में नहीं पहना चाहिए । यह काम इतना बड़ाऔर अज्छा है कि उससे किसी को बाकी काम के लिए समय ही नहीं रहता। म्यनिसिपल कमेटी में काम 'करने वालों को राजकीय क्षेत्र में तो विचक्छ हिस्सा नहीं लेना चाहिए। मैं तो कभी अहमदाबाद से बाहर नहीं जाता था और वहां की राजनीतिक सभाओं में भी हिस्सा नहीं लेता था। मगर जो काम म्यनिसिपल कमेटी में में करता था उससे रात की मुझे बड़ी नींद जाती थी। असल में राजकीय क्षेत्र में बहुत कचरापट्टी होती है, जबकि म्युनिसिपल कमेटी का काम सफाई और स्वच्छंता का है। नगर की जनता को साफ जगह में रखना, उसे स्वच्छ जल नाना, अच्छी रोशनी का प्रबन्ध करना, यों की मरम्मत करना-करकट भरा रहता है। वहां सत्ता का स्थान पकड़ने के लिए दाब-पैच चलते रहते हैं और कभी-कभी तो दिलों के मैल भी ऊपर आ जाते हैं। यही कारण है कि राजकीय क्षेत्र में सफाई नहीं होती।

( डोब पष्ठ ८ पर )

# भगवान बुद्ध के बाद गांधीजी जैसा<sup>राजकीय भवन के करिया</sup>-

महापुरुष पैदा नहीं हुआ

सफाई पर विशेष ओर देते थे। वे कहा

करते ये कि जहां सफाई नहीं होती खुवा नहीं रह सकता। गांधीजी दो तरह की अफार पर जोर हेते रे गक दिल की मणाई और दूसरी बाहर की। गांधीजी का हृदय सफ़्क वा और उनकी आईमी की जो ज्योति वी थी, उसकी रोशनी चारों ओर

"बाज संसार के बड़े-बड़े देश भी

यह स्वीकार कर रहे हैं कि गांधीजी का बताया हुआ रास्ता ही बास्तव में विश्व शांति का रास्ता है। मगर चुंकि दिल की सफाई नहीं है, इसलिए सही मानते हुए भी वे इस मार्ग को अपनाने में असमर्थ हैं। यही कारण कि जहां एक बोर वे सुष्टि के संघार का सामान पैदा करने के लिए रात दिन काम कर रहे हैं, तो दूसरी ओर विश्व शांति की चर्चा करते हैं। दिल्ली के नये विधान के बारे में जिसकी कि ओर म्युनिसिपल कमेटी के प्रधान ने अपने भाषण में उप-प्रधानमंत्री का ध्यान दिलाया था. सरदार पटेल ने कहा कि उसके लिए किस प्रकार का विधान बनाया जाय यह हम सबको सोचना है। असल में जो दिल्ली देश के विभाजन से पहले थी, वह आज नहीं रही। लाखों शरणार्थी यहां आ गए हैं जिनके रोजगार का कोई ठिकाना नहीं । इस तरह से जो दिल्ली बढ़ गई है उससे म्युनिसिपल कमेदी पर बहुत बोझ पड़ गया है। नगर की अवादी बहुत बढ चकी है। इसलिए अब सवा करोड़ के बजट से काम नहीं चलेगा। दिल्ली को संभालने के लिए काफी सामान चाहिए। इसलिए केन्द्रीय सरकार को भी दिल्ली की व्यवस्था पर नजर रखनी होगी। अगर यहां कोई चीज बिगड़ती है तो उसका सारे देश पर बहत

एक राय बना छेते हैं। मगर इस बारे में भी गांधीजी हमारे सीमने एक आदर्श रख चुके हैं। गरीबी में भी सफाई रह सकती है, यह उन्होंने हमें सिखाया है। सेवापाम के अपने आश्रम में वे जी सफाई रखते थे, वह वहां की एक विशेषता थी। आश्रम के लोग बपने हायों से पासाना साफ करते वे। इस नाम के लिए उनके यहां कोई सास बमला नहीं या। जो छोग वहां रहते ये उनमें कोई बाह्मण और भंगी का भेदभाव

बुरा असर पड़ता है। यहां विदेशी राजदूत

रहते हैं। वे जब सहर की गन्दगी को

देश के बारे में।

देखते हैं तो सारे

मगर गांधीजी का स्वप्न तो अब दूर बला गया। वे जिस प्रकार देश व्यवस्था चाहते ये, आज बिल्कुल उसका उल्टा हो रहा है। गांवों के/लोग शहरों में चले आ रहे हैं। बहुत-से तो इसलिए आते हैं कि शहरों में कुछ न कुछ रोजपार का धन्धा मिल ही जाता है। इसलिए नगर की म्युनिसिपल कमेटी का तो यह कर्तव्य हो जाता है कि जो गरीब लोग यहां हैं, उनको क्सेटी का छाभ पहले पहुंचे॥ कमेटी के सदस्यों का ध्यान गरीबों की तरफ रहना चाहिए। अगर उनके मकानों और तयों में सफाई नहीं होती तो और लोग भी उसने नहीं बच सकते। वहां जो बीमारी पैदा होनी वह दूसरी जगह फैलेगी। अगर गरीबों के यहां शांति और सुस नहीं होगा वो हम भी सुबी नहीं खु सकते। म्यु-निसिपल कमेटी में काम करने वालों का प्रथम कर्तेच्य यही है। बनर हम इस कर्तव्य को भूलते हैं तो फिर गांधीजी का चित्र लगाने से कोई लाम नहीं होगा। गांधीजी हमेंका हमारे सामने हैं, केवल उनके शरीर को हम नहीं देख सकते। वे अमर हैं। असल में तो दिल्ली में बहा उनकी समाधि बनी है, वही उनकी असली तसवीर है। गांधीजी सो अपनी हिंहडयों और बदन भी इसी दिल्ली में छोड़ बए ।

छोड़ा वह जाप सबके सामने है। जाज तो कोई भी उनके काम की टीका नहीं कर रहा। सब लोग यही कहते हैं कि महात्मा जी कहता वा. वही सही रास्ता वा । म्यनिसिपल कमेटी के बारे में भी

गांधीजी की यही शिक्षा थी कि लोगों को इसमें किसी स्वार्ष के लिए नहीं, बल्कि परमार्थ के लिए जाना चाहिए। भाषण के पश्चात् सरदार पटेल ने विजली का बटन दबाया और पटाखों की

गडगडाहट के बीच लगभग सौ गज के फासले पर टाउन हाल के बरामदे में लगे हुए गांबीजी के विशाल चित्र का आवरण हट गया । यह चित्र कमेटी के एक सदस्य बाबा बिन्तरसिंह द्वारा प्रदान किया गया था।

श्री गाडगिस का भावण समापति पद से भाषण करते हुए भारत के खान, निर्माण और विद्युत मन्त्री

थी नरहरि विष्णु गाडगिल ने कहा कि भारत में भगवान बुद्ध के बाद कोई महा-पुरुष गांधीजी की बराबरी का पैदा नहीं हुआ। असल्यित तो यह है कि ऐसा महा-पुरुष न तो बतीत में हुवा, न विद्यमान है और न भविष्य में पैदा होने की खयाल है। गीता में क्यित प्रेज के जितने समण बताए गए हैं, वें सब गांधीजी में मौजद वे और यदि भगवीन् श्रीकृष्ण को कभी गीता का संशोधित रूप तैयार करने का अवसर मिले तो वे स्थित प्रज्ञ व्यक्ति के इतने सम्बे-चौड़े लक्षण बताने की बजाय केवल गांधीजी का नाम लिख देंगे।

श्री गाडगिल ने कहा कि गांधीजी में जो हृदय की सरस्ता, वाणी की मधुरत और वृद्धि की प्रसरता मुझे दिखाई दी वह मैंने आजतक किसी में नहीं देखी। जीवन में तो वे हमारे मार्ग दर्शक रहे ही, मृत्यु के बाद भी उनके अबर सिद्धान्त मृत्पुक बाद मा उनके अबर । सदीन्त हमारा मार्गदर्शन कर रहे हैं । गांधीजी हमारे यहाँ व्यास बादि ऋषि-मुनियों को भांति असर रहेंगे।

कमेटी का इ तिहास

सरदार पटेल से महात्मा गांधी के चित्र का उद्घाटन करने की प्रार्थना करते हए दिल्ली म्युनिसिपल कमेटी के प्रधान डा ० बूंदवीर सिंह ने जपने माषण में कमेटी के पुराने इतिहास पर प्रकाश हाला और कहा कि इसकी स्थापना सन् १८५७ की बाजादी की रुडाई के बाद ही हो गई थी. गर बाकायदा म्युनिसिपल कमेटी का रूप इसे सन् १८६३ में दिया गया जबकि इसके केवल १० सभासद होने ये और २ लास के अन्दर आमदनी व सर्व द्या। धीरे-

धीरे नगर के विकास के साथ-साथ कमेटी

रियों की राजाजी को विदाई

नई दिल्ली, २२ जनवरी । भवन के विभिन्न कर्मचारियों ने खेलताने में एकव होकर बाज गवर्नर जनरू बी चकवर्ती राजगोपालाचार्यं को विदाई दी। मानपत्र का उत्तर देते हुए गवनर जनरस

महोदय ने कहा कि आप लोगों की राम का अल्लाह से अलग नहीं समझना चाहिए; बाज बापने जितने भी भजन गाये हैं वे संसार के सभी छोगों के भगवान पर छाय होते हैं। इस भवन में कितने ही हिन्दू, कितने ही मुसलमान और फितने ही सिख हैं। आप लोगों को इस तरह काम करना चाहिए कि गांधीजी की बात्मा, मुझको और प्रधान मंत्री को आपके बापसी व्यवहार से संतोष राजाजी ने यह भाषण अंग्रेजी में शिया।

उसे उनकी पुत्री—श्रीमती देवदास गांधी वे हिन्दी में समझाया । इस उत्सव में प्रधान मंत्री नेहरूवी और कताडा के विदेश मन्त्री श्री पियर्सन भी उपस्थित थे। नेहरूबी ने हिन्दी में भाषण करते हुए कहा कि राजाजी से विख्य होता बड़ा दुख़दाई है किंतु आशा है कि उनकी सलाह और उनका प्यप्रदर्शन हमें भविष्य में भी मिलता रहेगी। का भी विकास होता गया। सन् ६१ में

शुरू होकर सन् ६६ में टाउन होल बना और इसी बीच में ६४-६५ के शंगभग वंटाघर बनबाया गया। शुरू में केवल नामजद समासद ही कमेटी में होते वे सगर घंटाघर बनुवाया धीरे-धीरे चुने हुए सदस्य बढ़ते गये। बाज इस कमेटी के ४३ सदस्य हैं और लगभग सवा करोड़ का इसका बजट है। डा॰ बुद्धवीरसिंह ने विशेष रूप से

सन १९२९ की जस घटना का जल्लेख किया जबकि दिल्ली म्युनिसिपल कमेटी ने हिप्टी कमिश्नर एवं कमेटी के प्रधान के विरोध करने पर भी महात्मा गांधी को एक मानपत्र भेंट किया या। मानपत्र में यह कहा गया या कि "हमारी कमेटी के इतिहास में यह सबसे पहला मौका है जबकि एक ऐसे व्यक्ति को अभिनन्दन एवं भेंट का निश्चय किया गया है कि जो न तो राजवराने से सम्बन्ध रखता है और न ही बादशाह सलामत का प्रतिनिधि है, बल्कि जो भारत का एक महान व्यक्ति और निडरता, स्वाई तथा सम्मानमुक्त शांति का दूत होने के कारण हमारे अत्यन्त ही बादर पात्र है।"

पिछले ठीन वची में बाबादी बहुत जाने के कारण दिल्ही स्युनिसिपह कमेटी की दिन पर दिन बढ़ती हुई जिस्से दारियों पर प्रकाश ढालते हुए आपने कहा



Speech Delivered By

The Hon'ble Sardar Vallabhbhai Patel

While Performing the Opening Ceremony

National Physical Laboratory
of India

on Saturday, 21st January, 1950



YOUR EXCELLENCY, PRIME MINISTER, SIR SHANTI SARUP BHATNAGAR AND FRIENDS.

REGARD it as a great privilege to be associated with the ceremony of inaugurating the National Physical Laboratory of India. Apart from the intrinsic importance of this event, the presence of distinguished scientists of international repute, in our midst, lends a distinction to this ceremony which must make participation therein a coveted honour: I must, however, confess to a feeling of great diffidence in submitting to the scrutiny of such discerning and scientific eyes. I hope they will extend to me some mercy and consideration and in asking for it I am emboldened by the kind and generous words Sir Shanti Sarup has just said and also by his claim made at the time of the ceremony of laying the foundation-stone of this very institution, that there is more unanimity among the scientists than among the politicians.

The unique nature of this occasion is apt to lift one from the rather mundane existence of a

politician to the delightful atmosphere of a dreamer and a thinker. I hope you will bear me for a moment as I indulge in some reflections. Ever since his evolution, the human being has been used to pilfering the secrets of nature and applying the knowledge so gained to his own practical use. Scientific research through the ages has thus been long expedition of man into the innermost recesses of natural forces and phenomena and the utilitarian advantage has come to him through the urge for harnessing these forces in the service of mankind. Nature "red in tooth and claw" or nature in its mildest disposition alike, has vielded up scientific data which has contributed to the material progress of the nations of the world. In his relentless pursuit of practical science, however, the scientist has always come into conflict with the spiritualist and the man of religion. The latter has always regarded the scientist as the destroyer of spiritual values and the killer of the superior being, who has brought humanity from an etherial heaven to the very nadir of degeneration. Symptomatically, in terms of religious lore, it might be said that the very first scientific operation which a man performed on his own rib has brought for him a perpetually expensive and troublesome legacy called Eve.

All that I have read about the laboratory which you see today enshrined in such a magnificent building



set in such picturesque surroundings indicates that while it is no answer to the spiritualist's doubts or the humanist's despair, it is essentially a response to the man's call for precision and perfection. It will combine the emotional zeal of the fundamentalist with the practical approach of the utilitarian. It will furnish that scientific aid to industry without which the presentday industrial efficiency would soon find itself lost in "the desert sands of dead habit". It would be a great safeguard against the cheating of common man by means of imperfect standards of weights and measures, length and height. It would be a great resting-house of raw materials and finished products. The researches and tests carried out in its rooms would. I am sure, enrich the realm of science with new-found treasures. Within its walls, the scientist-philosopher will display the same enthusiasm as the astronomer does when a new star swims into his ken; he will exhibit the same absorption in his mission as the celebrated philosopher who disregarded the ordinary standards of decency and rushed out of his bath through a bewildered audience, shouting 'Eureka'; he will express the same delight in his achievements as a young child who discovers the use of his limbs.

While I visualise the very distinguished head of this institution, Dr. Krishnan, in this varied role, my mind also turns to the question how far, in its actual results this laboratory, which has been brought into the world of Indian Science with so much care and affection and after so much devoted and concentrated effort on the part of a distinguished band of eminent scientists led by Sir Shanti Sarup, will serve to relieve this and the further generations of the ills to which human flesh is heir. Will it, for instance, give the Finance Minister the alchemist touch so that he can turn the basest metal into gold and thus relieve him of many a nightmare? Or can it furnish the Commerce Minister with a button which he could press in order to let all the jute held in Pakistan come rolling by despite the existence of the the Jute Board and the customs officers? Would it enable out much-worried Food Minister to grow wheat or sweet potatoes out of thistle and thereby upset an age-old instructional proverb? Can it provide our massive Minister of Incustry with a ready means of substituting mechanical for human control of industry in order that he might run it without the innumerable committees and conferences which it is his unenviable lot to hold? These are some of the demands which we politicians would like to make on the scientists; the list will, I am sure, be unending if the latter would allow us free rein. They are, however, merely symbolic of the troubles and woes which afflict the world around us and I ask my distinguished audiencewhether science in its quest for nature's secrets is:

going to advance the human race towards its goal ofeternal happiness or whether it will open at verifiable. Pandora's box of evil forces for the destruction ofmankind.

It is my earnest and sincere prayer that this Laboratory and the distinguished bands of research1 workers who will operate in it will provide a positive? answer to this problem, as an inspiration to their fellow-scientists in other parts of the world. Ever since the discovery of the gunpowder, the destructive agencies of science have been taking a heavier and heavier toll of human lives. Under the influence of the constructive and creative efforts of science. humanity settles down to an enjoyment of the fruits of 1 civilisation, only to find civilised existence threatened by conflicts, in which scientific genius on both sides is engaged in outpacing each other in evolving more and more powerful engines of destruction. The scientific conscience, as its public counterpart, consoles itself by finding an ideological cloak for this race in mutual slaughter, but no amount of ideological justification can buttress this resort to the primitive and baser instincts of man. Human dignity and ideological sublimity alike demand that the defence of ideas is entrusted to nobler instincts. In my judgment, it is in this reasoning that lies the appeal, for the inhabitants of this sub-continent, of the gospel of peace and non-violence. In this

international gathering of scientists, I should, therefore, like earnestly to appeal to these friends to consider how best they can promote the cause of peace and humanity through science.

Finally, let me say a word of appreciation of the hard and solid work of Sir Shanti Sarup Bhatnagar, Dr. K. N. Mathur and their zealous collaborators which you find so well examplified in the noble edifice and the installation which I have the honour to declare open today. The building of a chain of such laboratories all over India in such a short time is a creditable achievement which, I wish, would inspire similar efforts in other spheres of Governmental activity.

Friends, I shall now proceed to discharge the very pleasant duty which has been entrusted to me.

I declare the National Physical Laboratory open.

30 . marfinmed, DI -314 X. 413 थेशपते सर्वाक स्टेंग mitais. Acres somm שובושם שוצמים י אוצ שניום HING GIGG AUIG 15) (small

The message of the Honourable Sardar Vallabhbhai Patel, Dy. Prime Minister, on the Republic Day.

....

Exactly twenty years ago from today, the people of India took a solemn pladge of complete Independence. Behind that pledge was the determination of a whole people and the strength which comes of faith in one's destiny. Although we obtained Independence on the off. August 1947, it was not complete in the sense of the pledge that we took. Today, by the grace of God, that pledge has been completely fulfilled.

- 2. On this auspicious occasion, it is quite natural that our thoughts should meturn to the Pather of the Nation under whose inspiration and quidance we took that pledge and due to whose leadership we achieved success in our mission. Unhapility, he is not amongst us, but he is watching us from above and I have no doubt his blessings and good wishes are with us on this supreme occasion in our national history.
- will be written in letters of gold in its history. With
  the disappearance of all traces of foreign rule, we
  become in law and in fact our own masters and it will
  be now for us to make or mar our future. It will,
  however, take time for us to recover from centuries
  of exploitation and bondage; considerable sacrifices
  will yet be necessary before sufficient quantity of
  fresh blood can flow in India's veins. We worked hard
  to achieve our freedom. We shall have to strive harder
  to justify it. Let us not, therefore, celebrate this
  occasion with any light make heart. On the other hand,
  let us resolve to play our true and active role of
  responsible citizens of a free country which has yet to
  stand on its feet and to attain its full stature. May divine
  guidance and bounty be with us all.

The day on which India attains Republican status

ma binunio y. onyer to men unial mpi +11 Bitous) mittis L Onti ded Di

अपालको २० धर्म उप र ता २५ व्यव्यु रतारीविद्यान वा हिकसे स्था लास व्यक्ति प्रलब्दे चर्चेड

ला हिंबर सारा लासन वर्षना प्रमाने कार्ड प्रतिया काले अंतार अतिया लाध्य हती. कर प्रतिसा पूर्व स्थाननाना हर निस्तान कर हिस्दूपाश कार के प्रतिमात क्षेत्र पात्र थाय है. राहरोंका भाग की दाता कर के के मा प्रदेश मार्थ हाउलिशिय का मिला त्या क्षा कर בית החומר מות מונו בחונות ביונותו mon en enufit sizz (uni enia eniup) art on. Righman Moderni eneni (Eder 4) 33) was enist wind will 3 wars ereals file so suchi फोताला रायमां अ रहेशे. परहेशी र 5403 गाम िशान कर्द राजे हार अमरे. छना केने कर्मिला युक्त का प्रकाशनी कासर प्रांपेरी nihni ann anisi, mà munni euvivini गानु का ने प्रांत देखा लाखा मार तन गोड भरता उर्था पडेशे योगां सी लाराना संतालेक पोतानो कासो काने सिनिय राणी कापवो लेखी अवाकता पायम तिवस आपकी मीको को अपी कामवानी प्रतिशा उरकी व्यक्ति करते की भार

......

ર૦ વર્ષ ઉપર તા. રદ જા ન્યુમારી १६३८ ना (४वते सारं। ने रितवर्षनी प्रवाम मेक प्रतिहर अने जेलीर प्रतिहा सीधी बती. में प्रतिहा पूर्व स्वतंत्रताना हुं नि स्थयनी बती. ' इंस्वरक्ष्यांथी आर्थे में प्रतिद्वार्थ संपूर्व પાલન થાય છે. ગક્સીસ માત્ર મેક વાતની છે કે જેની પ્રેરણા नने होरवलीयी ने प्रतिहा लीधी कती नने केनी नेवाबीशीने પરિસામે આપસને સફળતા મળી મામસા રાખ્ય પિતા માજ ગાપણી વચ્ચે નથી. હિંદુસ્તાનના ઇતિહાસમાં માજની (દવર સીનેરી ગહરે લળાશે. આજથી બારતનું બાલ આ પડેલાનું પૂર્ણ रीते नापका पीताना खायमां न रखेशे. परहेशी बक्रमतनी નામ નિશાન સર્વ રાતે હઠી જાય છે. છતાં ચેંગી સદાગોની ગતે પીલાલની ગસર પૈયરી નાંધના વિષત લાગશે, ગતે, મારતના હાંઠ પિંજરમાં તાલું અને પૂરતું રૂધિર બરવા માટે તનતી હ મહેનત કરવી પડશે ત્રેમાં સી ભારતના સંતાની ત્રે कारका प्रवित्र हवसे आपीं सीने के हाले आपवान प्रविश र क्षेत्रका अरोवानी साथी. अने सक्तिय काणी जांपवी जी हरी. \ अने जैने માટે પૂરતું વળ મેળવવાને ઇ સ્વરની પ્રાર્થના કરવી જોઇમે.

25-1-40

YER CHY RUGAIT STEET STEET other temperature of the state of the المعدد عدود المام معدم بعدة عمد Will are mine stude to the big see we ALUEN SIAKE EIUUS SIE HAR DES TENTING FOR ALL ETER AND IN HOLDS THE SHAPE SHAPE and northern value whichen theyon being some 100) tale nothing up we alien in estations in mine Marine ( 18+NO TERN (FRICK -513) willy a word from Abl and winter return vient 1854 News MININ The season of the last point they are they who was the ping and anist was others marian strain the men took box was to to Maryla Martina to take less was was A STATE THE AND THE TOTAL more name than some wish is the on water to 12 1 to the same was

૧૯૩૦ ના દિવસે સારો આરંતવર્ષની પ્રજામ મેક પ્રતિજ્ઞા अने मंशीर प्रतिहा सीधी बती. में प्रतिहा पूर्व स्वतंत्रतानी इं निस्थमनी बती. ' इंस्वरक्ष्याची आने में प्रतिहार्त संपूर्व पासन याथ है. अक्सीस मान्न के बातनी है के बेनी प्रश्या अने हो रवली थी के प्रतिका सीधी बती अने केनी नेवा की रीने परिवामे नापवने सक्तवा भणी ने नापवा राज्य पिता नामे માપણી વચ્ચે નથી. હિં<u>દ</u>સ્તાનના ઇતિહાસમાં માજની દિવસ सीनेरी मधरे समाशे. मानमी सारतन साव व्य परवान पूर्व रीते मापना परेताना कायमा न रहेशे. परहेशी बहुमत्तुं नाम (नशान सर्व रावे बड़ी जाय हे. छत्त अर्दी सहीजीनी સુસ અને પીલાસની અસર બંધરી નાંખતા વધત લાગશે, અને ભારતના હાઉ પિંજરમાં તાનું અને પૂરતું રહિર ભરવા માટે तनती उ महेनत अरवी पडशे नेमां सी मारतना संतानीन कारका भावत्र हवसे आसीं सीके के हांकी आपवाला भावति देशन पीतानी साथी अने सक्ति काणी जांपवी जो छके. À अने अने માટે પુરતું ખળ મેળવવાને ઇ સ્વરની પ્રાર્થના કરવી જોઇએ.

25-1-40

સહી. વલ્લમાઇ પટેલ

આજથી ૨૦ વર્ષ ઉપર તા. ૨૬ જા ન્યુઝારી ૧૯૩૦ ના દિવસે સારા ભારતવર્ષની પ્રજામ મેક પ્રતિજ્ઞા અને ગંભીર પ્રતિજ્ઞાં સીધી હતી. એ પ્રતિજ્ઞાં પૂર્ણ સ્વતંત્રતાના કુઢ નિશ્ચયની હતી. ઇ સ્વરકૃષાથી ગાજે મે પ્રતિવાની સંપૂર્ણ પાલન થાય છે. અકસીસ માત્ર એક વાતની છે કે જેની પ્રેરલા अने होरवली थी के प्रतिका लीधी बती अने केनी नेताबी रीने પરિણામે માપણને સફળતા મળી મે માપણા રાજ્ય પિતા માર્જ માપણી વચ્ચે નથી. હિંદસ્તાનના ઇ તિહાસમાં માજની દિવસ સીનેરી મહરે લખાશે. માજથી ભારતનું ભાવ વ્ય પડવાનું પૂર્વ रीते नापका पीताना ढायमा न रहेशे. परहेशी ढह्नमतर्न નામ નિશાન સર્વ રીવે હતી જાય છે. છતાં મેની સદામીની યુસ અને પીલાણની ગસર ખંખરી તાંખતાં વખત લાગશે. અને ભારતના હાડ પિંજરમાં તાલું અને પૂરતું રૂધિર ભરવા માટે તનતી હું મહેનત કરવી પહેશ માં સી ભારતના સંતાની મ भारता परिय हिया मार्था कार्या के के के कार्य है। मार्था अविश किया पीतानी साथी अने सक्तियं काली जापवी जों छशे. √ अने अने માટે પુરતું વળ મેળવવાને ઇ સ્વરની પ્રાર્થના કરવી જોઇએ.

29-1-40

સહી. વ લ્લભમાઇ પટેલ

વ લ્લભભાઇ પટેલ

भाजपी २० वर्ष अपूर ता. २६ जा न्युमारी १६३० ना दिवसे सारा भारतवर्षनी प्रजाने के प्रतिहा अने जंशीर प्रतिहा बीधी बती. में प्रतिहा पूर्व क्वतंत्रताना हर्व निक्थवनी बती. उत्तरकृषाणी जाने में प्रतिहार्त संपूर्व પાલન થાય છે. અકસીસ માત્ર એક વાલની છે કે જેનો પ્રેરલા अने होश्यक्षी के प्रतिहा सीधी हती अने केनी नेताबी शीने પરિવામ માપવને સફળના મળી એ મહેપવા રાજક પિતા માટે માપણી વચ્ચે નથી. હિં<u>દ સ્તા</u>તના ઇ તિહાસમાં માજની (દવસ સીનેરી ગહરે લગાશે: ગામથી બારતને બાવ અં પડવાની પૂર્ણ રીતે માયલા પીતાના હાથમાં જ રહેશે. પરદેશા હહુમતનું नाम नियान सर्व रावे बढ़ी जाय है. छता मेरी बहामीनी ચસ અને પીસાલની ગસાર ભીજી નોંધન વિષત લાગશે, અને भारतना बार पिंग्रमि ताली अने पूर्त इसिर भरवा माटे तनती अधिनत अरवी पडशे मेम स्थी- मारतना संवानी मे שושיםו עונש וצנו שונה בוצה בל בוצה בל אונה ולבות אות הו לבו שווה પીતાની સાચી અને સક્રિય કાળી આપવી જોઇશે. √ અને અને માટે પૂરતું વળ મેળવવાને ઇ સ્વરની પ્રાર્થના કરવી જોઇમે.

ब द्वस्ताध पटेल

25-1-40

Shri Kanganathan and friends,

and friends Sales of Marie of Sales of

your Convocation personally, as I had been looking forward to. When one is caught in the whirlpool of overriding official engagements, the fundamental rights of freedom of movement and of personal liberty have perfoce to be suspended and, unlike the ordinary citizen, the victim has no forum to which he can have recourse for redress. I am sure, therefore, that all of you will aymmathine with me in the circumstatures which have compelled me to deny myself the pleasure of meeting you and sharing with you a few thoughts and ideas. I need hardly tell you that if you suffer from a sense of disappointment, mine has deep regret mixed with it.

The Forest Research Institute of Debra Dun is no stranger to me. I have already had glimpues of its work. Its sylvan setting, its picturesque walks, its ideal surroundings, have all attracted my attention during my prolonged stay in Debra Dun both last year and the year previous. I have also closely seen the rich collection of its museum and have acquainted myself, through some study, and contact, with the work that is being turned out within its presises. Yours, freinds, is an old Institution, almost as old as myself. Its history shows how from small and humble beginnings 72 years ago, it has changed its character and widemed its scope until today when it is the nursery of all that is best and useful in forest service and a laboratory from which are turned out valuable research products in a vital field of national enterprises.

It is no facile or facetious compliment that I am paying Forestry when I refer to it in the terms I have done. Forests, as natural resources, are the most wronged by the hands of men who should appreciate their utility better. In the struggle for existence or in competition with nature, human beings are apt to follow the path of least resistance and taking a narrow short-term view of their needs and the resources available for their fulfilment, lay their hands on the nearest available resource without any forethought of their replacement for future requirements. The history of denudation of the forest resources of this country is replace with instances of cruel exploitation of this within national wealth and criminal maste of capital places.

in our hands by a bountiful Nature. Planned exploitation of such resources, based on the principle of preservation and replacement, is a feature of comparatively recent date. Obviously, we cannot make up the lowest of conturies, but we can by judicious planning and lay-out still husband the resources that are available and create wealth which, in course of time, may achieve that balance between afforestation and clearance which is the hall-mark of scientific planning.

After all, forests satisfy our basic heeds with a universality which might well be the entry of those who believe in bringing wealth within the reach of all. The humble dweller of village buts, the rich dweller of lumurious city buildings, the cook in his kitchen and the more fortunate possessor of a well-furnished drawing room, all alike draw from the forests the means of satisfying what to each is an elementary and essential need. But how few have the attitude of reverence and consideration for the trees and plants that sacrifice themselves in the service of mankind? Morship of trees is still an old tribal or village custom. We ourselves in our cosy chairs touch wood to invoke blessings or to ward off the evil eye. In one case there is the sense of closeness to a readily available aid for existence; in the other, there is a recognition of value forced by habit rather than by conviction. But in both there is the element of sanctity which needs greater realisation and senting appreciation in every-day life.

Applying these thoughts to realities and hard facts of statistics, I find that the total forest area of this country covers 171000 sq miles which gives a percentage of 22.6 to the total land area. If we consider the requirements of our wast population and the need for softening the rigours of its climate and combine this with a study of the distribution of the area under forest s and the comparatively poor state of our communications, we shall at once be struck with the deficiency of the resources that are available, at a conservative satimate, in order to have a balance between open and covered area, we must add at least one-third more to our area under forest. We have also to consider another broad fact which has recently been claiming increasing attention. Do not the failure of measons on the Sant Const during the last three years, the fitfulness of meason in North Cujerat and Saureaghtre

and the engroachment which the desert-of Rajputana is making on the Cangetic plain suggest the need for so ordering our forest belts as to create conditions more helpful to averting what might eventually be a certain disaster to the life and happiness of millions? The part which forests play in moderating the rigours of climate and meeting the growing menace of the desert or the trespass of the rivers and mountain streams on fertile soil can hardly be over-estimated. The existence of mounds and ridges where, only some years ago, there were green pastures or smiling crop-lands, the surrender which cultivation has been making to barrenness, and the presence of bare rocks where years ago the sylvan goddess stood in all its splendour, should convince us of the heavy drain which is all owly but surely being made on our priceless treasures on which depends our ability to feed our growing population. If we are to survive this growing struggle for existence, this process of demudation of our wealth has got to be stopped and we have to plan a nation-wide scheme of afforestation which would provide against the dangers to which I have referred above. To neglect this essential field of nation-building activity would be a national disservice and a failure to discharge a vital duty of administration and citizenship.

I realise that simultaneously a system of scientific exploitation of our rich timber resources must go on. The total revenue from forests in former Provinces alone amounted to about 102 crores and the total out-turn of timber and fire wood amounted to 1/3 and 5 million tons respectively. Moreover, forests, while saving us from the ravages of flood and famine, can themselves become a meance to cultivation. Scientific felling of forest areas combined with fresh growth, which would at least make up for the loss of forest wealth involved, must be the aim of a sound working plan. Forests also provide indispensable raw material for important industries, both big and small. The proper utilisation of forest wealth must, therefor be an important part of our national policy, if we have to succeed in increasing national prosperity, but here also our watch-word should be that we create more than we destroy and turn all our uncultivable area capable of being brought under the plantation into lands yielding wither valuable forest wealth or performing the useful function of sentinels against the forces of elements, water, weather and sands,

Friends, I am afraid I have now wearied you with a few thoughts which struck me as being germane to the pleasant duty of addressing this select gathering of accomplished and budding experts in forestry. There has been a constant rivalry between the expert and the layman ever since the dawn of history. It was an irate layman belonging to the beerigged variety who divided witnesses into three categories "liars, damned liars and experts." I shall not be so judicial for a politicism has to be judicious and shall at once recognise the value which experts have in every department of human activity. I also realise my own limitations; the expert must begin where the layman ends and, if necessary, help the layman to carry on. Even as a professional I was and remained only a lawyer; may be for some Nagistrates and Judges I was a "damned lawyer", but unlike my expert friends I stopped there. I hope, therefore, you will bear with me for a while, if I place before you the layman's demants on the expert.

The common man must be scientific if he has to make a success in life. The virtues of precision, of legic, of a careful understanding of causation and sffect, and of scientific imagination, criticism and analysis must be cultivated in his own humble way by an average citizen. Without the elements of these virtues, the average man cannot fulfil adequately the role, which he must, in the exacting field of democracy.

The role of the expert is any form of Government, except that of experts, is also equally, if not more, exacting. Knowledge shines best when scholarship is combined with humility. With the limits of knowledge undefined and dudefinable, an expert is no more than a child gathering pebbles by the sea shore. The expert or the technican has also to be tolerant of the actions faults and shortcomings of persons less equipped than himself. It is no use his carrying on a store-house of knowledge with him, if he cannot make those who are going to utilise it, understand its potentialities and utility. He must, therefore, treat others not with condescension but with considerables and with a view to converting and not merely controverting. The instruments of experts are the men of the "humbler lay" and they cannot, therefore, afford to quarrel with their own instruments. Similarly, it is the common man and their problems that must afford an expert opportunities for testing and matting to practical use his technical knowledge and ability. By appeal to you, who are now enturing the threshold of their career in

public service, is to regard your service as a field of duty and not as merely an opportunity for a career, to treat the common man with sympathy, understanding and consideration, to make him realise his shortcomings and put faith in your knowledge and ability and them to place at his service unreservedly and unstintedly all that is best in yourself. It is only then and in this spirit that the common man will extend to you that confidence and trust without which your own true mission in life cannot be a success that it deserves to be. Also please remember that the resources of the State are limited; you owe it to the country to achieve the maximum at minimum cost. It is good to have sometimes your heads above in the clouds but never lose the grip on Mother Earth. Trailing clouds may lend you their glory but they will be driven away by the mildest breeze whereas even in a blast, the firm ground below will give you foothold. After all stability is essential for success in life and without it even a genius cannot make good in this world.

Friends, I now come to the last and most pleasant duty which I would have been more than delighted to perform personally. It is to congratulate all those who are the proud recepients of diplomas after a successful completion of their courses. They have had the satisfaction of their labours being rewarded. I only hope and pray that their labours in the service of the country will be equally successfully rewarded. I also congratulate your President and members of the staff on the successful closing of one more year in the life of this great institution. Nay this Research Institute grow in stature, in service, and in usefulness as it completes its spans from year to year!

I shall now close with once more a word of apology for my failure to fulfil this engagement and a word of gratitude for the kindness with which you have tolerated this lapse of time.

Jai Hind.

## The Hon'ble Sardar Vallabhbhai Patel.

President, Chief Ministers, Presidents of the Congress Committees, the other members of the Planning Board, and others present:

I have heard the resolutions passed by you after two days full consideration. Planning originates from the time after the end of the first world war, from Russia, and it has now covered all countries in the world in one form or other. We do not hear of any possible progress without planning. We had many plans. We had the Gandhian plan, which Gandhiii conceived, of the Gandhian economy of the country, i.e., Charka Sangh, Village Industry, removal of untouchability, and several other things -- also language. In fact, I do not think there is any subject for the building of the nation which he had not touched. Then came, after the struggle, or during the struggle, a plan called the Bombay Plan. The Bombay Planning Committee prepared a plan when we were in jail, and the then Government took one of the members of that Planning Board into their Government, and they started planning. I remember at that time, the then Viceroy saying -we read it in jail -- "You go on planning for the postwar development of the country. Never mind where the money will come from. If we can raise so much money during the course of the war, for the development of the country there will be no trouble about money". That Vicercy has gone. Money has disappeard. He has not left anything by which money could be raised and. I do not know, whether you have not enough experience of the difficulties of finding out money. Planning without money is perhaps like contemplating in the air. Then we came into office. We had another Planning Board

in the Government itself after we took office. Then came the Sarvodaya Planning, The Congress Planning, and this Planning. We had many schemes before, for the development of the country prepared during the war by the then Planning Committee and the other departments. We have now come to a point when it is easy to plan but it is planning without resources to meet the requirements of implementation of the planning schemes. Therefore, we have to cut our coats according to the cloth. In this country, if Gandhiji's plan goes, i.e. if you have food, clothing, air and water, there is nothing required -- perhaps, Gulzarilal Nanda would add Housing -- but nothing more is required. People are easily satisfied. That was the line on which the country was feeling. When I came into office, I thought that the first requirement of any progressive country is internal and external security. You cannot plan anything, you cannot work on any plan, unless there is internal and external security. Therefore, I started planning on the integration of the country--whatever remained -- and also tried to secure peace in the country. I found that the world had changed. In the present disturbed conditions of the world, while we have an organisation called the United Nations Council, and we have tall talk of world peace, there is country which is not in a disturbed condition. Countries who had freedom for centuries, who had never been slaves, are in a disturbed condition. After all, we are a country which has won freedom only yesterday, with a past legacy of so many disturbing elements. It is impossible to make progress unless you first restore order in the country. On the top of it came partition, which made our task difficult. We were just settling down when came devaluation. Things are not entirely in our hands even if

we plan for the progress of the country. It will depend on so many factors which govern us -- the outside factors. So, the planners have to take into account many extraneous circumstances. Now, it is well known that our economy was joint when the country was one. It has been severed, and it has been severed in such a way that both the countries have suffered. We have xuffered realised, after taking office, that our country depends mainly, upon large quantities of import of foodstuffs. After a great deal of experience, we came to the conclusion that somehow or other, we must be self-sufficient in food by the end of 1951. We have fixed that date. Whether this will be done or not depends upon our combined efforts - and bona fide efforts. My own view, which I have not concealed, and aften expressed to the displeasure of many, is that if we had not played false to ourselves and to our country, a large quantity of the imports would bare been unnecessary. We have plenty of food in the country, and a 5%, 7% or 10% deficit in a huge country like this, is not difficult to make up - not only by increased production, but by preventing waste, by putting maximum efforts, by economising, and also putting our hearts unitedly in the matter of getting the foodstuffs from where they are surplus. Now, there are some provinces which are surplus provinces. There are some provinces which are deficit provinces. But, whenever the provinces make an effort for the purpose of securing surplus food from the people, we do not speak with one voice. Sometimes we put our provinces first, and the rest of the countries afterwards. We know that our neighbours are, in spite of hard efforts, getting less, eating less, and finding difficulties, yet we feel that if our neighbouring province gets less, it does not matter. We

have not felt about this question as a nation, and the governing organisation does not speak with one voice. That is a difficulty which planning will not mend. It is you who, as Chief Ministers of the Provinces, and as Presidents of the Congress organisations, can, to a certain extent, mend these matters, But, I have often seen that between the two, considerable planning is required to make them meet -- they do not meet; and, they work in contrary directions. If the Ministry of one province wants to balance its budget and wants to put in a little cess on water. which even after putting it, is less than that of the neighbouring province, then the Congress organisation will carry on agitation to the extent of obstructing it. "We cannot afford to displease the peasants" they say, and the next elections are coming. But they do not show the alternative, how to find the money. That is also my experience in the Congress organisation itself. Wherever the Government tries to push in a scheme, there is another group to demolish the scheme.

Planning, however good, will not work till we realize our responsibilities and we think that it is our obligation to implement the schemes that have been planned. But it is not the Congress organization alone, but there are other groups whose business it is to destroy everything that you do, whose main function it is to find fault with everything that you do, however good it may be. There are some groups who are bent upon creating disruption and dislocation and they go to the length of creating chaos, murders, dacoities, remove all rails and tamper with the communications. These are matters of great concern and on account of

these we find considerable amount of strain on the Government. But that apart, that to a large extent we have succeeded in restoring order has been appreciated by people who come from outside. They say that this is a country which is the only stable country in practically the whole of Asia and it is the one place where we can stem the tide of aggression, disturbance and foreign anarchical ideologies. Many have expressed their admiration for the work that has been done but that work will not last or we will not be able to preserve that because unless we have enough food in the country to fill the bellies of the people, there can be no peace. It is ture that in spite of the invasion of foreign ideologies our country still largely would be satisfied with few things which are the primary necessities of life if we can give them. But it is a difficult thing. Therefore Gandhiji said that in this country machine is not going to solve the problem because millions of idle hands cannot be employed on machine as machine, by its very nature, displaces men. If manpower is to be conserved, you require machine. Therefore our planning must ncessarily differ from the planning of industrial countries of smaller size or of highly developed industrial countries. Ours is primarily an agricultural country and in a country so thickly populated as ours, idleness is the greatest disease. What are we to do with unemployment? It is a big problem and for that Gandhiji's planning was of a different type. It is difficult. He himself tried hard but he did not succeed. The fact that he did not succeed shows that it is impossible for us to expect to succeed quickly. His idea was that all mill-cloth should be exported and it should not be for internal

consumption. If you want to employ the idle people, they must be employed on production of large number of cloth apart from the village industries. It is a very difficult task but here in this country if not twothirds, more than half of our revenue is being spent in the army. It is difficult to plan on pure non-industry basis. We must industrialise our country quickly, efficiently in certain directions. Otherwise we are doomed in the modern world. Because the modern army is not the army of bows and arrows. It is an army which requires me many things which only machine can produce. Apart-from arms and ammunitions that are required, apart from the uniform and other things that are required, it requires large quantities of stores, jeeps, motors, mechanical appliances, aeroplanes. Now we have the Navy . Petrol and so many other things are required for the army for which you must have industries, and these industries should be developed in the country. I suppose no country is self-sufficient except perhaps America and Russia but for our limited requirements of internal and external peace, in the present conditions of the country, we must have arms. If the world succeeds in bringing about a condition when no country would be required to arm itself, then our old scheme of self-sufficiency in villages would be an ideal thing to live in but that is not so and therefore we have to plan both for industry which is immediately hecessary and for agriculture which is the primary necessity also and of immediate necessity. Take food for which we have fixed the target but immediately after fixing the target, we find that we must have cotton and jute and without affecting our plan for the self-sufficiency of food fixed on a certain date we must produce so

much jute and cotton. Now you may plan but the production of increased amount of cotton depends upon so many factors. That planning will not do. If the peasant gets more money in oilseeds, he will rather have oilseeds in his fields than have cotton. You may, by legislation, restrict production in certain areas but it is up to him to produce. He may not do it. It is a very difficult and complicated thing. You may control one commodity and the other thing will require control. If you don't control one, the other control fails. Then you have your continuous guarrel with the industrial magnates who manufacture cloth. They want money and their share. Then there are the middlemen and they have to be looked after and if they go to the blackmarket they have to be turned out. Then there are the consumers who want a certain price and the price goes up. Then you have the labour leaders and they want more and more for the labour. Our Labour Member will put in legislations - from the beginning of the work of Government there never was so much amount of labour legislation as we have at present - by which if the industrialists would create trouble, he would put vicarious punishments. If the industrialist lives in Bombay and if the industrial concern is in Cawnpore and if the Manager or servant of his does anything against the Act, the industrialist in Bombay passes sleepless nights as he may be arrested any day. It is a very difficult thing. People outside think that we have got liberty and freedom but we have nothing and what is the Government doing? Only those who have taken charge of Government know what a complicated machine this Government is. It is not so simple as people think and choose to write in articles.

very complicated. In spite of that we have taken

the responsibility and we must fulfil the responsibilities to the best of our ability and therefore today I know and perhaps many of you would know that the most controversial question in the country which has brought this Government into trouble and unpopularity is the subject of control. This Govt. has not got the machinery to put an effective control in any sphere of Government, whatever you may say. It has got barely, even not barely, enough service to run the administration. We run the whole country with one-fourth of the service which was in existence when we took power. 50 to 55% of the people whose awe was so great that their very presence was enough to keep law and order in this country and to make the lower subordinate work with efficiency energy and even over-time -- they have all gone. We have opened so many embassies outside where we sent for every Embassy at least one tried Civil Service senior man. All those people who have opted for the other side have gone there. We have now many other Departments opened, If we have a Planning Board, we have got 6 Members, 6 Officers, 6 Secretaries, 6 Typists, 6 Chaprassis and a huge paraphernalia and it is all necessary in a modern Government. 50 the functions of Government have widehed. Now you have the new Department of Scientific Research. It is very necessary and useful and its fruits may be some years after but still it requires men. We have few men. We have no statistics and we have to begin from a scratch or we have to begin from a thing which is badly scratched. It is not plain sailing. You have

talked of abolition of zamindari. You can ask Pantji how difficult it is, how he passed sleepless nights when he started this question of abolition of zamindari. It is a good thing to do but I have seen cases of which you have no experience.

We have in Saurashtra, four lakhs of people who are living on 40,000 -- on the sweat of 40,000 who are tilling the soil -- four lakhs of Greshias for nothing else, no prefession, no trade, no business, except to live on these people. Four lakhs of people cannot live on four lakhs of animals, but they want to live on these 40,000 people, to continue to suck their blood. These poor people have to fetch water, they have to supply fire-wood, they have perhaps to supply them with every necessity of life. They are complete serfs. But now they are free. They have gained freedom. They now work on their own lands which used to be owned by other people. So, where will these other people go? What will they do? In this country, after the war, any amount of surplus arms are available. So, some of them take to dacoities. Take Andhra, Mr. Ranga would say "Take away Andhra into the centre. What can we do? Because, congressmen are being shot down". Other people are also being shot down. It is true we have to restore order there. But if you plan for the abolition of zamindari, you have other problems coming up. Therefore, it is not a question merely of abolition of zemindari, but abolition in a manner in which, for example, the princes disappeared, so that we may have no trouble. Otherwise, all the plans go to waste. Abolition of vested interests is a good thing, but indecent haste will destroy everything and delay the thing which we

want. Therefore, we must be very careful, and it will require a combination of all our forces. Are we all agreed on that? You can ask Pantji. You start with an agreement, but when it comes to the implementation, you divide your forces. If it is Zamindari abolition, you say you can acquire zemindari without paying any compensation. You can do so because you have got power. But the consequences of it have to be seen. Therefore, try as much as possible to quicken the process without creating other problems which are much more serious. If you do not do that, then you delay the thing which you have in mind. There is also another point. We do not speak with one voice. If the ministry wants one thing to be done then the Provincial Congress Committee say, "No, that is wrong" Then everything stands still. So much of our difficulties are created, not for want of planning, but for want of bonafide efforts and realisation that, in this period of our infancy of nation-building, it is our sacred duty to try and stand by each other, support one another, and not bring discredit to the organisation to which we have the honour to belong, and for which we made so many sacrifices. Therefore, now that you have planned, it is a good thing. I commend it. You have all come -- Chief Ministers from the various provinces, leaving your work, and also various Provincial Congress Committee Presidents. You have all agreed here, and nobody has differed. Now, will you work this with agreement when you go back, or will it be the President's concern to find fault with the Premier, or the Ministry or the officers? If, in the implementation of it you have only to find fault with one another, and throw the responsibility on others, then it is all a waste of time. Therefore, whatever programme you

have made, you must plan for the execution of it. Planning is a very good thing. Therefore, what I believe in, is in the doing of a thing, and for doing it, you have to plan. If that is not in existence, then the whole thing goes. Therefore, all of you who have come here today must make it a firm resolution in your minds that you have to work this programme. It cannot be worked by Government alone. No Government can work such programmes without the co-operation of the people. While the Government is engaged in the administrative functions, it has not got enough time to come into contact with the people, and they are therefore often isolated. But, the Presidents of the Provincial Congress Committees are continuously and in close touch with the people. If the two combine, then much of that our difficulties will disappear Therefore, my advice today to you would be to forget what has happened in the past but from now on at least, make a solemn determination that as this programme has been drawn up, it is our business to see that it is executed. If you do that, then, all this work that you have done, all the labour that you have put in, will be well spent. Otherwise, as I have said, there have been many plans in the past, and now, one more. It will not be good. I wish you godspeed and success. Jai Hind.

213 E17 8 9 3 3 75 71 Si35122 51.29.7.60

I have now spent almost a week in Calcutta studying the feelings and problems of Bengal, at first hand, and helping the Chief Minister and his colleagues with my advice on the many difficulties which confront them and the people of Bengal in their most delicate and onerous task of implementing the Agreement which has been entered into between India and Pakistan. Never before have I felt the handicap of my health so bitterly and poignantly as during these busy days, for. that has deprived me of the opportunity of personally extending, to our unfortunate brothers and sisters, who have suffered and borne so much, a few words of sympathy and solace. My first task this evening, therefore, is to ask them to extend a little consideration and understanding to me in my physical incapacity and to say that they have constantly been in my thoughts and their sufferings and sorrows have throughout engaged my attention during the many wakeful hours of the day and the night which I have devoted, whether in discussions or alone, to the cruel fate which an unrelenting destiny has visited on them.

Throughout during the critical weeks sy mind and heart have been with them. It is only an irrepressible desire to stand by them that kept me away from their and it was only when I felt that an opportunity had some my way to contribute towards their speedy relief and alleviation of the pange which towards their speedy relief and alleviation of the pange which towards them that I runhed to Calcutta to assuage their feelings, closely and intimately to appreciate their situation, and to make them understand, as dispussionately as possible, their duty in this critical hour. But for the vain, though staders and earnest, attempts which I made to persuade by the Honourable collegues from Toward to withdraw

their resignations from the Cabinet, I would have con to Calcutta earlier. I had hoped that, as always, on this occasion also I could rely on their help and cooperation from within, but they have chosen a different path. I regret this greatly, but conceptions of duty can vary and if they feel that they can serve their conscience best by keeping out of Government, they are fully entitled to their decision. I for myself still feel that they could have looked after the interests of West Bengal and alleviated the sufferings of its people much more effectively and satisfactorily from inside Covernment than outside and that they would have served their State and country better by continuing to voice the innermost feelings and urge of their kinemen during the the decision - and - policy - making deliberations of the Cabinet. The choice between conscience and country is sometimes difficult to maket I for one believe that occasions do arise when one has to subordinate one's own fundamental conceptions to the larger interests and more absorbing call of the country.

During my stay in Calcutta, I have interviewed men of divergent views and interests. I have addressed representatives of the Press, political workers, members of relief organisations, teachers, students, officials and representatives of refugees. I have tried my best to appreciate and understand their different points of view, I feest, along with an understandable undercurren of doubt and suspicion, resentment or anger, a willing to give credit for another person's homesty of convictions and sincerity of purpose. This has enabled me to place before my Materials, in its true perspectiths merits of the hyrocant, of which some of them my bitter critics, or even heatile opposents. I have also been sustained in this test by the love and devotion which all of them uniformly showed to me and the true

and confidence they reposed in me. For all this, I am deeply grateful.

The question before West Bengal is not so much

whether the Agreement is good or bad, beneficial or harmful but whether, in the face of the stark reality of a partitioned Bengal under two independent Governments and placed in the present set of circumstances, any other peaceful means is open to it to bring hope and faith and suggour and relief to the unfortunate victies of the recent disturbances on both sides of the border. I have asked, and looked, in vain for an alternative. The press editorials, representatives of public opinion in West Bengal and even my distinguished friend and colleague Dr.Symus Prasad Mookerjee, have failed to provide me with an answer. In a mituation of this kind. which involves the life, property, honour and fates of millions I think in the interests of these unfortunate sufferers Government are entitled from their critics to a more helpful approach to such momentous problems, In a democratic Covernment there can be no question of mussling or silencing critics, except of course those who have the responsibility of sharing the burden of Government; nevertheless, an international Agreement, pledging the honour and solems word of a country, does impose a certain amount of restraint and responsibility and a certain code of international propriety which the critics would do well constantly to bear in mind. I think we are entitled to ask that, if the critics have no practical alternative to suggest, the pledged word of the country demands their cooperation and support I know that people, in the light of the past

history of agreements which have fallon in disuse, or plaints which have fallow in disuse, or plaines which have been broken, approach the latest one with sepptical system and even convinced disbalief, The resourches in and, west made by critical layer yielded no new discoveries 3

or facts which were not known to those who undertook upon themselves the burden of implementing the Agreement. Human nature, as far as I am aware, places no limit of time on its capacity to change; even death-bed repentance or remorse acquires a religious merit of its own-Therefore, on the basis of past remissions, to accept future bad faith as an unalterable fast, denotes a lack of faith am am in the basic goodness of human nature which constitutes the very elements of our philosophy, After all, I have yielded to none in past doubts and future fears of the successful implementation of such Agreements but belief and trust have also a place in one's mental equipment and these have helped to make up my mind to give the Agreement a fair trial. We ask nothing more of the sons and daughters of West Bengal. Even those who express dissatisfaction with the Agreement recognise that having been once concluded there is no option but to implement. In that event does it not behave them to make an unreserved and sincere attempt to do so rather than to express crampting fears or demoralising doubte?

I also know that my West Bengal friends are genuinely verried about the concept of an Islanic State and the concequences which, in the light of history, such a except is taken to entail. In the face of a clear escaptance of the fundamental principles of democracy by the Prime Minister of Pakistan, we have no alternative but to mark time and to put it to the test. The one thing that made a profound impression on me in accepting the Pakistan Prime Minister's assurances at their face value was the expressions and visible cincerity with which he laid stress in the most for bringing the two countries closer in our life-time. We have at least the background of previous associations and of past friendships and goodwill; the new generation will grow under the full belief and faith in absolute separation.

112

I would, therefore, ask you to approach the Pakistan Prime Einister's assurance on this matter in the spirit and desire of coming closer together than drifting apart. If we drift apart, the task of keeping minorities within the geographical limits of our respective frontiers would become immesurably difficult, whereas, if we make a genuine attempt at closer understanding with trust and confidence in each other, there is some change for minorities on either side living a life of peace and security to whigh they are entitled under any civilised Government.

I regard it profitless at this stage to enter into any disputation of respective responsibility for the tragedies that have occurred on both sides of the border. I can tell my West Bengal friends quite candidly that it is the ugly and deplorable incidents which happened on our side of the border that made a world of difference to our capacity and freedom to deal with the problem more effectively and expeditously, To counsel firmess and consistency in such circumstances or to charge Government with weakness, hesitancy or inconsistency is to ignore the elementary rule of prudence that one can act correctly only when one's conscience is clear and not clouded by one's own guilt. Those who demand more heroic remedies will do well to ponder over this simple fact. Similarly, you cannot talk of peace and in the same breadh raise clouds of suspicion and distrust. If the talk of peace within the country has any seaning, it is the bounden duty of all who profess to guide public opinion to think, say and act in such a manner as not to rouse the latent or active forces of discontent, hostility and bitterness. In such a contingency the power of the pen has to be wielded with a grave sense of responsiblelity which the custody of destinies of millions involves and the instrument of speech is tok be used to soothe rather than tok hurt, to assuage rather than to alienate, to heal rather than to w

Some of my friends have charged Government with having descried down from the lofty principles of the New Constitution to the acceptance of a compunal principle in the composition of Ministries. It is rather difficult for me to appreciate the force of their argument. Is it their contention that the Constitution lays down no responsibility for ensuring that the minorities are suitably represented in Government? Does the Constitution, in any manner, bar temperary expedience of restoring coefidence enong the minorities? Do they wish that we should have left the Hindus of East Bengal without any means of approach to the highest executive of the State? When we removed reservation for minorities from the Constitution, I made it quite clear that this imposed a great obligation on the majority community to give the minorities their due. Is it seriously contemied that the giving of a Ministership to a minority is the gift of something to which the minority is not entitled, at least at a time when its confidence in the majority is shaken? To question that part of the Agreement is to betray a montality which is entirely opposed to the secular basis of our own Constitution and a complete ignorance of the basic conception of a mational State.

Let me now briefly explain why I feel that the Inde-Pakistan Agreement gives a reasonable blance, if worked in the proper spirit, for retrieving the ground that has been lest during the last two years. For the first time, we have provided for supervision and control over the day-to-day implementation of the Agreement. The Central Minister of the Govern ment of India and a representative of innoration in the Provincial Cabinet of Pakistan will be there to ensure that the agreement is implemented in Pakistan in letter and in spirit. The Central Minister wouldbe associated with the functioning of the Himselft Commission which would in its turn to the match-dog of the minority's interests in affait Pakistan. Thus, for the first time, a readily available evenus of redress has been provided to a Minority community and it should not be difficult for us to find out my margin between professions

and practice. In these circumstances, it seems to me essential that we, on our part, should give no excuse or justification for any failure of the Agreement in East Pakistan, Similarly, any refusal to avail ourselves of the facilities and machinery available for safeguarding the interests of minorities in East Pakistan could only be construed as a point against us. those who withhold their hand of cooperation will neither away from Pakistan, nor of those who have been left behind, Similarly, the Agreement, while providing for full facilities to those who wish to come away, makes fair arrangements for those who wish to remain in Pakistan. I can quite realise the reluctance and hesitation of those, who have recently come to India after undergoing or witnessing, or out of a sense of fear at the horrors that have been perpetrated, to return to their homes. But I would ask them as well as these who have come earlier to consider the fate and spirit of resignation or helplessness of those who are remaining behind. After all, they have also unjergone the same excruciating experiences, Selfpreservation may be the law of nature, but sharing sorrows and sufferings or standing by their fellow ereatures in the hour of need is equally a dictate of thebetter side of human nature. It is in this spirit and for these reasons that I would be like to appeal to my brothers and sisters who have come away to India or are thinking of making their departure from Bast Pakistan to reflect on what I have said shove. In the heat of themoment they should not make up their mind once for all against any possibility or hope of return to the paternal acres which bound their wish and care or to their babitations which enshrined for generations their hopes and aspirations. Let them also consider whother, while there is stillsome hope lingering they need nocessarily undergo that sudness of heart, those unhappy affile tions and the terments and difficulties which are the necessary consequences of uprooting eneself from one's established life and home. In giving the right lend at this critical juncture. in creating the proper psychology and in encouraging the correct approach to this difficult dilemma, a special responsibility

develves on leaders of public opinion in India, in particular on those leaders and workers who have come away from Pakistan. is my settled conviction that had those, whose moral duty it was to stand by their countrymen after Partition done their part, they would have provided a beacon of light to a distracted people and an inspiration to a demoralised community. When I say this I as thinking in particular of that saintly figure whose life is a pe of self-effacement in the service of his fellow-men. I mean my ous old and valued friend, Satish Babu, who has never left his post of duty and whose steadfastness and devotion to his cause is a shining example to others who are hesitating, or who are still wondering whehter the risk is worth taking. I would appeal to these friends and colleagues of mine to follow the Mahatus whom they all revered andfollowed so much in his lifetime and to under take perhaps the greatest mission that can ever come their way of bringing some hope and encouragement to their brothers and sisters across the frontier. In the meantime, the policy of Government is in clear and imequivocal. They will strain their utmost to implement this Agreement and, at the same time, to make the lot of those who have come away as happy as possible. In the sacred task of extending relief to them, we shall not recognise any State boundaries nor stint my resources/we can command. In that task, the Central Government willhold the hand of the West Behgal Government to the utmost of its strength and capacity. We are already encouraged in our efforts by the support which we have received from all State Governments andthe promise of help and cooperation which they have offered. We shall also undertake the task of rehabilitating those who might eventually decide to make India their permanent shode. I would, however, appeal to them to lend a helping hand in these two-fold tasks by a complying with such directions and arrangements which the Government of West Bengal might make for their relief or rehabilitation, whether inside or outside West Bengal. It has pained me considerably that interested persons should exploit sintleisnes this opportunity for dissuading refugees from leaving for their allotted places outside West Bengal and for pressing upon them the need for ask

for relief or rehabilitation within the area of West Sengal itself. I hope leaders and workers in west Sengal will place their services unreservedly at the disposal of Government is the great humanitarian problem and will cooperate wholeheartedly in the difficult task with which that Government is foods.

I should also like to make an appeal to my friends in West Bengal fully to comprehend she delicate and difficult situation in which they are placed. The Agreement has been concluded and its implementation is a point of honour both for the Government and the people of India, Public opinion throughout India outside West Bengal and the State Governments have almost unanimously and wholeheartedly accepted the concluded arrangements, and are determined to work the Agreement to the best of their ability and competence. Would it then pay the people of West Bengal to have a different or contrary line even partially? Let not West Bengal isolate itself and alienate the rest of India. West Bengal today needs all the sympathy and help that it can get from the rest of India and I can assure my friends here that they they have that sympathy and help in full measure. I am confident. that with this general support, the Government and people of West Bengal will pass safely through the crisis that threatens them. Let them now forget and forgive the controversies and high emotional strain of the rast. Let them now settle down to the task of relief and reconstruction and of repairing the damage done in the catastrophic events of the last few months. The heart of West Bengal is sound. I have faith in West Bengal and its people. I have belief in its destiny and/in this spirit that I make an earnest appeal to my friends to rise up to the occasion and play their part in this critical hour of the Nation.

Finally, friends, as one who can conscientiously say that he has not allowed to let slip one single opportunity of promoting the cause of minorities in rakisten and of safeguarding their interests by all such some as were open to us in this country, it is my carnest appeal to your so make up your minds quickly to give the Indo-Pakisten Agreement a fair trial.

Let us not indulge in impotent rage or mere supercharged esetions outburst. Instead, let us make a constructive, helpful and whole hearted contribution to the relief of suffering humanity on both sides of the border andhelp to make theirlot a more tolerable one. The lot of mortal existence is already a hard one; let us ame not make it harder by refusing to avail ourselves of the opportunities for softening or sweetening it. Nor lot us make false move which would put us in the wrong and invoke for us the verdict of history that we shirked our responsibilities in an hour of crisis when there was a chance of saving millions from a estastrophic end. Let not emotions and prejudices overpower our reason. Let us face the problem as human realists comprehending fully the limitations within which we have to work and taking our stand on trust and confidence when a reasonable atmosphere has been created for these virtues to play their part. I am sure that, if we approach the present situation in this spirit and if we discharge to the full the obligations which we have incurred under a sense of national bonour and prestige, we shall have done our part in a big hearted attempt to heal the wounds and to reverse the process of misunderstandings and bitterness which haveumfortunately markedour relationship with Pakistan ever since its inception. If we succeed, we might, in a humble way, have started an era of peace, understanding and good neighbourliness, If, God forbid, we fail, we shall have had the satisfaction of having explored the last possibility of a peaceful solution of a potentially dangerous problem.

JAI HIND.

## coinci dituleto i (14 tonza

ni. 24 4 40 timers - simmi 6-עו אחבורה אוה חו הבוחהו

पिय लार्थ शम्बार हासका लार्थ, उट्टेना

करा पर के हैं सम्प्रताथडा भंडान भंडा है जिस चुका डेड, हो स्वात पहले नींच जासनेडों सद्लाओं हारत हु आहे. GHIST

( अर समय (अर्थ काम " महिवारी में स्प्रेटल" का MION MAIL MI

कार उ समय में होड द्यार हैं। यायहा यानून , हुं उद्गोर्स, क्षाचमें आंग

मुझे अमेर नक्षा मार हसी दिसडी

भोसने दिये निमंत्रहा मिसा तथ अर्व पुशा दुर. क्यांट उत्तरा नाम जहल र "सार्ध्वावक साम्पाइल" अना हिया हमसे

आह अहे ध्यारे लाग्ने हतना कलही Quitin y र्रंडा खना दमम लीय में भी देह. ગાઇ & કામ અમાર હે હિ ઇ અ કી મર્ચાદા કોઈ

नडी आंड आउत्तर ्र क्षेत्र अगेड हे न्याकर उत्तर बलेगा है। लहीं आजता

का स का आरम्भ किस अराम व्यापा भेटा गुमा में जार भ्य अशेस ८५८ स्ट्रास, छन्ने स्नि

रोडार माडीडा उत्तिक में जात नवन्यान

अरत खुशी पुछ.

पर्या निर्मित् भी

पटलेखे हो हुए समीहर राम हा हि ब्यहार है जिस्ता है जिस्ता है जिस्ता है जिस्ता है जिस्ता है जिसे क्या है। जिसे का जिसे

लिये कार्ने हमारे प्रशास कार्य कार्य है। विश्व कार्ने हमारे प्रशास कार्य कार्

आ वं यत हो होड दें, स्वर तमारे लड़रें यतां पठें धनना धत्मनम लोगा आहिये.

स्ता क्यां काया है ज स्मारे (43573)

उर उर रोडो पूछा तो उत्ते हि १००० माध्य

मुल्ह में टी नहीं अवह आहे अहिकाम

यह अलम लड़ी हिमारत यो स्मी र स्टार्डिंस स्ट्रियामों से १४२० हो (इटर) सार्व स्मी सी कि होने राज

\$ 2100 318011 9 4 0000 5 1/2/

430 g. EID EU g. U. BAR SHAFE

बाता प्रवर्गी उसरक वाडे?

टाने उर उत्तर्द नहीं.

स्तारी हिन्दामें हैं.

બદુ અરૂ મુલ્ક ભા વરલાઇ મું દું. હિ डी असाही हैं

भ्रेड तर्दुसी हैं भी तो हिंड हामी शांति हीं बना है

. हे स्थापन. तरास्त्री संस्केष्ट जाती आती हैं. इस मिला तो उम् क्षांतिस सं गंपरे रे रेव गा किता है पास

En 2' Gasi uga 3 +nan &".

ि द्यारी होस्ती से सवामती हैं डी उताडी सायन्टी स्टब्स् अ अहीस भीन में लोग पड़े हैं कलही स्टास्ट हेर संटाइडी श्रीदेश में

दिमारी अश्री बोहडाबा को संबद्धति द् । दि शिक्षा द्वार पर दूमरी १३ महा १३४१ वडी री अंग्रें नहीं. को लाग आसे रकस ज्याः भगर हिए लाग् आस्त्री

िक्का पर पठ की मीर उमरे लक्षण लगा कामा नरी रोग ही नमिशी

्रिमें । इस अंत्रमें धीरता उराम उरका

हैं हि हिंदुस्तान त्याड़ा हो। पुर अनिये

~

मार मार रेक्से हैं. में में मार कार्य मुक्त रे

ज्ञ अस्या पैटा पोता है वल ल्युव भुसोला होती हैं. अस्या ही स्वात्मा पहला हों. आहिले आहिले जिली अहा प्रस्ता हैं.

हमार लागी लेखा है। प्रमान पड़ारें। अध्याम लाग पड़े हैं। हिमाम पड़ारें। अध्याम लाग पड़े हैं। हिमाम पड़ारें। अध्याम लाग लाग के हैं। हिमाम पड़ारें।

हमारे ज्यान उद्यो द्वस तरह बारे अर्थ हैं. एमारे मेर्न्ड मोर्डेसर तम द्वारी प्रशास हैं. को तमारे हैंगडी अनुस्क

हिंदुस्साक हो सी हे अस्ते व कार्य है

प्रशे डो रिश्व वरे. हर पुर

हाल पेंटा उरले में अलत राम, अला रास्ताहर क्रियोग उरले धन्सरा। इर रोगा पाटिसे

किंदिन्याण हु। माह, तम्म ल कामुरी

हिन पेंद्र उरमा या विषे हन महा पेंद्र उरमा बाहिये. हिनडा ट्यांका सती सकी पुरसा बाहिये. बारी रास्ते पर किन्ति प्रियोग हरमा बाहिये. बारी रास्ते पर

में के को दिसमें दुछ उथा वर्टी.
में को माध्यमान दुस्ता दुर्भ दुर्भ कार्या, दुर्भ के कार्या, दुर्भ के कार्या कर्ता कार्या कर्ता कराया, दुर्भ के कार्या कराया, दुर्भ के कार्या कराया कराया

पिछतें (हर्की) काश्तवां स्थिते.

This are Maginia Til mondia nes our emin emil Estum ala. Windingy 2, with 154 artin a valin, you 25 18 1 18 1 1 8 1 1 C na was zaco annie me org in कारण का लिये शा manistr A kew quotation on the S.



Speech delivered by the Hon. Sarder Vallabhbhai Patel at the Ramilla Grounds at the Rishi Dayanand Mirvan Utsay meeting 9:11.50.

I am very happy to meet you all on this auspicious day.

When I was invited to address this meeting. I felt that I should attend and accept the invitation. The reason is not far to seek. | Swami Dayanand Saraswati came out from Gujrat and spread his message of uplift of whole India throughout the country. The gospel of Some is propagated during their life-time; and Some have to wait till after learned their deather The number of/people is large, but very few are able to put their learning and knowledge into practice. Swamiji and Gandhiji were born in Gujnat but they belonged rather the whole world. This was to the whole of India, not only because of their knowledge, but because they put their knowledge into practice. The centre of Arya Samaj was formerly Lahore, but now it has shifted to Delhi. The cream of Arya Samaj is in Delhi and I thought that, to miss this epportunity of meeting you all on Swamiji's 'Nirvan Din', would be unfortunate. Usually, because of my indifferent health. I am not in a position to go to many places, but because of your love and affection, I accepted the invitation. There are many learned people here who have studied Swamiji's life and his teachings. They can preach about his teachings hetter than myself. Swamiji was born at a time when people were losing their faith in the Hindu religion and were being converted to other faiths: foreign missionaries were

trying to spread their religion. In India, whenever there has been an encroachment on the Mindu religion, some Great Soul has come to its rescue. It was at that critical period in the life of the Hindu religion, that Swamiji's rever of knowledge began to flow to enrich the world. Life and knowledge both were combined by him in a pleasing whole. It was that way that he laid the foundation-stone of free-thinking and freedom. You all know that Hinduism was full of superstitions at that time and Ignorance was spreading in the guise of religion. The unique and rapid transformation brought out by Swamiji was due to the Divine will and the strength of his penance. The people admired the work that he did during his life time. [As Gandhiji did later, SWAMIJI tried to remove untouchability which has been a great blot on the Hindu religion. The culmination of their efforts was reached in the inclusion of the clause relating to the removal of untouchability in the Constitution. The first lead in this direction was given by Swamiji. He traversed a very difficult path. Many people opposed him. Gandhiji reduced these difficulties through the power and strength of the Congress. But the welcome result of Swamiji's efforts was the stoppage of the conversions of lakhs of people to other faiths. Swamili also did one thing more. He worked hard for bringing back to the Hindu fold those who had been forcibly converted to other faiths. Forcible conversions area against the tenets of the Hindu religion. This has been a boon to India, otherwise we do not know what would have been the condition of India today. Swamiji removed the clouds of suspicion

in which the Hindu religion was enveloped and made it shine like the sun. Some ignorant people, who opposed him, tried to take his life many a time. But the foundation of his life-work was deeply and properly laid. As the Chairman of this meeting just now said, the time has now come when the real lustre of India can forth. As Maulana Saheb has said in his message, Swamiji was not educated in the modern sense, but he spread knowledge through the medium of our ancient and indigenous culture. There are many learned people who give long lectures and write books in foreign languages. But if we want to develop the indigenous culture of our country there is no need for any foreign language. do not require the medium of any foreign language to impart the Vedic knowledge. Knowledge can be had through any language. But, after all, as Swamiji has said, the world is one. There may be different languages, various divisions, but ultimately the world unity is there.

Today the world is passing through a crisis. There is now the fear of a third world war. We have seen two world wars. The fear of a third one is growing. India was partitioned; you have suffered the most. Today the condition of the world gives the impression that KI Last Day is at hand. A fierce war is going on in Korea, as if between two big camps. On the other side, a peaceful country like Tibet has been invaded. It may not survive but we did not think this would happen. We were maintaining Triendly relations with China. Some other countries in the world even started misunderstanding as on account of

these friendly relations. But China did not accept our advice. We do not know what will be the outcome of this. Tibet is a religiousminded country. There has been no aggression from its side. But when one is affected by the vanity of one's power, one does not realise what one is doing. Tibet was not taking the advice from any other country. It was following the advice of India. We tell people not to use the force of arms. If the armed conflict occurs at one place. it later spreads elsewhere. In Nepal, the people are quarrelling amongst themserves. The Ruler himself went to take shelter in the Indian Embassy. How can we refuse him? Now they do not want to continue to recognise the original Ruler and have installed on the gaddi a child of the Ruler's family aged 3 years. The borders of Assam, Pakistan, Kashmir, Burma are just adjacent to Nepal. Now our whole border becomes exposed to danger. We should, therefore, be vigilant.

Swamiji has taught us that we should shed
the fear complex and be united in such a way
that we can protect ourselves. Gandhijf has also
said that our non-violence should not be that
of cowards India is an infant three years old.)
Fire is raging on all sides. Our saints have asked to
to be fearless and we should protect our country,
if possible, by non-violence, but if necessary
by violence. The present times demand a unity
amongst us, born of love and goodwill, so that we
may effectively protect our country. Now the
centre of the Arya Samaj is Delhi and its leaders
are here. They have to understand one thing, i.e.
to realise their duty at this time. If we want

to survive, we should come together and follow the teachings of both the saints, Gandhiji and Swamiji. Message of The Hon'ble Sardar Vallabhbhai Patel to the meeting hald to celebrate Lala Lajpatrai Memorial Day - 17.11.1950,

I am sorry that, on account of my ill-health, I shall be unable to participate in today's meeting. The sanctity and importance of the day were enough to make me take part in it. In addition, it was Tandonji's request that I should do so. Also, how could I have let go this opportunity of meeting my friends and brothers who have assembled here. I was eagerly looking forward to this occasion for some days. I also tried my best, but dod willed otherwise. I cannot express to you the sorrow which I feel and hope you will excuse me for whatever disappointment that has been caused and for whatever disappointment inconvenience that has been occasioned on account of my wability to come.

History affords few examples of brave, influential, fearless and inspiring patriots like Lalaji. When he was alive, the general public used to hail him as the Lion of the Punjab. He had all the leonine virtues of dignity and majesty, gentlemanliness, bravery, a magnetic lustre, zeal and power. In addition, he had ingrained in him gentleheartedness, love, devotion, generosity and truth. Today, recalling him and his virtues, I feel sorry to find that his chair is empty and there is none amongst us worthy to occupy it. How much the country needs his personality can best be guessed if you look at the condition of the country today.

Today amongst us, there are people who forget their own shortcomings and are trying to correct the weaknesses of others. There are many who feel that their interest lies in joining the general shout of "thief, thief" and thereby concealing their own larceny. Forgetting their own past history, they are trying to fashion in their own way the history of others. They seem to rely on the proverbial shortness

of public memory, and seem to believe that the people also will, like them, forget the past and put faith in them. They do not seem to realize that thepublic has not degenerated so low as they williak and that it has that spark and that knowledge which can enable it to assess the worth of individuals. None can become great by singing his own praises. The bigness or the smallness of man becomes evident through his own actions, behaviour and feelings. Men of this type are so much engrossed in their own selfishness that they feel that they can conceal from the popular gaze that selfishness by clothing it in the garb of selflessness. In India today, an atmosphere seems to prevail, in which wanton criticism of others and shaparagement of the aims and motives of others is considered synonymous with patriotism and service of the country. With the ruins of their past constructive efforts. they propose to raise a new structure. I have no doubt, nor is their any room for any such doubt, as to what the future will be of those who are trying in this manner to uproot the national life from its very foundations. I am convinced that the heart of the country is pure and clean. To the extent that these people a regard our brothers as ignorant or illinformed, they are making a mistake. I, therefore, fully believe that after a short time, it will be evident as to who is true and who is false, but if, in this state of affairs, a personality like that of Lala Lajpat Rai were alive, his leonine roar would have awakened the country in the shortest possible time. His enthusiasm and courage would have created an atmosphere in which people would have fully realised their duty, and would have worked with devotion and attachment to achieve their ideals in the same way as

he did.

Today, the field for the service of the country is no less than it was before. Previously, there was only one real danger in our sight, and that was that of slavery. Today, we have several dangers in view, but I do not see many signs of the same vigilance and fearlessness with which we faced the first danger. Leaving aside greater dangers, we have got w in small things that there is apprehension of our forgetting our duty and becoming powerless to deal with the real dangers when they actually face us. The country needs an inspiring, fearless and brave leader like Lalaji, so that he may caution India against those dangers and may create such a wave of enthusiasm in the country that we might be able to overcome those dangers. I appeal to all of you to place before yourselves the m example of Lalaji and, deliberating over the state of the country, comprehend and do your duty.

्युक्त बच्चोस है कि मैं वर्ग स्नास्त्य ठीक ज सोगे के कारत माय की समा में सामा कि समा में स्वाप्त में से सामा में सामा कि सामा में सामा मामा में सामा मा सामा में सामा में सामा में सामा मा सा

ताता भी भी सर्थ भीर प्रभागवाती , निवर भीर प्रेरवायांची मैक्सलय हातवास में इस मिलि । जब में नी गिया में उनको पंचाय का केंद्र करकर मान पर्यास कुछारती भी । उनमें केंद्र की सर्थ जान भीर क्राइक्स , तेन भीर महादुरी, जोस भीर साक्स वर्गी गार्स भी । उनके साथ साथ उनमें कुछा की कोमस्ता , जैन भीर मिला , उपार्था भीर संस्थ, कुट कुट कर मेरे कुए में । भाष उनका भीर उन की कुछा कुलियों का कारस करके नार मार पुनेत बुख चोता में कि उनकी कुसी साली है । भीर कामस कोई भी कस मोज्य नहीं के कि उस पर मैठ सके । येश को उनके न्यास्थरण की किस्ती भागस्यक्ता है उसका सुनात मामको येश की किस्ति से ही हो सक्सा है।

नाय नारत में देव देना जो केन पत्ते से हुए का नहीं है । स्वारे सामने पत्ते दक की सतदा दिसाई पत्ता था । यह या नवनी मुलानी का । जाब काकी सतदों का सामना दिसाई पदता है पदन्तु किन सामनानी और निक्दता से पत्ते सददें का सामना किया उसके ज्यादा किन्छ पुरेश दिसाई नहीं देते । यह वह सतदों को झेठ वर झोटी होटी बातों में कन इसने सबद तमें हैं कि इस नाम का ठर है कि इस नवना स्वीन्य प्रस्त नामों और नवसी सतदों का सामना करने में निमेश को नाम स्वारत की की बी बसाइट निक्द और दूरवादायी प्यापत की देव की नामस्यक्ता है कि यह नाइड़ को उन सतदों से सामनान कर और सार देव में नास की दक देवी स्वरूप के साम किया का उन सतदों पर निक्य पा सने ।

मान का नाक्यों के यही जायाँना है कि सालायी के नावतें को क्यों सामी रक्षण गांध की मानना पर गियार की कि मीर मनता करेंचा क्योंकियों मीर पास्त की फिर !

### Speeches of Sardar Patel

- 1. The Preventive Detention Bill 1950
- 28.2.1950.
  - 3. Special Criminal Courts (Jurisdiction) Bill 28.2.1950.
  - 4. Fast of Shri Shibban Lal Saksena 1.3.1950
  - 5. Condolence Metion over the death of Dr. Sachchidanad Sinha
- 6. Hyderabad State
  - ₩a) 7.3.1950
  - ₩b) 7.3.1950
  - 7. Reg. White Paper etc. 21.3.1950.
    - 8. Reply to Khandubhai Desai
  - 9. Speech at Charmi Boad Garden, Bombay 24.5.1950
- 10. Message after Travancore Cochin Tour 16.5.1950
- ll. On I. N. S. "Delhi" (incomplete)
  - 12, Speech at Trivandrum
- 13, 5 peech at Ernakulam
- 14. P Speech at Ernakulam (second copy) 13.5.1950.
- 15. J Speech at Wellingdon Island
  - 13,5,1950
  - 16. Speech before Representatives & Teachers of Colleges, 13.1.1950.
  - 17. Speech in meeting of the members of the West Bengal Legislative Assembly 18, 1, 1980.
  - 18 12-5-50 (...

## THE PREVENTIVE DETENTION BILL, 1950.

Minister of Home Affairs and the States: (Sardar Patel):Sir,

I coare permission to introduce the Bill as well as to

move: "That the Bill to provide for preventive detention
in certain cases and matters connected therewith be taken
into consideration."

At the outset I should like to apolegise to the House for the extremely short notice at which I have to approach it for this emergency legislation. The legislative output of the Ministry to which I have the honour to belong has not been large. That, I hope, would be regarded as sufficient proof of my intention not to trouble the House or to trouble the House only when no other course is available to me. In this particular instance also I plead the same urgent necessity. The Hon. Members are aware that the old Constitution in certain respects died on the 26th January midnight when the new Constitution was born and the order of the President in this respect was signed at Ten O'Clock on the next day. So there was an interregnum which the lawyers cannot excuse and therefore to cover up this lacuna, it has become a necessity. Besides certain judicial pronouncements or decisions which have been made during the last couple of weeks, and certain litigation which is pending before the Courts have created a situation in which, I feel, having regard to the conditions prevailing today, that unless this House takes immediate action, a grave peril to the security of the State is involved. That, therefore, is my justification for approaching this House with this piece of legislation and I thank you all and I thank you, Sir, for having accommodated me in this regard.

The House or at least a majority of the Members of this House who were Members of the Constituent Assembly

are aware of the prolonged discussions which we had on Article 22 of the Constitution in the final form which that Article took. I can say straightaway that unfortunately owing to me ill-health I could not be present when the discussions were going on. But I was very apprehensive that certain aspects regarding the security of the State were not properly emphasised before the House at that time and, with all respect to that august body, I felt that due weight was not given to those considerations. But, I thought that the House also has provided for another alternative which, if resorted to, would meet with the requirements of the case and that under section 373 the President's help would give a breathing period. Fresh legislation would, in any case, have been necessary because of the limitations placed by article 22 on the powers of the States to keep a person under detention.

Recently the judgment of the Patna High Court declaring the Local Public Safety Act as ultra vires of the Constitution on account of its having certain provisions inconsistent with the Constitution has created difficulties in that province. The Calcutta High Court is already cegnisant of an application made by 350 detenus whe. I am assured, are some of the most dangerous. That 1s coming up on Monday for final decision. The Bombay High Court have also released some of the detenus the other day because they found that it was contrary to the provision of the Constitution to keep them under detention any longer. The High Court of Allahabad has also issued an order declaring certain provisions of the Public Safety Act to be inconsistent with the provisions of the Constitution. These judicial pronouncements have therefore created a situation in more than one province in which it would no longer be

pessible./....

Minister of Home Affairs and the States: (Sardar Patel):Sir,

I crave permission to introduce the Bill as well as to

move: "That the Bill to provide for preventive detention
in certain cases and matters connected therewith be taken
into consideration."

At the outset I should like to apologise to the House for the extremely short notice at which I have to approach it for this emergency legislation. The legislative output of the Ministry to which I have the honour to belong has not been large. That, I hope, would be regarded as sufficient proof of my intention not to trouble the House or to trouble the House only when no other course is available to me. In this particular instance also I plead the same urgent necessity. The Hon. Members are aware that the old Constitution in certain respects died on the 26th January midnight when the new Constitution was born and the order of the President in this respect was signed at Ten O'Glock on the next day. So there was an interregnum which the lawyers cannot excuse and therefore to cover up this lacuna, it has become a necessity. Besides certain judicial pronouncements or decisions which have been made during the last couple of weeks, and certain litigation which is pending before the Courts have created a situation in which, I feel, having regard to the conditions prevailing today, that unless this House takes immediate action, a grave peril to the security of the State is involved. That, therefore, is my justification for approaching this House with this piece of legislation and I thank you all and I thank you, Sir, for having accommodated me in this regard.

The House or at least a majority of the Members of this House who were Members of the Constituent Assembly

are aware of the prolonged discussions which we had on Article 22 of the Constitution in the final form which that Article took. I can say straightaway that unfortunately owing to me ill-health I could not be present when the discussions were going on. But I was very apprehensive that certain aspects regarding the security of the State were not properly emphasised before the House at that time and, with all respect to that august body, I felt that due weight was not given to those considerations. But, I thought that the House also has provided for another alternative which, if resorted to, would meet with the requirements of the case and that under section 373 the President's help would give a breathing period. Fresh legislation would, in any case, have been necessary because of the limitations placed by article 22 on the powers of the States to keep a person under detention.

Recently the judgment of the Patna High Court declaring the Local Public Safety Act as ultra vires of the Constitution on account of its having certain provisions inconsistent with the Constitution has created difficulties in that province. The Calcutta High Court is already cegnisant of an application made by 350 detenus who. I am assured, are some of the most dangerous. That is coming up on Monday for final decision. The Bombay High Court have also released some of the detenus the other day because they found that it was contrary to the provision of the Constitution to keep them under detention any longer. The High Court of Allahabad has also issued an order declaring certain provisions of the Public Safety Act to be inconsistent with the provisions of the Constitution. These judicial pronouncements have therefore created a situation in more than one province in which it would no longer be

pessible./....

### Debates (25-2-50) Uncorrected- Not for publication.

F.2. Sardar Patel:(continued):

S.S.

possible for us to keep under detention persons about whose dangerous and subversive activities the State Governments have no doubt.

Here, I should like to remind the House that the State Governments at our instance have already introduced in their Public Sefety Ordinances or legislation machinery of the type of Advisory Beard referred to in article 22 of the Constitution which scrutinises the cases of detention and makes suitable recommendations. In a large majority of cases of these who are at present under detention the Government has had the concurrence of these advisory bodies. It is only in a comparatively small number of cases that these Governments have had to invoke the primary responsibility which they have, of maintaining law and order and to keep the persons under detention even if the Advisory Beards felt otherwise. The Heuse, therefore, can rest assured that a large majority of the cases with which it is dealing at present had the scrutiny of a non-executive authority.

I shall not weary the House by telling it how exactly the communists in India who have been by far the largest number of detenus constitute a danger to the existence and security of the State which has been brought into being by the sacrifices and sufferings of millions of our people. It would be a poor return for these sacrifices and sufferings if we fail to preserve the liberties which we have won after so much struggle and surrender them to the merciless and ruthless tactics of a comparatively

Continued by F.3/...

### Debates (26-2-50) Uncorrected - Not for publication.

S.S. F.3. Sardar Patel(continued).

small number of persons whose inspiration, methods and culture are all of a foreign stamp and who are, as the history of so many countries shows, linked financially, strategically, structurally and tactically with foreign organisations. If anybody wishes to seek justification for our policy against them in cold print, he can do so in the pages of the pamphlet which we issued last year illustrating the methods and instance of communist violence. I should like to say here that our fight is not with communism or with those who believe in the theory of communism, but with those whose avowed object is to create disruption, dislocation, and tampering with communications, to suborn levelty and make it impossible for normal Government based on law to function. Obviously, we cannot deal with thesepeople in terms of ordinary law. Obedience to law should be the fundamental duty of a citizen. When the law is flouted and offences are committed, ordinarily there is the criminal law which is put into force. But, where the very basis of law is sought to be undermined and attempts are made to create a state of affairs in which to berrow the words of the distinguished patriot, the father of our Prime Minister, men would not be men and law would not be law', we feel justified in invoking emergent and extraordinary laws.

Sir, there are also other anti social elements raising their heads and troubles of very serious dimensions are well above the horizon. I know honourable members are already concerned about some of the recent developments. I am sure the House

would/ ...

# Uncorrected - Not for publication.

S.S. F.4. Sarder Fatel:(continued):

would like us to be fully armed and equipped with the means of dealing with any emergency that might arise. There is, therefore a full justification for the enactment of a special measure to deal with persons of the type we propose to cover by this Bill.

I shall now deal with the structure of the Bill. Under article 22 of the Constitution there are two sets of provisions. relating to preventive detention. One set of provisions authorises the detention of any person for a longer period than three months if an Advisory Beard has certified that there is in its epinion sufficient cause for such detention. The other set of provisions authorises Parliament to make a law under which a person may be detained for a longer periodthan three months without obtaining the opinion of the Advisory Beard and which also lays down the maximum period for which any person may in any class of cases be detained. As the provisions of the Bill will indicate, we propose to cover both these types of cases in this Bill. We have prescribed that for certain categories of detenues namely those detained in connection with the maintenance of supplies and services essential to the community, or who are foreigners, or who are detained by the District Magistrate or Sub-divisional Magistrate or in a Presidency town, the Commissioner of Police, the Advisory Beard would be the final authority to determine the question of the continued detention. In regard to the other categories of cases, that is, those who are concerned with the defence of India, relations of India with foreign powers or the security of the State or the maintenance of

### Debates (25-2-50) Uncorrected - Net for publication.

S.S. F.5. Sardar Patel: (continued):

public order, it will not be necessary to obtain the opinion of the Advisory Board, Nevertheless, we feel that some sort of a non-executive authority should be associated with the Government in a purely advisory capacity even in regard to these cases. We have therefore provided that after a period of six months of the original detention the Government concerned shall review its decision in consultation with a judicial authority. We have thus maintained not only the provisions of the Constitution, but also its spirit. What is more, we have gone a step further than the provisions of the Comstitution in that even where it has armed the Parliament with powers to provide for detention without obtaining the opinion of an advisory board, we have sought to replace the Advisory Board by a judicial authority whose opinion though not as binding as that of the Advisory Board, will, still be entitled to weight and consideration. As proof of the bona fides of the State Government,

(continued by G)/...

HO

### Debates (25-2-50) Uncorrected - Net for publication.

Ayyar

G-1 SARDAR PATEL contd.-

As preof of the bona fides of the State Governments, I have only to repeat the statement which I have made earlier, viz., that even at present, in a majority of cases that opinion has been given weight, in that, only small number of detenus are there without the concurrence of such bodies.

The other provisions of the Bill are merely incidental and embody the procedural matters either in the existing Public Saré Legislation in the States or in the Constitution itself. We have provided, for instance, for communication to detenus the grounds on which the order has been made and affording them the earliest opportunity of making a representation against the order. We have also sought to preserve the secrecy of the information on which the detention order is based, without in any way prejudicing an accused from seeking his own protection under the law. Also in order to give this or the successor Parliament an opportunity to review matters after some time, we have limited the life of the Bill upto 31st March 1951.

Sir, I hope I have now given sufficient justification of the urgency and necessity of this measure and have also shown conclusively how in framing its provisions we have safeguarded the liberty of the individual against the arbitrary acts of the executive. I shall now only plead with the House that during the consideration of this measure it fully takes into account the dangers which happily we have so far avoided, the dangers which unhappily still threaten us and the explosive possibilities of the situation with which we are faced at present. When we think of civil liberties of the extremely small number of persons concerned, let the House also think of the liberties of the millions of people threatened by the activities of individuals whose civil liberties we have curtailed. I amount the words "civil liberties we have curtailed. I amount the

# Debates (25-2-50) Uncorrected - Net for publication.

Ayyar

G-2

Sardar Patel contd.

some reluctance, because, for them liberty is synenymous with licence and there is hardly any difference between civil and criminal.

With these words, Sir, I shall leave this legislation in the safe hands of this House and earnestly ask for their co-operation and support in pushing through this legislation as speedily and expeditiously as possible.

Sir, I move that the Bill to confer upon special criminal courts, constituted by or under certain State laws, jurisdiction to try offences against laws with respect to any of the matters enumerated in the Union List, be taken into consideration.

SARDAR PATEL: New, Sir, I am glad that the emergency legislation which I had to bring before this House has been generally well received and the emergency and the importance of the Bill have been recognised and have met with the general support of this House. I am also glad that the Bill has met with careful criticism, because when the liberty of any citizen is sought to be taken away by a Bill, it should be carefully scrutinised and the necessity for it should be proved beyond doubt.

Sir, one of the Hon. Members of the House said: 'I support this Bill with a heavy heart. While supporting the Bill with a heavy heart he made some criticisms and one is left in doubt as to whether his criticisms were made with a light heart or a heavy heart. He read a telegram which he had received from his State. I do not know whether he appreciated the seriousness of the contents of that telegram from the State from which he comes. Being largely engaged in Parliamentary activities far away from his State, he is probably not aware of the conditions there and the situation there. But, if in any State there is necessity for this sort of legislation, it is in the State from which he comes. As I said, he is prebably not acquainted with the situation there, as he is far away here engaged in more important activities. I have sympathy for the people who are in charge of the administration of law and order in that province. He says: What is this law and order? It is the business of the police to maintain law and order'. I consider it a very lighthearted remark. It is the business of the police to maintain law and order, but it is the business of this House to see

Ayyar

BB-3 Sardar Patel contd.-

that the agency through which we have to keep law and order
is not put to such a strain that it would break down completely.
It is not a pleasant task to bring in a Bill of this kind in
this House immediately after freedom and the Republican Constitution has been adopted.

Now, perhaps Members are aware that I know more than anybody else what the mental attitude of a detenu would be when he is arrested in the middle of the night in his sick bed and again when he is in detention when many of his dear relations die in this country or outside this country and when their dead bodies are brought back and he is not released even for cremation by the imposition of such conditions that the detenu declines for the honour of his country to go out. So, when this legislation is brought in, it is not done with a light heart. It is done with a heavy heart. When responsibility is placed on one to keep law and order and safeguard the liberties of millions of people, for the pretection of that liberty and for the fulfilment of that duty one has to take actions which are most detestable. But to call this measure as a black Act is I consider a very light-hearted comment.to make. There are occasions on which there may be room for humour. jokes and laughter. But I assure this House that I have passed two sleepless nights when I was asked to take up this measure. The States have sent frantic messages and I have sympathy for them. When four hundred or five hundred people are let loose in a State, the problem of maintaining law and order there becomes very difficult. The whole of the city of Calcutta is on strike. Why because some people distributed leaflets on what is happening in East-Bengal. Who is to support . this Government to keep law and order there? Am I to allow hundreds of detenus to be let loose in the city of Calcutta day after tomorrow?

(Centinued by CC)

# Debates (25-2-50) Uncerrected - Not for publication.

Valdyanathan

Sardar Patel (continued): New, who are they? I will give you ene or two quetations from the pamphlet which has been issued by the Home Department of the Government of India which you probably must have read, but such things are easily forgetten. It says:

"Instructions issued to the members the Party are:

(The quotations may kindly be checked) Observe hartal. Strike in factories. Take out processions. Disobey orders under Section 144. Stop the movement of the Police and Military by blocking the reads. Set fire to Gevernment buses and British-owned tramcars. Set fire to the whole of Calcutta and the whole of Bengal\*.

While for other places it says:

"Assault the reactionary Congress leaders sevenely. Set fire to Congress offices the Centres of reaction and black-marketing. Attack the houses of the Ministers. Create chaos there. Attack the lail gates and rescue our brethren who have been weakened owing to the loss of blood."

I am only reading these two extracts. I do not want to take more time of the House. I want you to read the whole pamphlet carefully. After this pamphlet was issued, you must have noticed that there have been a regular conspiracy and instructions have gone round all over that they should simultaneously create trouble in all jails and try to get out. Some of my friends ask me as to what will happen about these detenues in jail when the Act expires. Even before the period of detention expires, they know how to break open the jails and get away. They do not want any advice from you. They know how to take care of themselves. Let us take care of the people, of the millions of people, who are not able to take care of themselves. Therefore I have brought

Vaidyanathan CC.2 Debate (25-2-50)
Uncerrected - Not for publication.

this measure before the House. This is in order to help those people who are in charge of preserving the liberty of the million of people in this country in the various States where, through no faultof theirs, these difficulties have arisen. Now the sudden disclosure of constitutional difficulties brought to our notice made it necessary for us to come here at once. Officers from the States have come here with this request from the Ministries to help them in some way immediately. Otherwise they would find themselves in difficulties and they would not be able to preserve law and order. It is no use saying the police is there to preserve law and order. We are here to preserve law and order in the whole country and if we fail in our duty to help these people, it will be our fault, not their fault. Therefore this measure has been brought before the House.

Mr. Kamath talked of some criticism of the High Court of Bombay against the Gevernment of Bombay in regard to some detention. I do not know what is the relevancy of that criticism here. I would have enswered him if I had been the relevancy of the case. I have the greatest respect for the judiciary of this land which is the pretector of the liberty of this land which is the pretector of the liberty of all of us and therefore we are bound to support and respect their criticism. It is no use quoting random, vague criticisms which are irrelevant absolutely to the passing-of this Bill. Therefore I am not able to answer him, but I assure this House that any criticism from any judicial quarter will have the greatest weight given to it by the provinces as well as by the Central Government.

Now, some point has been made about the wording in some of the chuses about detention which would lead to embitterment of relations with foreign countries. We have taken the wording from the categories of cases for which detention can be made from the Constitution itself and we have divided it into two parts. One is the category where these detenues can be kept for three months and after that they can be kept for a further period if the Advisory Board agrees. In the second category we have taken others. As has been pointed out by my friend. Mr. Masani, this Bill is brought in to meet an emergency. It requires to be closely examined whether a better substitute of a more or less permanent nature based on specific principles can be brought in or not. I do not know the real position of the country about whose legislation based on principles he made some quotations. Our country is a huge country. The reference that he made was to countries where perhaps there are not so many castes creeds, religions, communities and so many parties. You must judge this measure not from your past experience of detention of yourselves. You must see that all parties who want to go to the polls have freedom. This is a democratic country now and any party that wants to take advantage of democratic institutions or democratic organisations or to come into the Government by democratic methods, is quite free, but it will be an evil day if this Government allows the democratic freedom to go to the polls to people who want to destroy democracy by violence and disruption. We will not do it.

Take the Communist Party in England. What are they doing? They fought at the polls. They can de se here. Do the British Communists take to violence of this nature? Do they remove rails? Do they dishecate communications? Do they set fire to public property? Do they attack the warders in fails and kill them? Do they attack the police? Here even Ministers and Hon. Members are not beyond their contemplation or their range. When you say that civil liberty should not be interfered with. I will endorse it. I appreciate what is civil liberty, but I hate criminal liberty to commit criminal violence against innocent people, and therefore I am taking every precaution to guard the liberty of innecent people. That is my sacred duty and it is yours to share that duty. Therefore I have brought in this measure.

Now, my friend, Dr. Punjabrao Deshmukh, says that we should localise this trouble. It is not localising the trouble. The solution that he suggests is that all persons who have gone underground, all detenues and all those who may be released and may go underground should be localised and that we should provide them with some colony or some province where they can freely conspire and commit these acts.

(continued by DD)

TVR. DD/1.

### Debates (25-2-50) Uncorrected- Not for publication.

(Sardar Patel - Contd.)

That is not my outlook. I cannot do that. If he thought that Berar might be the venue for that, we shall consider that question but his life will be not one days purchase. So we have provided this after careful consideration. This is a measure which is really a concentration of the provisions of all the security acts which are functioning in the provinces. I have quoted in my speech while introducing the Bill that these acts, security measures are attacked on all sides because they are notin consonance with the Constitution that we have passed and therefore, we must put it in line with the Constitution and remove the defects. The other alternative is to get the President's order to declare an emergency in India. Can we do that? It would be very bad, the psychological effect would be bad and it is not necessary at all. Therefore, this is the minimum evil which is necessary for the protection of liberty of millions of people and I am glad that you have supported this measure.

Ends.

"Extracts from Debates of Parliament dated 28.2.50.".

Sarder Patel (Minister of Home Affairs and the States): I will explain the facts to the House. As the House is aware. Shri Shibban Lal Saksena was fasting for the last tan days at Rajghat. Now, when he started his fast ha wote a letter to the Prime Minister that he was going on a fast for a grievance which he advocated about some sugar factory labourers in U.P. The Prime Minister advised him not to fast at Raighat. The House will agree that that is not a place to be exploited for political or trade union purposes. It is too sacred a place for such things. But a tent was put up there and he with some others, probably his companions, started a fast, and every day a sort of bulletin was being issued and some doctor was examining him. He wrote a letter to me also. Generally my practice is I set many letters from people who are fasting and I encourage them, I never interfere because I write always to them that spiritually, and if not spiritually, at least physically, it will do them a lot of good. But so far as Prof. Shibban Lal was concerned, he was a Member of Parliament and I did not want to embarrasshim, and so I did not reply at all. Two days ago he sent me a reminder. I was myself feeling embarrassment; but the Chief Commissioner, having known about it and watching the activities of people who are surrounding the place and getting other information of labourers trying to come there, he thought that there is going to be trouble here. So that ground and two other grounds also influenced his decision that Mr. Shibban Lal Saksena should be removed from this place. One ground was that it

was the eleventh day of his fast, and in his own interest he should be removed and placed where his relations could look after him. Mr. Saksena is sure to die if he is determined to die in the cause. Such a determined person, if there is any risk to his life it is better to remove to a place where his relations could look after him. So the Chief Commissioner thought that he should be removed to Gorakhpur where his relations are, and they may also be feeling anxious. The other reason was that to help him in his fast also it is necessary to remove him to U.P. for his grievance is not against the Delhi Government here, but it is about the U.P. Government in connection with some grievance of sugar factory labourers which should be dealt with by the U.P. Government.

On these consideration last night he came to the conclusion that Mr. Shibban Lal Saksena should be shifted from here. Then he had consultations with the Home Secretary. The Home Secretary advised him to take proper precautions and get him medically examined before he is shifted from here, to see if he is in a condition to be removed. So he sent for the Civil Surgeon in the evening and he examined both of them, and they were found to be quite fit to be removed to Corakhpur or to any place they belonged. So both these persons were removed, one to Corakhpur and the other to some other place in U.P. I forget which.

Unfortunately the order for removal for three months from Delhi was passed by the District authorities. As soon as it was brought to the notice of the Home Secretary, the order was cancelled and he has been removed only to

his place. If he wants to come back, he can come back but he can never so to Rejshat for this purpose because the House will agree that to use this place for such purposes is to insult the sacred memory of the great personality, who would certainly have advised him not to fast because fast is not meant for notitical exploitation.

Pandit Maitra (West Bengal) Is there no ban on his re-entry?

Sardar Patel: No. He can come to Delhi whenever he wants to come.

There is not order issued except that the Chief Commission er thoughtthat it is better to place him at his relations place where his relations could look after him. That is the position now and if hon. Members would like to ask me any questions, I am prepared to answer them.

Khawaja Inait Ullah (Bihar). May I ask the hon. Minister if he can come here even with the fast?

Sardar Patel: Yes. He can come here even in fast. Even after taking four meals, he can come at any time and there is no objection to that.

Shri R.K. Chaudhuri: The order which was served on him....

Mr. Speaker: Well, the hon. Member, I believe, has heard what the
hon. Minister has stated. He has clearly stated that as
soon as the externment order come to the handsor
to the knowledge of the Home Secretary, that order was
cancelled. That is what he has already stated. I believe
hon. Members have heard it and he has also stated that
the hon. Member is free to go to belhi, or to this House
whenever he likes. With the other restriction placed, we
are not concerned at present.

Shri R.K. Chaudhuri: If that is the order, Sir, my grievance is

why he was taken in a police van to the railway station
and put in a railway compartment?

Sardar Patel; That order has been cancelled. That is what I said. He was being removed under the order for externment to his own place at Gorakhpur. As soon as the Home Secretary knew about this order, he got the order cancelled.

Shri R.K. Chaudhuri: Then on that portion of the order the

previous order was carried out because the order of

cancellation was brought to the notice of the police.

He was actually taken in a police van from Rajghat to the

Railway Station and sent by train.

Sardar Patel: Yes. That is so.

Shri R.K. Chaudhuri: That is not in consumance with the order which was subsequently issued.

Sardar Patel: That is why it was cancelled. The order was not proper.

3

Extracts from Debates of Parliament dated 28.2.50.".

The House will now proceed to the Legislative Business. The Minister of Home Affairs.

The special Criminal Courts (Jurisdiction)

(SARDAR VALLABIBHAI PATEL): I beg.to move upon that the Bill to confer special criminal courts, constituted by or under certain State laws, jurisdiction to try offences against laws with respect to any of the matters enumerated in the Union list, be taken into consideration.

MR. SPEAKER: Motion removed:

That the Bill to confer upon special criminal courts, constituted by or under certain State laws, jurisdiction to try offences against laws with respect to any of the matters enumerated in the Union List, be taken into consideration.

SARDAR PATEL: Sir. As the House is aware, certain States. namely, Bombay, Central Provinces and Bengal have enacted measures authorising them to set up Special Criminal Courts to try a prescribed category of offences. The main idea underlying the establishment of these Special Criminal Courts is to seek speedy trial without sacrificing any of the essential principles of natural justice. Having regard to the special category of offences which these Criminal Courts try and also to the fact that in such cases, the sooner the accused knows his fate the better, these Criminal Courts are performing a useful function, both from the legal and the humanitarian point of view. It has some times happened that in the same transaction in which the accused have committed certain offences in respect of which State Legislatures have power to legislate, they have also committed offences for which only the Union Legislature can legislate. The Special Courts would not be competent to try the latter class of cases without any authority from the Union Legislature. Even where there may be two opinions about the Special Courts. I make bold to say that there can be none on the point that offences committed in the course of the

same transaction should be tried by the same Court. An emergency arose in that in Bengal in the course of the same transaction some accused were alleged to have committed offences both under the Provincial and Central Laws. To cover this case we had to pass on Ordinance authorising jurisdiction for the Special Courts to try offences with respect to matters under the Federal Legislative List.

The Ordinance will expire in July. At the same time, the machinery of the special courts will continue to function. We must therefore have a permanent measure on the Statute Book. The Bill is to serve this limited purpose and I therefore move that the Bill be taken into consideration.

"Extract from Debate of Parliament dated 1.3.50."

x x x x x x

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (Sardar Vallabhbbai Patel); Sir, in the first place I would like to correct some misstatement that have been made. It is not true that Shri Shibbanlal Saksena was removed in a police van and it is also not true that he was arrested. Some of the facts were narrated by me yesterday I was not in full possession of the facts at that time, because I learned about this incident only about half past ten in the morning. When I heard about it, the actual order was not with me. I immediately communicated to the Home Secretary that 4r. Shibbanlal, if he is here and not removed, should be removed to his house in Delhi and not anywhere else. But he had already been removed by that time. Immediately I informed the Home Secretary that the order, so far as removal from Delhi or externment was concerned, should be cancelled forthwith and that Mr. Shibbanlal should be informed of the Government!s regrets that he had been put to inconvenience. It was not the intention to extern him from Delhi. The intention was that he should not fast at that place as he was advised by the Prime Minister also. By means of a letter written to me on the 27th February, the previous day, Shri Shibbanlal reminded me of his previous letter asking for my blessings. As I said yesterday, I was embarrassed, because I am not so spritually trained as to give advice on matters of fast. So I did not want to emparrass him and did not give a reply. In the meanwhile the District Magistrate served this order on him in the morning. The District Magistrate was also thinking about this for the last four or five days. On enquiry I learnt that he had also ascertained about the question of privilege and wa told that no privilege was involved in this matter. He was anxious not to inconvenience Shri Shibbanlal in the least and,

therefore, he first fetched a ductor to examine him. The doctor examined him and certified in writing- that certificate is with him - that he was in a fit state to be taken to Gorakhpore, and that if he wants to be can travel that distance without any injury to his health. After that he brought an ambulance car and asked Shri Shibbanlel to get into it. But Shri Shibbanlal Saksena said that he was not willing and that, if he was directed, he would go. So the order was served on him and, without any resistance and without any arrest and without any physical force, he went into the ambulance car and he was taken in it. There was a doctor with him throughout the journey, At the intermediate stations it was impossible to contact him. But, as soon as he reached Lucknow station, before he got down from the car, he was informed by the District Magistrate that the latter portion of the order regarding externment from Delhi was cancelled. The District Magistrate had also been asked to communicate the regret of Government. I have myself written a letter to Shri Shibbanial immediately I heard about this. Although I was not in a mood to answer his question about his fast, when I learns about this order. I sent him a letter.

Now, the District Magistrate has informed him that the Government's orders were that the portion of the order regarding externment was cancelled and he is free to go back. If he likes it we will make all arrangements for taking him back. The Civil Surgeon of Lucknow examined him and said that Shri Shibbanlal was in a fit condition. But then Shri Shibbanlal said that he would like to go to his house in Lucknow and would decide next day as to what he would do afterwards. So, up to now, he has been informed that if he is willing to go back, he will be taken back and that air the arrangements he would like to make would be made.

When he was taken from Delhi he wanted that one of his men should accompany him in the compartment. This was allowed. If he had resisted the removal, it is a question what the

Sardar Patel contd: -

pistrict Magistrate would have done. He would not have used force, but he would have prosecuted him for breach of the order and subsequently other things would have happened. But it is not true that he was arrested or any force was used. I do not want to take shelter under technical grounds. What I went to inform the House is that no breach of privilege is involved. Immediately I found that it was an improper order I countermanded it through the Home Secretary and it was communicated to Shri Shibbanlal Saksena as soon as it was do possible to/so. Also our regret was communicated to him. Further amends was not possible in this matter.

Sir, I am glad that the House is so anxious about the preservation of the privileges of the Member of the House. The Government, more than anybody alse, would be anxious to protect the privileges of the House and of its Members. As soon as rules are made and communicated to the Covernment, they will see that every care is taken to see that no breach of privilege takes place. In this particular case, all courtesy due to a Member of this House was shown to Shri Shibbanial Saksena and the District Magistrate himself ascertained about four days ago - seeing that trouble was increasing he anticipated this removal - that no breach privilege was involved. He had guarded himself against this possibility by consulting others

Now these are the facts of the case. 't is unfortunate that in the long history of the British Parliament nobody chose to fast and there is no precedent for a guide. Here for the first time this question has arisen. As soon as our rules are framed I may assure the House they will be respected. In fact I am anxious that there should be clarification of all the privileges that may be due to the Members of the House. I do not know what the Drafting Committee's discussion was to which my hon. friend

Mr. Kamath has referred ....

Shri Kamath: Dr. Ambedkar is a part of the Government.

Sardar Patel: As soon as we came to know of it we countermanded the order. There is no question of keeping it secret from the House or the Government not informing the House or the Speaker, because the matter was not to our knowledge before we came here. When we came here we came here countermanding the order. So there was no such intention and there was no such question. The House may rest assured that no attack will be made and no infringement of the privileges of the Members of the House will be made by the Executive.

"EXTRACTS FROM DEBATES OFPARLIAMENT DATED 6.3.50"

Subbu (11-45)

Debates (6-3-50) Uncorrected - Not for publication.

#### CONDOLENCE MOTION

The Deputy Prime Minister (Sardar Patel): Sir. I have the unpleasant duty of conveying to the House the sad news of the passing away last night of a great leader, a leader of great qualities of head and heart. Dr. Sachchidananda Sinha who was the provisional President of the Constituent Assembly which drafted the Republican Constitution, slept his last sleep last night and bassed away. He was a great leader. While our present President is the maker of modern Bihar, Dr. Sinhas was the father of modern Bihar. He was a leader of the Bar in the Patna High Court, and practised for a long peratd. He had a distinguished career in the public life of India. He was the first Finance Member of the Bihar and Orissa Government. He was the President of the Bihar and Orissa Legislative Council. He was the first Deputy President elected in the Legislative Assembly of India. Apart from his great contribution to the public life in India ne was also a great literary man and a great editor. He founded the famous magazine called "the Hindustan Review", and he was the editor of that Review for a long period. He was one of the great leaders who were invited to give evidence before the Joint Parliamentary Committee in England when the Constitutional Reforms was to be made. His period of active unbroken service is a very long one. Few people have left such impress on the

14 183

public life of India as he has done. We all mourn his loss and I request you, Sir, to convey our condolences, the condolences of this House, to the bereaved family.

Mr. Speaker: Infully associate myself with what the hon, the Deputy Prime Minister has stated. We all are co-sharers in the mourning and I am sure our condolences will go the bereaved family. The House may stand for a minute in silence as a token of its respect to the departed leader.

(The House stood in silence for a minute)

## ATRACTS FROM DEBATES OF PARLIAMENT DATED 7-3-50"

X	X	x	×	x
x				

The Minister of Home Affairs and States (Sardar Patel): Sir.se

far as the administration of Hyderabad State is concerned. the House is aware that it was under the control of the Military Governor under the Government of India, but as representations had been received from the State people and a desire had been expressed from certain hon. Members from this House also. Government felt that a change should be made to end the administration of the Military Governor. Nowwe changed the administration and placed it under a Civil Administrator. A further change has been made recently just at the close of the Constituent Assembly. The Hyderabad State has agreed to accept the Constitution of India and the NiZam having agreed to it, the position has been accepted by the Constituent assembly. Of course there is the general declaration by the Government of India that the final decision always rests with the people of Hyderabad and subject to that the decision was accepted. When the decision was accepted like all other States the Hyderabad administration remained with the Chief Minister and his colleagues who are called Ministers, who have mot full powers and the Nizam at present enjoys the status as in all States, the ruler enjoys, Hence so far as the internal administration is concerned, the Government of India practically has nothing to do at present. When the Constituent Assembly elections take place and when the result of the election is known, then there will be the formation of a popular Ministry and then

the Constitution provides for the general guidance, control and direction so far as the States are concerned. There is no other control from here on the State so far as the internal administration is concerned. The constitutional position. If further facts on the immediate issue are wanted, whatever information got in my possession. I will give to the House.

Therefore, I do not see how the Government of can be held responsible for any prisoner having any jail or from anybody's custody. That part o administration is purely the responsibility of Administration. We cannot from here control the tion of jails in that respect.

India scaped from the

dministra

### EXTRACTS FROM DEBATES OF PARLIAMENT DATED 7-3-50"

			1 7 7 Wall of the Control of the Con	Acres de la companya del companya de la companya del companya de la companya de l	
x	X	X	x	X	X
					كالراحية المتألفانية
X	X	X	X	X	X

Sardar Patel: The order of detention or arrest or whatever it was, was passed by the Military Governor immediately after the police action was taken. Since then constitutional changes have taken place, accession has taken place, and now the Chief Minister and his Ministry are responsible for the internal administration of the State.

### EXTRACTS FROM DEBATES OF PARLYAMENT DATED 7-3-50"

x	x	 x	-	X	X	x
					x	X

Sardar Patel: Sir, I want to correct certain misapprehensions. My hone friend Mr. Kungru said that the States Ministry here appointed the Inspector-General of Police. He is not correctly informed on this matter. The appointment was made by the Ministry there but not by the States Department here. It is true that we give the loan of any officer or officers when a State asks for help.

(Contd. by K)

K-1

### Debates (7-3-50) Uncorrected - Not for publication.

### (Patel ctd.)

and we take that loan from the Provinces Here, in this ease, they wanted an Inspector-General of Police, and we gave them a loan. But it is not that we, the States Ministry, have made any appointment there. No direct appointment can be made by us. The only appointment that we can make from here is the Chief Minister and, with his approval, the Ministers are appointed. The further internal administration is absolutely with them except on questions of policy, or if a general maladministration question arises we can supervise under the general control under the article quoted by Mr. Munshi. But we assume too much authority if we take authroity or responsibility for the detailed internal administration or the day to day administration of jails, courts and revenue and everything. If we take the detailed administration on our head then this House will have to do nothing except taking up motions for adjournment, because everyday incidents of violence in jails, incidents of a prisoner escaping, happen. I have several cases of prisoner escaping from several jails. We do not hold the Government of India responsible for it, but if any information is required from those Administrations we are prepared to give that information. But because a prisoner has escaped from a particular place which was under the charge of a police guard under the Inspector-General of Police who was under the general supervision and control of the local Ministry, and because there is no Legislature there, therefore the whole responsibility should be shifted on to the Parliament here

### Debates (7-3-50) Unforrected - Not for publication

is assuming too much of responsibility and, at the same time, taking away all the responsibility of the local administration there. Therefore, I submit that this is entirely a matter for which the local administration is responsible; but under the general powers of supervision, control and guidance we can give information. We can take further steps or put pressure upon them to make proper enquiries or make proper bandobust, so that such things do not arise in future.

Sardar Patel: Formerely also the Chief Minister and Ministers were appointed by the Nizam.

(8)

### "EXTRACTS FROM DEBATES OF PARLIAMENT DATED 7-3-50"

The Minister of Home Affairs and States (Sardar Patel) Sir. before the legal position is explained I wish to remove certain doubts about the exact constitutional postion of Hyderabad State and its relations with the Centre, so that the bearing of the legal position may be properly explained. Otherwise there is likely to be considerable misunderstanding and ill-informed statements in this House are likely to be used for warious purposes. For instance, I said yesterday and I want to repeat it today, that so far as the Chief Minister and the other Ministers are concerned they are appointed by a firman of the Nizam and not by us. After the Police Action the House is aware of the hostile atmosphere in the State, where the services were composed of people who were to be placed in restraint or detention and one of them, the principal man, has escaped. In those circumstances, when the whole machinery of the State was such that it was difficult to put the administration under proper control, we had to give the State trained and experienced officers who would exercise their functions with responsibility. To this State Mr. Vellodi, a very senior officer, has been given on loan and His Exalted Highness has appointed him as his Chief Minister. The other officer next to him is also a very senior officer of the Bombay Government. Mr. Bakhle -- an honest, upright, straightforward and a very able man of high repute. This officer is the Home Minister in charge of law and order. Under him is the Inspector General of Police to look after the police administration.

It is very dangerous to say that the States Ministry here does every thing and the Nizam is nothing and that he cannot do anything but sign what is given to him. I have heard Moin Nawaz Jung saying so in the U.N.O. but that a Member of this House could be so ill-informed as not to know that status and position of the Nizam and the manner in which we have treated him is very regrettable.

### (Patel ctd.)

No statement should be made in this House without knowing the full facts, and without realizing its implications. Anything stated here will be reported immediately outside p rhaps with exaggeration, and with ulterior motives. Therefore the House should know the full facts before making any statement. If after the police action it had been thought necessary for us to treat the State as a conquered State there was nothing to prevent us. If we found it necessary to remove the Nizam there was nothing to prevent us. But we did not do so because the Nizam himself said that he was a prisoner and that the Indian Government had released him from his prison - from his bondage. We had nothing to doubt his statement and everything to support his statement that a clique of conspirators who ruled the State for their own purposes in a fanatical manner had kept the Nizam a prisoner. That is why we could not settle the question of the State's accession. So, when we found that position, we treated him with all the courtesy due to him. And up to now he has been kept in a different position and status and he is today in the position of a Governor of a Province. Therefore, to attribute to the States Ministry the assumption of powers which it had never claimed on behalf of the Government of India is a very wrong statement to make. So I warn this House to be on their guard to ascertain full facts. before making statements. And if there is any mistake, certainly by all means condemn the States Ministry, condemn the Administration and everything. But because in a State, where full autonomy in the administration is given, there merely because has been neotion or there

is no Assembly, cannot to suggest that we are here to take over the administration of those States otherwise we will not be able to do any business here except taking up motions of adjournment and discussing these questions. There are many questions in the States and even in the Provinces. Look, for instance, at Salem and at what happened in the there. Twnetytwo pople have been shot dead. They have appointed an Enquiry Committee. But we cannot in the Centre take the responsibility for all these questions. Therefore, although some of us may feel shocked that a responsible man of the status of an ex-Prime Minister, who was responsible for most of the administrative evils of that State, should have escaped in this manner, that should not influence our judgment as regards the responsibility of the Centre. You cannot take the responsibility in this way. Mr. Munshi has quoted article 371. I do not know what his idea was at the time the Drafting Com mittee drafted this article. But the other member of the Drafting Committee says that Mr. Munshi is wrong. Now. what advice have I to take - from what source? I must use my own knowledge of law, however imperfect it may be. If full administrative charge has been given to our officers, who have been loaned there for service, and the Nizam by his own firman has given all administrative powers to them, how can we interfere in this matter? I do not see. It would be very bad precedent, if we establish such a precedent. You can get all information, you can ask questions. But to have an adjournment motion of

this nature if you want to condemn the administration of the States Ministry or the Government of India so far as the internal administration of Hyderabad is concerned, is a wrong thing. If there is any policy which we have laid down so far as the administration of Hyderabad is concerned which you want to discuss and also to disapprove of, by 112 means you are free to do that. So, what I submit is that the administration there is in full charge so far as internal administration is concerned, as in the Province. Now the Law Minister can explain the position.

"Extracts from Debates of Parliament dated 21-3-50."

Debates (21-3-50) Uncorrected - Not for publication.

S.S.

The Minister of Home Affairs and the States: (Sardar Patel):

Sir, I have to answer for the two departments that are in my charge. In order that hon. Members may have full information, a review of the work of these two departments has been circulated in the papers which are generally known as White Papers or Summary of the work done.

So far as the Home Department is concerned. hon. Members are aware that the primary responsibility of the Home Department is with regard to the Centrally Administered Areas. The States are primarily or largely responsible for law and order in the States. As far as it is possible to look after the whole country in this respect, we have been doing our best to influence the States by moral pressure as well as by some kind of intimate contact which I have got with all the States Ministers and leaders over a long time of comradeship. I am glad to say that, on the whole, in a very difficult period of time that we are passing through, the States with a very depleted service have been doing their best and have been largely successful, in spite of the addition of large areas which are called merged areas, which had never had any democratic instinct or, I should say, which had all along had the contrary training.

Se far as the Centrally Administered Areas are concerned, we have two or three important originally Centrally Administered Areas apart from the Centrally Administered Areas recently formed from the States. One is Delhi, the second is Ajmer and the third is Coorg. We have the

do

### "Extracts from Debates of Parliament dated 21-3-50."

Debates (21-3-50) Uncorrected - Not for publication.

s.s.

Andamans, a distant island, which hardly has any problem from the point of view of law and order. In the first place, I wish to congratulate our friend Mr. Deshbandhu Gupta, whose tenacity in the advocacy of constitutional changes or reforms in Delhi is admirable, as all hon. Members are aware. He tries to link up sometimes Ajmer with Delhi. But, my hon. friend from Aimer is always full of envy so far as Delhi. is concerned. This is because Delhi is the Capital and there are 400 Members who are eager to look after Delhi and nobody to look after Aimer. So far as I am concerned. I make no distinction between Aimer and Delhi. Mr. Deshbandhu Gupta thinks that we have neglected Delhi. If we are to sit here day and night and do our work, is it ever possible that Parliament can afford to neglect the place where they have to sit? It is impossible. But, we have to see what we can do to make the changes consistent with the changes that have taken place in the country as a whole. We have also to see that any changes that we may make may not create complications and we may not have to change any Constitution that we may make now immediately after the Constitution is introduced. The present Constitution of Delhi is old. The Capital City is governed as an old institution, which has get to be changed. We have sympathy, all have sympathy, and it is easy to persuade Members of Parliament to have sympathy for Delhi. because you have always got to do something or the other through the Members of the Delhi Constituency, particularly Lala Deshbandhu Gupta, because all functions, receptions and everything that you have got to arrange must originate from him.

Extracts from Debates of Parliament dated

oppublication.

So, we always have sympathy for him. But, unfortunately, Delhi has considerably changed on account of the catastrophic changes that took place two or three years ago by the partition of Punjab. Today, Delhi is not the old Delhi, in spite of the name Old Delhi standing up to Low. If you go into Old Delhi, you see footpaths; you see the roads; you see slums; you see industrial concerns; you see bazaars. Delhi is a perfect democracy where men. animals, dogs, cats, can all walk together on the roads. They adjust themselves without any police, without any quarrel. Such a democracy is hard to find. Yet, Delhi is a place where the people who want to come to Parliament will have to take into account the large number of people who have come into Delhi. They are not original residents of Delhi. They have outnumbered the original residents and therefore their exploiters are different people who occasionally force our police to have recourse to lathi charges, firing which are very unpleasant tasks. They have to be shifted from one place to another; but they do not want to go. In spite of the ban. Minister for Rehabilitation asking us to remove these people, they approach some Members of Parliament and the poor Chief Commissioner has hardly any time to carry on his normal work. It is a very difficult place. I may tell you honestly that I would like to have the burden of Delhi transferred, if it could be done immediately, and more particularly to the shoulders of Lala Deshbandhu Gupta. But, it is not so easy. We have

\*Extracts from Debates of Parliament-dated 21-3-50)

Debates (21-3-50)
Uncorrected - Not for publication.

SS. CC.5.

not taken this decision very lightly. Mr. Deshbandhu
Gupta says that we are breaking our promises and that
we are not keeping our promises. That is not true.
The hon. Prime Minister in his statement also showed
how he was not breaking his promise. Sometimes
when you go to a public meeting in Delhi, your
expressions give greater hopes than the words convey
and those who want to take advantage of these
sentences put an interpretation favourable to themselves.

(Continued by DD)

"Extracts from Debate of Parliament dated 21-3-50"

Narasimhan DD. 1 4-40 P.M. Debates (21-3-50) Uncorrected - Not for publication.

(Patel contd.)

Therefore you must find out the substance or the substratum of truth from those speeches. You must not charge the Government with making any promises which they are not keeping subsequently. It is not so. (Interruption by Shri Deshbandhu Gupta) I have only half an hour to finish my speech. I might tell Mr. Deshbandhu Gupta that the whole House has sympathy from him but he must have sympathy for the House.

Take the case of the U.S.A. and its capital. How did it happen? Take the case of Canberra in Australia, How does its capital function? Or take lendon and see how it functions. You want me to introduce a democratic setup with all the elaborate paraphernalia of a Governor, a ministry, an assembly and other things. In a small place like Delhi, which is the capital of the country, it is not easy to do it.

Let us take New Delhi. The total population of
New Delhi is three lakhs, out of which 65 per cent are
officials and 35 per cent non-officials. As regards
the area owned by Government the Deputy Commissioner is not
in a position to state anything but he has given me the following
figures, in respect of property owned by Government and
property owned by private individuals. Government property is 73.4 per cent which is probably owned by my
hon. colleague Mr. Gadgil and private property is 26
per cent. So it is not an easy thing to have a setup
of the same type as there is in all the States. We cannot
introduce a constitution which in a few years' time you
will have to change. Therefore we have entrusted the
drafting of the Constitution to the Law Ministry. They
are drafting a constitution. You can influence them.

"Extracts from Debates of Parliament dated 21-3-50".

Narasimhan DD. 2 Debates (21-3-50) Uncorrected - Not for publication.

you can coax them, you can caress them or influence them in any way. The Bill will come here and all the Members here will scrutinise it. Then you will have your opportunity. As far as I am concerned as I have already teld you I have sympathy for you but you must have sympathy for me also. Sympathy should be reciprocal. That is as far as the constitution of Delhi is concerned.

Now as regards Ajmer, it is a very difficult pro-

position. It is a very tiny place and it was created as a signal post for the Resident to look after the whole of Rajasthan and Saurashtra, which contain the largest number of States. There is in that small place a Chief Commissioner and judicial Commissioner. Soon after we came into power we introduced an Advisory Committee in Ajmer as well as in Delhi. When you see that your neighbour's house is a place you are not satisfied with your small hut and naturally there is a desire to say "As in all other States where there are Ministries, we have the right to take the administration into our hands. We are mere advisers and our advice is not taken into account. Therefore this is no good". I agree. Perhaps if we were in in my hon. friend's place we would have felt the same thing. But after all we have to see whether a democratic setup can function in Ajmer. It is a small place. Can it bear its own expenses? Can it be a viable unit? What is its population and area? These are things which we have to consider. If the Finance Minister is liberal enough to make provision for small Provinces and can give us money, perhaps we can make such an experiment in some places. But I have also my sympathy for the Finance Minister. because no member of the Government has to face as much criticism or pay the penalty that he has been paying

Narasimhan

"Extracts from Debates of Parliament dated 21-3-50".

Debates (21-3-50)
Uncorrected - Not for publication.

of sitting in the House day after day during the Budget

Another question which concerns Ajmer is this.

Can we really keep Ajmer as it is on merge it in an adjoining area? That is also a big question. If

we have to merge it it can only be merged in Rajasthan.

Our policy up to now is not to merge the free areas

into the State areas. We merged States into the free units but not free units into States. We can make

un exception in the case of Ajmer, because it is a small

area. But we must see that Rajasthan by itself is

stable so as to allow it to take the burden of Ajmer

or for Ajmer to take the burden of the whole of

Rajasthan.

Our friend Mr. Sarangdhar Das quoted an instance of a village near Karauli, where about 25 policemen including the District Officer and Superior Police officers were hacked to pieces recently without any of them firing a single shot. All these people were killed only a fortnight ago. You may take it that many such instances used to occur in Rajasthan in the past, which nobody in the world knew. It is democracy that brings them to light and people who live in Rajasthan or have experience of Rajasthan know what it is. Rajasthan is not the only case but there are several States of that type. I will deal with it when I come to the question of the States. But so far as Aimer is concerned I wish to assure my friend that these Centrally Administered Areas are always weighing on our mind and we have been constantly considering what we should do to help them. Therefore the suggestions that he has made will be carefully examined. He wants that the Chief Commissioner should give due weight to the advance that

19

"Extracts from Debates of Parliament dated 21-3-50"

Narasimhan DD.4. Uncorrected - Not for publication.

may be given by the Advisory Committee. Naturally it is a normal expectation and we shall see what can be done about it. But the final solution of the matter is entirely different and for that we must have a little petience till bigger problems are solved and settled.

You know how many and what serious problems are facing our country today, which demand priority in consideration and immediate solution. They are very complex, not easily soluble and when it comes to solving those problems; that may probably involve us in bigger problems. Therefore you must have pattence with us.

You are sitting here but day before yesterday in Delhiitself a procession was started and a meeting was held.
One of my colleagues asked me why I allowed a meeting to
be held. If I do not allow a meeting to be held,
probably Mr. Kamath would move an adjournment motion the
next day.....

Shri Kamath: Not for that. I can assure you: I will give you a guarantee.

Sardar Patel: What about civil liberties? Many will ask the question. So I cannot order the Chief Commissioner not to give permission to hold a meeting. There is Section 144 in force in Delhi and yet cut of 309 applications for permission to hold meetings only eight or nine were refused. Permission is given almost as a rule, except in the case of our Red friends who sometimes want to create trouble. We ask them not to do so here but go outside; because Delhi is a capital city.

Immediately after the meeting in behn a procession started with people shouting. Whun ka badla khun". There are irresponsible people who start these processions. Immediately they made an attack in a locality with such violence that there were three or four deaths and 19 neonle were injured.

Subbu (4-50)

\*Extracts from Debates of Parliament dated 21-3-50\*

Debates (21-3-50)

Uncorrected - Not for publication.

(Patel ctd.)

You have to get up at night at any time and see what happens. That is Delhi. It is not easy. If you have a democratic set-up the burden on you will be much heavier and the forces that are raising their heads will not easily controllable. We have just organized our police. You know that fifty or fiftyfive per cent of the officers who held key posts suddenly left, because we wanted them to go. And it was those officers whose strength was fifty per cent who, by their colour, by their superiority of race, by their imperial set-up, used to command a sort of awe, which has suddenly disappeared. Thanks it has disappeared. But in that place what do we have as a substitute? Every man that wants anything has simply to attack Government'. If a popular Government does not command respect and a foreign Government that used to command fear and awe has gone, what is the substitute? Think about it. Either you must have anarchy or you must have order. If you want order, then, as I have been appealing to the police to try and secure the affection of the people, it is also for the people to change their attitude towards the police and think 'this is our police'. Unless we do that there is no other way, particularly at a time when we are in a very difficult situation. So, in keeping law and order in a huge country with different kinds of people who have not adjusted themselves to changing conditions we have to be very careful.

You talk of abolition of jagirdaris. You have seen in U.P. where the Eamindari Abolition Act is being passed, what difficulties they are facing there. But in regard to abolition of jagirdari in areas like Rajasthan,

2000

"Extracts from Debates of Parliament dated 21-2-50".

Debates (21-3-50)
Uncorrected - Not for publication.

Madhya Bharat, Saurashtra, is it a joke? Is it a simple thing, do you think? Do you want a simulatineous revolt everywhere, or do you want to handle things as we handled the Princes? We got what we wanted in the States without firing a single shot or creating a single enemy. Today we can claim that if any emergency arises it is the Princes who will support us, who will stake everything for us. I want also to assure you that jagirdars are not our enemies. They are pillars of the State if you handle them properly. That is my ambition and I want your help in that. I do not want to say anything further about the Centrally-Administered Areas, because the other areas are small, they do not give any trouble. But their set-up has to be considered differently.

My friend Sardar Hukam-Singh has been always taking interest in the displaced persons, in regard to their employment. I have all my sympathy for them. But we have done our best, consistent withthe keeping up of a standard of efficiency in the Service. If we go further than that, then the inefficiency and corruption that will set in in the service will recoil on the people who have come here after partition, and on all of us, and on the service itself. I know it is very difficult for people who have.lost everything. We may sympathise with them. We may try to help them. But to keep them in Service requires a certain amount of watchfulness, training and many other things which we cannot avoid. All the officers that opted for India, for whom we are responsible, have all been employed. But for those who could not be employed here, for whom we are not so

Extracts from Debates of Parliament dated 21-3-50".

## Uncorrected - Not for publication.

responsible as for the other category, we have provided other avenues and through those organisations we are taking them. Even for the displaced lawyers we opened a training class, a hundred of them were trained, we have opened a cadre for them, we have employed them, we are doing all that is possible. But sympathy should not go to such an extent that ultimately they themselves would lose the sympathy of the public, because the work that they would do would not be commensurate with the office they would hold and the emoluments they would get, and the standard of efficiency would not be kept. If there are any instances where any deserving case requires to be considered, you can always come to me, you can always write to me, and we can consider those cases.

My hon. friend, Mr. Kunzru, has raised the guestion of Home Guards in U.P. I do not know, but some of the U.P. Members here came to me and said "we must be allowed to speak". That is not my concern, that is not my power also. But they are dissatisfied with his comments. I think they can answer him better than I can do, because it is more a provincial subject and it is not within my province. But I can only say this that these Home Guards and the Raksha Dal volunteers that are trained are not given arms. They are not armed. They are given arms only for the purpose of training and then they are taken away. They are a useful supplement in these days of difficulties when we have not got enough police forces. Look now to what is happening in certain districts in U.P. They find difficulty. Then it was asked "why is it that in two Provinces, that is, Bombay and U.P., their number is large?" Obviously, their number is large because

#### Debates (21-3-50) or publication.

U.P. is perhaps one-third of India or a very big Province and their enthusiasm for this work is supposed to be very great. They have always wanted their young men to be trained for the army and to give them training, discipline and everything. As regards Bombay, I may tell you that these Home Guards have done very very useful service and the Bombay Government is full of praise for them. The Bombay public also have a great appraciation for their work. As regards these Home Guards being used for the purpose of collecting money for the Zamindari Abolition Fund, I have no knowledge. It is for the U.P. Government to answer. I cannot say anything. But I do not think people in these days tolerate such things. If the tenants don't want to pay, there are the Socialists to preach "don't pay" and there is our friend over here who will never allow anybody to pay'. It is not possible to believe that these Home Guards would coerce the tenants to pay the money against their will. But I hope that my hon. friend will be satisfied by making enquiries from the U.P. Government, and I myself will make an enquiry and inform him of the result of my enquiry. We do not want to do anything, through our own Government, so that the volunteers or guards' that we greate for the protection of the people could be used for the purpose of coercien.

(Ctd. by FF)

"Extracts from Debates of Parliament dated 21-3-50".

Debates (21-3-50)
Uncorrected - Not for publication

Kini FF-1 5.0 P.M.

(Sardar Patel - contd.)

Now, having finished with the Home Ministry, I will deal with the States Ministry. The main criticism was raised by Mr. Sarangadhar Das. We has referred to his first statement made when I went to Orissa and started the integration of the States.

Naturally, he was pleased because Orissa was a tiny Province and it became a bigger Province; and as he or some other Member said, it was a dream which

they had not dreamt for a long time, and it came about suddenly. But a puzzle is no longer a puzzle when it is solved. So, when the thing is done it has no value. He issued a statement at first. He had been a member of the Congress for a long time -- his love for the Congress also has suffdenly disappeared. He talks of firing in many States. Ferhaps he has not ever visited Calcutta. If he stays a couple of days or a week in Calcutta perhaps he would not even have a wink of sleep. He is frightened by stories of firing. Where does he hear firing in the States? I don't know. / He talks of Vindhya Pradesh. Our friend from Vindhya Pradesh has given him the reply that they are largely responsible for this kind of firing because they unnecessarily create trouble. This Vindhya Pradesh was constituted into a Chief Commissioner's Province on the 1st of January, and there was a firing on the 2nd, on the next day. They linked it up with merger. We have always said that we don't want to force merger unless the adjoining States are willing. But it must be

/ N.P.)

# PExtracts from Debates of Parliament dated 21-3-50

ini <u>Debates (21-3-50)</u>
F-2 Uncorrected - Not for Publication.

remembered that Vindhya Pradesh cannot stand by itself. It is an area of thirty lakhs of people, with several minor States which have been lumped together. He forgets that we first constituted a Ministry there from among the Congress people and others. Some of the members of the Ministry are under prosecution. The main point which the Socialists and Mr. Sarangdhar Das who belongs to that Party raise, is this: why are these people not elected ? The States are merged, but why are those people not elected ? Well, who elect them, Mr. Sarangdhar Das 😵 Is there any electorate ? How are we to elect them ? That he has not suggested; no Socialist has answered that question. So, who is going to elect them? As soon as the electoral rolls are ready, it is not our function to keep this burden with us. I am not a foreigner; my Government is not interestedin keeping a setup which is a burden to it. Why should it be so? We want to-establish democracy everywhere. If these States are merged in Orissa and if there are no electorate in these States, how can I blame the Orissa Government that they simply nominate these people and don't elect them If they nominate them, is it their desire that I should bring the Rulers back?

Shri Sarangdhar Das: May I say that in Orissa electoral rells were being prepared in 1949?

Sardar Patel: Oh, yes, They are being prepared but they are not ready.

Shri Sarangdhar Das: They were being prepared according to

Uncorrected - Not for publication.

the 1935 Act.

Sardar Patel: That is quite true, perhaps you know it better. But I have not seen any electoral rolls in the States. In the small States in Orissa there were no electoral rolls; even now there is none -- they are being prepared. In Vindhya Pradesh they are being prepared, in P.E.P.S.U. also they are being prepared. In P.E.P.S.U. also we set up a Ministry. We had to change it and set up another. What can we do ? So, if there is no co-operation from that area we cannot do anything. But whereever there is an electorate a Ministry is functioning. Take Saurashtra. What do you find there ? He asked me a question, what was the balance which the States had left ? Fifteen crores. What do you want to do with that ? That amount is intact. Why do you suspect those Ministers ? That amount is to be spent for the development of that area. So also, in the case of all balances that have been taken over from the States it has been guaranteed that chy will be spent in those States and we will see that those amounts are spent for the development of those areas. We are not spending those amounts for suppressing the agitation that has been set up. You need not be afraid of that. What you suggest is an impossible thing, and you don't suggest an alternative. If I remove these nominated members today at your suggestion, who will fill the gap? Shall I leave these areas unrepresented ? But are not the State representatives, who have been nominated. here in the Parliament itself ? Because there was no other alternative we, with the sanction of the Constituent Assembly, framed certain rules and got the aomination. When the nomination is made we consult all

"Extracts from Debates of Parliament dated 21-3-50".

Debates (21-3-50)
Uncorrected - Not for publication.

the local elements; it is possible that we cannot please all, but usually with the general approval of the people we make these nominations. So, there is nothing for you to complain.

Thop so far as the States are concerned, you will see that we started with integration and in a short period we finished it. If the integration had not been finished, you don't know what would have happened. There were two parts to this integration: One was merger and the other was the joining into unions of smaller States. After that was done, we started with an enquiry for financial integration. On the one side that financial integration enquiry was going on, on the other side we lent officers, inspite of paucity of men, to these areas to form districts and tehsils and the services. There is no service there on which we can rely. They are good people there but they were not trained for a democratic setup. There pay was very small; in some places the pay was twenty or twentyfive rupees for the lower people. You cannot do anything with these people. You talk of the inefficiency of the police in the States. In the States there were practically no police. In many of the States the Princes, with their old military group used to manage the things. There are no tehsildars, there are no village patwaris, there is "Extracts from Debates of Parliament dated 21.3.50".

Debates (21-3-50) Uncorrected - Not for publication.

Kini

no tehsil, there is no district -- all this has to be formed. 't is being formed. We have

simultaneously to prepare electoral rolls. At the same time we are taking up the integration of the army in all the States and the Centre is taking it over. We are leaving nothing undone to bring these areas on level with the old Provinces.

(Contd by GG)

"Extracts from Debates of Parliament dated 21-3-50".

Kini GG-1

Uncorrected - Not for publication.

5-10 P.M.

(Patel - contd.)

But it is not easy. After all, inspite of all these formalities being done; it is the people there who will have to be fit to take the responsibility. If they quarrel, it will not be my fault. I shall try my best to reing them together, to make them fit to bear the burden, but if you go on continuously making propaganda that the Congress is gone, that it is not fit, that this Government is bad and that Government is bad, then you are one in a four hundred. What can 1 do?

Shri Biswanath Das (Orissa): May I enquire whether Government are aware of the fact that the so-called nominated Members when addressing meetings in Orissa States draw an audience of thousands while when my friend Mr. Sarangdhar Das addresses meetings the audience never exceeds two digits?

Sardar Fatel: They are all here in this Parliament and they are of a representative character. I know that the nominations that have been made are from people who claim to be representatives. I think I have taken a little more time. I am glad that generally you have supported and accepted the Demands.

(ends.)

My dear Butt, A copy of HMS speeche & delivered in Parliament cofor to heif see there with underined. Delates of que of loth hance we not readily available and a copy of Hisofrance or m these days sent later yours am cont



### Debates (2-2-1950) Uncerrected - Net for publication

CC-2

Ayyar 2/2/50

Srijut Chalina centd .-

and get frustrated as we have been doing. He has not said anything about which we will be disappointed later. His Address is a simple and hemest one. Therefore I once again thank the President for the gracious message and we are grateful to the great man who speke to us the other day.

(ends)

Minister of Home Affairs.

(SARDAR VALLABHERAI PATEL):- Sir, but for the fact that one or two points require clarification in order to remove any possible misunderstanding from the minds of Members of this House, I would not have ventured to take up the time of the House. The Prime Minister is going to give a general reply to all the points raised in the course of the debate.

There is one point which struck me as requiring clarification. I would ask the House to bear in mind the fact that unless we make up our minds to take an objective view and get a proper perception of things, we are not likely to make progress. The House will recall that Mr. Khandubhai Desai made a Statement that this Government, for the last two years, has been fellowing a policy of appeasement towards the capitalists and businessmen. New, Mr. Khandubhai is the chairman of the I.N.T.U.C. and a responsible Member of this House. Any words falling from his mouth are likely to have serious effect on our industrial progress. New, the House will agree with me when I say that in this House there is no representation for the capitalists to answer that charge so far as the capitalists are concerned. They have no effective moice here. But whatever we say will have its effect on them and on the industry as a whole Responsible Ministers' statements also have that effect. Therefore, when we make a speech on the floor of this House we have to take into account the effect it would have on the country as

nublication. 2/2/50 Ayyar

Sardar Patel centa:- CC-3
New, I seriously ask you to consider the amount of legislation both in the Centre and in the Previnces has been pushed forward in the course of these two years se far as labour is concerned. Can you find a parallel to it anywhere ? We have tried our best to move forward as far as pessible. In the circumstances, to say that we are fellewing a policy of appeasement while the capitalists themselves are feeling - and I say rightly feeling - and are afraid to come near the Government, which believes that they have not played their part, - whether it is right or wrong is another matter - and to charge the Government that we are following a pelicy of appeasement is to make a loose charge of a type that is not expected from a seasoned Member of this House. If a back-bencher makes such a charge it can be attributed to his lack of experience and he can be excused. But Shri Khandubai is not enjoying that position and he must not use such leese expressions. I do not want to labour this point further. But I wish to emphasise one aspect of the question. We are passing through a critical period and our economic problems are such that unless we increase the production of food stuffs and our industrial products, we are not going to solve them.

You all appreciate, and rightly appreciate, the good work that our army has done. We are very appreciative of it and we want that the strength of the army should be maintained. I am also of that view. But you must see that the strain on our economy is not increased. Therefore unless side by side we produce more we cannot get on. The time has come when we must adjust our pelicy in such a way that all sections of the people and all sections of the seciety co-operate. Labour must have its due, but we must ask labour to produce as much as possible We have done well by labour and labour has played its part. Here I may give an instance. In Madhya Bharat, the textile industry earned 57 lakhs. Out of this sum, Rs.40 lakhs were

### Debates (2-2-1950) Incerrected - Net fer publication

Sardar Patel centd:-

CC-4

Ayyar 2/2/50

given to labour as benus. Is that a pelicy of appearement of capitalists? The Ministry took Rs. 40 lakins as benus to labour out of 57 lakins earned by the industry and income tax was charged on this prefit. The Madaya Bharat Ministry has passed an order that clerks in the mills should not work for more than six hours. That is not the pesition in any mill in India outside Madaya Bharat.

(centinued by DD)

Warasimhan DD. 1 -40 P.M.

(Patel centd.)

Are they to employ for two hours another set of clerks ?

So we must see where we are going and not create an wrong impression amongs the people as a whole about our policy as people outside who want to attack this Government say "This is a capitalist Governments they side with the capitalists." Whe, I ask you, on the benches of this House is a capitalist or is siding with the capitalists?

Is their voice heard here anywhere ? That is one point which I wanted to impress on you, because it does cause harm, it does not create a condition of cooperation. By all means attack the capitalists wherever they are in the wrong and make them see their felly but do not create an impression that this Government would not Took to the interests of labour.

Another matter is this. A general question was raised in connection with the integration of the States by my frined the hen'ble Member from Kanpur: What is the policy of this Government about the Chief Commissioner's previnces ? Very easy to ask that question but there are Chief Commissioner's previnces which are not merely created by integration alone. The prevince of Delhi is an old Chief Commissioner's prevince. It is not a new one and only the other day the Prime Minister made a statement as to what the policy of the Government is and that a proper Bill is being drafted for it. Then there is Aimer which is also a Chief Commissioner's prevince and which is a very small area. It is an eld Chief Commissioner's prevince. As seen as we came inte power we tried to put in an advisory committee in this province. Naturally the people coming from that area to this House would not be satisfied by mere Advisory Councils but you cannot make changes evernight or with rapidity -- a speed which would disturb the stability of the state. Yeu do not knew how many refugees have into that small area. Yeu do not knew that there we had communal troubles on several occasions which had to be suppressed with severity as and effectiveness but it is a source of trouble. In that area we cannot set up immediately institutions which are called democratic, which would give power to people who are not quite experienced. May be a few individuals are there but we must walt and see that whether propper constitution is drafted for this area, whether that area is to be kept intact, whether it can be merged with the adjoining areas or what should be the institutions established. These questions give us considerable anxiety, not that we are sleeping ever them but they are not easy of solution.

There is another Chief Commissioner's prevince
in a small area near Mysere called Coorg, 't is also
an old Chief Commissioner's prevince and there is a
legislature there. There are two parties there, one
group of people want that the state should be merged either
with Mysere or with Madras and the other group
of people say that they do not want any merger. They
are a peace-leving people and they accept our advice.
We are constantly in touch with thems We do not want
to disturb their peace and we say that we can only
preceed with the general consent of the people there.

Then there is Cutch with a huge border, which is unpretected and unguarded and there is a big desert.

I do not know the ther any of you have seen it except the representative of Cutch. It is an unfortunate state where if you want to see pressitive conditions which existed in India thousands of years age you will find them. There is no railway, no motor car, no bus,

no reads, because the old Maharaja thought that no outside influence should be allowed to come into the state. The currency there was called by a peculiar name, the 'Keri', which was a speciality of its own. In this state we are going to develop a big port. After having lest Karachi there was a great strain on the port of Bombay and we have suffered on account of it. Therefore on the Western coast we must have a big rival port and a first class one. The Government of India have taken ever this state as a Chief Commissioner's province in order to develop this area. Our project is to put in five lakh additional refugees, largely refugees from Sind, besides some from Punjab also. A big township is being developed there. We have a programme for building a railway from this port joining up with .....? That is also a big scheme. All these cannot be done by a democratic setup there without any experience. A large number of people had left the state because there was no trade nor industry and had spread all over the world. You can find adventurous Cutchees anywhere, who are very big industrialists or businessmen. There are a let of them in Bembay. Burma was full of them in Rangeon there were streets of Cutchees. They were also in other parts of the world. This is the Chief Commissioner's prevince where it is our responsibility to see that our money is well spent towards development and progress and also that we keep the people satisfied. Lasy year there was a famine there and the Cutchees residing both in Bembay and in Cutch passed resolutions of thankfulness to the Government of India for helping them in an hour of serious crisis and not allowing anybody te die of starration. for giving them all the feed that was required and distributing them preperly,

Narasimhan DD.4 Debates (2-2-1960)
ncerrected - Net fer publication.

for protecting them and also protecting their berder.

Then you come to the other end, Manipur. It is a place which is new exposed to infilteration and danger. We have taken ever Manipur only recently as a Chief Commissioner's province. Similarly with Tripura. It has a big border between Pakistan and India. It has no contact with Bengal and Bengal people want it. Assam people want it, though it has no contact with Assam. It has practically no contact with Bengal after Partition. All their supplies we have to arrange by aeroplance we have kept this state in our hands as a centrally administered Chief Commissioner's province.

Se also in the North, in the Punjab there are
the hill states in the Himalayan area. There were
se many small states which have all been merged and
put inte aprovince. The population there is largely
backward: they are an innecent and inoffensive people
who have the lowest number of crimes to their record
but politically they require nursing.

(centinued by EE.)

abbu 4-

(Patel etd.)

Therefore we have fermed that into a Chief Commissioner's Province. You will see therefore that whereaver in integration we have Chief Commissioner's Provinces we have very special reasons to protect and develop them.

We had another State near Darjeeling called
Coech-Behar which has recently been merged into Bengal.
Although it was a very difficult and tough thing we have done it. That is the general position of the
Chief Commissioner's Frevinces and their future. We are abrieus as much as you are perhaps mere. Because,
we want to get rid of the burden as quickly as possible and to distribute the burden among the people. But we are not in a position to put on the people a burden under which they would be crushed. The whole country would then suffer as a consequence. So that is the policy with regard to the Chief Commissioner's Previnces.

There are several Unions of which Vindhya Pradesh has get netericty and although recently you heard much about it we have had very bitter experience of this area. This area consists of a population of 36 lakins of people and comprises of about 26% thousand square miles. And there were 35 or 36 States in the area, although Rewa was a big, viable State. The rest were small States. You can imagine the number of small States which divided this little area. You can also imagine what kind of police of administrative machinery could be there in such smallunits. So when the States were integrated it was not an easy job, for the smallest of the Princes throught that parameunity has disappeared and that he was His

### Debates (2-2-1960) Uncerrected - Net for publication.

Majesty and was "menarch of all he surveyed". With great difficulty we persuaded all these to be lumped inte ene group and we took their signatures on the Covenants. After this was done we found another problem namely that this area is divided into two parts. One is called Bhagelkhand and the other is called Bundelkhand. There has been traditional -rivalry, jealousy and antagenish between the people of these two areas and they have a history of their own. You can imagine what pelitical life would be there in the small peckets where the Princes ruled with autecracy: there were not even infant erganisations of local self-government or anything of the kind. Here we took power from the Princes and gave it to the se-called "leaders of the people" who were called Ministers. There were no elections - nething of the kind - but they represented an organisation called the "local Congress". But in the two areas we could not form one Ministry and there were two Ministries - the Bhagelkhand Ministry and the Bundlekhand Ministry. It took us two menths to persuade them to come together and save expenses, because economically it is a deficit Prevince and it cannot stand en its ewn legs. A joint Ministry was then formed and we thought that joint working will create conditions for a good democratic orgamisation and that people would be happy. Unfortunately, some time afterwards one of the Ministers was charged with having taken a bribe of Rs. 25,000 for issuing a licence in Delhi itself. And at the instance of the Anti-Corruption Branch of the Intelligence Department in Delhi the Minister was arresred. It did not step there. I called the Ministers to tell me what really was the position because I was getting numerous complaints, both efficial and non-efficial, from that area

of corruption, black-marketing, maladministration and many ether charges. When I called the Ministers I found the unfertunate Premier complaining against his Ministry, making several charges against them, and the Ministers when they were called were making changes against the Premier. They were old, seasoned Congressmen - seme of them. They have served not only in that area. The Premier had the heneur to be the President of the C.P. Previncial Congress Committee some time and the other for years happened to be the President of the Allahabad District Congress Committee. Se I naturally thought that this arrangement would work well. But when this happened I called the Ministers and they began, as I said, to charge the Premier and the Premier began to charge them. I then said that the best thing is not to allow these things te remain without being enquired inte, because the efficials have been complaining to me about all these things and what would they think if I suppress them ? I therefore said "I must make enquiries and the best thing for you is to give me your resignations because you yourselves say that you cannot work tegether". And they gave their resignations - not that I dismissed them. They themselves thought fit that they should resign.

After the resignations the difficulty that I faind was to whom to give this. I waited for some time I had no alternative but to put an efficial set-up for the time being - not that it is a permanent arrangement or a better arrangement, but I cannot allow this area to be a spot where deceits and murderers could have a free play - because during this period peace was being disturbed.

Se I asked for efficers. The f U.P. Ministry has been

Subbu

good enough to spare several efficers to me for other Unions. I approached C.P. because U.P. had not efficers to spare. It took some time and there was great difficulty in finding efficers. And when I put the officers there, there was an outcry from some parts of U.P. - the adjoining areas - that this was for the purpose of integration of this area into C.P. and that was why C.P. efficials had been brought. I tried to assure them that I do not want to favour either U.P. or C.P. and it is not my intention, if it is pessible, to disintegrate the State area. But if it is not workable, then there would be no alternative. We waited for a long time. The enquiry was going on. As a result of the enquiry some charges have been framed and the proceedings are going on. I de not want to forecast anything, but I would wish that they would be absolved of all charges, because after allhaving worked in an erganisation for all my life it would be a shame for us to find any Congressman convicted of an effance which is not of maladministration alone.

(Ctd. by FF)

## Uncerrected - Net for publication

Kini FF-1

5. p.m.

(Sardar Patel - contd.)

Se, I den't want te say anything. But te state that prebably the Deputy Prime Minister dees not knew aything about this, is to claim too much knewledge about an area which is under my charge. It is not fair to me nor fair to the House that such charges should be made. I den't allow anything to be done in any area under my charge without my knowledge and without my approval. If in any emergency any step has been taken by an efficer where there is no time to take consent, he has to approach me immediately and to bear the consequences of his mistake if he has done wrong. Se, I want to assure the House that what is done in Vindhya Pradesh is done with my full knowledge and approval.

New, ceming directly to the specific charges,

I am serry to say that with reference to a man who was
detained my frined has made reference to a remark which
is very deregatory to the administration. He says that
he was arrested only for giving a meter car to
Mr. Ram Manchar Lohia. How can one believe such a story?
There are ten items in the charges but he has taken one
charge drawing a line at a particular place and placed it
before the House.

Pandit Balkrishna Sharma: On a point of personal explanation,

I would like to place before the House the fact that even

while I was making my speech I made it definitely clear

(Pandit Balkrishna Sharma - centd.)

was that that particular gentleman led a deputation to the Prime Minister. They were two of the charges.

Sardar Patel: He suggested that because these people case in a deputation to the Prime Minister, therefore, that was also made a charge. That was also a misrepresentation. Amongst the charges one is that this gentleman not only organised the violent agitation which resulted in the firing but he organised a demenstration preventing the Secretary of the States Department who wanted to see the Maharaja of Rewa in order to get his signature; the demonstrators did not allow him to ge to the Maharaja. They threw stones at him and he could not approach the Maharaja of Rewa in his palace and had to come back. It was the greatest insult offered to

the Government of India; we had to put up with it.

that one of the charges was this, and that the other

This gentleman who was a party to the organisation of the whole thing sent a deputation to the Prime Minister. It is not as if the deputation going to the Prime Minister is a charge, but the charge is of trying to misrepresent the whole thing and saying that twenty people were killed while two men were killed, and of placing before the Prime Minister several exaggerated facts saying that there was going to be danger. It is only a part of the connecting link of ten charges, only these two items that have been selected and placed before the House. My friend says that this man was detained under the Goomia Act. No doubt a lot of

Kini FF-3

> geondaism was practised there, but there is ne Geenda Act there that I know of. Perhaps he knows about it more. This is not fair. Therefore, I want to remove the misunderstandings that may have been created in the mind of this House that all that is being done in this Area is being done by the Civil Service people without the knowledge and consent or in ignorance of the man in charge who is sleeping. That is not the fact. My friend should also have stated that as Soon as normal conditions are restored the men detained were released. That also he didn't say. So. I den't want to pursue this matter further, ner is it the time or the occasion for going into details. If he had come to me, I would have explained the whole thing to him, or if he wants any more information I will always be available -- but he diden't do se. As I have said, we are always anxious for the democratic set-up everywhere in India. Why should we deny it to other people ? When we have declared India a Republic, who is there who is our protege ? Why should we keep our servicemen there ? I have many places from where there is gemand fer good service people, but I can't get men. Se, if there are men kept there it is because the democratic set-up, in the immediate future, is not possible there. I have get the report of the Financial Integration Committee which was appeinted specially for the purpose of the financial integration of all the States, and the report on this area is that it cannot stand on its legs. So, we have to consider what to do. I called the Promiers of Madhya Pradesh and Uttar Pradesh, and also these representatives, and I asked them whether they

(Sardar Patel - centd.)

could agree as to the distribution of this area into their Provinces. They could not agree. Therefore, I had no alternative but immediately to form this are as a Chief Cemmissioner's Provinces. So, what has been done was as a last alternative. For the period for which we find it necessary to do so in the interests of the State and in the interests of the country as a whele, this area being situated in the heart of India. we cannot allow things to be disturbed nor disrepute brought on the administration. I want to assure the House that there should be no misapprehension in the mind of anybody that we want to take away the liberty of anybody. Mr. Sarangdhar Das said that Mr. Lehia is one of the best followers of Gandhiji. Unfertunately, Gandhiji has left so many fellowershin this country that it is difficult to say who is good and who is bad. Everybody claims to be a fellower of Gandhiji; except this Member sitting on the Treasury Bench, the rest have all been Gandhiji's fellowers. It is a very difficult position, but I want to tell Mr. Saranghar Das who has recently joined that Party, that this kind of tactics of creating disturbances everywhere is not going to improve the position of the Party. We wish that Party would form a good, healthy Opposition, but beginning from Goa right up to Napal and then from the Central Provinces to Rajasthan they jump from one place to another, create problems for the Government

Kini

Debates (2-2-1960)

(Sardar Patel - Centd.)

and then go away. Is that fellowing Gandhiji? I can't understand it. I have lived with him for all my life, but I have forgetten his principles and new fellowers have started to come.

This matter is a serious matter. We must not make serious charges haphazardly without consideration. That is all I have to say.

(Ends

(The Heuse then adjourned till a Quarter to Eleven of the Cleck on Friday, the 3rd February, 1950) (9)

evening's function.

It is indeed a singularly fortunate circumstance that the Hon'ble Sardar Vallabhbhai Patel, Deputy Prime Minister of India, happens to be in Bombay at this juncture when our Chief Minister, Shri B.G.Kher, who is unfortunately prevented by ill-health from being present this evening, was thinking of giving concrete shape to his long cherished desire of providing a centre of knowledge in congenial surroundings for children. He had asked me to request Sardar Vallabhbhai Patel to lay the foundation-stone of the building and I am happy to say that Sardar Vallabhbhai Patel readily agreed to preside over the function this evening and to lay the foundation-stone of the Children's Centre. I extend to him very grateful thanks on behalf of the Chief Minister. and the Government of Bombay and on behalf of you all for sparing some of his most valuable time for this

This has been called, and rightly called, the Century of the Child; for at no other time in the history of the world has the Child received so much attention. Not only have organisations been set up all over the world for child welfare, -- for the protection of the orphan child, the destitute child, the defective or delinquent child, in a humanitarian spirit; but the normal average child has claimed increasing attention as an ordinary sociological problem. Inventive mind has been continuously at work in devising the most effective and most pleasant methods of teaching children; and as the approach to the problem has become more and more scientific, the foundations of child psychology have been laid on a firmer basis. The happiness of the child is no longer the concern of the parent and the humanitarian only. It has become the concern of the sociologist and the statesman; for it has been increasingly realised that the child is the true foundation of a nation. The famous phrase, "The Child is

1. (in Indu)

Father of the Man" is no longer a paradox; it is the simplest and most obvious truth. What we are as men and woman, as members of a society, as citizens of a State, depends vitally upon what we have been as children in the home, in the school. There cannot be a same and toply prosperous nation without happy homes and pleasant schools and our homes and schools cannot be happy unless we are same and happy ourselves. This vicious circle can only be broken if we, who realize the urgency of the problem, take up, with vigour and with-persistent will, the cause of the Child, and spare no pains to make it happy.

Now, what does make a child really happy?

A child wants to grow. Growth is its one business in
life. Nothing can stop it from growing. If he does not
grow right, he will grow wrong. And what is it that
helps him grow right? The first thing is freedom;
the second is wise control, a control so subtle that
it seems to be a part of freedom. Therefore, a garden
is one of the best symbols of the child's world;
for in a garden you may run free; and there are soft
lawns for your feet. But in a garden there are hedges,
inset too, which you may peer over but not trespass;
there are lovely flower-beds which you must not trample.

A child grows by assimilation. It must absordint itself the world of sense. The child grows by outer impressions as the tree grows by taking in oxygen and light. And we must see that what the child absorbs into itself is wholesome and conducive to right growth. Therefore must the child be surrounded with things of beauty. Its surroundings must be peaceful as well as pleasant. It must have plenty of flowers and pictures; and, as it grows, it must have books.

But the child grows by play too. Play is its work. If assimilation is the more passive side of its experience, playing is its more active side. In play,

309

a child not only learns to strengthen its limbs and lungs, but also to develop its mind and will; to plan and organise, to command and obey, to take defeat with courage and victory with grace.

That is why this Government, ever since the dawn of our national freedom, has been giving serious thought to a Garden of Children -- a haunt of beauty and peace. It is in pursuance of this idea that this Charni Road Gerden has since last year been reserved for women and children. But Government has, at the same time, felt that the garden could not be complete without a library; for a library is a treasure-house of the stored-up experience of the finest the hapiest and most eloquent minds.

The story of this Children's Centre, this Children's Home -- Bal Bhavan -- is brief but encouraging. It was only in 1946 that the National Council of Women in India suggested the necessity of establishing a Children's Library in Bombay, or, in the alternative, of attaching a Children's Section to the proposed Central Library. Next year, two schemes were placed before Government -- one by Shri Prataprai Mehta, and the other by the Bombay Presidency Women's Council. The latter scheme, which seemed more immediately feasible, envisaged the establishment in Bombay City of eight children's library centres. The number was subsequently reduced to two, with an estimate of about Rs. 16,000/-, half of which was to be borne by Government. The Presidency Women's Council had, from as far back as 1943, been successfully running library centres during vacations, alternately at the Wilson College and the Anjuman-I-Islam High School. About the same time, the Balkan-ji-Bari had approached Government with a suggestion for a Children's Town and Exhibition to be held during the Christmas week of 1948. For one reason or another, the idea did not materialise. But the convergence of these various schemes, conspiring on the one hand with

the lack of accommodation in the Central Library and, on the other, with Governmen's anxiety to see that the Children's Centre should not only be established early but established in the best possible surroundings, has now culminated in this function.

When, two years ago, our Chief Minister, who has taken very keen interest in this scheme, asked for plans to be prepared, it was found that the entire building and equipment would cost about R.61 lakhs. In the new plans, now approved, which provide for a three-floor building, the ultimate non-recurring cost will be about Rs.3 lakhs. For the present, however, it has been decided to build only the ground floor at a cost of Rs.1 lakh and 80 thousand. The ground floor will provide, besides the office, stack room etc., a reading room, and a lecture room which could also be used for exhibition of children's films. There will also be a pergola on one side, which could be used as an open-air study; while the space before the porth could be easily converted into an oper-air children's theatre. The Centre is so designed as to have, besides a library, play rooms equipped with playing materials of all types, as well as provision for the learning of crafts under the supervision of a trained craft master. It is proposed that, besides the non-technical staff, there should be a trained librarian and another officer who will combine the functions of assistant librarian and craft teacher. The running of the Centre on these lines is estimates to cost about Rs. 21,000/- annually. A part of this expenditure, both capital and recurring, is expected to be raised from public donations, as no scheme of national welfare can be a real success without the active support of the public. And, if some organisation (or organisations) interested in Child Culture comes

forward to undertake the completion of this Centre and the responsibility of running it on the lines approved by Government, Government will be prepared to consider such a request favourably. I am glad to The manuaci me metross with announce that the Sir Dorabji Tata Trust has promised a donation of B.30,000/- and the Sir Ratan Tata Charities a donation of B.20,000/-, both as endowment grants for · W/+ ! books.

I have said before that it is a fortunate circumstance that Sardar Vallabhbhai Patel should be an us this evening to lay the Foundation Stone of the Children's Centre. It is not only that his presence here and his participation in this function, give it a special charm and an historic significance. It is that the association of his person with the establishment of a Children's Centre is something in the nature of a symbol. For Sardar Vallabhbhai Patel, despite the burden of years and the heavier burden of public cares, is in a sense the yaungest of our statesman. As one of the makers - - the most determined - - of the new India, he is nearest to children, who, in their study and play, are ever making new worlds of their own. Also because. as a great statesman, he knows that no nation can be great that is not built on the foundations of a strong and happy childhood -- a childhood free and uninhibited, and at the same, disciplined and wise.

I now request Sardar Vallabhbhai Patel to kindly lay the Foundation Stone of the Bala Bhavan.

7.83 20

The state of the s

herely have sink. Then grantee without IN PRODUCT OF SECURITION OF BORRESTAN to a "the second of the bed space. with a way they are made to the state of the and the second second second

FROM. DELH 212

Bombay M.so.

Please pass on this message by hand from Shroff, I.N.S.Delhi to the Editor, Press Trust of India, Bombay

tel, no. 27243 message begins:

We asked Sardar for a farewell message at the Bolghatty palace (Cochin). The message was written out by hand, by Mr. Shankar but given to the local representative of the A.I.R. He promised to give a copy of it to our Ernaukulan effice. I am however sending the message to you in full in case you do not get it from Ernaukulan. I.N.S.Delhi left Cochin soon after 1 p.m. and Ernaukulan must have given to you — a full coverage of Sardar's Departure. Sardar's message said:

On the termination of m brief but most pleasan, visit to the Travancore-Cockin State, I should like to say how grateful I am to His Highness the Raj Framuch whose princely hospitality, kind consideration and constant attention contributed so much to the comfort and enjoyment of or stay, to the Chief Minister and his colleagues whose devotion and loyalty were unmistakebly imprinted on the care and interest which they exhibited in the minutest detail of our programme, to the Press which extended to me their usual kindness and courtesy which make publicative such a pleasure to me and to the ceaple of the State who flocked in thousands to do me the henour of an acquaintance which I warmly appreciated and who demonstrated so much to the cause and organisation which claim our loyalty and support. It was a most pleasant experience which will have an abiding place in my memory. My only regret is that it should have come to me at an age when a repetition of it must remain with me a fond dream.

Nature has spared no pains and withdrawn nothing from this beautiful country which has the honour and privilege of worshipping at the feet, of Mother India washed by the waves of one occur and two seas. It only needs the careful hisbanling of resources, the landing without drut, of the hand to the plough, the planness exploitation of the bounty which Nature has bestowed on it to enable its inhabitants to enjoy all the blessings with which its people are endowed. This requires enlightened a proach to its many problems on the part of its people selfless and united devotion on the part of the public workers and a sustained and vigilant interest on the part of its Govt. is pledged to support the Coyt, and the people of the State in all its well-directed efforts for public weal and my wisit has only sharpened m desire to increase that support still further. I would appeal to the men and women of this well-provisioned State to risc above petty intrigues or communal wrangling and rivalries, to place the good of the public and the country above the interests of the individual and the community and to devote themselves with single-minded devotion and apaseless endeavour to the solution of the many economic and social problems which inevitably claim the attention of a newly born state. Integration without consolidation would represent the collection of bones without flesh and blodd; it will lack that vitality and spark which alone make life possible. I would, therefore, pray that Providence, which has been so generous to this State, endows its people with that wisdom, sobristy and public sonse which alone make democracy a success and achievemento"?

DOG 161430

238

Speech of The Hen. Sardar Vallabhbhai Patel on 16.5.50 on LaW.S. "Dolhi" off the shores of Callout.

at the cutest, Bardar Patel enquired whether the sudience would like him to speak him in Hindi or in English, and on being told they would prefer his speech in English, he speech in English, he speech in English, he speech in the following was with the out he benefit the speech in the speech in English he speech in the speech in English he speech in the speech in English he speech in the speech in English in the speec

Y at himmony privation in an in-The I has very glad to meet you all, but it is meeting Will Seris Grands would under peculiar circumstances, Secting on waters is a rare thing. I would have loved to some to Calicut, for I have not been to Calicut for many years and would have loved to meet all the people there PARK! trail offices in 1 Action 1. Binable - Bina Wand sould have telled to them of their responsibilities under the to the finish Minister and the collection whom in present diremstances, Unfortunately, however, it is not possible while taxward without they and able to the equivile for me to spare any time in sy present tour, If I am able to true transfer transference and near these trains to be well preserve my energy and health, it may perhaps be possible for me to come to Calicut at some other time.

day and you had a difficult time to come house. I am sorry that you were put to trouble. Some of you who come to the ship on sea must have found it a little bit troublesome. However, you must are living on the coast, and coastal people should not find any difficulty in going on waters under any circumstances. Let some of you must have had trouble, and perhaps while going back, may have some trouble also. Therefore, I do not wish to take much of your time.

I am glad to meet you and went so tall you only a
few things, one of which is that it is not good that we are not
able to talk in a dessen language. Her long can we talk in a
language which mether yours nor sine? According to the new Constitution, we have now decided upon a language which should be
seemen all over India and a consession has been made because of
South India; because you have lagged behind, fifteen years' condession has been given at the instance of your landers. But it
is not a very creditable performance, and you should not wait for
a long time but try to pick up the common language of India as
soon as possible. Too knew that, in the Central Government, the
proceedings are conducted in English for the present, but pressure

is being brought upon us more and more by the members coming from different provinces that we should take to Hindi, which is quite natural. Your representatives find it difficult. If you do not learn Hindi seen, you cannot take your proper share in the administration of the country, but as elsewhere, I won't be surprised if your energies are spent more in quarrelling than in constructive activities, because the Congress waters are more rough than & waters of the ocean and the people, after having gained their objective for the present-which they thought six was the final objective—have engaged themselves in mutual quarrals and intrigue and jealousies and running after posts. Although the leaders may engage themselves in such activities, it is for you to keep the leaders there, and the objective of the Congress must be known to every Congressman, you must refuse to be drawn into controversies. You know there are constitutional methods in an organisation like the Congress, where, if anybody is dissatisfied, he has to appeal to the local Congress organisation or the Provincial Congressm organisation or the Central organisation. The final word rests with the Congress WorkingCommittee. If even that gives no satisfaction, then those people have no place in the Congress. So, whether the leader is high or low, or whether he is a common rank and file Congressman, if he goes against the discipline of the Congress, if he advises you to revolt or to join or follow those who create troubles, he must not be listened tegand you should not worry about quarrels of leaders. Congressmen should engage themselves in constructive activities and refuse to be drawn into parties or splits. You can take this message from me to the Congressmen-that it is our duty now that we have get a clean slate to build the future of India in the manner we like, it is their business to engage themselves in building up the organisation. There is no country in the world where there are so many religious, castes, communities, languages and over and above all, a sort of narrow patriotism which is called parochial patriotism. There are people asking for freedom or independence in their own area, or for separate provinces, or asking for one province to join with another province. Certainly people have got an appetite for more and more demands which cannot me met all at

215

Public speech of The Hon'ble Sardar Wallabhbbad Patel at Trivandrum on 14th May 1950.

Your Highness, Chief Minister, Ladies & Gentlemen,

In the first place, I am grateful to you for the warm reception that has been accorded to me during my first visit to this Union. I am also grateful to the Members of the Municipalities that have presented me with addresses of velcome. I do not propose to take any more time about formalities, but I must confess that I am terestally impressed by the orderly manner in which meetings are held and the crowds behave themselves in this Union. It is a rare sight that I have experienced in my travels all over India, and I congratulate you for that. If you will introduce the same spirit which you have introduced in your behaviour and in your orderliness in these meetings, in the administration of the Union, which is now the administration of the people, you will be doing a great service to the Union. As I have said just now, this is my first visit to this Union and I am extremely delighted to meet you all.

I would now like to explain the purpose of my visit.

I have been longing to visit this place for a very long time, because
I have taken a good deal of interest in securing freedom for the
people of the States all over, including Travancore and Cochin. But
unfortunately one thing or another came in the way and I had no
occasion to visit this place till now. I should have come at the
time of the integration of the Union.

(At this time, a portion of the crowd was restless because the loudspeaker was not functioning properly and they could not hear Sardar Patel. Immediately, in a few minutes, it was set right, and Sardar Patel continued)

possible opportunity of visiting this place and to give whatever advice I considered proper to the Hinisters as well as to the people as to their duties and responsibilities in the changed circumstances. You know that the whole country from the north to the south and from east to west has now been consolidated, Apart from the unfortunate partition which has taken place at the time of transfer of power, the rest of India is now most of one solour in the map. There are no differences now between States and States or between States and Provinces. All units that have been formed will prebtically be governed by one uniform set of laws, and in the history of India there has never been such consolidation as it is today. We must realise the full implications of that consolidation, and we must take the full advantage of it. If we take a lesson from past history, we will see that it is our duty to preserve and consolidate this hard-earned freedom, for which many people have made tremendous sacrifices. Yet the sacrifices that we have made in the struggle for freedom are nothing compared to the sacrifices made by many countries for securing freedom or for retaining their own freedom. Almost the whole of Europe today is full of turmoil. People are suffering terribly and free countries are in bondage and are not happy. Almost the whole of Asia is in the same condition. We in this big country are in a fortunate position to have a stable, solid union, which is called the Union of India, and within which there are Unions and old Provinces which are called States. There are also some small States which have been kept still under the Gentral administration for various reasons, but hereafter all will be administered under one common law. You must understand that today after the Union Constitution has been passed, the Centre has a powerful ferce, has a strong army, has made a fairly good beginning in its naval force and a good air force of which India can be proud. All the units are governed more or less by popular representatives. India, for the first time, has got adult franchise

India, for the first time, has got adult franchise under the new Constitution. Adult franchise is a great achievement.

217

It gives the right of a share in the governance of the country to all from the highest to the lowest in the land. That is why we have now what is called a democratic set—up of government. In that, you are free to follow your own religions, your own culture, your sem language and your own trade or your own profession in peace and in harmony. The future of this country is entirely in your own hands. It is up to you to shape it in any manner you like. Mill you have the will, will you have the good fortune, to have history record that you utilised this opportunity for the well-being of the people, to whom Providence has entrusted the future?

From what little I know of this Union. I have found two or three things to which I wish to draw your attention and about which you have specially to think hard and consider what you should do. I have noticed that some youngmen in this Union have gone astray and believe that a few bombs thrown , or a few murders committed or a few descrities committed would bring heaven on earth. They are living in a fool's paradise, and if they pursue that mad career, it will be lead to their ruin. It will do them no good, nor can they achieve the false ideal that they have set before themselves. This is a country inherently religious-minded and peace-loving. It does not like disturbances, or discentent, but prefers to live in peace. Past history has shown that, and in future also it will like to live in peace. I wish to give a warning to these misguided youngmen. The Central Government today is strong enough to deal with any situation that a set of criminally-minded people would like to create in this land. They shall have no quarter if they pursued their mad career. They are our kith and kin and they are our own people and nebody likes to deal harshly with our own people, but the place of a lunatio is in the asylum. He should have no freedom, because freedom does him harm and his freedom harms the society. Therefore I have appealed in Cochin, and I appeal to

those youngmen here as well, to listen to me and to remember that it is not easy to bring about a bloody revolution in this country. We wan't permit it. It would be criminal on our part if we do not protect the society from the bloodiest picture which they imagine can be brought about in this land. They think that heaven has fallen from the skies in China, and it may as well come here. It will take years of hard work to build up a really happy China. You have to go and see what China really is and what sacrifices the have made. Now millions of youngmen have been ruined, how houses It is not easy to create similar conditions here, but if you want to create a revolution, why should you have a bloody revolution when we can do what we like peacefully? It is up to you to create any situation you like by a change of ideas. Educate your people, but to coerce them, to force them or to influence them by vielence is a crime, which cannot be telerated by a civilised government. Therefore, listen to me carefully and change your ways. I could understand the reasoning of youngmen who in days of British rule thought they were fighting for freedom, that they wanted to get out of autogratic rule. There was some reasoning behind it, although the Congress never followed that path. Its ideal was peace and non-violence. Its means were peace and nonviolence, and you some youngmen were not satisfied with peaceful they took to violence, but we could then understand their motive. But i cannot understand the motive of those who take to violence now when it is open to the people to do what they like peacefully. Nobody comes incommon in your way. That is one thing I wanted to tell you -that is, not only to humguous thos youngmen, but to all of you, friends to remember that to be indifferent to the growth of a small disease of this type which is capable of corroding the body politic of the society, is a dangerous crime, and therefore all of you should be careful to help and co-operate with the Government in suppressing that kind of disease. Otherwise, it will ruin all of us. I am saying this because there are only two or three places in India where this disease is trying

213

to take root; that is Malabar, andhra and Bengal. In other places, it has practically disappeared. Inthese places, it is being controlled, and it is bound to disappear, but to remove it by force is not a good thing for a popular Covernment, and if you help us, if you co-operate with us, it would not be necessary to use force. When I hear that some youngmen have gone underground, what is that underground cell? Where do they gon, unless some of you me give them pretection or unless some of you refuse to give information, Even if these people are your own relations, you must disown them and tell them that this is the way to ruin not only of themselves but of the society as a whole.

Telenganta

The other thing in this Union which has pained me considerably is the cry which I heard for the first time "Hinduism in danger". Where is it in danger? Are the Hindus being coerced? Are they being forced or berrowised? Are they being oppressed, or is there any obstruction in the way of their following their own religion or way of life? What is this? Why create an imaginery picture of fright? Is it in order to create splits or groups, to eapture votes? Can you capture power by that method? No, my friends, you are much mistaken. That is the wrong way. If you try to capture power by that method, there will soon be others who will pull you down very quickly. After all, the present representatives of the people in Government are representatives of an organisation which has deep foundations, very solid foundations. Sometimes, it may appear to be supe we or not very strong. But an organisation that has fought for several years and won freeds m must have very deep roots. I have said before, and I repeat it now, that parties may grow like mushrooms and multiply, but when the Congress steamroller begins to function, it will level down all parties, You will not find any party capable of standing against it for some time to come, unless that party presents a better picture of sacrifices and service. A few people from the Congress may go out and form a separate party, but a branch is only a branch. It cannot have the stem or the roots, and will dry out. It cannot

stand a whirlwind, but the solid tree of the Congress which has very deep roots can withstand anything, and it is in the interests of the country that this organisation, which has brought about freedom, must be strengthened and consolidated till the country is able to take its proper place in the comity of nations of the world. Do not disturb it, for frequent changes in popular Ministries is a curse of democracy. The Ministries must have an eppertunity for working out their programme for a steady period. so that they can do good to the people. If I plant a tree and if some other man who is my neighbour comes and uproots it, so that he can plant another, the one that I had planted is dried up. But the one that is planted in its place will take time to take its roots. In the meantime, another man may come and uproot it. You will never do any solid work if you go on changing people who are saddled with responsibility. It is possible that they may make mistakes, but are not human beings liable to mistakes? Who is infallible? Therefore, we must induce them to correct themselves if there is a mistake. After all, it was for this reason that we introduced in the Constitution, in spite of the reluctance of the representatives of several States and Unions, a classe providing for the Central Covernment to keep control by superintendence, direction and guidance to these representatives in the Unions. Because we knew that they won't easily be allowed to govern well; because we are making a beginning in democracy, and & beginning in democracy with adult franchise, for people who had no experience of democracy and are likely to commit serious mistakes. Perhaps people are more highly educated in this Union than any other part of the country. You are expected to understand things botter and more quickly. With this hope, therefore, I gave an open assurance in the Constituent Assembly Mandadius, when the Constitution was passed, that these safeguards of superintendence, direction and control are not meant for the people of Gochin, Travancere or Mysore, because they are advanced States and had some form of diluted democracy in spite

ETT

of autochacy. There was at least some show of it, but there we are many Unions in India where there was nothing what is called a Municipality or a Local Board or a Village Panchayat, in fact with no form of local institutions. In many Unions, there are big mannious described samindars and jagirdars who wield power, with no village organisation or any sort of autonomy. You, on the other hand, had some institutions which had some form of autonomy and you have a high degree of education. Therefore, we expect you to set a better example to other Unions, and I have every confidence that you will easily understand what I am saying and will not fall into the temptation of making changes by false cries or false slogans. A few people dissatisfied and frustrated at not being able to central the Ministers according to their choice like to go out and form a new party. What will they do? There are many in the Assembly parties in many unions as well as in provinces who want to control the officers. A must dangerous thing in democracy is to interfere with the administration or the services. Nobody should interfere with the services. The services should be allowed to serve, and if they misbehave, the proper course is to approach the authority by application or representation and get their wrongs redressed. It would not be difficult, but if every individual wase to interfere in the administration and by virtue of his position as a member of the Assembly or as a member of the Congress, expects the efficers to listen to him, then he is not fit to held that position, nor is the efficer likely to do any good work. That is the first lesson in democracy: the officers should have freedom to do their work homestly and according to their own conscience. Therefore, I wish to ask the people also not to pester either the members of the Assembly or the Congress workers who hold influence to directly interfere to obtain the results that they want. That is a lesson of democracy, but it is not meant probably for the large number of people who hardly take interest in such matters. They, however, grereise their vote once when the elections come. Elections are still far off. They may take at least a year more, and it is quite right Miningamphacelan for people to form parties and make

preparations from now on, if there are proper parties to be formed on proper programmes. But the most dangerous thing is to form a party or to lay down a programme on a religious basis. The days of religious bigotry are gone in this world. It will not be for the good of the country. Now that the country has got its freedom, for anybody to say that any religion is in danger is a dangerous precedent to set up. The Christians are a minority community in India, but their leaders, who had the homour to represent the or nity in the Assembly, were the first to approach me and to persuade me to believe that the Christians needed no protection and I congretulated them. They set a nice example for other minorities, and eventually all minorities followed their example. From the Constitution we have removed all protection of any sort for the minorities except to the Scheduled Castes; people who say that Hinduism is in danger do not realise this. The Hindus have not realised that Hinduis is in danger because the Hindus have not followed Hinduism. They take the wrong name. It was Gamdhiji who first said that untouchability is a blot on Hindu religion and that it should be removed. But you know there were Hindus who spared no efforts to malign him, to persecute him, to attack him and you may not have forgotten the incident/when he was carrying on the campaign for the removal of untouchability , a bomb was thrown on him in the Poona Municipality. He saved Hinduism when he fasted against the partition of the Rindu community aimed by the British Government, and if we have one partition today, for which we had to pay very heavily, we would have had another partition which would have ruined the country and we would not have been free but for his fast. He was one Hindu who followed Hinduism and saved Hinduism. There have been several instances when such organ have been raised in the past, but there is something in Hinduism which is good. If there is no subtratum of goodness in any religion, it would not have survived. Therefore, there is goodness in all religious, and if we follow the goodness in any religion, there is no danger. But if there is a mixed motive that religion is to be exploited for political or other ends, then surely that religion is in danger. Therefore, I warn you all

against any such false cry being raised. We have paid enough for such things in this land. For God's sake, do not do anything of the bind any more. Let us, Hindus, Christians, Pareses, Jess and Russalmans who are here live in peace and harmony and let us try te be happy. Let us conserve what in good in the society and let us build for the future well-being of the society.

I have not only come here to fulfil my obligations or my promise which was given to His Highness and to the Ministry. but also to see how this new experiment, this new beginning in demogracy is working in this area. I have my embition of seeing India, which has been consolidated geographically, functioning on a uniform pace all over India. India must stand solidly against all sorts of attacks, either internal or external, and it must now try to use all its energies for the removal of the miseries of the people. The poverty of the people is the first thing to be tackled. It cannot be tackled unless we stand together, unite and consolidate our forces and do not quarrel. Therefore, to the friends who feel that any such danger to any community or to any religion exists, I would appeal to them to think twice before they take any such step. There is no such danger. Now this union has been formed. His Highness has parted with power. When we persuaded him, I am happy to say that at this age, you have a young prince who preferred the well-being of his State to keeping his own powers. All princes have done that, and for a young prince at his age to sacrifice his throne and power is not a small thing. If we were to leave our own house, we would have to think several times. You must appreciate the sacrifices that have been made and make the best use of them. Do not abuse it. Now a trust has been made of a certain amount for the religious endowment. It is a duty to be fulfilled by a Ruler who had for generations ruled this area to see that his religious scruples are

respected and that his religious obligations are not affected. So also, it is the duty of those who persuaded him to part with power to see that certain moral obligations are fulfilled: So, when the covenant was signed, we agreed to a condition that a certain amount shallim be set apart for the religious endowment of the Hindus' temples, but we made it a condition also that this money is not to be used for any other purpose, but only for certain purposes mentioned in the Trust. It will not be allowed to be abused. It would be a criminal thing to allow Trust money to be abused. We have an obligation and will not allow it.

We have now got the power of superintendence, direction and control. Therefore, do not find fault with the Ministry. Do not find fault with the Assembly Party. It is an obligation which we have taken as a serious one. If we had thought think or sensed that there was the remotest chance of Hinduism being in danger, we as Hindus would have thought twice before taking such undertakings. So, I feel sorry that our friends have not understood the thing. When the covenant was signed, when the ordinance was passed, it was all done unanimously. Nobody in the Union took exception to it. Why is it that they take exception when the ordinance is sought to be replaced by legislation? It is a necessary corollary that an ordinance is replaced by legislation when its period applies. The party that passes the legislation comprises of Hindus. May should objection be taken? All of you should understand this thing; when a false cry is raised, you must not be led away. This is what I wanted particularly to impress upon you.

Another problem that I want to present for your, constituention is that you should not think that, because freedom has been won, we have finished our basiness. Really, it is the beginning. We have now formed Unions of States. We have now taken another step for bringing about uniformity so far as the financial

side is concerned. We have also taken over the army from the States for uniformity of our defence forces also. You will soon have the Indian Penal Code and the Criminal Procedure Code governing you. You will have practically all the principal logislations passed by the Centre applicable to you. Perhaps one of the things which frightens some of the Hindus is the Hindu Code, which naturally has created apprehension in the minds of many Hindus. Up to now, the Hindus have been governed by Hindu Law which is not codified, but the Hindu society has always adjusted itself to changing conditions. That is why Hinduism has survived. Many people have come to this land, persecuted for the sake of religion. The Jews have come, the Parsees have come. They have all settled down here and have made India their home. They have a sense of gratefulness, for Hindus have treated them as their own, as their welcome guests. The Hindu society has kept its doors wide open; it has adjusted itself to changing conditions and has therefore survived. But this Code introduces innovations which affect them seriously and therefore there is natural opposition. In the Centre also, there is a majority of Hindus in the Parliament and they will take proper account of the position. They will see that the new fode is so framed as not to inflict a terrific shock on the society. There will only be so much burden as it can lift. The law of inheritance here is quite different from that prevailing in other parts of the country, in Bombay, in U.P., or perhaps in Madras also. We will have to consider whether such a violent change willnot upset the society in this area. So, the Sone Hindus might feel that Hinduism is in danger according to their conseption. I can understand it. But if you do not get a few places in the Hindu Endowments Board, surely Hinduism is not in danger. You have other Hindus in their place. There won't be Muslims. How then can there be danger? Your Chief Minister who is a Hindu is there and your Raj Pranakh is there. If he feels that there is any such danger, he will certainly import draw our attention to such a danger which would affect the society, for which he is also a trustee. In that

wider sense, he is the greatest trustee in this area. His duty would be to bring such things to our notice. Therefore, there is no such fear. There are apprehensions amongst Hindus on this side about the kindu Code, and we shall consider them certainly, so that there may be no violent change in the order of your social system. Then, I would suggest to you not to be indifferent and not to think that everything is now over, because we have not our freed, Freedom from foreign domination is a beginning for a greater and heavier responsibility of constructing the structure of the system in the manner we like. It should be our aim to build our society in such a manner that everybody will be happy. I would appeal to you to create an atmosphere of goodwill and harmony and live in peace. Learn to live in peace and learn to love your neighbour, whether he is a Christian, Moslem or anybody else. Let us follow our own religious according to our own teness and conscience faithfully. It is not numbers that count. It is the solid substance that counts, and there is plenty of it in all religious. Why should we be frightened. The next thing that I want to tell you is that we have one organisation that have got freedom for us. It is up to you to strengthen it, to support it, nourish it, and when the time comes, to see that it is able to hold strongly against all onslaughts. If you remember this, you will not come to grief. If, on the other hand, you forget this and allow yourself to be led by slogans and intrigues and diques, then you will lose what you have got and will not see happiness. After all, autocracy is an easy thing. Three man was to rule will certainly mean good governance, although the may be unpopular, and it can do tremendous good also. But subservery which requires the goodwill of all if one wants to govern, then it is a difficult proposition. A Minister should be able to please several people if he wants to carry out his programme. If he is unable to please them, he cann do anything. Then who would suffer? Eventually, we would s

because the work won't be done. Therefore, let us not have the ambition of the luxury of having many parties and many cliques, but let us begin on the solid foundations of unity and harmony. A time will come when the ecuatry is consolidated, when it has mourished its strength and when it is able to stand on its own legs and new parties will be formed. But we must learn to walk before we begin to run. Otherwise, there is the danger of falling down.

ones again, I would express my gratefulness to you for the kind welcome that you have given to me and for the patience with which you have heard me. As I said in Cochin, it is not easy for an old man like me to come again such a long distance, though I would love to do so and see you, because this is a place where I have expectations of a good precedent being set up for the other Unions all over India. I have great hopes on you. If I week not be able to come again, planse keep in mind what I have told you and always remember that the advice I have given you, if followed, will give you credit, prestige and happiness. May God give you the good sense to follow these. At

Speech of the Hon'ble Sardar Vallabhbhai Petel et Ernakulam at the Public Maidan on 13.5.50.

Your Highness, Chief Minister, Ladies & Gentlemen,

Tocome for the first time to this beautiful part of formula our country. There are few spots where nature has been so mereiful as in this part. It is, in fact, from the point of view of nature, a heaven on earth, and you are fortunate in being the residents of this beautiful place. But it is not always appreciated by the people who have got nature's gifts. People who go from outside feel their real value.

In the first place, you would like to know and I have heard some speculations also as the why I have come here. I had given a solemn promise at the time of integration of the two States to his Highness and to the Ministry as also to the Maharaja of Cochin that at the time of integration I would be present myself and perform the ceremony. Unfortunately, my health would not permit me, and the Doctors gave me an injunction that I should not take the risk.

So, I asked for being excused and they were generous enough to grant me that permission of being absent at that time on condition that some time in the near future I would visit this place. I had that heavy burden of responsibility of keeping that undertaking on my shoulders and I am thankful to God that I have been able to discharge that obligation.

There is nexternation of the states another reason why I was anxious to come here. I have heard a lot of things about Cochin, Travancore and Mysore States. These are very advanced States in India, compared to other Indian States. While I have several times been to Mysore and shared their difficulties, sorrows and joys alike, I had never been to Travancore or Cochin, although from a distance I had always been in touch with the nationalist movement in these States.

I should have liked to take to you in your own language.
Unfortunately, I cannot do so. As language is a vehicle of thoughts

of the heart, there is a superficial barrier between you and me.

I forgot to tell you that His Highness the Maharaja of Cochin has been allowed to be absent today from this meeting because it is his prayer time and I would not like to interfere or interrupt him in his prayer. But although he is absent, you may take it that his heart is here. and there is nothing which I have to tell him or His Highness the Raj Pramukh. What I have to say is to you and not to the Princes, because they have fulfilled their obligations. They will not in any way interfere with the management of the administration of the affairs of the State in any matter, but they will watch with sympathy and also with care the well-being of you all and give you their blessings. It is a great thing. Whoever, a few years before or even at the time of the transfer of power from foreign hands to us, ever thought that there would be such quick transformation in India. so as to change the entire map of the country. It is a great thing, of which we of the present generation may not have full appreciation, but the future history will record its appreciation in full measure. Some of the friends who met me this morning in the meeting of the workers told me that we have achieved all this without much trouble, without much exertion and without facing much difficulty. We have not got the full measure of appreciation. To some extent, it is true. We have achieved our freedom with the minimum of sacrifice. Countries which have askinged gained their freedom or retained their freedom if have made colossal sacrifices. We have not, compared to them, anything

sagreise that franchise in the proper manner, they are likely to do

much to our credit, but we had in this land a great saint, a great benefactor of humanity who taught us to gain our freedom with the minimum of sacrifice, and we have had, therefore, practically no bloodshed. We practically gained our objective without any drop of blood being shed for gaining such & trigh objective. Now, what did we do? As soon as we got our freedom, we were sinful enough to take his own life and put him to death by a cowardly and unforgivable for which the whole world got a tremendous shock. To him, it was the highest achievement of his life, but to us, it was a great tragedy, for which we must perpetually hang our head in shame. But we must not forget him because although he had to go in tife, he had come to us, and it was a good thing that, before he departed from us, he gave us freedom and saw the freedom of his country when he was alive. It was a great achievement. Now, he has left us a legacy, for which we must be fit. We got power in our own hands. Freedom from foreign domination has been achieved, and freedom has come to us to manage our own affairs in the manner we like. Now, to make the future of this country or to mar it rests entirely on us. There is nothing between us and the future of our country that will obstruct our progress. How shall we do it? How shall we fulfil our obligations? Shall we be satisfied with the achievement of freedom? If that is so, then we will have no sweetness in life. We will not enjoy the fruits of freedom till we know what real freedom is. Freedom from foreign domination is not the real freedom. We have tobuild the edifice of Swaraj now. We have to begin from the beginning. We have now only removed the obstacles that stood in our way, but the future of our country has to be built from the bottom. Therefore, when people feel despondent, desperate or frustrated or when they feel that we must get the fruits of freedom now that we have got it, we must enjoy it, then I feel they have not understood either what we have achieved or what we have to do.

Now you have got adult franchise, that is every adult has got a right to vote. It is a great thing, and yet at the same time it is a great handicap, because unless people manner, are educated enough to exercise that franchise in the proper manner, they are likely to do

There are enough people to see it more especially here in Malabar. I do not know h be separated from Malabar or throwing a few bombs or by c China and will come to us. trees build its ow by committing a few murders

more harm than good. It is, herefore, our duty to educate the people on the right lines. We have ot done so so far and have to do it now. ucate the people on the wrong lines. We South India in some parts, particularly far it is in Cochin, but Cochin cannot erala. A few young men think that by mitting a few mirders or dacoities, this land of ours can be changed to a heaven, which they think has come in will take a long, long time for China to untry. Ther is a considerable amount of devastation. Mutual slaughter and destruction aid no good to any country. It will never do good to India. Ind is a country of many castes, many creeds, many religions and many cult es, and yet there is one culture. one nation. There is unity, a t mendous unity, in the great diversity of this land. There were six hu red princes . The number of princes in the whole world cannot be conted with the number of princes in our own land, but how quickly has they understood their place in the changed set-up of India. I ll we do the same and understand our own responsibility as to what is ar position in the new set-up? Why doyoung-men go the wrong way? hy should they brutally murder the Police? Who is that Policeman who has been murdered. If a Police officer or Police constable is murde d, is he not under the changed circumstances our own servant. Doe he represent an autocratic ruler? Is he not our own? If we have not ealised it, we have not realised what we have achieved. Thatmax To y, the Policeman is supposed to be the best servant of the land in ich we live. If he is not discharging his duties properly, he star to instant dismissal. Why should we kill him? Fam A few young no think that revolution can be created dacoities. We have fortunately established a strong Central ovt. which cannot be so easily removed by such activities. India is ot China. We have a strong force, a strong power, me a strong administration, a strong service, but that strength

> young an must have enbugh seems to not brate alema-

is not to be used against our own people, in suppressing our own people. We are not going to do that, unless we are forced. If we are forced, we shall spare nothing. I must tell them that we have a responsibility to govern; whether it is Kerala or whether it is Kashmir, whether it is Kathiawar or Cutch or whether it is Assam or Manipur borders, India is one solid block, which was never in at existence in the whole history of India, and we have made that unified India to preserve it and to build on At an adifice which is our dream, to build a magnificent edifice which would command the respect of the world and where all of you would share its prosperity and its joys. I wish to appeal to those youngmen who are going on the wrong way. India will stand as a solid block against any invasion of outside ideology, and it will not permit the incursions of ideologies which do not suit this land. People who were persecuted for their religions/came to this country and settled down here. They made their home here, and between their Church and the Palace, there is only a wall. There is the Christian Church, there is then t'e Palace and there is the synogogue. This is a land of tolerance and that is what Gandhiji also taught us till his dying day. Shall we forget his teachings? You want levelling up of wealth. We also want that, but is there wealth enough to level or do you want to do the levelling up of poverty? Distribution of poverty will not do us good. We have not got freedom for distributing poverty. We have to create wealth, and wealth will be created not by idle hands. Quickness of brain alone is not enough. We must have unison of the brain and the hand. Our education has been faulty. We have turned out many idle, educated youngmen in the past. How many people in the Union are without employment, and how will Government provide them with employment by empooying them as Government servants. Youngmen must not look forward to getting employment in the Governmental administration only. They have and will always have their share of it. Brilliant youngmen will always go at the top, but the normal ordinary youngman must have enough scope to use his hands along with his brains, and not brain alone. Many

coursey which It point to be the future Language

I do not wish to criticise the air editors of newspapers here, because
I have not read their newspapers here. I do not know the language.
Therefore, not with the intention of criticising them, but with the
general experience that I have got, I shall give them a general advice,
both to the editors and the readers — because there can be no newspapers if there were no readers. Just as the newspapers have to keep
up a certain standard of decency, the readers have also the responsibility
of not reading rage.

We have started the experience of running a democracy in a very infant stage. We have united two States now; Travancore and Cochin Union is of recent origin. Some people say they want Travancore and Cochin to be united with Madras Presidency. A wery good idea. I want all the provinces and all the States to be united to the Centre. Do not have the idea that you are separate. Let us digest Cochin and Travancore Union first. Some people want Aikya Kerala. They do not know the tremendous problems that would be freated by such changes without thought, without plan or without consideration. It is not easy. Some people say they want provinces on a linguistic basis and ask for separation of Andhra, for separation of Tamil and of Aikya Kerala. What will be its effect in the north or in the west, nobody cares to know. It is not the way to build a nation. You must have faith in the people in whom you have entrusted the destiny of the nation, that they will do the right thing at the right moment. After all, what is our concern except the well-being of you all. That is what we have worked for all our lives, and that is what we live for. Therefore, the best way for you is not to start these new-fangled ideas or visions which are incapable of fulfilment in the near future. Just digest what you have got at present, and when you will get more appetite, you will get more wow food. Me You should not feel that werkerman texturbed you belong to Travancore or to Cochin, but to the Union. You have to develop that sense of unity. Therefore, I say the first think that you have to do is to try to learn the language of the country which is going to be the future language of the country according to the constitution, if you want your proper place. Otherwise, you must lag behind. If you do not want to lag

behind, start from now to learn the language of the country and appreciate the concession that has been made for you by the country; fartific the country; fartific the country and the country; fartific the country; fartific the country and the country and if you can assure the Centre "Why should we wait for fifteen years, we shall do it in five years", what a great change would it make? If you do not do that, for the present there is unemployment and there will be greater unemployment.

You are now being absorbed in many places in the Centre, in the Provinces, wherever there is a possibility of employment. There are many young men with brilliant brains in this part of the land. They go anywhere in the country and they make their mark. It will be so in the future also, but the future will rest with the people if they realise that this is the first thing they have to do.

The second thing, as I have told you, is that the future of the nation depends upon its capacity to put forth its maximum effort to produce more wealth. If xxxxxxxxxxxxxxxxxxx You know-at least, you must know -- that a great deal or the whole of Madras is largely dependent for its food on the outside world. It does not produce enough to eat. You live on rice. There is not enough rice for you here. There is not enough land also. This is perhaps the most thickly populated area in the country. Population kan is in itself a great dayantage, and yet it is a great burden. Therefore, if we want to make the best use of our population, which is one-fifth of the world, we have now got an opportunity of building up this land according to our plans. Fortunately, the resources of this country have not been exploited to the full. There is enough richness and wealth and resources in this land. If we can make the best use of our resources, this country would be one of the richest country in the world. After all, we have been governed for centuries by foreign rulers, and we have lost the initiative. We must regain our initiative. Here, what a beautiful harbour you have got? Threefourths of India with a big ocean surrounding it, has got a coast

line which is not guarded. The coastal trade is not in our hands. Coastal shipping is not fully in our hands, and yet we have unemployment. because we have not used our resources. Here, we have laid the foundation of a big naval school. Students from all over India will come and learn the art of defending our coastline. Up till now, our coasts were safe, because of the British Navy. In the mercantile marine. we keek are nothing up to now except boats to eatch fish. Recently, we have started a ship-building yard at vizag. We are completing a few ships, which are not economical, No country has built its shipping economically. It has always been started or financed by the State. If we want to have a good mercantile marine which is a necessary part of the Navy, then we must have good training. Therefore, we have started a training school here. You have the advantage of seeing the place. You get some employment here also, but to the youngmen who waste their lands, the best thing is to start a co-operative enterprise. They have technical skill in their brains. They can use their hands. If, instead of wasting their energies, they try to build up, then there is plenty of scope and they will be supported in their enterprise both by the Government here and by the Centre. But if they go the wrong way, then there is no help, and to you I must appeal that before the disease gets deeper, it you do not wake up, then it will affect you in such a way that you will repent. You must, therefore, co-operate with the administration in removing this canker from the body politic of your Union. There must be no

this canker from the body politic of your Union. There must be no such youngmen here who will mar the fruits of freedom which has been won with the sacrifices of men; they will have to be clapped, but if they want freedom, it is in their own hands. You must not allow any youngman to go astray, who in the respectable name of Communism wants to commit dacoity or mirder. They do not deserve that name. If have seen several youngmen in these parts described as communists. They are not communists in the sense and do not deserve a political ephithet they bear. Communism is of a different variety, and the communism that is practised here in India is of a different variety. There is communism in England, but they do not commit dacoities or

mirders. They do not take to the disruption of communications. sed manner. Don't start the here If one or two rails are removed from the railway line, become tixes the safety of many lives are jeopardised and travel by train by persons who never had any idea of the risk they are running becomes unsafe. Can we allow such things? You cannot expect the Police to be everywhere all over the line over the entire length and breadth of India. Nor can we allow our communications to be disturbed. If we allow communications to be disturbed. then what will be our reputation outside. Apart from the fact that their commerce would suffer, we would be dubbed as people unfit for freedom. Let them try and convert the people in adult franchise. They can get votes, but if they persist in their ways, they will have no place at the polls also. There are people who say that communists should be banned. They say so out of sheer disgust. We have not done it except in some provinces, such as Madras. We do not do it all over India, for we still want to allow them a free field if they want to take to constitutional methods. The responsibility is not only on the Police, but on you also. If you find such people amongst you, even if they are your near relations, it is your duty either to convert them, or to inform the administration and hand over them, so that we will all be protected. That is a special message to you from me, because I find here a lot of things about communism. You may not feel so much about it at present, but if you allow it to grow, then it is possible they will make it difficult for you to deal with it.

Tou have now one organisation which has brought freedom.
That is known as the Congress. All of you showed considerable
sympathy and contributed to the growth of it. Now when you have got
freedom, it is for you to strengthen it more and not to think that
it is no more useful now. You may feel that there may be other
parties. If there are other parties which are likely to handle
power better than what is being done at present, by all means do so.

If you think your Minister is means a stray, so to those, means do so.

m can change them. We have got

But do it decently and in a civilised manner. Don't start the hare of communism or communalism. Do not start things that have been discredited or things for which we have had to pay very dearly. Do not leave the path of tolerance. When I heard some people say "Hinduis in dangers. I feared whether Hindus have disappeared. or what has happened to them. Gandhiji who had a great reputation all over the world was a Hindu, and yet im it is a Hindu who killed him. Is that Hinduism? Can you preserve Hinduism by that process? How many castes and creeds and sub-castes there are amongst Hindus. Even amongst Christians, how many castes and sub-castes are there amongst them? Does Christianity teach that? Let us follow our own religion, and if we followed it properly, then nothing is in danger. Let us live as decent human beings. Ne religion will prosper if it is based on intolerance. No nation will prosper unless that nation has charafter and vitality, character and strength. Outward forms of religion will not strengthen a nation. While outside forms are good in their own way, the internal living thing which is in a human being, must be kept pure. Do not think that Hinduism is in danger. Hinduism can never be in danger in India. We are in a vast majority, kuckxmounxkkak Have we not produced men of religion in the past who have spread the culture all over India. What did Shankaracharya do? When he died, how young he was, but he did not raise the cry that Hinduism was in danger. Religion is a matter between a man and his maker, but for a decent human being, ordinary civic sense and ordinary rules of decency must not be forgotten for that is the duty of the citizen, and as a citizen he must discharge his duties. If you forget your citizenship and talk of religion, that is a cloak. Therefore when I hear of some people talking about Hinduism in danger, I feel they are going the wrong way. Do not take to scare-mongering for selfish purposes. Do not use wrong methods for catching votes or forming parties. It is a very dangerous game. After all, we mean want to serve our own people. If you think your Ministry is going astray, go to them, speak to them, persuade them; if you like you can change them. We have got

at the Centre the power of superintendence, direction and control, because we knew it was a good thing. Although there was a lot of resentment from the Ministers of Mysore, Travancore, etc., we told them that it is in their own interests, and that they will ask for it afterwards and will get it; so let me put it in the Constitution now I am not going to interfere inyour business, if you keep your people contented. In an infant democracy, you will see that the Ministry means getting the right of committing mistakes. You have got that right now. Commit mistakes, but let me see that you do not fall in the ditch, so that we may have to pick my you up. When you are going to fall, we shall have to hold your hands. That is a safeguard which we got deliberately. We must not be forced to use that. I am glad to say that the Ministers in these three States have not forced us to take that course, but the moral responsibility is yours. If the Central Govt. is invoked, to that extent you are discredited. You must be the guardian of your Ministry. After all, what are they. They are your servants. You have selected them, and you have the choice of bemoving them. But people who change their ministry every other day do not know how to govern. They do not know the art of democracy. The Ministers are also human beings and will commit mistakes. Your business is to help them, create an atmosphere of unity and harmony in this Union. As I have appealed to the workers, let me appeal to you: Let us not create an atmosphere in which people begin to feel that there is something wrong somewhere. Let us create an atmosphere in which there is a fund of goodwill, a fund of harmony and a good deal of tolerance. It is only a couple of years kkak since we got our freedom. Our resources have been exploited for centuries. The country has been bled white by exploitation and we have to put blood in the veins. It is a difficult process and all must help in it and not create difficulties. I hope and trust that you will remember what I have said and will think over it. It is not easy for an old man of 75 to take such a long trip. I would love to meet you again, but it is not easy. If I don't come, then do not forget what I have said.

Let it not be said that we did not deserve freedom. Let us build our strength and our reputation from this Union at the build, of the map of India. As we stand here, these are the legs of India. If the legs are shaky, then the whole edifice will topple down. Let other Unions learn from you. I wish you godspeed and a good administration.

I must, in the end, express my gratefulness to the organisations that have presented these addresses to me. At my age I do not med addresses. You know me I know you aim. Must in enough for both of us. But more know british have taken to have been the hardle of expressing their lare for me and I am leafly frateful to them.

sh of the Hentble Sardar Vallabhbhai Patel at Ernskul

Public Haidan on 13.5.50.

to real value.

Perhaps the Largest number of people tradein this found to legislation Your Highness, Chief Minister, Ledies & Gentlemen, then gives divine for the first time to this beautiful part of the ing our country. There are few spots where nature has been so makes in this part. It is, in fact, from the point of view of I sa heaven on earth, and you are fortunate in being the residents of may this beautiful place. But it is not always appreciated by the pe in who have got nature's gifts. People who go from sutside feel their

the state of my mind because of taken

In the first place, you would like to knowheard some speculations also—as:to why I have come here. I had given a sole n promise at the time of integration of the two States to His Highness and to the Ministry as also to the Maharuja of Sochin that at the time of integration I would be present myself and perform the ceremony. Unfortunately, my health would not permit me, and the Doctors gave me an injunction that I should not take the risk. So, I asked for being excused and they were generous enough to grant me that permission of being absent at that time on condition that some time in the near future I would visit this place. I had that heavy burden of responsibility of keeping that undertaking on my shoulders and I am thankful to God that I have been able to discharge or that obligations of the popular of promy from Landon hands to my

There is meconomically character another reason why I w anxious to some here. I have heard a lot of things about Cochin, Travancore and Mysore States. These are very advanced States in ... India, compared to other Indian States. While I have several tim been to Mysore and shared their difficulties, sorrows and joys alike I had never been to Travencore or Gothing although from a distance I had always been in touch with the nationalist movement in these the States. .... of appreciation. To some extent, it is true.

I should have liked to take to you in your own ore is a superficial barrier betw

I forgot to tell you that His Highness the Maharaja of Cochin has been allowed to be absent today from this meeting because it is his prayer time and I would not like to interfere or interrupt him in his prayer, But although he is absent, you may take it that his heart is here and there is nothing which I have to tell him or His Highness the Raj Pramukh. What I have to say is to you and not to the Princes, because they have fulfilled their obligations. They will not in any way interfere with the management of the administration of the affairs of the State in any matter, but they will watch with sympathy and also with care the wall-being of you all and give you their blessings. It is a great thing. Whoever, a few years before or even at the time of the transfer of power from foreign hands to us, ever thought that there would be such quick transformation in India, so as to change the entire map of the country. It is a great thing, of which we of the present generation may not have full appreciation, but the future history will record its appreciation in full measure. Some of the friends who met me this morning in the meeting of the workers told me that we have achieved all this without much trouble, without much exertion and without facing much difficulty. We have not got the full measure of appreciation. To some extent, it is true. We have achieved our freedom with the minimum of sacrifice. Countries which have makinged gained their freedom or retained their freedom have made colossal sacrifices. We have not, compared to them, anything

much to our credit, but we had in this land a great saint, a great benefactor of husanity who taught us to gain our freedom with the minimum of sacrifice, and we have had, therefore, practically no bloodshed. We practically gained our objective without any drop of blood being shed for gaining such a high objective. Now, what did we do? As soon as we got our freedom, we were sinful enough to take his own life and put him to death by a community and unforgivable act, for which the whole world got a tremendous shock. To him, it was the highest achievement of his life, but to us, it was a great in tracedy, for which we must perpetually hang our head in shame. But we must not forget him because although he had to go in life, he had come to us, and it was a good thing that, before he departed from us, he gave us freedom and say the freedom of his country when he was alive. It was a great achievement. Now, he has left us a legary, for which we must be fit. We got power in our own hands. Freedom from foreign domination has been achieved, and freedom has come to us to manage our own affairs in the manner we like. Now, to make the future of this country or to mar it rests entirely on us. There is nothing between us and the future of our country that will obstruct our progress. How shall we do it? How shall we fulfil our chligations? Shall we be satisfied with the achievement of freedom? If that is so. then we will have no sweetness in life. We will not enjoy the fruits of freedom till we know what real freedom is. Freedom from foreign demination is not the real freedom. We have tobuild the edifice of Swaraj now. We have to begin from the beginning. We have now only removed the obstacles that stood in our way, but the future of our country has to be built from the bettern. Therefore, when people feel descendent, desperate or frustrated or when they feel that we must get the fruits of freedem, now that we have got it, we must enjoy it, then I feel they have not understood either what we have achieved or

Now you have got shift franchise, that is every shift has got a right to vote. It is a great thing, and yet at the same time it is a great handisap, because unless people mantet are educated enough to exercise that franchise in the proper manner, they are likely to do

more harm then good. It is, therefore, our duty to educate the people on the right lines. We have not done so so far and have to do it now, There are enough people to educate the people on the wrong lines. We see it more especially here in South India in some parts, particularly in Malabar. I do not know how far it is in Cochin, but Cochin cannot be separated from Halabar or Kerala. A few young men think that by throwing a few bombs or by committing a few murders or described, this. land of ours can be changed into a heaven, which they think has come in China and will come to us. It will take a long, long time for China to trelt There is a considerable amount of devastation. Mutual slaughter and destruction did no good to any country. It will never do good to India. India is a country of many castes, many creeds. many religious and many cultures, and yet there is one culture, one nations There is unity, a tremendous unity, in the great diversity of this land. There were six hundred princes . The number of princes in the whole world cannot be counted with the number of princes in our own land, but how quickly have they understood their place in the sharged set-up of India. Shall we do the same and understand our own responsibility as to what is our position in the new set-up? May do young men go the wrong way? Why should they brutally murder the Police? Who is that Policeman who has been murdered. If a Police officer or Police constable is murdered, is he not under the changed circumstances our own servant. Does he represent an autocratic ruler? Is he not our own? If we have not realised it, we have not realised what we have achieved. Emission Today, the Policeman is supposed to be the best servent of the land in which we live. If he is not discharging his duties properly, he stands to instant dismissal. Why should we kill him? How A few young men think that revolution can be created by committing a few marders or decoities. We have fortunately established a strong Central Covt. which cannot be so easily removed by such activities. India is not China. We have a strong force, a strong power, me a strong administration, a strong service, but that strongth

is not to be used against our own people, in suppressing our people. We are not maing to do that, unless we are forced. If we are formed, we shall spare nothing. I must tell them that we have a responsibility to govern; whether it is Kerala or whether it is Kashmir, whether it is Kathissar or Cutch or whether it is Asses or Hanipur borders, India de one solid block, which was to never in it existence in the whole history of India, and we have made that unified India to preserve it and to build on it an edifice which is our dream, to build a magnificent edifice which would command the respect of the world and where all of you would share its prosperity and its jews. I wish to appeal to those youngmen who are going on the wrong way. India will stand as a solid block against any invasion of outside ideology, and it will not permit! the incursions of ideologies which do not enit this land. People in foreign lands who were persecuted for their religious/came to this country and settled down here. They made their home here, and between their W Church and the Palace, there is only a wall. There is the Christian Church, there is then the Palace and there is the synogome. This is a land of tolerance and that is what Candhi ii also taught us till his dying day. Shall we forget his teachings? Plot want levellings up of wealth, we also want that, but is there wealth enough to level er do you want to do the levelling up of poverty? Distribution of poverty will not do us good. We have not got fri dom for distributing poverty. We have to create wealth, and wealth will be created not by idle hands. Quickness of brain alone is not enough. We must have unison of the brain and the hand. Our education has been faulty. We have turned out many idle, educated youngmen in the past, How my people in the Union are without employment, and how will Govern ment provide them with employment by emposying them as Covernment servents. Youngmen must not look forward to getting employment in the Governmental administration only. They have and will always have their share of it. Brilliant youngmen will always go at the top, but the nermal ordinary youngman must have enough scope to use his hands along with his brains, and not brain alone. Many

youngmen take to the profession of starting newspapers. It is a very good profession, and we have given enough freedom in the new Constitution to the press. Freedom of the press is an ideal which we cherish and it is a concommitant of democracy. If we want a democratic set-up of Government, we must have freedom of the press, freedom of speech, freedom of expression and freedom of association. All kinds of freedom are good, but if in this big assembly, one or two youngmen want to disturb the assembly and come here and frighten people by throwing bombs or creckers, what are we to do? Can we give them freedom? Can we ask the Policeman not to touch him, or ask you not to touch them? That is not freedom. That is not even licence. That is lunacy. A lunatic's place is in the asylum. Therefore, you must see that youngmen. frustrated youngmen, who have no employment and yet who have got good or bad education/feel helpless; they feel restless . Idle hands do the devil's work. Therefore, we must change our educational mystem. We must change our ideals also. If youngmen in this part of the country have to live a life of happiness and peace, of honour, safety and dignity, they will have to learn to use their hands, and not merely brains alone. So, as I said, press is a good profession, but as we have just begun in democracy, the press is also in an infant stage and they have their lessons to learn. Newspapers are the bestvehicles for training a young, infant democracy, but if they begin by inviting throwing dirt and by gulgar abuses, personal attacks, they are teaching the principle of committing suicide of the democracy. That is not good. We will lose what we have. Therefore I appeal to the press once mere that the press is a great responsibility, and for all of us who have not that experience, that wisdom and that sobriety which is necessary for running a newspaper, it is not easy for a man to sit in an editor's chair and write every morning. This is what I advise to the people. This is what the Ministers should do. Pont they do not many we at They themselves should do

have started the experience of running a democracy in a very infant stage. We have united two States nows Travancore and Cochin Union is of recent origin. Seme people say they want Trava and Cochin to be united with Madras Presidency. A very good idea. I want all the provinces and all the States to be united to the Centre. Do not have the idea that you are separate. Let us digest Cochin and Travancore Union first. Some people want Aikya Kerala. They do not know the tremendous problems that would be freated by such changes without thought, without plan or without considerations It is not easy. Some people say they want provinces on a linguistic basis and ask for separation of Andhra, for separation of Tamil and What will be its effect in the north or in the of Aikya Kerala. west, nebody cares to know. It is not the way to build a nation. Tou must have faith in the people in whom you have entrusted the destiny of the nation, that they will do the right thing at the right moment. After all, what is our concern except the well-being of you all. That is what we have worked for all our lives, and that of the month, we have now sot an opposituality of building up this is that we live for. Therefore, the best way for you is not to start these new-fangled ideas or visions which are incapable of fulfilment in the near future. Just digest what you have got at present, and this lend If we can asked when you will get more appetite, you will get more more food, of our resources, this country would be one of the richest country should not feel that sucheluspokendands you belong to Travencore or to Cochin, but to the Union. You have to develop that sense of unity. Therefore, I say the first thing that you have to do is to try to learn the language of the country which is going to be the future language of the country according to the constitution, if you want your proper place. Otherwise, you must lag behind. If you do not want to lag

behind, start from now to learn the language of the country and appreciate the concession that has been made ever you by the country; so that the country and the country of the country o

The second thing, as I have told you, is that the future of the nation depends upon its capacity to put forth its maximum effort to produce more wealth. Efferenthousencombouse You know-at least, you must know-that a great deal or the whole of Madras is largely dependent for its food on the outside world. It does not produce enough to eat. You live on rice. There is not enough rice for you here. There is not enough land also. This is perhaps the most thickly populated area in the country. Population isse is in itself a great davantage, and yet it is a great burden. Therefore, if we want to make the best use of our population, which is one-fifth of the world, we have now got an opportunity of building up this land according to our plans. Fortunately, the resources of this country have not been exploited to the full. There is enough richnes and wealth and resources in this land. If we can make the best use of our resources, this country would be one of the richest country in the world. After all, we have been governed for centuries by foreign relers, and we have lost the initiative. We must regain our initiative. Here, what a begutiful harbour you have got? Three fourths of India with a big occan surrounding it, has got a coast

line which is not marded. The constal trade is not in our hards. Coastal shipping is not fully in our hands, and yet we have unemployment, because we have not used our resources. Here, we have laid the foundation of a big neval school. Students from all over India will come and learn the art of defending our coastline. We till now, our coasts were safe, because of the British Navy. In the mercantile have windtically marine, we have nothing up to now except boats to catch fish. Recently, we have started a ship-building yard at Vizage. We are com pleting a few ships, which are not economical. No country has built its shipping economically. It has always been started or financed by the State. If we want to have a good mercantile marine which is a miles necessary part of the Navy, then we must have good training. Therefore, we have started a traffling school here. You have the advantage of seeing the place. You get some employment here also, but to the youngmen who waste their lends, the best thing is to start a co-operative enterprise. They have technical skill in their brains. They can use their hands. If, instead of wasting their emergies, they try to build up, then there is plenty of scope and they will be supported in their enterprise both by the Covernment here and by the Centre. But if tro- a small they so the wrong way, then there is no help, and to you I must appeal that before the disease gets deeper, of you do not wake up; then it will affect you in such a way that you will repent, You must, therefore, co-operate with the administration in removing this canker from the body politic of your Union. There must be no such youngeen here who will mar the fruits of freedom which has been won with the sacrifices of men; they will have to be clapped, but if they want freedom, it is in their own hands. You must not allow any youngman to go astray, who in the respectable name of Communism wants to commit decoity or marder. They do not deserve that name. I have seen several youngmen in these parts described as communicis. They are not communists in the sense and do not deserve a political ephithet they bear. Communism is of a different variety, and the communism that is practiced here in India is of a different variety. There is communism in England, but they do not commit descrities or

murders. They do not take to the disruption of communications. If one or two rails are removed from the railway line, tomore Stress the safety of many lives are secondised and travel by train by persons sho never had any idea of the risk they are running becomes unsafe. Gan we allow such things? You cannot expect the Police to be everywhere all over the line over the entire length and breadth of India. Nor can we allow our communications to be disturbed. If we allow communications to be disturbed, then what will be our reputation outside. Apart from the fact that theer commerce would suffer, we would be dubbed as people unfit for freedom. Let them try and convert the people in adult franchise. They can get votes, but if they persist in their ways, they will have no place at the polls also. There are people who say that communist should be banned. They say so out of sheer disgust. We have not done it except in some provinces, such as Madras. We do not do it all over India, for we still want to allow them a free Tiald if they went to take to constitutional methods. The responsibility is not only on the Police, but on you also. If you find such people amongst you, even if they are your near relations, it is your duty either to convert them, or to inform the administration and hand over them, so that we will all be protected. That is a special message to you from me, because I find here a lot of things about communism. You may not feel so much about it at present, but if you allow it to grow, then it is

That is known as the Congress. All of you showed considerable sympathy and contributed to the growth of it. Now when you have got freedom, it is for you to strengthen it more and not to think that it is no more useful now. You may feel that there may be other parties. If there are other parties which are likely to handle power better than what is being done at present, by all means do so.

possible they will make it difficult for you to deal with it.

at the Combre the namer of apperintendence, direction and sucking, But do it decently and in a civilised manner. Don't start the hare minism or communalism. Do not start things that have been discredited or things for which we have had to pay very dearly. not leave the path of tolerance. When I heard some people say "Hinduis in danger". I feered whether Hindus have disappeared, or what has happened to them. Candhiji who had a great reputation all over the world was a Hindu, and yet in it is a Hindu who killed him. Hinduism? Can you preserve Hinduism by that process? How many castes and creeds and sub-castes there are amongst Rindus. Even amongst Christians, how many gastes and sub-castes are there smongst them? Does Christianity teach that? Let us follow our own religion, and if we followed it properly, then nothing is in danger. Let us live decent human beings. No religion will prosper if it is besed on intolerance. No nation will prosper unless that nation has charafter and vitality, character and strength, Outward forms of religion will me strengthen a nation. While outside forms are good in their own way. the internal living thing which is in a human being must be kept pure. Do not think that Hinduism is in danger. Hinduism can never be in danger in India. We are in a vast majority, indomonochiant Have we not produced men of religion in the past who have spread the culture all over India. What did Shankaracharya de? When he died, how young he was, but he did not raise the cry that Hinduism was in danger. Religion is a matter between a man and his maker, but for a decent human being, ordinary civic sense and ordinary rules of decency must not be forgotten for that is the duty of the citizen, and as a citizen he must discharge his duties. If you forget your citizenship and talk of religion, that is a cloak. Therefore when I hear of some people talking about Hinduism in danger, I feel they are going the wrong t Do not take to scare-mongering for selfish purposes. Do not use wrong methods for eatching votes or forming parties. It is a very dangerous game. After all, we seem want to serve our own people. If you think your Ministry is going astray, go to them, speak to them, persuade them; if you like you can change them. We have got

at the Centre the power of superintendence, direction and control, because we knew it was a good thing. Although there was a lot of resentment from the Hinisters of Mysore, Travencore, etc., we told them that it is in their own interests, and that they will ask for it afterwards and will get it, so let me put it in the Constitution now. I am not soing to interfere inyour business, if you keep your people contented. In an infant democracy, you will see that the Ministry means getting the right of committing mistakes. You have got that right now. Commit mistakes, but let me see that you do not fall in the ditch, so that we may have to pick my you up. When you are going to fall, we shall have to hold your hands. That is a safeguard which we got deliberately. We must not be forced to use that. I am glad to say that the Ministers in these three States have not forced us to take that course, but the moral responsibility is yours. If the Central Covt. is invoked to that extent you are discredited. You must be the guardian of your Ministry. After all, what are they. They are your servants. You have selected them, and you have the choice of bemoving them. But people who change their ministry every other day do not know how to govern. They do not know the art of democracy. The Ministers are also human beings and will commit mistakes. Your business is to bell them, create an atmosphere of unity and harmony in this Union. As I have appealed to the workers, let me appeal to your Let us not create an atmosphere in which people begin to feel that there is something wrong somewhere. Let us erests an atmosphere in which there is a fund of goodwill, a fund of harmony and a good deal of tolerance. It is only a couple of years that since we got our freedom. Our resources have been exploited for centuries. The country has been bled white by exploitation and we have to put bleed in the veins. It is a difficult process and all mist help in it and not create difficulties. I hope and trust that you will remember what I have said and will think over it. It is not easy for an old man of 75 to take such a long trip. I would love to meet you again, but it is not easy. If I don't come, then do not forget what I have said.

Let it not be said that we did not deserve freedom. Let us build our strength and our reputation from this Union at the bester, of the map of India. As we stand here, these are the legs of India. If the legs are shaky, then the whole edifice will topple down. Let other Unions learn from you. I wish you sodepeed and a seed administration.

I must, in the end, express my gratefulness to the organisations that have presented these addresses to me. At may age 9 do not need addresses. You know me.

9 know you and that is enough to boths his point these kind briefle have taken the trouble of expressing that love for me and 9 am deeply grateful to them. 26 27

Speech of The Hon'ble Sardar Vallabhbhai Patel on 13.5.50 at the Mavel Base, Wellington Island.

Commodore Ellison, Officers and Men of the Indian Navy,

I am extremely delighted to meet you all and to visit the institutions where you receive your training. Only some time ago, the Defence Minister laid the foundation-stone of your institution. We all look upon you with considerable interest and sympathy. We realise that you are working in somewhat difficult conditions. You have no spacious accommodation, nor permanent buildings. Good beginnings are, however, always made in trying gonditions. These test your mettle and temper. Although we do know that you have inconvenience and discomforts to put up with, I am sure you realise that these are the pange of growth which you will get over as time passes.

We have a vast coastline to guard. This has its advantages as well as disadvantages. Our resources are limited. Naturally, therefore, we can do our bit within those resources only if we do our best. You have heavy responsibilities, in that you have to get yourselves fitted for guarding this vast coastline and work within the limitations imposed upon you. The country naturally looks forward to you with a great deal of interest, and upon you rests the duty of defending our shores. You have also to take care of the future well-being of the Indian Navy, guard and promote its traditions and lay the foundations of a great defence arm of the country. We have great past traditions of the Indian Navy, but a modern Navy requires modern training, modern arms and modern equipment. In a changing world, we have to fit ourselves in the changes that have taken place. We have to get ourselves abreast of new discoveries and inventions. I have no doubt that, fully benefiting from the surroundings and expert guidance you are getting, you will conduct yourselves in a manner which will bring honour and credit to all of you and to your country. God bless you.

Speech delivered by the Hon'ble Sardar Vallabhbhai Patel, Deputy Prime Minister, India, to the representatives and teachers of Golleges on the 13th January 1950 at 3.30 p.m.

## Friends

Very pleased to meet you heads of educational institutions. You are to mould the generation to whom the future generation would be grateful. Many causes are beyond our control. SERME There are some within our control, because of which is world in turmoil.

Our freedom is in danger not because/some outside aggression. R What is the use of freedom if it does not give bread.

I am worried, You must also be worried, when I read in the papers that a bomb is thrown, A short is fired there in the premier city. Cannot anything be done so as to rouse public opinion to its sense of duty? It can be roused by people who have got the opportunity to control large numbers. It is they who have to train large number of youngmen who don't feel their sense of responsibility. I appeal to you to use your influence to use your contacts to rouse their sense of duty. Everyday we keek hear police are between here. Injured here. But those who are responsible for it are neither hurt nor do they suffer. If the police had accepted the creed of non-violence, it was a different thing. If the police does anything and any one is hurt, everyone joins in the course that it is the same old-police. We must have an enquiry.

large members/of graduates turn out every year. They have their own ideas of self-respect and position. They have no desire of physical labour. If they have an idea that they can all get jobs, it is an impossibility.

If there is this insecurity in the existing industry, some of it will be ruined and some will shift.

WOODS THE STREET

You have a responsibility. Unfortunately, the Congress is not functioning here. In a free country, we have not only to it look to the Congress. We have to look to all ranks.

Why should a few be allowed to disturb the security and peace of the city. I would appeal to you to keep the students on the right path.

Unfortunately there are some in your profession who also are influenced by outside idiology. If the profession to whichyou belong is corrupted, you have a double responsibility.

If you are want convinced of what I am appealing to you as a part of your duty, it is worthwhile. If we keep our country on proper lines for a few years. Here is a period on which the future of our country depends and on how we act.

The city's life is normal but there is an atmosphere of uneasiness. I hope you will take this not as a criticism, but as an appeal seeking co-operation.

(students joined)

Everybody talks of civil liberty. This is worse than foreign rule. This reflects the public opinion. Judiciary that is why thinks that a person caught red-handed should be released.

Under the judiciary system Gandhiji's murder case took a year and a half. And people began to feel sympathy for the murder. We had to spend 10-20 lacs. If the society does not rise than the judiciary also thinks the same way.

There is a cry: \*\* Put the Police on trial. Why should the police fire. Why are the innocent people shot down why do they mix up. The corruption is not only confined to police only. If the police get no cooperation and if subsequently he is taken to task if he fires, what is he to do. The complaint is that because largely police is employed from the province there is sneeking sympathy or it is inefficient.

For three years I have been maintaining law and order without military aid. The mistaken notion that police work is easy, they are corrupt. In a large industrial city like this if the police have no sympathy, they feel disheartened.

If you ask youngmen to be enrolled, they will have to be scrutinised whether he is communist, because they want to get into the police and military.

In the rank and file, there is maken nobedy else but our own people. We learnt to respect foreigners because of slavery.

The whole country feels why is it so in \* Calcutta. I agree with you - the increase in population has added to the problem.

If there are colleges containing 2000 to 8000 students should be broken up. There are long term programmes. You say the Centre should help. I have studied the Centre's budget. Two-thirds is army expenditure. Till our relations with our neighbours are straightened, we cannot reduce it. Then there is the Kashmir problem and refugees all over.

We shall try our hard best but you must have some sympathy with us. The day will be far off if this city's peace is disturbed. It is the first industrial city. We must try and see that the city's peace is not disturbed.

The youngmen are infected. They do not feel that it is their duty not to allow any one to disturb the PERE peace of the city.

We have discussed this problem. They are very complex to be discussed in an hour and a half. I do not blame the youngmen of Bengal when leaders quarrel. I do not know whether I will succeed. It will be a misfortune if they do not unite. It will go a great way if all of you put pressure that they must unite. After all, what remains if Bengal is destroyed and disturbed. In a tram-car if two youngmen compell the rest to get down, that is not good. That feeling of helplessness must be removed.

I shall try my best to help you and take note of all your suggestions.

256

Speech delivered by the Hon'ble Sardar Vallabhbhai Patel, Deputy Prime Minister, India, at a meeting of the members of the West Bengal Legislative Assembly on the 13th January 1950.

## Friends:

I have come here in order to see if I can be of any help in Bengal in the present state, although I am not physically strong enough to bear the strain. But outside we have been reading disquieting things about Calcutta; it will discredit us. I have often appealed to you fax/forget the past and unite against the forces; otherwise, we will not be able to do any good work to the people whom it is our life mission to serve. I do not know whether I will be able to convince you in this hour of crisis to forget personal prejudices. After all, what is our ambition but to serve the people, forget all differences in whatever sphere we are and take one line of action. Perhaps they may be right and we may be wrong. I have come with only one object. It affects our reputation outside India. It creates a feeling of insecurity and uneasiness. Bengal has suffered much. We must find a way in which to smoothen matters. We are made of the same clay. It is no use blaming each other. One opportunity came of serving Bengal and we are failing. There was no one in Bengal who was against partition, but human memory is short. What was happening in Noakhali? Who can forget the deliverance day. Today moth-eaten Pakistan is stronget. They have beaten us in one way. They speak with one voice. If they can do so - if we had not been divided it would have been passed much earlier. If we maited unite first there is a chance of unity. But unity we have to decide. We do not want the unity of the past. The power behind has disappeared. So Hindus and Muslims can see in their proper perspective, but that can only happen if we are united first. The wound can be healed only when we unite. Please forget our differences and let us give a lead to the country. If there is ambition of service, what does it matter

these over "Totay sticerears is without whether I am in office or you are in office. With a certain amount of risk I have come here. I have no party. All of you are my colleagues and comerades. Can I not touch your heart to forget everything and give a lead and forget everything till the election is over. Let us put our foot down against disorder. crime and anti-social elements. People asked me why do you go. I said I go to meet the friends who, I think, will listen to me. When our leaders came last time we thought that election was the only solution which would bring you together. But what we thought was proved to be impossible. But if all of you think that election is impossible yours is greater responsibility. Do not use any paper or platform to show your differences. At least for some time when we are passing through crisis to pull together - see what we are what we have been and I appeal from the bottom of my heart to unite. Everybody believes and nightly believes that Bengal can only recover it the Congress unites. Before Raxis Partition there was no West Bengal and East Bengal.

Only last week I went to Lucknow and there were groups, there. Although I appealed to them, there was not that success, but a lot of atmosphere has cleared. There is no division there and they cannot afford to quarrel.

After all no Congress Government can function unless the no Congressmen support two Congressmen can function, unless the Government supports. Perhaps it is the past legacy, perhaps it is the division, but we find perpetual quarrel.

If two boys come and ask everyone to get down from the car and everyone gets down like a sheep it is no one's concern.

Today the police have become volunteers. Police has taken the place of Congress in sacrifice and suffering.

Bengal gave the lead and kept it for many years.

Our friends in Assam will put up with Bengal amaliance.

Muslims but not a Bengali Hindu. Bihar won't have Bengalis.

This is not a good sign. Don't get angry. Even if it is their

fault, we must win them over. Today atmosphere is vitiated by provincial jealousies and parrochial quarrels.

Our past history has been that whenever there is freedom there has been quarrels. We are all brothers, servants of R Bengal. We should not think that we are better servants. That is the only way to unite. This is the appeal I make in your court and I will be happy if it is heard and you will let me have your suggestions, if any.

If congressmen say that there is corruption, people are bound to believe it. If there is corruption, its remedy is not in the press or platform, but in the organisations. We must set in girks. it right.

Is it not that both Proful Babus and Praful Sen both have sacrificed and suffered. Both were united. They have quarreled. But if one is corrupt, we can punish him, if we can prove it.

It is a bad workman who quarrels with his tools. The Police will be the same whoever is in office. You cannot change.

Once you find there is a concrete thing, we can haul him, dismiss him, but that is for the Minister. But why do you bring in the police. Black-market is there with the control.

Take sugar; it is not Bidhan Babu or Proful Babu who has done it.

A general complaint without specific charge that everything is bad then we are all bad. So I appeal to you to restrict to specific charges. When Congressmen make charges against Ministry, the differsy was Companied as bound to make.

Do you want to take my place. You have not got the capacity and you cannot give me the capacity that I have not got.

If these 3 combine, the combined pressure will create an atmosphere.

The zamindari system should go. Is there any difference of opinion on that?

Let us change the atmosphere and not go to the All.C.C.

We linke out down many school

I want to say a few words in this connection (or on this question). My attention was drawn on press cuttings in which Kumarappa was said to have asked the peasants to resort to scorched earth policy and Prafullababu was present. I could not believe my words that Kumarappa could preach such a thing. I wrote to Kishorlal so that he may ask him and influence him. He sent me a draft article for Harijan that if this is true it is bordering on lunacy. If A few days ago, Bidhanbebu sent me a copy of his correspondence with Kumarappa. He wrote to him saying Bengal was not in his mind. Then was England in his mind. I do Tind fault with Prafulbabu for not saying that he does not approve of it. I do find fault with him for saying that if we cannot say to the pesants, He is a member of the Working Committee. The policy of procurement is from the Centre.

Party Street

I have werked for the peasant all my life. With all are faults. We may have bungled but not one has died m f of starvation, though there may be floods or famine.

We have to appeal to the peasant. He is more parking patriotic than any one else. There is not much defid ency in the country.

Please make a little sacrifice. You may not get all your cost. Otherwise we will have to get from Australia. We have to pay heavy freight. The country is partitioned. Our joint economy is broken. Jute, Cotton and Food. If our house is in order, we can deal with the problem - our neighbour there is danger of aggression from them only.

Poor peasant rightly believes thathe has spent he must gaix get it. But we must look to the whole picture. Profulbabu could have gone to the Working Committee to the Minister. It is not Profulbabu alone. I am quarrelling with Ranga.

If we stop import, you will benefit. Unless we stop the rise of prices and try to bring down the prices, the burden of cost cannot be born long. You do not know the amount of subsidy we have to pay.

We have cut down many schemes, because we have no money. I don't want you to enter into controversy as to who is wrong, but you must unite and unite with a clear heart. I appeal to you once more not in a spirit of criticism to unite. This is more important than any other question.

If he comes on the 17th with a report that there is unity, it will be greater service.

If unity comes, it can come in one day. The way to approach is to look within.

This is the last chance before the election. If you do not unite, it will have its effect on the whole country. Discuss; but donot discuss in the Bengal fashion - no end to it. This is not a matter for the High Command. You must put your house in order. Anything done by order is bound to fail.

Speech of The Hon. Sardar Vallabhbhai Patel at 9.30 a.m. on board I.N.S. "Pathi" on 12.5.50. the borders of Intll. Even these, the sword thesis was confined.

Commodore, Officers and Men of the Ship, traditions of hereities are marine were splendid, am extremely delighted to have this pleasant meeting with you all. It is not only a rare but my first experience to be on the Indian Mavy with the men of the Mavy. When this flagship came to Bombay, I was invited by Admiral Parry, but I could not

ship came to Bombay, I was invited by Admiral Parry, but I could be present because of my weak health. Ever since, I was longing to take an opportunity to be on the ship with you all. This is our first cruiser which, like the Capital Delhi, is the Capital Ship of the Indian Navy.

Navy. Upon you rests a heavy responsibility. You hold the honour of the Indian Navy in your hands. Our infant Navy has a tradition, during the last war, which has been very glorious. Infant as it is, it is a very healthy one and to see the birth and the growth of the Navy in its infant stage is a delightful experience. Your names will go down in history.

had a past in morcantile shipping, but in naval warfare its second has not been so long sustained. The Navy was of local rather, than central importance and the emphasis has been more on land warfare. Many people of many races from other countries have to come here into this country and settled down. Some have become conquerors, some have become our own, amongst us; but India goes its own way. It has never had, and will never have any aggressive intention or design on any country. It will never conquer any country except by the spread of its culture and its civilisation. In the past too, it if it has ever spread its culture, it has never done so by force. Right up to Japan, Buddhism had its sway, and in Afghanistan and over the borders of Afghanistan, Indian civilisation spread, but it has never taken its sword beyond

the borders of India. Even there, the sword itself was confined to the few. In India, although the past traditions of mercantile marine were splendid, the record of naval warfare is not so impressive and has not caught the imagination of the people as land warfare has done. It is only for the last some years that w have been concentrating on the Navy as a central arm of defence and beginning to learn naval technique and strategy from a nation whose naval might and achievements have illumined the pages of history. Although we had British Rulers for a number of years. we are now masters in our own country, and we have parted as very good friends. It is an example rare in history-that a conquered nation could be friends with the conquerors, the transfer of power took place so smoothly and the representatives of the conquerors could remain here as teachers. It is a very good thing. Your Captain will. I am sure, be proud of all of you for the pioneer work that you have been doing. I feel proud to meet you all, and India will be proud of you all and your work. On you all, as I told you, rests the great responsibility of building up the traditions and keeping up the prestige and honour of the Flag that you are carrying. I wish you all good luck and success in your career. Do not think of comparative prospects of other professions. Your career may be less lucrative, but the spirit of adventure and patriotism have an interest which can compare favourably with any other profession, however lucrative it may be. We are beginning as a free nation inour country, where many adjustments will be made in the future, but bravery, courage, heroism, and chivalry are all attributes of the Navy rare to be found in other walks of life. It is a great thing that you are

men get rare opportunities. India looks to you with great interest and knows that the future of the Navy is maintained by you in safe and sound hands. Hay God give you all that is necessary to build up the Navy which can make its mark amongst the great Haval Nations of the world and to promote the prestige and honour of our country.

May God bless you.

भुभा व (पी को बभा ब्रह्म व क्षा व सामा न्य सुन् व व पी को बभा ब्रह्म व क्षा व पा का सामा न्य सुन्दे प्रमुख के बहु वे दो क्षा व स्था का सामा न्य प्रमुख के बार्ड में दो के सामा का सामा न्य

प्रासी औं अ

હાજર.

મિ. બળવેતરાય પ્ર. ઠાકોર. વાઇસપ્રે(સેડેન્ડ. સભ્ય સંખ્યા ૧૫.

પાછલી મિટિંગનુ પ્રોસિર્ડિંગ્ઝ વસિલામાં માળ્યું ગને તે વહાલ રાખ્યું.

મે<sub>ન</sub> ઉપ-પ્રમુખ સાઢેબે નીચેન (વધારાન (કામો જાહેર ક્રમાર્ટ-

વધારાતું કામ ને. ૧

જિલ્લુઝ રિમુવલ કમિંદીની ઠરાવ તે. તા, - હ-રકની ક્ચરાપૈદીઓમાર્થમી ક્ચરી ખરેડવાના કામની કેળરેળ રાળવા માટે એક પ્રાપ્ત અમલદાર નીમવા બાળવતી.

વધારાનું કામ નં. ર

મેનેઇંગ કાંમડીનો ઠરાવ તે. તા. ૧૦--૯--રજ નો \*\*
"કાંચી ગડર" પાતે વજેડમ વિધાશ્કાના ર. ૧૨,૦૦૦ ની રકમનો શ્રિમાંગ કરવાની વિનેતી કરવા બાળત કેમકે તે પાતે શ્રમાંગ કરેલી ૧,૩૦૦૦૦ ની રકમ પ્રચાઇ ગઇ છે.

् ना वणते (५. मसगरमती ना व्याः )
म्युनिस्मायन का विल्लास का व्याः )

## મ્યુનિસિયલ કાઉન્સિલર

<u> भि. शोबर्धनलाई ह स्वरलाई पटेले</u>

पूछेबा सवाबी.

1. મે. પ્રમુખ સાહેલ જણાવવાની

वस्टी बेसे है:-

(અ) (મ. ગાઇ. ગાર. લગતે શહેર-()

बहमार्थ महिल्ला क्ष्यान कर्मा करा कर्मा क

હોય તો મા વિષયને લગતા

**अं अं के अं के अं के किं** 

**લ. આ વિષય પરત્વે** 

भ्यानि सिपासिटी नी को छ कपिटी के के अभूण सावेज कर्ड

(सम्भूतं के मधुरी) वपास करी

बताब भने जरी बीच की वे

णाणतमी सामान्य विश्वत

अबल करत बणाल केल पर

मुक्ते है।

मे. ઉપ-प्रमुख साढेक ता. १०-६-रहना शोज भाषेता

જવાવી.

र्भ अने रिश्वे का शासतना —

मरी वडीडवर्त स्थित दह बमाल मेल पर मुख्यामर मार्ज्य के.

ે થતે. ૧૯૨૧માં કલમ ૪૮ (ગ)

माधारे महहानी व्यवस्था उरवान

ता केवच पेटाजायहामी सुधारवा

पड्या नेपी क्रीने सिवित सर्वन

સંદેવની પ્રાથમિક સમ્મલિ મેળવીને જરસ્થિતના અપલાદરૂપ પ્રતેવે

શહેરમાં મહદા દાડવાની પરવાન-

अवि वापवानी विक वोक्तिशनी

विवेश धिन सता सह सेनामाँ भारती बती, पेटा श्रवहामाँ भा

कुषारी करवानी प्रतियान विक

नो किसरनी ना विवेशाधीन सता-

ની દ્રશ્યથીય તેના પર્યનલ માસિસ્ટ ન્ટ પિ. લગતે તેની ગેરહાજરીમાં

अ्थिति विषि विषित्यत स्थी छती.

वेड प्रति ज्यारे पि. नर्ज

भि. नमें हार्रा हर - महेता में हिवसनी डेज्युमत रका पर बता त्यारे थि. भगते हे केने हंठ सत्ता नहीं ती तेले हें त्य नी किसर नगर -સી લીલ સરન્યન સાહેળની સલાહ લીધા शिवाय वैयह अस्तकामीयां काहरी के के મ્યુનિસિપાલિટીના સભાસદ થવાના હતા તેના માત્ર શીના મડદાંને દારવાની રજા ગાપી. સિવિલ સર્જન સાહેળે ગા કત્ય સાધ સખત વાંધી ઉઠાવ્યો કારણ કે તેમને ગા કત્ય शहेरनी सुणाकारीने तुक्यानकारक बार्ज्य. મિ. ભગતન કત્ય મ્યુનિ સિપા લિટી મે સખત रीते वणोउसं बर्ज अने जाने परिवामे पेटा-अविद्या बिंदा क्या करा के देशी करीने ચિક મીક્સિરની વિવેકાધીન સત્તા ખંચવી લેવામાં ગાવી.

र. सने १६२१ मा अध्यारी समा पछी भि मेन की, भवेतानी कार्यक्रिमा भावी परवानकी माणी बीय मेम ज्लाब नकी, परंदु भि अजनी चिक्त मो किसर तरीकेनी हुंकी मुहतमा सबेरमा मावा सार हा सबा हिहल ज्या,

3. पहेला हाणतामा मा म्झुनिविषालि-टीना सब्स भि. श्रीहरीयर चरहणी सहयत भी र साहेल सावेण- सेमहभी में काहरीना भूतके के हाटवानी परवानकी मालवामि मावी कती.

भने ज्यारे सेनीटरी अभिटीना मध्यक्षे सेनीटरी अभिटीने मधारशुत मिलप्राय तेने मणे नहीं त्या कु सेवी माधारशुत मिलप्राय तेने मणे नहीं त्या सुधी मानी परवानकी माधार ना पाठी. भि. अने मश्य नी में पेटा अध्यक्षेत्र माधारे मावी सता सेनीटरी अभिटीने के मेवी सेरी पीते मूना मगर नवा मेटाकायहां माधारे मावी सता क्रियोने नमी मेलू जालवा लोवा छता करी अधि अभिटी मेने मध्यक्षेत्र मेटि रस्ते होगी.

शुब्धलुब्धिनी- भूतनो जली शकाय. केने ज भारे तेने क्षकी न भले.

ક. ચોથા કાળલામાં જ્યારે મિ. अध्यह्यसेन भीरसावेण माहरीनां पत्नी વેગમળીળીનું શળ ગા મ્યુનિસિયા સિંદીના સભ્ય દા. અહમદમીયાંની સુયનાથી ખાનપુરમાં हारवामां जाव्यं त्यारे मि. अगते जाली जी बने पुरता वणतथी तेभी कालता छता वे भटेशव-वाने डांड तकवीक डरी नहीं. मा हाणवामां मे. डिस्किट मेळ्केटसाहेलनी मानशी सूचना ने आधारे प्रमुण साढेले (भ. भनतने अमुक मुद्दा-મી ઉપર તપાસ કરવા મને તેની તપાસની परिवाम मे. बिस्डिड मेल्स्डेट साहेवने (नवेहन करवा कुक्म क्यों. तेने नापेसां करमानर् कोछने तेर् पासन करवाने जहसे ते वे वे करमान उपाई याव्यं अने तपासनी मुण्य नाशय पंजी सनि तेवी रीते विषयनो ઉપયોગ કર્યો. તેની વર્તલાક સહેજ વહેમવાળી જ્યાયાથી પ્રમુખ સાહેળ પોતેન્દ્રાય ધરી ગને त्यास हरियान उपर नवावेसा वृत्तात ઉપરાંત हा. मुहंहराय, हा. सीरवार, वेनीरश कियरीना कवाई मि. भोजा, रेक्ड કારફૂન મિ. શાન્તિલાલ અને ગધ્યક્ષ દદ કાતુગા ना परावा उपरथी तेमल बेल्य माता-

માતાના - રેઝ ખ્ટર, ઉપરથી માલુમ પડ્યું કે (મ. મગતેને મા દદન હિયાની ભાળતમાં તેની સુનો સાળિત કરતા ગમુક કાગળીની નાસ કર્યો છે.

७ - ७. प्रमुष बावेके भिरत्यत बामे नीकेनर तंबीमत के केने माटे पुरती क्रमण हर्तनीक केंग्र बीनाई क्षाय के ते बंबी शीतबर तपास करवा सेनीटशी क्रमिटीमा अमसहसीत महेनाब रहू क्यों.

 सेनीटरी अपटारे तेना सैना णाणनभा केणिन नाधारसून मास्मा सेनीटरी अपटाने उद्य र स्ते होरी पेटा-अपडाई उन्सेपने

र, पेटा का यहा भोती जाली जो होने न भवली भाषे करीने बेरल पर्योग भने पोताने सता नथी तेलुं जा एवा छता भाषेली रजा.

૩. તેનો ગુનો સાળીત કેરતા કાગળો નો નાશ-

 ૪. સવકના વેરઉપયોગથી પ્રમુથ સાઢેલ
 (જાશ્લ્ય ભોડેના વિશાગની ઉપ્ટેરલી ગરે કોમી વિરોધની સ્થાપના.

८. वेनीदशी अभिटी तबीमतनी मवता वर्णी प्रमुण वार्वेण साथ सम्मत यह अने त्या

ભગવની માંગલી ઉપરંથી ગા કેઇસમાં

डेठसमा - बेवाबेली सपणी प्रवासीनी नडली नापवानी नने जीने हिवसे रीतसर, तपास शर करवानी निर्वय क्यों छत्। प्रमुण साहेल जालीने विक्रमेश थया है तेज जीने दिवसे ते के भिटीना पाय सक्योगांची ब्रम्म सक्यो (भ. जणाबाब पटेब, भि. सत्ये न्ह्रप्रसाह, અને મિ. ગરાગરમલી 🕽 મે બહુમતીથી કામળી દકતરે કરવાની નિર્ણય કર્યો. મધ્યંક્ષ મિ. भावणं कर अने जीका अञ्च भि. पृश्वीतमहास मुन्तरे (म. समत सामें मुकावेश तं तही मतनस्मर्स માટે પ્રથમ દર્શની કે કેઇસ છે. ગવા પ્રમુખ સાહેળ ના ગામપ્રાથ સાથે સંમત થઇને કાગળી પ્રમુખ સાહેળ સમક્ષ ગાગળ નિકાલ માટે રજૂ કર્યા. (६) अने (७) १. भ्युनिसियाध्वरीन

(५) अने (४) १. भ्युनिसिपाध्वरीना इहतरभाषी भणी सहेती मा बिती प्रभावे ज्ञान के स्मुनिसिपाद्य किम स्मर सि. मा वे में भाग समाने तेना पर्वनित मा सिक्ट न्दं ते ही हो के के किम ते ने पर मा प्रवानी, ना पार्थी बती अने के किम ते भि. समाने प्रभाव सावेण अने भि. व दलसमा स्मुल सावेण के सुस्कृति क्या प्रभाव सावेण स्मुल सावेण सावेण स्मुल स्मुल

६ 5) भि. अनतः नी इरी माँ
हरणव यथा त्यारणी भ्युतिसिपा (बटीना इक्तरणांणी
मणी शके तेटवा भ्युति सिपव
नी करी जने सिपाछणी सायेद्वी तेमनी जपमानशुक्त
वर्तेष्ठक सायेनी करिया होनी
संण्या जने प्रकार.
1. यि. अनत नो इरी

માં દાખલ થયા ત્યારથી

त्यारथी - भ्युति सिपा सिटी
ना हक्तरमांथी मणी शक्के
तेटबा सेना उपरी समसहाही
परत्ये णीन्यकाहारी सने
उध्यताधना कृत्य सामेनी
कारयाहीनी संध्या सने

(ડેક (ડેક) ને લગતા ક કાગળીની નક્સી મેજ પર ગુજરામી માવશે કે કેમક क्यों बती. माहीनी मुसही को को बयता हायणी हाएसमांथी हवाडी बीधा बीय मेथे ज्याम के, परंतु मुल बकीहत समहावाद स्मुलिशिपत रेडडे सहि रहम महिज्यावदामा सावी के, हायणी मि. लगतने सारमा के मेम हाएसमा मेह सीटको के तथी ज्यास के,

कार्यसम् नेक योदको ठ तेथी जन्नाय ठे.

र. मान्ना प्युनिश्चिषक हिन्दनियर भि. मक्षित्रे भि. सन्तनी यारे वाद्य
कादव देउद्यानी जने प्र्युनिश्चिष्यात
नोक्री जी मान्ना करवानी देव साम्रे
समत रीते करियाद करी की स्र मेम
जन्नाय ठे. तेले मान्नत राम्यो बनी के
माना मान्नते तेना मान्ना काम
तथासवाने परवाननी माम्बी कोठमा
नक्षी भि. सन्तनी देशे मान्नता मान्ना

डेलेड्टर मे. मेट हिन्द साहेक मि. समतनी जीनवहाहासीना डारके ममुड गुहव तेना पमारनी वधारी लटडाववानी बुडम डमो दीव मेम जवाब ठेमा डाजकी पक्ष हासन

मांची कादी विवासी जा ज्या दीय

विभ-ज्ञाय है, वा अन्यक्त पर कार्यक्त की अन्यक्त कार्यक्त कार्यक्त कार्यक्त कार्यक्त के परंद्र कार्यक्रम कि के कार्यक्रिक कार्यक्त कार कार्यक कार

प्र. नाजला विद नी दिसर भि,
भवेताने किंग्री नो के भैनेन्ये-टना
नेरियन भिने भैनेन्येन कांभरीनी सिमितियी
के दियाद उपरथी सेणांत ताकी द नापी
की वेभ नवाय है. ना ताकी द नेयों
भवंति की किंग्री के स्थान के सेनियों
भिनान काणूमी राणवों जोठतों वती
ने कल्ला ठ - स्पेक्टर परत्वे सञ्चतायी
वर्तत जोठत वर्ता कल्ला के स्थान क्या वर्तत क्षेत्र के सेनियाद द्या कर्मिक क्या किंग्री का क्या कर्मिक क्या किंग्री क्षेत्र कराववायी का क्या कर्मा क्या वर्ता प्रस्

299

पक्ष-भाषित्वमा सेने निष्टीय ठराववामा भाष्या दवा.

भ, नामलना केव अंतेश्वन हुश्रिन्टे ने न न्ट भि, हाभी हरहा के सत्त सताबद्धीना

1. કાલુપુર સ્ટોર્ય વોટર કેઇન વાવતમાં રા. વા. રમણસાઇ અને પ્રમુખ સાલેબે કરેલી તપાસનો નિલંગ જેમ (મ. સગતની વર્તલુંક સખત રીતે વખોઠી કાઠવામાં આવી હતી તે જનરલ વોર્ડે વહાલ રાખ્યો હતો. મ્યુનિસિપલ ઇન્જિનિયર મિ. ગોરે પરત્યેનું તેનું વલણ અને તૃત્ય ઉપ્પત, ઉતાવણિયું અને મેર-ભ્યાજવી જણાવું હતું. अभूष सावेष भिक्त भी दिसंद

भि भारते मने म्युनिसिप्त छ न्यिनियने

भि भारते सेमाना शिन्नसावर्त समाधान

करवा मने क्यान्यक कारीणारना वित मान्यस्
ताणाना नोकरोग सावे दाणको मेसाउवा

अनेष मेक वंगत सलाव माणी परंतु जेवा

कामणी भगत पासे पढ़ों म्या के तुरत स्पक्त

मी दिसरे काठसमाणी प्रमुणना सरावाणों

कामण काढ़िसिंधों मने प्रमुण सावेणे सलाव

मापवा मी छमें नविरोध में मा पथ्य तिभी

नोकरो छपर णराण मार याय मेलु सणीने

के कामण पाछी भी क्यो.

८. ६१ ना न्यो अप पासे करेन्य पोस्ट अने प्रेट को पीस्ट अने प्रेट को पंता व विकास नी व्यायतम है असे अल्लास के के सि. अल्लो पोते काम मंजूर के की बद्ध पण न्यारे मा काम तेमती मंजूरीना माधार जातिमाँ बद्ध त्यारे ते हैं तेना पिता पासेणी जरण सीधा कुं ज्ञास के अले स्थण उपर जाते जया, मंजूरी साथे क्रण्यो क्यों के का मटका ज्यों की मोबर सियरने ज्ञालया सियाय मोटि टोक्स नी बाजरीमाँ स्था के ज्ञास माधारी निक्सी ज्ञास कार के किया माधारी निक्सी ज्ञास कार के किया माधारी ना मासाम निक्स की की साथ कार निक्स की की साथ माधार निक्स की साथ की की स

ડેસે આવરમાં ગાસિવર્ટ-૮ની જગ્યા मुख्वाभा नाज्या त्यारे ते મેકામેક મો કિસ છોડી માલ્યા ગયા. प्रमुण साबेश । बुड्यर्ड ઉ ब्लंपन डर्ड अने डें प्र काम करवानी ना पाठी. ગગત્યના ગ્રોક ગગર પણા જકરી કાગળીમ માં મહી સરવાની ના પાડી અને કારીવારની ગંદર 'સ્તવ્યતા રચવાની यत्न अयौ, प्रमुण साहेलनी वणती વયતની ગરજી ધ્યાનમાં ન લીધી અને तेनी वर्त्यं क्यो पर्यमस आ सिक्ट न्टनी अम જગ્યા કાઢવા માટેની ઉત્તર વિભાગના મહેરળાન કબિશ્નર સાહેળની મંત્રરી જલદીથી મેળવવાની પ્રમુખ સાહેળને કરજ 437.

ાં. હાલમ મિક વેલસુમાન મીકિસર મિ. લેક્ટરીમે મિ. લગતની જંગલી ગતે મર્પમાનસુગ્ત વર્તસંક સાથે કરિયાદ કરી હતી.

१६. ४४वी भाषाभ विषात् इश्वानी तेनी देव संबंधि संगमन वधा वावाना नौकरोनी तेमल समसदारोजी समित्य करियाद है.

रक्त कडवी सम्मामा सम કરવાની તેની ટેવ સંબંધ લગભગ બધા वावाना नोक्शीनी वेमल सम्बद्धारीनी सामान्य करियाह है. ી. ગોવર્ધનભાઇ ગાઇ. પટેલ. મમદાવાદ મ્યુનિ સિવા સિન્દી

अभादाबाद स्मृतिशिषाविद्यानी माश शामा-व श्वला माणि कोवमा शुक्रवाद वा. र० मी श्वस्टे स्वत्र १६६६ ने दोज शांजवा प्र-३० अवाके मणी कदी वेर्च प्राचीक्षण्य

- ---

મિ. બળવેતરાય પ્ર. ઠાકીર. સભ્ય સખ્યા રૂપ.

वादसमेशिये न्ट.

પાછલી મિડિંગનું પ્રોસિડિંગ્સ વ મિલામે માં ગાં ગાં મને તે ભલાલ રાખ્ય

मे. एप-प्रमुण सावेश नायेन विधारान हिम्मी कावेश अया:-

- વેક્સુઝ (રસુવલ કામડાની કરાવ ને વાર - ન-રફ નો ક્યરાપેડાઓમાંથા ક્યરી મહેઠવાના કામની કેમરેમ રામવા માટે વેક મહસ મમલકાર નીમવા વાળતની,

वधाराचु काम त. र

भेने छेन के भिरीनों कराव ने सा. १०-६-२४ तो "
"काबी जटर" पाते बनेटम विधाराना रक्तर, ००० नी रक्तमनों
समास करवानी विनेती करवा जावत के में वे जाने समास करेती
१.३०००० नी रक्तम समांह वह है.

् ना वनते (भ. नसम्हनती नाच्याः) व्युत्तिकारक का विकास

: ना वमते भि-नंत्रशत्मा ना न्याः

भ्युनिश्चिष अविन्यवर

पि. गीवधनवात तस्वश्वात पटेबे

ydar aaral:

१. वे. प्रतिव वादेव क्याववानी

4+61 88 3:-

(क) भि. आ. छ. मार. समये सहेरती बंदमी में प्रदा्त हाट्यानी प्रवात-भी नापी बती ह ने नापी बीय ती ना विषयन समता काम की में प्रदा्त मुक्त के हैं।

મ્યુનિશિષાલિટીની કોઇ કમિટીને કે પ્રમુખ સાહેર્ધ કહિ

(प) मा विषय परत्वे

(बम्बूई रे म्ह्रुरी) वंदाव हरी बंदाब मने हरी होयां दो दे

णानवर्गी सामान्य विवत

प्रवक्ष अर्थ बनाव मेन पर पुत्रवे केर वै. ४५-५ मुख वाहेवे दाः १०-६-११ना शेव वाहेवा ववाबो

(क) को (क) का बाबवनी परी बजीज्वर्स नोवेस दह

बणाल मेथ पर मुख्यामा मान्तु है,

बने. १८ रामा अवस्था अर्थान्

माधार मेठहानी न्यवस्था अर्थान्

सावेग्न पेटा आसावेग्न सुधारवा सावेग्नी प्राथित सम्मात मेलवीरे यहिणाली प्राथित सम्मात मेलवीरे यहिणाली प्राथित सम्मात मेलवीरे यहिणाली प्राथित सम्मात मेलवीरे यहिणाली प्राथित सम्मात मेलवीरे सोवेग्नी मेठहाँ हाटवानी प्रवान-से साथवानी यिक सोक्सिरनी विवेक्तिसन स्वा बह सेवामाँ सह साथी क्यों, पेटा कार्यहामाँ मह

न्द भि भवते तेनी वेश्वाणशीयर अयहि बीवे ४५(२५त पर्यो वती)

मौ क्रियरनी मृत्यिके हिंदीन सर्वान नो द्वरपत्रीय सेना पर्यनत मासिक

कें प्रति नगारे थि. नगेहासंहर

भि. नर्महार्थकर -महेला केक विवसनी केन्युमत रणा पर बना त्यारे भि सनते हे केने हंछ यथा नहींची तेते के त्य मी कियर मनर --शीवील सरन्यन साहेमनी समाव मीधा (सवाय वेयह मुक्तक । भीय ( काहरी के के ખ્યુતિ સિપાલિટીના સવાસદ, પવાના હવા 🦟 वेन ( मात्ववीन ( मडहिन हाटवानी श्वा मार्थी. शिवन वर्गन मावेषे मा कृत्य मापे समत वाधी एठा व्यो आरत है तेमने मा इस्य શહેરની સુષાકારીને તુક્લાનકારક લા ર્સ્યું. (भ. भगत्त कृत्य भ्युति सिषा (सदी में समत रीते वणीउ इं वर्ड भने अपने परिवासे वेदा-अध्यहा स्था वना के नेनी अशीने (यह मो हिसरनी विवेठाधीन सता अवदी લેવામાં ગાવી.

े. सेने १६११ में मा सुधारों प्या पूछी (म. मेन. दी, महेनाती अपाई होमें हैं भारी परवानकी भाषी होने में प्रशाद नथी. परेंद्व (म. संगती विक मो किसर तरीकेनी होंगी सुहतभा संदेशभा भाषा मार हायका हुइसका

ा . प्रेवा गामकाम वा म्युनिविधा वि दीना सञ्ज भि. शुंहरीयर तरमणी सहयत भीर રમા વખતે મિ. ચંત્રસરમહી મા ભ્યા:

14 (444 518 C-442

<u>પિ. ગૌવર્ધનભાઇ ઇસ્વરમાઇ પટેલે</u> પૂછેલા સવાલો:

t. मे. प्रमुण बावेण प्रशासनाती

વર્જી કેવે છે: -(અ) (મ. ગાઇ. ગાર. લગ્લે શહેરની

बंदम िंगड हाँ दाटवानी परवान-सी नापी बजी गमें नापी

ના માયા હતા મન માયા હીય તી મા વિષયને લગતા કાગળી મેજ ઉપર મૂક્યો કેટ

્લ**્રે**ં આ વિષય પરત્વે

म्युनिश्चिषा (बेटीनी कोड का्पटीने के प्रयुग बादेनें कांड

(बम्बूर्ड के नधुरी) वर्षाय केरी बबाद मने करी दोग तो दे

णाणवर्गी सामा न्य विवत अवद्य अर्थ वणास मेल पर

Arg ga

रे. उप-प्रमुण सावेथे ता. १०-६-शना श्रीय गायेला

(क) को (क) का बाबबनों बरो बड़ोडबर्ड नावेड ८६

raial.

समात मेक पर मुख्यामा मार्जु है. समेर १६२१मा असम ४८ हमा

नाधीर में क्टांनी अवस्था अस्यान ता में क्टांनिया हाणी सुधारवा परवा के क्टांनिया स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्य

માની હેતી. પેટા કાયદામાં મા શુધારી કરવાની જરૂરિયાન ચિક મીકિશ્વરની મા વિવેકાશીને સનદ-

नो द्वरपत्रीय तेना पर्तनत मासिक - ८ मि. समके तेनी वैरेट जिसीमा

उपति बीधे उपक्रियत गयी खती. वेड प्रति नगारे पि. वर्षहास्तिहर

पि. नर्महार्थकर -महेला मेक हिल्लानी केन्युमल रका पर बता त्यारे भि. अवते हे केने हैं। यता नढीती तेले हे त्य भी क्रियर भगर --बीचीय बरन्यन बावेयनी सवाव बीधा (सवाय वेयह अस्त्राभीय (अहरी के के ખ્યુનિસિપાલિટીના સવાસદ પવાના હતા तेन ( मानुबीन ( मडहिने हारवानी श्या ગાપી. વિવિધ સર્થન સાહેળ મા ફૂલ્ય સાથે समत वर्षि एका क्यों कारण के बेमने आ कुर શહેરની સુષાકારીને તુક્યાનકારક લા ગ્યું. भि. भगत्त इत्य भ्युनि सिषा बिटीन समत रीते वणीउ इं इं अने याने परिवासे पेटा-मायहा सपराज्या बता के नेगी करीने ચિક મો કિશરની વિવેકાથીન સતા પુંચવી લેવામાં ગાવી.

र. सने १६२१ में ना सुधारी वया
पढ़ा (म. नेनं ठी. महेतानी अस्ति होगें
मानी परवाननी मापी होय नेम ज्यादी
नगी. परंतु मि. समतनी यह स्रोहिसर
वराहिनी दृशी सुहतमा सहेरमा माना मार

ં . પહેલા દાયલામાં ગામ્યુનિ વિધાલ દીના સભ્ય મિ. યુંદરી ગર તરકથી સદગત મીર સાહેલ बाडेल- वेयहणीय ( अहरीना भूतहेबने हारवानी परवानयी मांगवाम ( मांगी हती, मने ज्यारे वेनेटिरी अधिता मध्यक्षे वेनीटर अधिने मांगी वर्षा के मेंगी माधारभूत मिंग प्राय तेने मंगे नहीं त्या क्षुधी मांगी परवानमें माध्या ना पाठी. भि. भनते मरक नीये घेटा अधि मांगी सांगी सता वेनीटरी अधितार के मेंगी वेरो पीते मूना मंगर नंग पिटाआह माधारे मांगी सता अधितीन ने में जासूत बीवा कार्या अधितीन में अध्यक्षने मीटे र स्ते होगी.

४. जीका हाणसामा भिः सनते पीते

प्रभुण सावेजनी सूमनाई उद्यंपन करीने अने

के त्य मी किसर सावेज प्रथमना हाणसामा वेमनी

सूस परेली वे परत्ये ध्यान में ज्या छवा अने

जो देनी में सुरी में जबवाई कहा छवा सहनत

के सुस्त्रीन भीर सावेज का हरीना सकने हाटवान

प. ब्रीका हाणतामा न्याहे जा. या. सम्बद्धीन काहरीना पिताई स्वयं सर्वेश्मर्थ हारवामा भाव्यु त्याहे को तेनो सर्वेक व्याहे सावमेत हता होत तो तेमी हरन क्रिया महकावी सकत परंतु मा हामती सुध्यमुध्यिनी बष्यबुष्यिनीं मूबनी बन्नी बन्नाय. केने याटे वेने क्यांकी नें मते.

ક. મોમા કાળલામાં જ્યારે મિ. म्ब्रम्बद्धेन मीर्वाहेल कार्योनी पत्नी વેગમળી બીર્તુ શળ માં ખ્યાનિ સિપા સિટીના યુખ્ય દા. ગલમદમીયાંની સૂપનાથી ગાનપુરમાં हारवामा मार्थ त्यारे मि. समते जावीको अने पुरता वणतथी तेमी जालता छता ते मटकाव-વાને કાઇ તજવીજ કરી નહીં. મા દામલામાં मे. उ स्टिक्ट मेळक्ट्रेटसाहेलनी मानगी सुगना ने आधार प्रमुण सावेक (भ. समतने अमुक मुद्रा मी उपर तपास करती भने तेनी तपासर् परिवास में. बिस्क्रिकेट मेळ क्रेट सावेलने (नवेहन अरवा बुक्म अया, तेने आधिवा करमान्त्र कोछने तेतु पासन करवाने वहते तेषे ते हरमान उपार्ध पार्श्व अने त्रपासनी सुष्य मास्य पठी लिये तेवी रीते विषयनी उपयोग अगरे. तेनी वर्त्य संकेश वर्षेभवाली क्यायाची प्रमुख बाढेवे पोर्वेच्छाय धरी करे तपास दरभियान उपर ज्लावेशा पूर्व वि ઉપરાંત દા. મુદ્દરાય, દા. સીરવાઈ, શેલી દરી કવિટીના કલાક વિ. મોગા, રેક્ડ उपरक्षन भि. शान्तिवास भने भएतस साकातुमा नां पुराबा उपरथी वेमल केव्य मानाना

भावानी - २००८२ ४ परधी मानुम पर्दे के (भ. भगवेत भा दरना ज्यानी वाणवमा वेनी जुनी साणिव करता ज्युक काम्कीनी नास क्यों के.

७ ७, प्रभुष वाहेशे (घ. भगव वाहे निवेन)
वहीयत के क्षेत्रे भाटे पुरती अथम हर्तनिक
केवस होवाई क्षाय के वे वंगी शिवसर
विभाग करवा वेनीटशी क्षिटीमा व्यवस्थीत
भवेवाल रहू क्यों.

1. वेनींटरी अपटीते वेनी सता मामवमि विभिन्न माधारभूत में भिन्नाम माधी वेनींटरी अपटीने ही रेस्वे हीरी पेटों-अपवहाद हर्ल्यान

ર. પૈડાકાયદાથીની જાણી જોઇને મવળી મર્વ કરીને મેરઉપયોગ મને પોતાને સત્તા નથી તેલું જાણ્યા છત્તે માપેલી રજા.

3. તેની શુની સાળીત કરતા કાગળી ની નાસ.

 માં વાર્યના વેરઈપયોગથી પ્રમુખ લાકેલ (લાદ્ધ્ય વોર્ડના વિલાગની ઉત્તરે છી.)
 એમી વિશોધની સ્વાપના.

ડ. શેનીડરી કમિટી તહીમતની મહત્તા શંભી પ્રમુખ મહિલ નાથે સમ્મત થઇ ગરે મિ. સમતની મહિલા હવરથી માં કેઇસમાર उठ्यय- विवादेशी सम्या जुणानीना नड़की मांचवानी जने जी है (इवसे दीवसर व्यास स्वाद करवानी निर्वय कर्यों छवं प्रमुख साईक जातीने विकाय यथा के तेज जीने (इवसे ते क्षितीना पृष्ट्य सक्योगिणी हुए सक्योगिणी हुए सक्योगिणी क्षित्र प्रमुख स्वाद क्षित्र क्षित्

(4) मने (5) का म्युनिश्चिपां मारीना हान रश्यां भी भी शहेशी मा शिली प्रमाणे प्रवास के के म्युनिश्चिपां क्रियं कर मि. सार्थे मे (म. लगतने तेना पर्यन्त मा स्वरूट्ट वसीके के काम तेना एपरी पर त्वे नवीं छाजदी वर्षक मने उध्यता छ भारे मा प्रवासी ना पासी करी मने केवर कोई (म. लगतने प्रमुख सार्थेण, उप-प्रमुख सार्थेण मने (म. व स्त्रालेश वि

દાખત થયા ત્યારથી ખ્યુનિ-સિપાલિટીના દકતરમાંથી મળી શકે તેટલા ખ્યુનિસિપત તોકરો મને સિપાઇઓ સાથે-ની તેમની મંપમાતસુલ્લ વર્તસુક સાંધની કરિયાદીની સંખ્યા અને પ્રકાર.

दे की भिः भगत नी करी भी

મ ઉપાયલ થયા ત્યારથી

1. [4. 494 4] 57]-

ની લુક્ય કરીને ખા વાળતની નિકાલ ક્યો

त्यारणी- भ्युनिश्चिषाविदी
ना इक्तरमध्यी मणी यके
वेदवा बेना उपरी नमबदारों
परन्ये गीनवकादारी नमे
उध्यवाद्यना कृत्य वायेनी
करियाद्येनी बंध्या नमे

(હ) (છ) તે લગતાં ક કાગળીની તકલી મેજ પર પૂક્તપાર માનલે કે કેમક उन्हें बतो. माडीनो मुसड्डी मने तेने उ सनता उन्ने की इन्हारणी उद्यादी सीधा धीय मेम जवाय हे. पृरंद्ध मूल कडी इत ममहाबाद अमुनिसिपस रेड्ड माउ १३५ मा जिल्लावनामा मानी हे. उन्ने का माउने माउना है मेम इन्हाइसमा में इन्हों है हैगी जवाय है.

र. मानवाना स्मृतिशिषक धूल्यतियर भि. भवीडे भि. भनतनी यारे वालु
आहव उठाउवानी नने स्मृतिशिषास
नोअरोर्ज मध्यान अरवानी देव साथे
समय रीते करियाह करी छीय नेभ
मज्जाय छे. तेले मान्नक राण्यो छती के
मावा भावसने तेनी मानार्ज काम
विधासवाने परवानशी माधवी गोठने
नहीं. भि. भगतनी सेरी मानवा गोक
मोक्सर भि. नेन. उत्ती भवेताने वणोऽयो
छती. भूव कानवी सूथ याय छे,

वेग-अवाय है. वा अंग्या पा वाहरू की कार्या है के परंदु का हिंदा है है के प्राण्ड की के के किया है के किया है के किया है किया ह

प्र. मानवा विश्व मी हिसर थि.

प्रवेताने किया मी के मैनेल्ये-टना

रेरवेननी अने मैनेलंग का परिता स्थिति

क्रियां है एरवी देशांत ताकी है आपी

हीय नेम लगाय है, जा ताकी है नेगी

प्रत्यवनी हती के [म. समते हैमनी

पिलाल कायूमा रामवी लहेहती हती

नेने क्रद्रा ह-व्यक्तिर परते सल्यतायी

वर्तत लीहत हतुं, क्रद्रा ह-व्यक्तिर के

मे सीटी भाक्तिटनी कोर्टम इमली क्रियां हमनी

क्रियां ह होमल करी हमा इसा प्रता स्थान

પણ-મધ્યોલમાં સેવે નિર્દોષ હરાવવામાં માન્યા હતા:

प्रमाणना हैय अतेश्वन हु प्रिन्टे न्टेन्ट प्रि. हा भो हरहा है सबत सवावधीना जने प्रि. समये देते जराज अरवानी धमशी जा प्रमाना अरवे देते जराज अरवानी धमशी जा प्रमाना अरवे हैं स्वामित हु प्राप्त के स्वामित करती हु प्राप्त के प्रमान के प्रमान करती हु प्राप्त करती. यिक मी हिस है प्राप्त करती कर्नु के बाद करती करती. के साथ दे हैं प्राप्त करवा विन्ती अर्थे में हरवा विन्ती अर्थे में हरवा विन्ती अर्थे में प्राप्त करती. प्राप्त करती कर्नु करती है प्राप्त करती करती करती विद्वार करती है प्राप्त करती करती है प्राप्त करती

हें अध्युर केटोर्स वोटर डेडन भाजवर्धा रा.जा. रमल्लाड मने प्रमुण साडेके अरेखी तपासनी निर्देध केमर्स (म. अनवनी वर्तेष्ठ सणत रीवे वणोठी अहत्वामर्थ मानी हती वे जनस्य वीठे जहास राम्यो हती. म्युनिसिपस हान्यनिषर मि. योरे परत्ये हो तु वसस् मने इत्य एथ्यव, हहायांश्रेष्ठ मने वेर-व्याजनी जहांसे हतुं. ७. प्रभूष चाहेरे चिह मोहिसर

पि. समतने मने म्युनिसिपत एं न्यिनदिने

पि. मोरेने सेमोना सिन्नसावद्व समाधान

हरवा मने क्रम्स्यक हारोजारना दिन मातर

साजाना नोहरोगि सारो हामली मेसाइना

जने मेह नमत सताब मापी परंतु केना

हानको समन पासे पढ़िम्मा हे तुरत (महे

मोहिसरे हाएलगणि प्रभुणना शरानाको

हानक हारोलीधो मने प्रभुण सार्वेभ सताब

मापना गोठमे नकरहेम हे मा पर्धा नहीं

नोहरो एपर महाज मसर माम नेहुं सभीने

दे हरेना न्यां पुत पांचे करें न्य पोक्ट मने प्रेटकोर्चना लिएकामनी लालतमेर में में प्रेटकोर्चना लिएकामनी लालतमेर में प्रेटकोर्चना लिएकामनी वालतमेर केंद्र हर्द पर्य न्यारे मा अप तेमनी में प्रेटीना माधारे नितमि हर्द्ध त्यारे ते के तेना पिता पावेशी मरण लिपाई ज्ञार के मने क्यल लिपर काते न्यां, मं प्रेटी साथे अध्यो अधी, अप मा मटकार्ज्य मने मोवर सियरने ज्ञारवा सिवाय मोटि टोकिटनी काजरीमि में बार के नित्र मा अप तेनी मावाना में अधन नेष्टक व्यक्त हर्दे साथे केंद्र में स्थार के मा अप तेनी मावाना में अप नेष्टक व्यक्त हर्दे स्थार स्थार के मा अप तेनी मावाना में अप नेष्टक व्यक्त हर्दे स्थार स्थार के स्था के स्थार के स्थार के स्थार के स्था के

ગયા હિસેમ્બરમાં જ્યારે वेभने पर्यन्य मासिक्टेन्टनी जञ्या ઉપર મુક્લામાં આવ્યા ત્યારે તે માકામાં મોહિય છીડી યાલ્યા ગયા. પ્રમુખ સાંહેલા હાકમનું ઉલ્લંપન કર્યું અને કંઇ પણ કામ કરવાની ના પાડી. ગગત્યના ચાક ગગર પહા જરૂરી કાગળી માં સહી સરવાની ના પાડી શ્રીને कारीणारती मंहर स्त व्यवता रचवानी યત્ન કર્યો, પ્રમુખ સાહેળની વખતો वणतनी अरली ध्यानमा न लीधा अने तेनी वर्तशुक्रणी पर्यनस जा (स २८ -८ नी अ જગ્યા કાઢવા માટેની ઉત્તર (વલાગના મહેરવાન કમિશ્નર સાહેવની મંજૂરી જલદીથી મેળવવાની પ્રમુખ સાહેળને કર 457.

૧૦, હાલમાં મેક વેલ્સુમેશન મોહિસર (મ. સેકેટરીમે (મ. સગતની જંગલી અને મહમાનસું આ વર્તસુંક સાધે ફરિયાદ કરી હતી.

११० केवनी नायाम (समास् करवानी तेनी देव संबंध समसम जमान वाणाना नोकरोनी नेमक जमानवारोनी सामान्य करियाद के

the stall nivine amin अरवानी तेनी देव संबंधि समयम वधा न बावाना नोक्शीनी वेमल अमलहाशीनी HINI-4 . ( RAIS D. સહી. વળવેતરાય પ્રમીકરાય ઠાકીર ગોવર્ધનભાઇ ગાઇ. પટેલ. ावाह म्यनिसिपालिटी seidle Midlanilach

205 327 (2)

वि. म्युक्ति सिमारिश सरम्बेड १२। पटी अधिकिड शामाकार्ता

FINIA TIZ HEICK HEICK MEZ YMON, MIR ME LIMENINI FINIA MILLER HEICK MEZ YMONI MA GRAZINI SKI, WA MINIA SKI, WA MINIA SKI, WA MINIA SKI, WA MINIA MINIA SKI, WA MINIA MINIA MINIA SKI, WA MINIA MINIA MINIA SKI, WA MINIA MINIA

## 2 म १०२४ मां रास्त्राहरी विक्षंत्रेल स्मूलियपार रोण है हैते पांका लाहा?

अग्नार त्या हु क्षिण्य का स्टूडिंग राज अग्राप्त हु का का नाम का स्टूडिंग का मार्थ के स्टूडिंग के स्टू

Gena Cemusion Hory Seene Gordstron militaries and the control of t

Trange when my sign singer sitted of the sign with the sign of the

annais nes niño no 3,8% aconos par sonos

Ex and sign and sign and sign and signed of the sold o

कार्यते रेप्यक्षि कार्न व्यक्तिविकारिया व्यथ मामान Euro Egg- 200 non 4 regun rest ai. 94, 212 mg EVERY, Yoush HIRMS BUMPONSON ORSE ZUM Qualanta dir on Earne 201900 organization क्षे महासारी के अंग कुरियासिताएडाका याहर १०१३) Honsele Bunger no swar annuarini onstru Cor who 32 musi szyfortan Malon ontelni haini micho dar union tonzal parnisional event yora, and 3 min mour don sipiami and; way historia in en 203 diza 3 comos en es as à ins sisanon vossios somanne en es, or en sant si us assert un unione Tout sh of sand mas us, or o-

3. 201 7 to a 2001 enasia ameiais 121 or 336 90 My Torthy The Por 8 Co Con ari Sur mish Elacon Fann

amerare symmetricalin en sul conti-Serial regionant surviving correction san exp otel an and organism to Enemarian wash Gan शिक्ष नहीं. तेश ठियुक्तिमपतिराज्य डिस्ट्रिस्ट ठियुक्तिकियत कां मंदनी उत्तम पुटन रेटो दियामा सायहा जियमा पुडी, जियम 3 मनी M'SI JUN 60 DOS TO 212 512 EAR 60, MIZ, on FERRY the fathuckers organich surrand votatero दिवस कार्यक्र कार पार प्रम्पे प्रम्पे निर्म निर्मे के प्रमुद्देशक

or andown sau ely of a mongy in who sau have the contest of a money of in the wayer, with the contest of and the contest of th

Turned Dig Lillers Mo Merini Vine Digent Committed of the state of the

have nextramed install sear niste of stage of the free ment of the search of the searc

Bran usaine man of the hand and signam strong and wisaine and we can of which of the hand and single has we can of while the hand and signam strong and and signam and the can of constant and signam and the can of constant and signam and signa

2 sinch carramulat 43 200 x 200 nen ern 2vasia orman amineral 4810 42m 454 The Rizon orser Tal antigore were moderate 27 60 Elaina Grade non it can bran you the miley. Musia ( Tan tan trasia oisim en) true nisini eni, no non is me mina hiani mesen em (an anesan auch mem, n Exercis Para accuming with and 38 31. का The Moun बिंडू क्यां दिश्व शाद ता हु में दिन कि पारि ni szac nision oren an actualinni on 431 45 sizion diasa masia ammei signoral

and sal more) by on a like of the

भ्युनिसिपासिटी सन्देन्द सदा पूछी प्राथिक सालाभीना
 निभाव माटे करेबा प्रयक्तीः

रः रहरप्रमा अवेवकारी विक्षकीने म्युनिविष्राविद्योगी देवी

## रीवे पाछा लींबाड

नगहावाह म्युनिसियासिटीन सरकार साथे प्रायमिक केलवरी भी किवादीनी वावतमार नसकार कर्यों भने प्रायमिक केलवरी भी सरकार तरकार आगान्य केवादी विध क्षेत्र भने सरकारी हो नमें करदरीने म्युनिसियस सामानी है हन्येक्सन तथा परीक्षा सेवा सीधी नहीं, ते हपरची (उरेक्टर नगहावाह म्युनिसियासिटी प्रायमिक केलवरी वहीबदी तह हिन्द सिन्त करी निची, वहीबदी नसका वनावी

रामान्य-पूज्यानी प्रयत्न क्यों, विरेश्टर मीक पाल्यक छ-मळक्येने (बिशकीने मेली धमकी जााती है, तमारे म्युनिशिधा विद्यानी नीकरी DIST तरत सरकारमा पाछा करते. / मा वसते स्रोक्त नोई मने न्युनि सिपंत प्राथमिक सालाना सिक्षकी सरकारी नीकरी. महाता नने तेमने सरमारे बोम्ब मोडी वंगी न्युनिस्पादिशाने वजीना ગાપેલા છે, ત્રેમ સમજવામાં ગાવતું હતું.) જો તમે દસ દિવસની र्वहर सरकारी नोक्शीमा पाछा करवा माटे वमे अमहाबाह छल्लाना रेप्यूटी मेन्युरेशनल ए-स्पेस्टरने, तमार्गनाम नीधानी नहीं मानी ती, वरकार पासेणी पेनसन मेजनवाना वक अमानसी अने साव व्यमहे सरम्री अथवा सरमार पासेणी नाज्ञिती भद्द मेलवती अथवा ती सरकारी केनवली पाताने स्वीकारेली की एवं सामाण नीकरी मापवामा मावशे नहीं परंतु मा धम्मीनी अहि सबरे यह नहीं, भने ब्रुवरी भ्युनिशिषत शिक्षकीमाणी माब सत्तर शिक्षकी सरकारी નો કરીમાં પાછા કર્યા. મને મે સત્તર જગ્યામી પણ ખુ સહેલાઇથી પૂરી શકાઇ. સને ૧૯ રરની સાલમાં મ્યુનિસિયાલિટીમે ન્યારે સંસ્પેન્ડ કરવામાં ભાવી ત્યારે લગભગ સાઠ ડકા ખ્યુનિસિપલ શિક્ષકીએ મ્યુનિ સિપલ નીકરીનું રાછનાર્યું ગાપી દીધું મને પ્રજાકીય પ્રાથમિક केलबरी भेडल तरक्षी अल्बामा भावेली राज्यीय प्राथमिक शालामी-માં નોકરી લીધી.

सने १८२४ नी सालभा जगहावाहमा प्रवाशीय न्युतिसिपासिट्रं ८ दीपी पाछी जरितत्वमा जावी तो पत्र जोशबर मास ग्रुपी प्रवाशीय प्राथमिक केलवन्नी चंदने कारेबी सालभाने, न्युनिसिपत सालभाने बर्द्धभी जोदी देवरपा जावी नहीं, पत्र देवने मताच्ये देरपुरामा नावी ने वे बनवना दिरेग्टर (मेटसीरीने जेम साज्यु के, मेटसा

325

आरटलां ध्येनं वाकारे सरकारी केलब्दी बाताना काबुनी बढार મને સરકારે નહીં સ્વીકારેલી મેવી શાળામોમાં લહે મે ઠીક નહીં. माने बीधे बरमारी डेलवली मातानी प्रतिष्ठाने कानि माय है. तेथी तेथके ते वणवना एवर विभागना वेन्स्रेशनव छ-स्पेस्ट (भ. वर्धीक મારકતે મ્યુનિસિયાલિટી સાથે વાટાપાટ કરવાનું શરું કર્યું. ગાને ર્ચી મિ. વકીલ અને મ્યુનિ સિપલ્સ રકલ કાંપદીના શેકેટરી ને શોયન प्रावतात हैसार वर्थे डेटलीड यविधियरनी प्राथमिक वात्रशीत यह. ने वातथीत यथा पछी वाटापाटने रीतसर्च पाई स्वरप માયવાને હિરેગ્ટર મિ. તોરી મમદાવાદ મા જ્યા, ગ્યુનિસિયાલિટી પ્રમુખ શ્રીયત વલ્લભગાઇ પટેલ તમુક સ્કલ-વીડના ચેરમેન શ્રીયત ण ब्लाइ हा को है देवी के स्थनायों यापीने, न्युनिसिपा विदी તરકથી ત્રીયત પ્રાણવાલ દેસાઇને ખ્યાનિસિપાલિટીને કૃષ્ટિબિંદ હિરેક્ટરને સમજાવના માટે મોકલ્યા. મહર્મા ઉત્તર- વિભાગના ચૈન્સક્રિયનન ઇન્સ્પેક્ટરની ગોહિયમાં સરકાર નરકથી ડિરેક્ટર મિ. લોરી તથા ઉત્તર વિલાગના ગેન્સ્કેશનલ ઇ -સ્પેક્ટર (મ. વકીલ भने भी निविधा विटी तरक्षी श्रीयत प्राव्यात देवार्थ तनसन वे अबार संधी येगा करी। समाधानीना सरवीने छेवटर्न स्वरूप माध्यु મિલકી લે મે શરતી કાગળ ઉપર લખી લીધી. ગેરે મે કાગળ પર जैने पक्षीने बढी हरी. ने बरवीनी जैने पक्षीनी बढीनोवाणा हानण-नी के नज्य शीयुन प्रावृक्षांक देशाएक, न्यूनिविषाविदीनी की दिव भी भाषी, श्रीयुत व स्त्रभवात तथा श्रीयुत वस्त्रभातने व विवा नापी. जैने बरवी अपूत राणी, जने वेना उपर अधुनिविषाविद्वीनी छेवटनी र्भप्रीनी मढोर-छाप मारवा, विष शहरा वेन्युडेशनव छ -स्पेडटरनी ગો કિસમે હિરેક્ટરને મળવા ગયા. જતાં જતાં શ્રીયુત વલ્લમભાઇને

(भ. बोरीने ल्याव ही थोः "अव त्य, ते मेनूर इरायी अक् आपवार्त भारे भारे. तमे इरीयी आ वायत (वये इभिकारने बणी.

लाके- पंत्र पारशे तो ने स नाम्ग्राय अध्य है, सने हेवी है पीते तो ने केत मंदूर अरवानी (वर्षण है, परंद्व (उरेश्टर मोश पिलांश ह-लक्ष्मत भने मास नाम्रत और है है, मारे ने केत मंदूर अरवी, तेवी, ने माम्रतने वर्त गह, मारी मोनानी मरण विश्वेष पंत्र, ने केत मंदूर अरवी पते है."

मा रीते सरकार अने म्युनिसिपा लिटी व स्वे

समाधान मह जने तेना परिवाम तरी है ता, रह, सप्टेन्जररहरहथी, प्रवाहीय प्राथमिं हे हे वज्रा में हैं का तरह थी मासती
सांवाजीने पंच हरी है वामां जावी. म्युनिस्वपास्त्रदीना
पूना सिक्षा, के जो म्युनिस्वपास्त्रदीनी नीहरी छोडी,
प्रवाहीय हे जवली मंडलनी स्वावाजीमां को डाया बता तेमने
हरी पाछा म्युनिस्वपास्तिदीनी नीहरीमां हे वामां जाल्या.
वयगालाना समयनी, समाधाननी शरती मुलल, तेमनी
हे पाते प्रवाह रहण में जुवामां भावी; परी साथ साथ के
समयन के है है समलम जही वर्षन तेमने के उतान्य छन्हीमेन्द्र
आपवामां जाल्यु, के थी हरीने ही छे पर्व सिक्ष है प्रवाह में

जमहावाद श्रुतिश्वपातिश्वो श्रेष्टारी इन्स्पेड्टरोने श्रुतिश्विपत शालामीत इन्सेड्यन करवा हीर्स

461 491 -

દી ધું નહીં તથા- તેમને મ્યુનિશ્ચિપલ શાળાઓની પરીક્ષા લેવા हीशी नहीं. तेथी म्युनिसिपासिटीने डिन्डिंट म्युनिसिपस The State of the Association में इंटरी क्लम पटने अने करवामा मावेला नियमी पैकी, नियम उथानी लंग अवर के अने ते वेशआवेश्वर के, मार्ट, म्युनिसिया सिर्ट ने म्युरिश्विषय याणवानी छ न्यपेश्वन प्रया नार्या सर्पारी ઇ-स्पेडटरीने वे छ-स्पेडशन के तारी मधी उदबा ही थे नहीं. वे वारी वधी म्युनिसिपासिटी वस्त्रक वहने वे तारी व स्थी. મેટલે તા, ૮-૨-૨૨ હાલી કાયદાની લંગ કરીને પ્રાથમિક કેળવલીને ગી જે વર્ષ કર્યો છે, તે કાર્યક્રેસર નથી, માટે ખ્યુનિસિયા લિટીના જે ૧૯ સભાસદી ગસહકારની તરફેલમ (પોતાના મત ગાપ્યા હતા, તે સબાસદી/ પાસે મે ખર્ચ વસૂલ ક્ષેવા સરકારે મ્યુનિસિપાલિડી તા ગા રહે સમાસદી સાથે ર. ૧, ૧૮, ૧૦૦ ની દાવી કર્યો. हावामा भ्युनिसिपल स्कूल्स अभिटीना ब्रेडिटरी श्रीयुत प्राव्यकात દેસાઇની મુખ્ય જુળાની થઇ હતી. ત્રેમાં ત્રેમણે જુણાવ્યું કે. હિસ્ક્રિટ म्यानिस्थल में अर्ता असम पटने अने सरकारे , अरेस नियमी पेजी, માત્ર એક જ નિયમ એટલે નિયમ 3 જા ની લંગ થયી છે. બાકીના વધા નિયમોને પાલન કરવામાં માવેલું છે. દાવાના સમય દરમિયાન શાળામીના વ્યવસ્થાના સિઘ્ધાલીમાં કંઇ પણ દેરકાર seathi भाव्यी नथी, तेम च (बक्षकोने बरकारे नक्की करेला हर मुन्य प्रासी पत नापवामा नावेता है. भारत कीउना नियम ७ मा प्रमाल शालाओ मुलाअतीको मत्रे पुल्ली राजवामी

भावेशी बती अने मुलामांव सेनारा विजिदेशुक्रमा ने नीट करवा

Esching success and instantion Low Longians Long

n-n-spilite

करता-तेनी नकत पण कहूत लोडे जो किश्वमा भोकतवामा जायती बत्ती. जा कावामा सरकारनी हार गठ. ते उपस्थी अरकारे काठकोटेमा जपील करी. परंद्व त्या पण तेनी कार गठ.

જ. ર૮ માં સરદારહીને કેવા સંજોગોમાં ખુનિન્સપાલિટી છોડવી પડીક

ते वणतना थिक मोक्तिश भि. भगते, ते वणतना म्युनि-સિપત માજાનિયર મિ. ગીરેની લામે કાગળ પર કેટલાક સખત ત્રીયત મારેથી કર્યા. મ્યુનિશિયલ મૈજિનિયર લગમગ (યક મો દક્ષર: केटबा क हर-कानी अमलहार है. अने तेनी कार्या में जावा अंजत अरक्षेपी याच के केंद्र अंशीर वावत है, केंप समछ म्युनिशिपासिटीना त्यारना प्रमुण श्रीश्वत व स्थलभाउने ला तपास छाप पर सीधी. મ તપાસમાં પોતાને મદદ કરવાને માટે મ્યુનિસપાલિટીના માછ પ્રમુખ, તર રમભુભાઇની મદદ માગી. તર રમળુભાઇમ મ મદદ પણી મુશીથી ગાપો. મે તપાસમાં મેમ માલમ પડ્યું કે म्यानिविषक मेलिनिवर भि. कोरेनी सामै विक को किसर IN. લગતે કરેલા ગાલેપી તફન બીનપાયાદાર છે, અને તેમનું આ પગલ વિને વાલિય લાગ્યું. (મે લગતને એક વર્ષના પ્રોવેશન ઉપર थि मोहिसर तरांके नामवामा भाव्या छता- मा वलते वश्स सम्भाम पूर्व ववा मार्च बर्च. तेथी श्रीयुत व ब्लमला छन् सावेषे मेर्च नज्डी डेर्च डे, भि. अमतने एक आयम अरवा नहीं, पण नेमना प्रोपेशननी समय ने वर्ष संवत्ववी. (म. अन्तने ना की क न बा न्यू. तेथी तेमने कायम थवा मारे मुसल्मान समासदी तंगा सर्कारे दिवा समासही-ति सावे मणी यह, कायम

अवयम- यवाने भारे मट्यरी अववा भारती. ते एपववी जीयत વલ્લમભાઇ સાહેલની તથા સર રમલનાઈ બનેની મિ. લગત માટે વરાવે મબિપ્રાય થયી. અને તેમને ચિક મી કિસરની જગાણેથી महेडी तेमनी असत जन्म--प्रतनत मेशियर-ट दे थि विक मोक्सियनी - पञ्चाने पाछ। पुरुवाम (चान्या मने मुंबह म्युनिस्तप्रकरी માંથી (મ. શેટને વિક મો ક્લિર તરાકે નામવામાં મા ખ્યા. પહ [स. बेटे जाजी वर्णत रला नवा. तेमने भ्रेष्ठ म्युनिश्चाल जीपरिश्चन માં ડેપ્યુટી કામ અરની જંગ્યા મળવાથી, તેવી મુંબઇ મ્યુનિસપલ डोपरियननी नोडरोमा पाछा डया. बेटले म्युबिश्यपादिकी મે જેમ્યા માટે વર્તમાનપદ્રમિંદ જાહેર ખેલર માંપી. (મ. લગતને તી ચિક મીકિસરની જગ્યા માટે નોલાયક ઠરાવી ઉતારી ધ पाउवाम हं नावेला है, नेटले तेनी ना नवा माटे मरू परे ती पल तेना तरह ध्यान न आपर्य वेर्व ठराववामा आद्ये. आ ઉપરથી મિ. લગતે સિવિલ કોર્ટમાં દાવી કરી ઇ-જીવન ગાળી. के तेमनी कारक स्थानमा बाधा वयर म्यानासपत स्थित भी किसर ની નિમંતુક કરા શકે નહીં. ચિક મીક્સરની જગ્યા માટે (म. अनते नावी रीते स्वावसकोर्टना महह साध्य तेपी, सीयुव વલ્લામાં છ અને તર રમસામાઇને દ્રમાના ઉપર બહુ જ ખી 🕻 લાં છે 🕻.

बता. केंक्र की युत बब्ब ममा होनी प्रस्त जी की के जाता है के सारामा होनी प्रस्ता की स्वरूप के निष्का समा स्वरूप के स

मा वनते म्युनिसिया सिटीय दिल पक्षी पडी नवा

पक्ष- त्री भीराशक्तां होते (केलो अल्बारे सरकाशी नीकशीमि कता,) साववा मानती कती, जने तीकी पक्ष (म. लगतने साववा मानती कतो. (मा श्यांक्यी मानती कती ते हरिमयोन क्षीप्रत वन्त्रसम्बद्धित परे के काहिर कर्युं है, को (म. लगत विक्र मी क्षिप्तर वाय ती क्रिम्युनिश्चिषां सिंदी में रहेवा मानती नया.) असककार्यभीमि वे पद्ध पठी नवेता कीवांची, सरकारी समासही काली गया जने (म. लगतनी करी पीठी (मक्र मी क्षिप्तर तरी है निमर्बुक पठ, मेटले जीयुन वन्त्रसम्माहिक म्युनिसिषां सिंदी ठीठी ही थी.